

भृगुसंहिता फलित-दर्पण फलित-प्रकाश

BHRIGU-SANHITA . PHALIT-DARPAN (PHALIT-PRAKASH)

[जन्मकुण्डली के द्वादश भावों में स्थित नवग्रहों का जातक के जीवन पर प्रभाव, ज्योतिष के सिद्धान्त एवं ग्रह-राशि आदि के विषय में विस्तृत जानकारी सहित संसार के प्रत्येक स्त्री-पुरुष की जन्मकुण्डली के फलादेश का अत्यन्त सरलतापूर्वक ज्ञान कराने वाला सर्वोपयोगी ग्रन्थ]

●
मूल ग्रन्थ के लेखक

भृगु ऋषि

महर्षि भृगु को भारत में जन्म लिये हजारों वर्ष व्यतीत हो गए हैं, परन्तु भारत की 60,00,00,000 (साठ करोड़) धर्मप्राथ जनता आज भी उनके द्वारा लिखित इस ग्रन्थ-रत्न से प्रेरणा लेती है। जिस देवता (ज्योतिषी) के पास यह ग्रन्थ-रत्न रहेगा, लक्ष्मी उसके सदा चरण-चुम्बन करेगी।
—राजेश शीमा



देहाती पुस्तक भण्डार (Regd.)

बाबड़ी बाजार, दिल्ली-110006

फोन : 261030



समर्पण

हिन्दी-जगत् के मूर्द्धन्य विद्वान्, तपस्वी लेखक,
यशस्वी शैलीकार, अनुपम पत्रकार
सहारनपुर (उ० प्र०) के गौरव
पं० कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
के
कर-कमलों में सादर !

ज्योतिर्विज्ञान-प्रशंसा

यथा शिक्षा भयूराणां नागानां मणयो यथा ।
तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम् ॥

ज्योतिश्चक्रे तु श्लोकस्थ सर्वस्योक्तं शुभाशुभम् ।
ज्योतर्ज्ञानं तु यो वेद स याति परमां गतिम् ॥

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम् ।
प्रत्यज्ञं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्को यत्र साक्षिणौ ॥

स्तेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम् ।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते किं पुनर्देवविद् द्विजः ॥

सूर्यो यच्छतु भूपतां द्विजपतिः प्रीति परां तन्वतां
भाङ्गल्यं विदधातु भूमितनयो बुद्धि विधत्तां बुधः ।
गौरं गौरवमातनोतु च गुरुः शुक्रः सशुक्रार्थदः
सौरिवैरि - विनाशनं वितनुते रोगक्षयं संहिकः ॥

सूर्यः शौर्यमयेन्दुहृच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः
सर्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुता शुक्रः सुखं शं शनिः ।
राहुर्बाहुबलं करोतु विपुलं केतुः कुलस्योन्नतिं
नित्यं प्रीतिकराः भवन्तु भवतां सर्वे प्रसन्नाः ग्रहाः ॥

कल्याणं कमलासनः स भगवान् विष्णुः सजिष्णुः स्वयं
प्रालेयाद्रिसुतापतिः सतनयो ज्ञानं च निविघ्नताम् ।
चन्द्रज्ञास्फुजिदकंभौमधिषणच्छाया सुतरन्वितश्चः
ज्योतिश्चक्रमिदं सर्वं भवतामायुश्चिरं यच्छतु ॥

दो शब्द

(Preface)



- 'यत्पिण्डे तत्रह्याण्डे' की कल्पना के आधार पर, आज से सहस्रों वर्ष पूर्व भारतीय मनीषियों ने अपनी अन्तर्मुखी सूक्ष्म प्रज्ञा-शक्ति द्वारा ग्रहन पर्यवेक्षण करके यह निष्कर्ष निकाला था कि प्रत्येक वस्तु की रचना का मूलाधार सूक्ष्म 'परमाणु' हैं तथा असंख्यों परमाणुओं के समाहार-स्वरूप निर्मित मानव-शरीर का आकार आकाशीय सौर-अणु से न केवल मिलता-जुलता ही है, अपितु आकाशचारी ग्रहनक्षत्रों का मानव-शरीरस्थ सूक्ष्म सौर-अणु से अन्योन्याश्रय सम्बन्ध भी रहता है और वे उस पर अपनी गतिविधियों का निरन्तर प्रभाव भी डालते रहते हैं। यही कारण है कि आकाशीय ग्रहों की स्थिति के अनुसार पृथ्वीतलवासी मनुष्य के जीवन में अहर्निश विभिन्न प्रकार के परिवर्तन आते रहते हैं।
- मनुष्य जिस समय पृथ्वी पर जन्म लेता है, उस समय भचक्र (आकाश-मण्डल) में विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसका प्रभाव जातक के जीवन की निरन्तर प्रभावित करता रहता है। जन्म-कुण्डली अतर्क के जन्म-समय में भचक्रान्तर्गत विभिन्न ग्रहों की स्थिति की ही परिचायक होती है। यदि उसका ग्रहन अध्ययन किया जाय तो जातक के जीवन में क्षण-क्षण पर घटने वाली सभी घटनाओं का सम्यक् ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।
- कहावत है—'अदृष्ट का लेख कोई नहीं पढ़ पाता'—परन्तु जिस प्रकार दीपक के प्रकाश में तमसावृत वस्तुओं का स्वरूप दृष्टिगोचर हो उठता है, उसी प्रकार ज्योतिर्विज्ञान-रूपी दीपक का उजाला भी अदृष्टलेख-रूपी तिमिरावरण की चीर कर भूत, भविष्य एवं वर्तमानकाल में घटने वाली घटनाओं को उजागर कर देता है—इसमें कोई संदेह नहीं।
- ज्योतिष-शास्त्र के विभिन्न अंगों में 'गणित' तथा 'फलित' का स्थान मुख्य है। फलित-ज्योतिष द्वारा मानव-जीवन पर पड़ने वाले आकाशीय ग्रहों की गति-विधियों के प्रभाव का विश्लेषण किया जाता है। सहस्रों वर्षों के अनुभवों तथा अन्वेषणों के आधार पर यह विद्या अब एक सुनिश्चित विज्ञान का स्वरूप ग्रहण कर चुकी है तथा प्राणिमात्र के लिए परम उपयोगी भी सिद्ध हुई है।
- 'जन्मकुण्डली के किस भाग में स्थित कौन-सा ग्रह जातक के जीवन पर क्या प्रभाव डालता है'—प्रस्तुत ग्रंथ में इसी विषय का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत

किया गया है। ग्रहों के पारस्परिक सम्बन्ध, युति, अंश, उच्च-नीचादि स्थिति आदि अनेक ज्ञासम्य विषयों का विवरण भी इसमें संकलित है। फलित-ज्योतिष सम्बन्धी अन्य विषयों को भी स्थान देकर, इसे सर्वसाधारण के लिए अधिकाधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न भी किया गया है। परन्तु, इस एक ही ग्रंथ द्वारा ज्योतिष-विद्या से सर्वथा अपरिचित सामान्य व्यक्ति भी पर्याप्त लाभ उठा सकते हैं तथा किसी भी स्त्री-पुरुष की जन्मकुण्डली के ग्रहों का फलादेश ज्ञात कर सकते हैं। विषय-वस्तु को अधिकाधिक बोधगम्य बनाने की भी भरसक चेष्टा की गई है। अपने प्रयत्न में हम कहीं तक सफल हुए हैं, इसे विज्ञ पाठक-गण स्वयं ही अनुभव कर सकेंगे।

- आज से लगभग ५ वर्ष पूर्व भी हमने एक ऐसे ही ग्रंथ की रचना की थी, जिसे पाठकों का स्नेह प्राप्त हुआ था। प्रस्तुत ग्रंथ उसी परिपाटी में, अधिक बोधगम्य तथा सुगठित रूप में प्रस्तुत किया गया है। आशा है इसे भी पाठकों का स्नेह मिलेगा। ग्रंथ के प्रणयन में हमें जिन सूत्रों से सहायता मिली है, उन सबके प्रति हम हृदय से आभारी हैं।
- मानव-कृति दोष-विहीन नहीं होती, अतः विज्ञ सुधीजनों ने निवेदन है कि वे इस ग्रंथ की त्रुटियों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करने की कृपा करें, ताकि इसके आगामी संस्करण में उनका निराकरण किया जा सके।

कृष्णपुरी, मथुरा
रामनवमी : सं० २०३२ वि० }

—राजेश शीमित

विषय-सूची

क्र० सं०	प्रथम खण्ड [आवश्यक ज्ञातव्य]	पृष्ठ-संख्या
१.	ग्रह-शान्ति के उपाय	१८
२.	प्रारम्भिक जानकारी	१९
३.	तिथि अथवा मिति	१९
४.	तिथियों के स्वामी	२०
५.	नक्षत्र	२०
६.	नक्षत्रों के स्वामी	२१
७.	नक्षत्रों के चरणाक्षर	२२
८.	वार	२२
९.	राशि	२३
१०.	राशि के चरणाक्षर	२४
११.	ग्रह—स्वभाव और प्रभाव	२५
१२.	राशि—स्वभाव और प्रभाव	२७
१३.	राशियों के स्वामी	२९
१४.	राशिशबोधक चक्र	३०
१५.	ग्रहों का राशि-भोग-काल	३०
१६.	ग्रहों की चक्री तथा अतिचारी गति	३१
१७.	ग्रहों की नैसर्गिक मंती	३१
१८.	ग्रहों के अंश	३२
१९.	जन्मकुण्डली के द्वादश भाग	३३
२०.	भावों की त्रिकोण, केन्द्रादि संज्ञा	३६
२१.	मूल त्रिकोण	३७
२२.	ग्रहों की उच्च स्थिति	३९
२३.	ग्रहों की नीच स्थिति	४०
२४.	ग्रहों का बलाबल	४०
२५.	ग्रहों के पद	४२
२६.	ग्रहों के ६ प्रकार के बल	४२
२७.	ग्रहों की दृष्टि	४५
२८.	उच्चराशिस्थ ग्रहों का फलादेश	५१
२९.	मूल त्रिकोणास्थ ग्रहों का फलादेश	५३
३०.	स्वजेतस्थ ग्रहों का फलादेश	५६
३१.	निकजेतस्थ ग्रहों का फलादेश	५८
३२.	शत्रुजेतस्थ ग्रहों का फलादेश	६१

क्र० सं०	पृष्ठ संख्या
३३.	नीचराशिस्थ ग्रहों का फलादेश ६३
३४.	ग्रहों का दृष्टि-सम्बन्ध और स्थान-सम्बन्ध ६६
३५.	ग्रहों का जातक के जीवन पर प्रभाव ६७
३६.	लग्न और राशि ६७
३७.	स्थानाधिपति ७१
३८.	स्थानाधिपतियों के नाम ७१
३९.	विशिष्ट ज्ञातव्य विषय ७२
४०.	दैनिक ग्रहगोचर का प्रभाव ७६
४१.	सम्मिलित परिवार का फलादेश ७६
४२.	गलत जन्म-कुण्डली का संशोधन ७७

द्वितीय खण्ड [फलादेश]

१.	विभिन्न लगनों वाली जन्म-कुण्डलियों का फलादेश जानने की विधि 'मेष लग्न'	८०
२.	'मेष' लग्न का फलादेश	८२
३.	'सूर्य' का फलादेश	८३
४.	'चन्द्रमा' का फलादेश	८३
५.	'मंगल' का फलादेश	८४
६.	'बुध' का फलादेश	८४
७.	'शुक्र' का फलादेश	८५
८.	'शनि' का फलादेश	८६
९.	'राहु' का फलादेश	८६
१०.	'केतु' का फलादेश	८७
११.	'सूर्य'	८८
१२.	'चन्द्रमा'	८९
१३.	'मंगल'	९०
१४.	'बुध'	९०
१५.	'शुक्र'	९०
१६.	'शनि'	९१
१७.	'राहु'	९१
१८.	'केतु'	९१

'बृष' लग्न

क्रमांक	पृष्ठ-संख्या
२१. 'बृष' लग्न का फलादेश	१२३
२२. 'सूर्य' का फलादेश	१२४
२३. 'चन्द्रमा' का फलादेश	१२४
२४. 'मंगल' का फलादेश	१२५
२५. 'बुध' का फलादेश	१२५
२६. 'गुरु' का फलादेश	१२६
२७. 'शुक्र' का फलादेश	१२६
२८. 'शनि' का फलादेश	१२७
२९. 'राहु' का फलादेश	१२८
३०. 'केतु' का फलादेश	१२८
३१. 'सूर्य'	१२९
३२. 'चन्द्रमा'	१३३
३३. 'मंगल'	३
३४. 'गुरु'	१०१
३५. 'गुरु'	१४५
३६. 'शुक्र'	१४९
३७. 'शनि'	१५३
३८. 'राहु'	१५७
३९. 'केतु'	१६१

'मिथुन' लग्न

४०. 'मिथुन' लग्न का फलादेश	१६६
४१. 'सूर्य' का फलादेश	१६७
४२. 'चन्द्रमा' का फलादेश	१६७
४३. 'मंगल' का फलादेश	१६८
४४. 'बुध' का फलादेश	१६९
४५. 'गुरु' का फलादेश	१६९
४६. 'शुक्र' का फलादेश	१७०
४७. 'शनि' का फलादेश	१७०
४८. 'राहु' का फलादेश	१७१
४९. 'केतु' का फलादेश	१७२
५०. 'सूर्य'	१७२
५१. 'चन्द्रमा'	१७६
५२. 'मंगल'	१८०
५३. 'बुध'	१८४
५४. 'गुरु'	१८८
५५. 'शुक्र'	१९२
५६. 'शनि'	१९६
५७. 'राहु'	२००
५८. 'केतु'	२०४

'कर्क' लग्न

क्रमांक	पृष्ठ-संख्या
५९. 'कर्क' लग्न का फलादेश	२०९
६०. 'सूर्य' का फलादेश	२१०
६१. 'चन्द्रमा' का फलादेश	२१०
६२. 'मंगल' का फलादेश	२११
६३. 'बुध' का फलादेश	२१२
६४. 'गुरु' का फलादेश	२१२
६५. 'शुक्र' का फलादेश	२१३
६६. 'शनि' का फलादेश	२१३
६७. 'राहु' का फलादेश	२१४
६८. 'केतु' का फलादेश	२१५
६९. 'सूर्य'	२१५
७०. 'चन्द्रमा'	२१९
७१. 'मंगल'	२२३
७२. 'बुध'	२२७
७३. 'गुरु'	२३१
७४. 'शुक्र'	२३५
७५. 'शनि'	२३९
७६. 'राहु'	२४३
७७. 'केतु'	२४७

'सिंह' लग्न

७८. 'सिंह' लग्न का फलादेश	२५२
७९. 'सूर्य' का फलादेश	२५३
८०. 'चन्द्रमा' का फलादेश	२५३
८१. 'मंगल' का फलादेश	२५४
८२. 'बुध' का फलादेश	२५५
८३. 'गुरु' का फलादेश	२५५
८४. 'शुक्र' का फलादेश	२५६
८५. 'शनि' का फलादेश	२५६
८६. 'राहु' का फलादेश	२५६
८७. 'केतु' का फलादेश	२५८
८८. 'सूर्य'	२५८
८९. 'चन्द्रमा'	२६२
९०. 'मंगल'	२६६
९१. 'बुध'	२७०
९२. 'गुरु'	२७४
९३. 'शुक्र'	२७८
९४. 'शनि'	२८२
९५. 'राहु'	२८६
९६. 'केतु'	२९०

'कन्या' लग्न

क्रमांक	पृ०सं०
६७. 'कन्या' लग्न का फलादेश	२६४
६८. 'सूर्य' का फलादेश	२६५
६९. 'चन्द्रमा' का फलादेश	२६५
१००. 'मंगल' का फलादेश	२६६
१०१. 'बुध' का फलादेश	२६७
१०२. 'गुरु' का फलादेश	२६७
१०३. 'शुक्र' का फलादेश	२६८
१०४. 'शनि' का फलादेश	२६८
१०५. 'राहु' का फलादेश	२६९
१०६. 'केतु' का फलादेश	३००
१०७. 'सूर्य'	३००
१०८. 'चन्द्रमा'	३०४
१०९. 'मंगल'	३०८
११०. 'बुध'	३१२
१११. 'गुरु'	३१६
११२. 'शुक्र'	३२०
११३. 'शनि'	३२४
११४. 'राहु'	३२८
११५. 'केतु'	३३२

तुला लग्न

११६. 'तुला' लग्न का फलादेश	३३६
११७. 'सूर्य' का फलादेश	३३७
११८. 'चन्द्रमा' का फलादेश	३३७
११९. 'मंगल' का फलादेश	३३८
१२०. 'बुध' का फलादेश	३३८
१२१. 'गुरु' का फलादेश	३३९
१२२. 'शुक्र' का फलादेश	३४०
१२३. 'शनि' का फलादेश	३४०
१२४. 'राहु' का फलादेश	३४१
१२५. 'केतु' का फलादेश	३४१
१२६. 'सूर्य'	३४२
१२७. 'चन्द्रमा'	३४६
१२८. 'मंगल'	३५०
१२९. 'बुध'	३५४
१३०. 'गुरु'	३५८
१३१. 'शुक्र'	३६२
१३२. 'शनि'	३६६

क्रमांक

१३३. 'राहु'	३७०
१३४. 'केतु'	३७४
बृश्चिक लग्न	
१३५. 'बृश्चिक' लग्न का फलादेश	३७८
१३६. 'सूर्य' का फलादेश	३७९
१३७. 'चन्द्रमा' का फलादेश	३८०
१३८. 'मंगल' का फलादेश	३८०
१३९. 'बुध' का फलादेश	३८१
१४०. 'गुरु' का फलादेश	३८१
१४१. 'शुक्र' का फलादेश	३८२
१४२. 'शनि' का फलादेश	३८२
१४३. 'राहु' का फलादेश	३८३
१४४. 'केतु' का फलादेश	३८४
१४५. 'सूर्य'	३८४
१४६. 'चन्द्रमा'	३८८
१४७. 'मंगल'	३९२
१४८. 'बुध'	३९६
१४९. 'गुरु'	४००
१५०. 'शुक्र'	४०४
१५१. 'शनि'	४०८
१५२. 'राहु'	४१२
१५३. 'केतु'	४१६

'धनु' लग्न

१५४. 'धनु' लग्न का फलादेश	४२१
१५५. 'सूर्य' का फलादेश	४२२
१५६. 'चन्द्रमा' का फलादेश	४२२
१५७. 'मंगल' का फलादेश	४२३
१५८. 'बुध' का फलादेश	४२४
१५९. 'गुरु' का फलादेश	४२४
१६०. 'शुक्र' का फलादेश	४२५
१६१. 'शनि' का फलादेश	४२५
१६२. 'राहु' का फलादेश	४२६
१६३. 'केतु' का फलादेश	४२७
१६४. 'सूर्य'	४२७
१६५. 'चन्द्रमा'	४३१
१६६. 'मंगल'	४३५
१६७. 'बुध'	४३९
१६८. 'गुरु'	४४३

क्रमांक	पृ०स०
१६९. 'शुक्र'	४४७
१७०. 'शनि'	४५१
१७१. 'राहु'	४५५
१७२. 'केतु'	४५९

मकर लग्न

१७३. 'मकर' लग्न का फलादेश	४६३
१७४. 'सूर्य' का फलादेश	४६४
१७५. 'चन्द्रमा' का फलादेश	४६४
१७६. 'मंगल' का फलादेश	४६५
१७७. 'बुध' का फलादेश	४६६
१७८. गुरु का फलादेश	४६६
१७९. 'शुक्र' का फलादेश	४६७
१८०. 'शनि' का फलादेश	४६७
१८१. 'राहु' का फलादेश	४६८
१८२. 'केतु' का फलादेश	४६९
१८३. 'सूर्य'	४६९
१८४. 'चन्द्रमा'	४७३
१८५. 'मंगल'	४७७
१८६. 'बुध'	४८१
१८७. 'गुरु'	४८५
१८८. 'शुक्र'	४८९
१८९. 'शनि'	४९३
१९०. 'राहु'	४९७
१९१. 'केतु'	५०१

कुम्भ लग्न

१९२. 'कुम्भ' लग्न का फलादेश	५०५
१९३. 'सूर्य' का फलादेश	५०६
१९४. 'चन्द्रमा' का फलादेश	५०६
१९५. 'मंगल' का फलादेश	५०७
१९६. 'बुध' का फलादेश	५०८
१९७. 'गुरु' का फलादेश	५०८
१९८. 'शुक्र' का फलादेश	५०९
१९९. 'शनि' का फलादेश	५०९
२००. 'राहु' का फलादेश	५१०
२०१. 'केतु' का फलादेश	५११
२०२. 'सूर्य'	५११
२०३. 'चन्द्रमा'	५१५
२०४. 'मंगल'	५१९
२०५. 'बुध'	५२३

क्रमांक	पृ०स०
२०६. 'गुरु'	५२७
२०७. 'शुक्र'	५३१
२०८. 'शनि'	५३५
२०९. 'राहु'	५३९
२१०. 'केतु'	५४३

'मीन' लग्न

२११. 'मीन' लग्न का फलादेश	५४८
२१२. 'सूर्य' का फलादेश	५४९
२१३. 'चन्द्रमा' का फलादेश	५४९
२१४. 'मंगल' का फलादेश	५५०
२१५. 'बुध' का फलादेश	५५१
२१६. 'गुरु' का फलादेश	५५१
२१७. 'शुक्र' का फलादेश	५५२
२१८. 'शनि' का फलादेश	५५२
२१९. 'राहु' का फलादेश	५५३
२२०. 'केतु' का फलादेश	५५३
२२१. 'सूर्य'	५५४
२२२. 'चन्द्रमा'	५५८
२२३. 'मंगल'	५६२
२२४. 'बुध'	५६६
२२५. 'गुरु'	५७०
२२६. 'शुक्र'	५७४
२२७. 'शनि'	५७८
२२८. 'राहु'	५८२
२२९. 'केतु'	५८६

तृतीय अष्ट

[ग्रहों की युति का फलादेश]

१. ग्रहों का युति	५९२
२. दो ग्रहों का युति फलादेश	५९३
३. तीन ग्रहों का युति	५९८
४. चार ग्रहों का युति	६०७
५. पाँच ग्रहों का युति	६१६
६. छः ग्रहों का युति	६२१
७. सात ग्रहों का युति	६२३
८. स्त्री-जातक	६२३
९. विविध योग	६३१
१०. विविध	



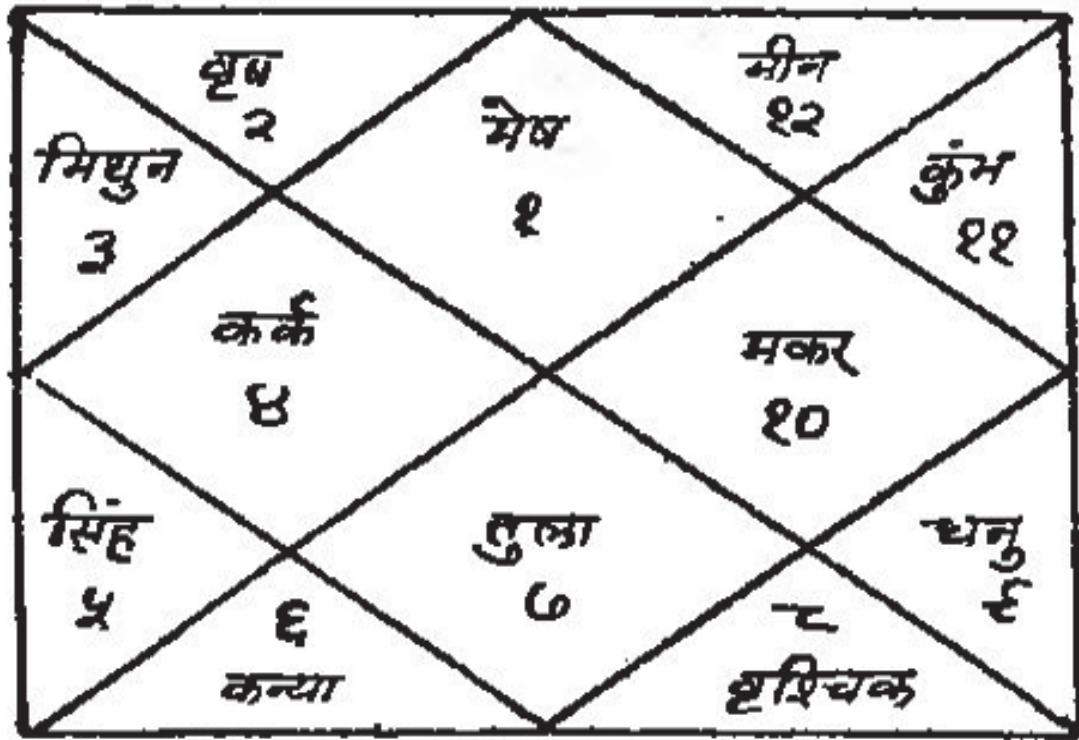
हम भारतवासी उन ऋषियों,
मुनियों तथा आचार्यों के
चिर-ऋणी हैं, जिन्होंने अपने
तप, त्याग से दीर्घायु प्राप्त
करके संकड़ों वर्षों से शोध-
स्वरूप ऐसे ग्रन्थों की रचना
की जिन्हें आज तक विश्व का
कोई भी मानव (वैज्ञानिक)
असत्य सिद्ध नहीं कर पाया।



गाँवों तथा नगरों से दूर, घोर जंगलों के मध्य, नपशब्दों में लीन, साधु-
 महात्माओं के आगे वन्य हिंसक जन्तु भी नत हो जाते हैं, उन्हीं में
 आत्मिक प्रेरणास्वरूप [सर्वजन - हिताय] ऐसे महापुरुषों की रचना की है।



हस्तलिखित, असली, प्राचीन
भृगुसंहिता फलित प्रकाश



1

प्रथम खण्ड

[आवश्यक ज्ञातव्य]

ग्रह-शान्ति के उपाय

यदि कोई ग्रह किसी जातक के लिए अशुभ हो तो उसकी शान्ति के लिए निम्नलिखित वस्तुओं का दान करके, उस ग्रह के मन्त्र का जप करना चाहिए—

- (१) सूर्य—माणिक्य, ताबा, लाल चन्दन, लाल वस्त्र, गेहूँ, गुड़, लाल कमल, गाय ।
- (२) चन्द्र—मोती, चाँदी, कपूर, श्वेतवस्त्र, चावलों से भरी बाँस की पिटासी, जल-पूर्ण घट, गाय, शंख ।
- (३) मंगल—प्रवाल, लाल रंग का वस्त्र, स्वर्ण, लाल रंग का बैल, भसूर, नाँवा, गेहूँ तथा कनेर के फूल ।
- (४) बुध—पन्ना, स्वर्ण, घृत, पीतवस्त्र, नीलवस्त्र, काँसी, मूँगा, हाथी दाँत ।
- (५) शुक्र—पुखराज, स्वर्ण, पीतवस्त्र, हल्दी, पीले रंग का अन्न, नमक, घोड़ा ।
- (६) शुक—हीरा, स्वर्ण, चित्र-विचित्र रंग का वस्त्र, चावल, गाय, घृत, मुगन्धित वस्तुएँ तथा श्वेत रंग का घोड़ा ।
- (७) शनि—नीलम, लोहा, काले तिल, बैल, कृष्णवस्त्र, स्वर्ण, नीले रंग का कम्बल, काले रंग की गाय, उहद तथा भैंस ।
- (८) राहु—गोमेद, स्वर्ण, कृष्णवस्त्र, कम्बल, तनवार, तिल का तेल तथा भोड़ा ।
- (९) केतु—वैदूर्य, कस्तूरी, स्वर्ण, कम्बल, तिल का तेल, शस्त्र तथा बकरा ।

प्रारंभिक जानकारी

जन्मकुण्डलीस्थ ग्रहों का फलादेश जानने से पूर्व ज्योतिष-विषयक प्रारम्भिक जानकारी, यथा—तिथि, वार, नक्षत्र, राशि, ग्रहों का पारस्परिक सम्बन्ध आदि का ज्ञान होना अत्यावश्यक है। अस्तु, इस प्रथम-खण्ड में उन्हीं सब प्रारम्भिक, परन्तु अत्यावश्यक ज्ञातव्य विषयों का उल्लेख किया जा रहा है, जिन्हें जाने बिना ज्योतिष विद्या के क्षेत्र में प्रवेश ही नहीं मिल सकता।

तिथि अथवा मितो

भारतीय ज्योतिष में चन्द्रमा को एक 'कला' को 'तिथि' कहते हैं। सामान्य बोलचाल की भाषा में तिथि को ही 'मितो' के नाम से पुकारा जाता है।

विक्रम-सम्बत्सर का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है तथा अन्त चैत्र कृष्णपक्ष की अमावस्या को होता है। जिस रात्रि में चन्द्रमा बिल्कुल दिखाई नहीं देता, वह तिथि कृष्णपक्ष की 'अमावस्या' कही जाती है। कृष्णपक्ष की अमावस्या के दूसरे दिन से शुक्लपक्ष की प्रतिपदा आरम्भ होती है।

जिन पन्द्रह दिनों में चन्द्रमा प्रतिदिन आकाश में थोड़ा-थोड़ा बढ़ना आरम्भ होता है तथा पन्द्रहवें दिन अपने पूर्णरूप में दिखाई देता है, उसे 'शुक्लपक्ष' कहते हैं तथा बाद के जिन पन्द्रह दिनों में चन्द्रमा आकाश में प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा करके घटने लगता है तथा पन्द्रहवें दिन बिल्कुल दिखाई नहीं देता, उसे 'कृष्णपक्ष' कहते हैं। इस प्रकार प्रत्येक महीने में पन्द्रह-पन्द्रह दिन के दो पक्ष हुआ करते हैं—(१) शुक्ल-पक्ष और (२) कृष्णपक्ष। पक्ष को आम बोलचाल की भाषा में 'पखवाड़ा' कहा जाता है।

यद्यपि नवीन संवत्सर का प्रारम्भ चैत्र मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से होता है, परन्तु प्रत्येक मास (महीने) का प्रारम्भ कृष्णपक्ष से ही माना जाता है अर्थात् प्रत्येक महीने का पहला आधा भाग कृष्णपक्ष का और दूसरा आधा भाग शुक्लपक्ष का होता है।

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से जो पन्द्रह दिन की पन्द्रह तिथियाँ होती हैं, उन्हें क्रमशः (१) प्रतिपदा, (२) द्वितीया, (३) तृतीया, (४) चतुर्थी, (५) पंचमी, (६) षष्ठी, (७) सप्तमी, (८) अष्टमी, (९) नवमी, (१०) दशमी, (११) एकादशी, (१२) द्वादशी, (१३) त्रयोदशी, (१४) चतुर्दशी, तथा (१५) पूर्णिमा के नाम से अभिहित किया जाता है। इसके बाद कृष्णपक्ष की तिथियाँ का भी प्रतिपदा से चतुर्दशी तक इन्हीं नामों से पुकारा जाता है परन्तु कृष्णपक्ष की अन्तिम अर्थात् पन्द्रहवीं तिथि को 'अमावस्या' कहा जाता है। दोनों पक्षों की प्रतिपदा से चतुर्दशी तक की तिथियों को क्रमशः १, २, ३, ४ आदि अंकों में लिखा जाना है, परन्तु पूर्णिमा को १५ तथा अमावस्या तिथि को ३०, अंक के रूप में लिखा जाता है।

तिथियों के स्वामी

विभिन्न देवताओं को विभिन्न तिथियों का स्वामी माना गया है। किस तिथि का स्वामी कौन-सा देवता होता है, इसे नीचे बताया गया है। जिस तिथि के स्वामी का जैसा स्वभाव है, वही स्वभाव उस तिथि का तथा उस तिथि में जन्म लेने वाले व्यक्ति का भी समझना चाहिए—

तिथि	स्वामी	तिथि	स्वामी
प्रतिपदा	अग्नि	नवमी	धुर्गा
द्वितीया	ब्रह्मा	दशमी	काल
तृतीया	शिव	एकादशी	विश्वेदेवा
चतुर्थी	गणेश	द्वादशी	विष्णु
पंचमी	केशवनाग	त्रयोदशी	कामदेव
षष्ठी	कार्तिकेय	चतुर्दशी	शिव
सप्तमी	सूर्य	पूर्णिमा	चन्द्रमा
अष्टमी	शिव	अमावस्या	पितर

नक्षत्र

ज्याँतिथियों ने सम्पूर्ण आकाश-मण्डल को २७ भागों में विभक्त कर, प्रत्येक भाग को एक-एक 'नक्षत्र' की संज्ञा दी है। अर्थात् जिस प्रकार पृथ्वी पर स्थान की दूरी को किलोमीटर आदि में नापा जाता है, उसी प्रकार आकाश में एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी को नक्षत्रों के माध्यम से नापा जाता है। जिस प्रकार पृथ्वी पर नापने की दूरी में किलोमीटर के अन्तर्गत मीटर, सेन्टीमीटर आदि होते हैं, उसी प्रकार प्रत्येक नक्षत्र की भी ४ चरण तथा ६० अंकों में विभाजित किया गया है। नक्षत्रों के 'अक्ष' को 'चट्टी' नाम से भी सम्बोधित किया जाता है।

नक्षत्रों के नाम क्रमशः निम्नानुसार हैं—

१ अश्विनी	८ पुष्य	१५ स्वाति	२२ श्रवण
२ भरणी	९ अश्लेषा	१६ विशाखा	२३ धनिष्ठा
३ कृत्तिका	१० मघा	१७ अनुराधा	२४ शतभिषा
४ रोहिणी	११ पूर्वाफाल्गुनी	१८ ज्येष्ठा	२५ पूर्वाभाद्रपद
५ मृगशिरा	१२ उत्तराफाल्गुनी	१९ मूल	२६ उत्तराभाद्रपद
६ आर्द्रा	१३ हस्त	२० पूर्वाषाढा	२७ रेवती
७ पुनर्वसु	१४ चित्रा	२१ उत्तराषाढा	

उत्तराषाढा की अन्तिम १५ घटी तथा श्रवण नक्षत्र की पहली ४ घड़ी— इस प्रकार कुल १९ घड़ी का एक नक्षत्र 'अभिजित्' भी माना जाता है। 'अभिजित्' सहित नक्षत्रों की कुल संख्या २८ हो जाती है। २८ नक्षत्रों के क्रम में अभिजित् २२वाँ नक्षत्र माना जाता है उसके बाद श्रवण से रेवती पर्यन्त क्रमशः २३ से २८ तक की संख्या वाले नक्षत्र वाले जाते हैं।

नक्षत्रों के स्वामी

पूर्वोक्त २८ नक्षत्रों के स्वामी २८ विभिन्न देवता माने गये हैं। जिस देवता का जो स्वभाव है, उसी के अनुरूप नक्षत्र तथा उस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक का स्वभाव भी माना जाता है। विभिन्न नक्षत्रों के स्वामी निम्नानुसार हैं—

नक्षत्र	स्वामी	नक्षत्र	स्वामी
१ अश्विनी	अश्विनीकुमार	१५ स्वाति	पवन
२ भरणी	काल	१६ विशाखा	शुक्राग्नि
३ कृत्तिका	अग्नि	१७ अनुराधा	मित्र
४ रोहिणी	ब्रह्मा	१८ ज्येष्ठा	इन्द्र
५ मृगशिरा	चन्द्रमा	१९ मूल	निकृति
६ आर्द्रा	रुद्र	२० पूर्वाषाढा	जल
७ पुनर्वसु	वदिति	२१ उत्तराषाढा	विश्वेदेवा
८ पुष्य	बृहस्पति	२२ अभिजित्	ब्रह्मा
९ अश्लेषा	सर्प	२३ श्रवण	विष्णु
१० मघा	पितर	२४ धनिष्ठा	वसु
११ पूर्वाफाल्गुनी	भग	२५ शतभिषा	वरुण
१२ उत्तराफाल्गुनी	अर्यमा	२६ पूर्वाभाद्रपद	अर्जकपाद
१३ हस्त	सूर्य	२७ उत्तराभाद्रपद	अहिर्बुध्न्य
१४ चित्रा	विश्वकर्मा	२८ रेवती	पूषा

नक्षत्रों के चरणाक्षर

ऊपर बताया था चुका है कि प्रत्येक नक्षत्र को ४ चरण तथा ६० अंशों में विभाजित किया गया है। ज्योतिषियों के प्रत्येक नक्षत्र के प्रत्येक चरण का एक-एक 'अक्षर' भी निर्धारित किया है। जिस नक्षत्र के जिस चरण के लिए जो अक्षर निश्चित है, उसका उल्लेख नीचे किया गया है। जो मनुष्य जिस नक्षत्र के जिस चरण के भोग-काल में जन्म लेता है, उसका नाम उसी चरणाक्षर के आधार पर रखा जाता है। उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति का जन्म अश्विनी नक्षत्र के तीसरे चरण में हुआ हो तो उसका नाम का आदि अक्षर 'चो' होगा और उसी के आधार पर उसका नाम 'चोबसिंह', 'चोहराम' आदि रखा जाएगा।

किस नक्षत्र के किस चरण के लिए कौनसा अक्षर नियत है, इसे निम्नानुसार समझ लें।

नक्षत्र नाम	चरणाक्षर				नक्षत्र नाम	चरणाक्षर			
	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ		प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
१. अश्विनी	खू	खे	खो	खा	१५. स्वाति	रु	रे	रो	रा
२. भरणी	ली	ले	लो	ला	१६. विशाखा	ती	ते	तो	ता
३. कृत्तिका	आ	ई	ऊ	ए	१७. अनुराधा	ना	नी	ने	ना
४. रोहिणी	जो	जा	जी	जा	१८. ज्येष्ठा	नो	या	नी	नी
५. मृगशिरा	वे	वो	का	की	१९. मूल	ये	को	मा	मी
६. आर्द्रा	कू	ष	छ	छ	२०. पूर्वाषाढ़ा	भू	धा	का	का
७. पुनर्वसु	के	को	हा	हो	२१. उत्तराषाढ़ा	भे	नो	जा	तो
८. पुष्य	हू	हे	हो	हा	२२. अभिषिक्त	जू	वे	जो	जा
९. अश्लेषा	डी	डू	डे	डो	२३. श्रवण	बी	बू	बे	बो
१०. मघा	या	मी	मु	मे	२४. धनिष्ठा	गा	गी	गू	गे
११. पू. फाल्गुनी	को	दा	टी	टू	२५. शतभिषा	को	ता	मी	मी
१२. उ. फाल्गुनी	टे	तो	पा	पी	२६. पू. भाद्रपद	से	सो	दा	दी
१३. हस्त	पू	ष	ष	ठ	२७. उ. भाद्रपद	दू	ध	झ	जा
१४. चित्रा	पे	पो	रा	रो	२८. रेवती	दे	को	गा	गी

ग्रह

भारतीय ज्योतिष के अनुसार आकाश-मण्डल में मुख्य ग्रहों की संख्या ७ है। वे ग्रह हैं—(१) शनि, (२) बृहस्पति, (३) मंगल, (४) रवि, (५) शुक्र, (६) बुध और (७) चन्द्रमा। इन ग्रहों की अवस्थिति क्रमशः एक दूसरे से नीचे है। अर्थात् शनि की कक्षा सबसे ऊपर तथा चन्द्रमा की कक्षा सबसे नीचे है।

एक दिन-रात २४ घंटे का होता है। ज्योतिष में एक घंटे के समय के लिए 'होरा' शब्द प्रचलित है। यह 'होरा' शब्द 'अहोरात्र' शब्द का संक्षिप्त रूप है अर्थात्

‘अहोरात्र’ शब्द में से ‘अहो’ का अन्तिम अक्षर ‘हो’ तथा ‘रात्र’ का आदि अक्षर ‘रा’ लेकर ‘होरा’ शब्द का निर्माण हुआ है। इस तरह ‘होरा’ शब्द को घण्टे का पर्याय-वाची भी कहा जा सकता है।

सृष्टि के प्रारंभ में सर्वप्रथम सूर्य दिखाई दिया, अतः पहली ‘होरा’ का स्वामी ‘सूर्य’ की माना गया तथा सृष्टि के पहले दिन का नामकरण किया गया—‘रविवार’ अर्थात् सूर्यवार। तत्पश्चात् अगली प्रत्येक होरा पर अन्य एक-एक ग्रह का अधिकार माना गया। फलतः एक दूसरे के समीपी क्रम में दूसरी होरा का स्वामी बुध, तीसरी का शुक्र, चौथी का चन्द्रमा, पाँचवीं का शनि, छठी का बृहस्पति तथा सातवीं का मंगल हुआ। इसी क्रम के पुनरावर्तन के फलस्वरूप पहले दिन की चौबीसवीं अर्थात् अन्तिम होरा बुध के स्वामित्व पर समाप्त हुई, तब दूसरे दिन की पहली होरा का स्वामी चन्द्रमा हुआ, अतः उस दिन का नाम रखा गया—सोमवार अर्थात् चन्द्रवार। इसी क्रमानुसार तीसरे दिन की पहली होरा का स्वामी ‘मंगल’, चौथे दिन का बुध, पाँचवें दिन का बृहस्पति, छठे दिन का शुक्र तथा सातवें दिन की पहली होरा का स्वामी शनि हुआ। फलतः सृष्टि के पहले बारों का क्रम हुआ—(१) रविवार, (२) सोमवार, (३) मंगलवार, (४) बुधवार, (५) गुरुवार, (६) शुक्रवार और (७) शनिवार। आठवें दिन फिर पहली होरा का स्वामी सूर्य हुआ। इसी क्रम से अगले दिनों की पहली होरा के स्वामी पूर्ववत् ग्रह होते चले आ रहे हैं। अस्तु उन सात बारों का चक्र निरन्तर चल रहा है। सात दिनों के इस समूह की ही ‘सप्ताह’ कहा जाता है।

प्रत्येक वार का स्वामी उसी का अधिपति ग्रह होता है। गुरु, सोम, बुध तथा शुक्र—इन चार बारों की ‘सौम्य’ तथा मंगल, रवि एवं शनि—इन तीन बारों की ‘क्रूर’ संज्ञक माना गया है। जिस वार के स्वामी का जैसा स्वभाव है, वही स्वभाव उस वार का तथा उस वार में जन्म लेने वाले जातक का भी माना जाता है।

राशि

जिस प्रकार सम्पूर्ण खगण्ड को २७ या २८ नक्षत्रों में बांटा गया है, उसी प्रकार उसे १२ राशि, १०८ भाग यथा ३६० अंशों में भी बांटा गया है। बारह राशियों के नाम इस प्रकार हैं—

१. मेष	४. कर्क	७. तुला	१०. मकर
२. वृष	५. सिंह	८. वृश्चिक	११. कुम्भ
३. मिथुन	६. कन्या	९. धनु	१२. मीन

अस्तु, खगण्डल अर्थात् भ-चक्र के ३० अंश अथवा ६ भागों की एक राशि होती है। पहले बताया जा चुका है कि एक-एक मजल की चार-चार भागों में बांटा

गया है और प्रत्येक भाग के लिए एक-एक चरणाक्षर भी निश्चित किया गया है अस्तु २७ नक्षत्रों के कुल १०८ भाग अर्थात् 'चरण' हुए और एक राशि के अन्तर्गत आये ६ भाग अर्थात् नक्षत्रों के ६ चरण । इस प्रकार तथा दो नक्षत्रों की हुई एक राशि ।

किस राशि के अन्तर्गत कौन-कौन सा नक्षत्र समाहित है, इसे नक्षत्रों के चरणाक्षरों के आधार पर निम्नानुसार समझ लेना चाहिए—

राशि का नाम	राशि के चरणाक्षर
१. मेष	धू चे ची ला लो लू ने जो या
२. वृष	ई ऊ ए जो वा भी वू वे दो
३. मिथुन	आ की कू ष उ छ के को हा
४. कर्क	हो हू है हो डा डी हू हे ती
५. सिंह	या भी मू वे भी दा डी दू टे
६. कन्या	टो पा पी पू ष घ ठ पे को
७. तुला	रा री रु रे रो सा लो रू ते
८. वृश्चिक	तो या नी नू ने नो पा नी पू
९. धनु	ये भी गा लो पू सा का डा भे
१०. मकर	भो आ भी छी लू के छी गा नी
११. कुम्भ	पू ने को सा सी मू से लो दा
१२. मीन	नी हू य स ज्ञ वे हो वा भी

टिप्पणी—'अभिचित्' नक्षत्र के चारों चरणों—जू, से, जो, वा—की गणना 'मकर' राशि के अन्तर्गत की जाती है ।

ग्रह : उनका स्वभाव और प्रभाव

आकाशमण्डलस्थ असंख्य ज्योतिषिण्डों में से जो पिण्ड पृथ्वी स्थित सभी जड़-चेतन पदार्थों की अपने प्रभाव के प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं, उनकी गणना ग्रहों में की जाती है। प्राचीन भारतीय-ज्योतिष में ऐसे ग्रहों की कुल संख्या ७ बताई गई है। वे हैं—१. सूर्य, २. चन्द्र, ३. मंगल, ४. बुध, ५. बृहस्पति, ६. शुक्र और ७. शनि।

परवर्ती ज्योतिषियों ने अपने अनुसन्धानों के बल पर यह सिद्ध किया कि भूमण्डल की दोनों ओर पड़ने वाली छाया भी ग्रहों जैसी ही प्रभावशालिनी है, अतः उन्होंने 'राहु', 'केतु' नामक दो अन्य छायाग्रहों की कल्पना करके ग्रहों की कुल संख्या ९ कर दी।

आधुनिक काल के पाश्चात्य ज्योतिषियों ने आकाशमण्डल में ३ अन्य ग्रहों की भी खोज की है। वे हैं—(१) हर्षेल, (२) नेपच्यून और (३) प्लूटो। ये सभी ग्रह पूर्वोक्त ७ ग्रहों से भी अत्यधिक ऊँचाई पर स्थित हैं। इस प्रकार कुल ग्रहों की संख्या १२ हो जाती है। परन्तु भारतीय-ज्योतिष में अभी तक पाश्चात्य ज्योतिषों द्वारा नवीन-आविष्कृत तीन ग्रहों को स्थान नहीं दिया गया है। अतः उसमें छायाग्रह राहु-केतु सहित केवल ९ ग्रहों का ही उल्लेख मिलता है।

चन्द्र, बृहस्पति तथा शुक्र इन तीन ग्रहों को शुभ ग्रह माना जाता है। बुध की नपुंसक ग्रह माना गया है, यह जिस ग्रह के साथ बैठता है, उस जैसा ही प्रभाव देता है। सूर्य, मंगल तथा शनि क्रूर ग्रह कहे गये हैं। राहु-केतु की गणना भी क्रूर ग्रहों में की जाती है। परन्तु कुछ विद्वानों के मतानुसार 'केतु' की भी शुभ ग्रह माना जाता है।

उक्त ९ ग्रहों में कौनसा ग्रह किस स्वभाव, बल तथा प्रभाव वाला है तथा उसके द्वारा किन विषयों का विशेष रूप से विचार करना चाहिए, इसे निम्नानुसार समझ लें—

(१) सूर्य—यह ग्रह 'पाप' संशुद्ध, पूर्वं दिया का स्वामी, पुरुष जाति, रक्त-वर्ण एवं पित्त प्रकृति का है। स्नायु, मेरुदण्ड, नेत्र, हृदय आदि अवयवों पर इसका विशेष प्रभाव होता है। इसके द्वारा आत्मा आरोग्य, स्वभाव, पिता, राज्य, देवालय, लोक, अपमान, कलह तथा रोग—अतिसार, क्षय, मंदारिण, मानसिक रोग, नेत्र विकार आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए।

यह लग्न से सप्तम स्थान में जमी एवं मकर से ६ राशियों तक चेष्टा-वसी होता है।

(२) चन्द्र—यह ग्रह 'शुभ' संज्ञक, पश्चिमोत्तर दिशा का स्वामी, स्त्री जाति, श्वेत वर्ण एवं जलीय प्रकृति का है। यह रक्त का स्वामी तथा वातश्लेष्मा घातु वाला है। इसके द्वारा मन, चित्त वृत्ति, सम्पत्ति, माता, पिता, निरर्थक भ्रमण, राजकीय अनुग्रह, उदर, भस्तिष्क एवं शारीरिक स्वास्थ्य तथा कफज एवं जलीय रोग, स्त्रीजन्य रोग, मानसिक रोग तथा पीनस रोग आदि के विषय में विचार करना चाहिए।

यह लग्न से चतुर्थ स्थान में बली तथा भकर से ६ राशियों तक चेष्टा बली होता है।

कृष्णपक्ष की षष्ठी से शुक्लपक्ष की दशमी तक बहू क्षीण रहता है। इस अवधि में इसे पाप ग्रह तथा क्षीण माना जाता है। शुक्ल पक्ष की दशमी से कृष्ण पक्ष की पंचमी तक यह पूर्ण ज्योतिर्मान्, बली तथा शुभ ग्रह माना है।

चतुर्थभाव में बली चन्द्रमा हो पूर्व फलदायी होता है, क्षीण चन्द्रमा नहीं।

(३) मङ्गल—यह ग्रह 'पाप' संज्ञक, दक्षिण दिशा का स्वामी, पुरुष जाति, रक्त वर्ण, पित्त प्रकृति तथा अग्नि तत्व वाला है। यह उत्तेजक, तृष्णाकारक तथा दुःखदायी है। इसके द्वारा धैर्य, पराक्रम, भाई-बहिन, शक्ति तथा रक्त सम्बन्धी विचार करना चाहिए।

यह तीसरे तथा छठे स्थान में बली, दशम स्थान में दिग्बली। चन्द्रमा के साथ चेष्टा बली तथा द्वितीय भाग में बलहीन होता है।

(४) बुध—यह ग्रह 'नर्पसक', संज्ञक उत्तर दिशा का स्वामी, श्यामवर्ण, त्रिदोष तथा पृथ्वी तत्त्व वाला है। यह व्यवसाय, चिकित्सा, ज्योतिष, शिल्प, कानून, चतुर्थ एवं दशम स्थान का कारक है। इसके द्वारा बुद्धिभ्रम, विवेक, शक्ति, जिज्ञा एवं तालु से उच्चारण किये जाने वाले शब्द एवं अवयव तथा गुप्त रोग, श्वेतकुष्ठ, भूंगापन, वातरोग, संग्रहणी आदि का विचार किया जाता है।

बुध चतुर्थ स्थान में 'निर्बल' होता है। यह जैसे यह के साथ बैठा हो उसी के स्वभाव का बन कर, शुभ अथवा अशुभ फल देने वाला शुभग्रह अथवा पापग्रह बन जाता है। पूर्व चन्द्र, बुध तथा शुक्र के साथ शुभ फलदायक तथा धुर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु के साथ अशुभ फलदाता होता है। यदि यह अकेला हो तो शुभ फल देता है।

(५) बृहस्पति—यह ग्रह 'शुभ' संज्ञक, पूर्वोत्तर दिशा का स्वामी, पीतवर्ण तथा आकाश तत्त्व वाला है। यह हृदय की शक्ति का कारक है। इसके द्वारा पारलौकिक सुख, आध्यात्मिक-सुख, धर, विद्या, पुत्र, पीत तथा शीघ्र, गुल्म आदि रोगों का विचार किया जाता है।

लग्न में बैठा हुआ बृहस्पति अभी तथा चन्द्रमा के साथ कहीं भी बैठा हुआ चेष्टा-बली होता है।

(६) शुक्र—यह ग्रह 'शुभ' संज्ञक, दक्षिण-पूर्व दिशा का स्वामी, श्याम-गौर वर्ण तथा जलीय तत्त्व वाला है। यह कफ, वीर्य आदि घातुओं तथा काव्य-संगीत, वाहन, शय्या, कामेच्छा, पत्नी (स्त्री), आँख, वस्त्राभूषण आदि का कारक है। इसके द्वारा सांसारिक-सुख, व्यावहारिक-सुख, एवं चातुर्य का विचार किया जाता है। यदि जातक का जन्म दिन में हुआ हो तो इसके द्वारा उसकी माता के सम्बन्ध में भी विचार किया जाता है।

यह छठे स्थान में निष्फल तथा सातवें स्थान में अनिष्टकर होता है।

(७) शनि—यह यह 'क्रूर' संज्ञक, नपुंसक जाति, पश्चिम दिशा का स्वामी कृष्णवर्ण, वातश्लेमिक प्रकृति का तथा वायुतत्त्व वाला है। इसके द्वारा आयु, शारीरिक बल, दृढ़ता, ऐश्वर्य, यश, भोक्त, योगाभ्यास, नौकरी, विदेशी भाषा, विपत्ति एवं शूच्छा आदि रोगों का विचार किया जाता है। यदि जातक का जन्म रात्रि में हुआ हो तो यह ग्रह माता-पिता का कारक होता है। पापग्रह होने पर भी इसका अन्तिम परिणाम सुखदायक होता है। यह जातक को दुर्भाग्य एवं संकटों का शिकार बनाने के बाद उसे शुद्ध एवं सात्विक बना देता है।

यह सप्तम स्थान में बली तथा चन्द्रमा अथवा किसी अन्य बली ग्रह के साथ रहने पर चेष्टा उसी होता है।

(८) राहु—यह यह 'क्रूर' संज्ञक, दक्षिण दिशा का स्वामी तथा कृष्णवर्ण है। यह गुप्त बुद्धि-बल, कष्ट एवं सृष्टियों का कारक है। यह जिस स्थान में बैठता है वहाँ की उन्नति को रोक देता है।

(९) केतु—यह यह 'क्रूर' संज्ञक, उत्तर दिशा का स्वामी तथा कृष्णवर्ण है। कुछ विद्वान इसे 'शुभ ग्रह' भी मानते हैं। यह गुप्त-शक्ति-बल, कठिन कर्म, भय एवं सृष्टियों का कारक है। इसके द्वारा जातक के हाथ-पैर, सुषाजनित कष्ट, माता-ग्रह (नाना) एवं चर्म रोगों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

राशि : उनका स्वभाव और प्रभाव

कुल राशियाँ १२ हैं। किस राशि का क्या स्वभाव, प्रभाव है तथा उसके द्वारा किन विषयों का विशेष रूप से विचार किया जाता है, निम्नानुसार समझ लें—

(१) मेष—यह राशि 'शुभ' जाति, पूर्व दिशा की स्वामिनी, लाल-पीले रंग वाली, कान्तिहीन, अतिय वर्ण, चर-संज्ञक, अग्नि तत्त्व, समान अंग, अल्प-सन्तति तथा पित्त प्रकृति जाती है। यह अहंकारी, साहसी तथा मित्रों के यदि ब्यालु-स्वभाव

रखने वाली है। इसके द्वारा जातक के मस्तक के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(२) वृष—यह राशि 'स्त्री' जाति, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, श्वेत रंग वाली, कान्ति-हीन, वैश्य वर्ण, स्थिर संज्ञक, शिथिल शरीर, शुभकारक, मत्ता कष्टकारी तथा भूमितत्त्व वाली है। यह स्वार्थी तथा सांसारिक कार्यों में दक्षता एवं बुद्धिमत्ता से काम लेने वाली है। इसके द्वारा जातक के मुँह तथा कर्णों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। इसे 'अर्द्ध जलराशि' भी कहते हैं।

(३) मिथुन—यह राशि 'पुरुष' जाति, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, हरित रंग, चिकनी, उष्ण स्वभाव, शूद्रवर्ण, शिथिल शरीर, विपमोदयी तथा मत्ताशब्दकारी है। यह शिल्पी तथा विद्या-असनी स्वभाव की है। इसके द्वारा जातक के स्तब्ध तथा बाहुओं के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(४) कर्क—यह राशि 'स्त्री' जाति, उत्तर दिशा की स्वामिनी, रक्त-धवल मिश्रित रंग वाली, जलचारी, सौम्य, कफ प्रकृति, बहु सन्ततिवान्, बहुत पावों वाली, रात्रिबली एवं समोदयी है। यह लज्जालु स्वभाव की, समयानुसार चलने वाली तथा सांसारिक उन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहने वाली है। इसके द्वारा जातक के वक्षस्थल एवं गुदों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(५) सिंह—यह राशि 'पुरुष' जाति, पूर्व दिशा की स्वामिनी, पीले रंग वाली, क्षत्रिय वर्ण, उष्ण-स्वभाव, पुष्ट शरीर, पित्त प्रकृति, अग्नि नस्त्व वासी, निर्जल एवं अल्प सन्ततिवान् है। इसका स्वभाव मेष राशि जैसा है, परन्तु इसमें स्वात्मन्द्य-प्रियता एवं उदारता अधिक है। इसके द्वारा जातक के हृदय के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(६) कन्या—यह राशि 'स्त्री' जाति, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, पिगल रंग जाती, द्वि-स्वभाव, पृथ्वीतत्त्व वाली, वायु एवं शीत-प्रकृति, अल्प सन्ततिवान् तथा रात्रिबली है। इसका स्वभाव मिथुन राशि जैसा है, परन्तु यह अपनी उन्नति एवं सम्मान पर अधिक ध्यान देती है। इसके द्वारा जातक के पेट के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(७) तुला—यह राशि 'पुरुष' जाति, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, श्याम रंग की, शूद्रवर्ण, क्रूर-स्वभाव, वायुतत्त्व वासी, क्षीर्णोदयी, धर-संज्ञक, दिनबली, अल्प सन्ततिवान् एवं पादजलराशि है। यह स्वभाव से ज्ञानप्रिय, राजनीतिज्ञ, विचारशील तथा कार्य-सम्पादक है। इसके द्वारा जातक के नाभि से नीचे के अंगों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(८) वृश्चिक—यह राशि 'स्त्री' जाति, उत्तर दिशा की स्वामिनी, लघु रंग वासी, ब्राह्मणवर्ण, कफ प्रकृति, रात्रि बली, अर्द्धजल तत्त्व वाली तथा बहु सन्ततिवान्

है। इसका स्वभाव निर्मल, स्पष्टवादी, हठी, दम्भी तथा घृह-प्रतिज्ञ है। इसके द्वारा जातक की जननेन्द्रिय के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(९) धनु—यह राशि 'पुरुष' जाति, पूर्व दिशा की स्वामिनी, सुनहरे रंग वाली, क्षत्रियवर्ण, अग्नि तत्त्व वाली, पित्त-प्रकृति, द्वि-स्वभाव, दिनबली, दृढ़-शरीर, अल्प सन्ततिवान् तथा अर्द्ध-जल राशि है। इसका स्वभाव करुणामय, अधिकार प्रिय तथा मर्यादा युक्त है। इसके द्वारा जातक के पाँवों की संघि एवं जाँघों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(१०) मकर—यह राशि 'स्त्री' जाति, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, पिगल रंग की, वैश्य वर्ण, पृथ्वी तत्त्व वाली, शिथिल शरीर, वात प्रकृति तथा रात्रिबली है। इसका स्वभाव उच्चस्थिति का अभिलाषी है। इसके द्वारा जातक के पाँवों के घुटनों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(११) कुम्भ—यह राशि 'पुरुष' जाति, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, विचित्र रंग वाली, शूद्र वर्ण, वायुतत्त्व एवं त्रिदोष प्रकृति वाली, उष्ण-स्वभाव, क्रूर, मध्यम सन्तति वाली, दिनबली तथा शीघ्रोददी है। इसका स्वभाव नवीन वस्तुओं का आविष्कारक, विचारशील, धार्मिक तथा शान्त है। इसके द्वारा जातक के पेट के भीतरी भागों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(१२) मीन—यह राशि 'स्त्री' जाति, उत्तर दिशा की स्वामिनी, पिगल रंग वाली, ब्राह्मणवर्ण, कफ प्रकृति, जल तत्त्ववाली तथा रात्रिबली है। यह पूर्णतः जल-राशि है। इसका स्वभाव श्रेष्ठ, दयालु तथा दानशीलता का है। इसके द्वारा जातक के पाँवों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

राशियों के स्वामी

विभिन्न राशियों के विभिन्न ग्रहस्वामी माने गये हैं। कौनसा ग्रह किस राशि का स्वामी है, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए—

मेघ एवं वृश्चिक—इन दोनों राशियों का स्वामी 'मंगल' है।

१ २

वृष एवं तुला—इन दोनों राशियों का स्वामी 'शुक्र' है।

२ ७

मिथुन एवं कन्या—इन दोनों राशियों का स्वामी 'बुध' है।

३ ६

कर्क—इस राशि का स्वामी 'चन्द्रमा' है।

४

सिंह—इस राशि का स्वामी 'सूर्य' है।

५

धनु एवं मीन—इन दोनों राशियों का स्वामी 'बृहस्पति' है।

६ १२

मकर एवं कुम्भ—इन दोनों राशियों का स्वामी 'शनि' है।

१० ११

दृष्यन्ती—राहु तथा केतु छाया-ग्रह होने के कारण किसी राशि के स्वामी नहीं माने जाते, परन्तु कुल ज्योतिर्विद बुध की राशि 'कन्या' पर 'राहु' तथा 'मिथुन' पर 'केतु' का भी आधिपत्य स्वीकार करते हैं।

राशीश बोधक चक्र

राशि	स्वामी	राशि	स्वामी
१. मेष	मंगल	७. तुला	शुक्र
२. वृष	शुक्र	८. वृश्चिक	मंगल
३. मिथुन	बुध/केतु	९. धनु	बृहस्पति
४. कर्क	चन्द्रमा	१०. मकर	शनि
५. सिंह	सूर्य	११. कुम्भ	शनि
६. कन्या	बुध/राहु	१२. मीन	बृहस्पति

ग्रहों का राशि-भोग काल

भ-चक्र में सभी ग्रह क्रमशः सभी राशियों में विचरण करते हैं। कौनसा ग्रह एक राशि में कितने समय तक ठहरता है, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए—

ग्रह का नाम	एक राशि पर ठहरने की अवधि	ग्रह का नाम	एक राशि पर ठहरने की अवधि
१. सूर्य	एक मास	६. शुक्र	पीन मास
२. चन्द्र	तथा जो दिन	७. शनि	डाई वर्ष
३. मंगल	डेढ़ मास	८. राहु	डेढ़ वर्ष
४. बुध	पीन मास	९. केतु	डेढ़ वर्ष
५. बृहस्पति	तेरह मास		

ग्रहों की बक्री तथा अतिचारी गति

सूर्य, चन्द्र, राहु तथा केतु—इन चार ग्रहों के अतिरिक्त शेष पाँचों ग्रह—अर्थात् मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि—कभी-कभी बक्री अथवा अतिचारी हो जाते हैं।

ग्रह के राशियों में क्रमशः परिभ्रमण को 'भार्गी', शीघ्रतापूर्वक परिभ्रमण को 'अतिचारी' तथा अगली राशि को ओर बढ़ने की बजाय पीछे की राशि में लौट पड़ने को 'बक्री' गति कहा जाता है।

अतिचारी तथा बक्री ग्रह एक राशि पर अपने भ्रमण को निश्चित अवधि में पूरा करने की बजाय कुछ आगे पीछे भी हो जाते हैं। आकाश-मण्डल में किस समय कौनसा ग्रह मार्गी, बक्री अथवा अतिचारी चल रहा है, इसका ज्ञान पंचांग देखकर हो सकता है। जातक के जन्म के समय जो ग्रह आकाश-मण्डल में जिस गति से भ्रमण कर रहा होता है उसका वैसा ही प्रभाव जातक के ऊपर जीवन भर पड़ता रहता है।

ग्रहों की नैसर्गिक-मैत्री

कौनसा ग्रह किस ग्रह का जिस, सम अथवा शत्रु है, इसे नीचे प्रदर्शित 'निसर्ग मैत्री चक्र' में देख कर समझ लेना चाहिए—

निसर्ग मैत्री चक्र

सम्बन्ध का स्वरूप	ग्रहों के नाम						
	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चन्द्र मंगल बुध	सूर्य बुध	सूर्य चन्द्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चन्द्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र
सम	बुध	मंगल बुध शुक्र शनि बुध	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	बुध
शत्रु	शुक्र शनि		बुध	चन्द्र	शुक्र बुध	सूर्य चन्द्र	सूर्य चन्द्र मंगल

टिप्पणी (१)—कुछ विद्वानों के मतानुसार चन्द्रमा गुरु से शत्रुता मानते हैं।

(२) राहु केतु छायाग्रह हैं, अतः 'निसर्ग मंत्री चक्र' में इनका उल्लेख नहीं किया गया है। परन्तु ये दोनों ग्रह शुक्र तथा शनि से मित्रता मानते हैं तथा सूर्य, चन्द्र, मंगल, एवं गुरु—इन चारों से शत्रुता रखते हैं। बुध इन दोनों के लिए सम है। इसी प्रकार सूर्य, चन्द्र, मंगल और गुरु—ये चारों ग्रह राहु तथा केतु से शत्रुता मानते हैं, बुध इन दोनों से समभाव रखता है तथा शुक्र और शनि इन दोनों से मित्रता मानते हैं।

ग्रहों के अंश

प्रत्येक ग्रह के ३० अंश होते हैं। 'जातक के जन्म के समय कौनसा ग्रह कितने अंश पर था', इसका ज्ञान उस समय के पंचांग द्वारा ज्ञात हो सकता है। इस विषय में किसी ज्योतिषी से जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

३ से ६ अंश तक का ग्रह किशोरावस्था का, १० से २२ अंश तक युवावस्था का, २३ से २८ अंश तक वृद्धावस्था का तथा २९ से २ अंश (२९, ३०, १ और २) तक मृतक अवस्था का माना जाता है।

किशोर एवं वृद्धावस्था वाले ग्रह बालक पर अपना प्रभाव अल्प परिमाण में तथा युवावस्था वाले ग्रह पूर्व परिमाण में प्रकट करते हैं। मृतक-अवस्था वाले ग्रहों का प्रभाव न के बराबर होता है।

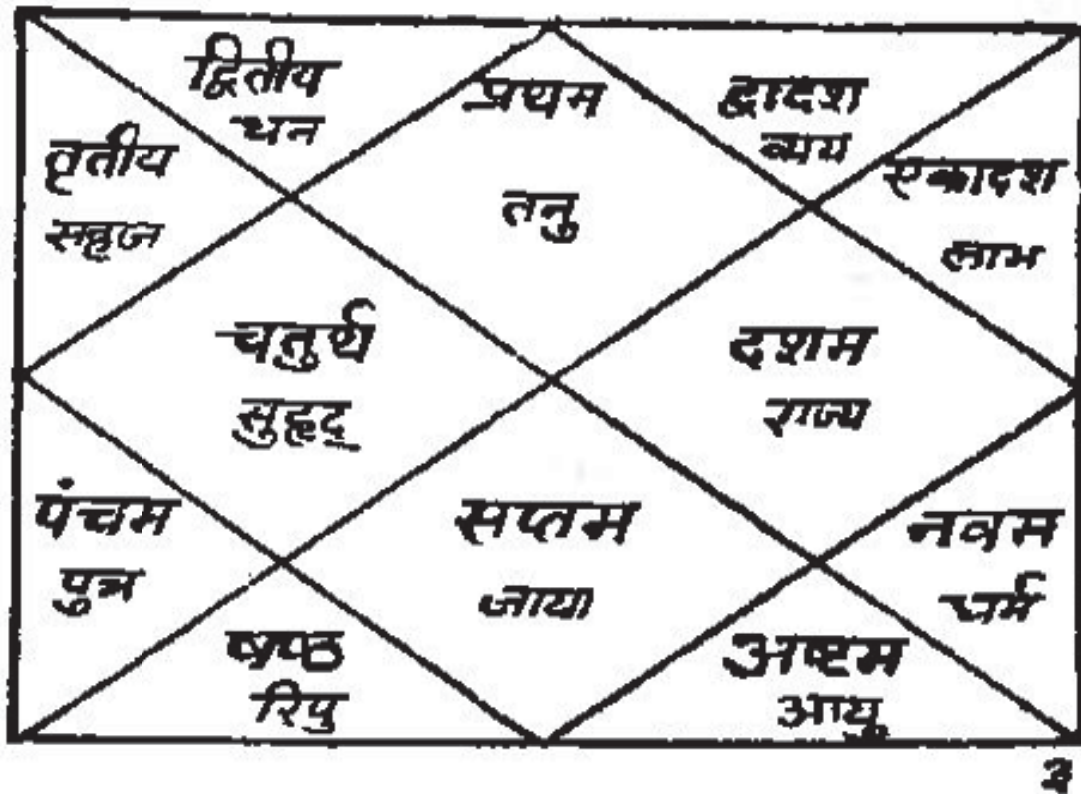
जन्म कुण्डली के द्वादशभाव

जन्म-कुण्डली इस बात को परिचायक है कि जातक के जन्म के समय आकाश-मण्डल में कौन-सा ग्रह, किस राशि में, कितने अंशों पर परिभ्रमण कर रहा था। चारह राशियों के प्रतीक रूप जन्म-कुण्डली में चारह खाने होते हैं, जिन्हें 'घाव', 'स्थान' अथवा 'घर' आदि नामों से पुकारा जाता है।

जन्म-कुण्डली के द्वादशभावों के नाम निम्नलिखित हैं—

- | | | |
|--------------------|-------------------|------------|
| (१) तनु, | (२) घन, | (३) सहज, |
| (४) सुहृद्, | (५) पुत्र, | (६) रिपु, |
| (७) जाया (स्त्री), | (८) आयु, | (९) धर्म, |
| (१०) कर्म, | (११) जाय (साम) और | (१२) व्यय। |

जन्म-कुण्डली के द्वादशभाव



३

उक्त नामों को अन्य नामों के भी पुकारा जाता है। द्वादश भावों के विभिन्न नाम तथा किस भाव द्वारा किन-किन विषयों का विचार किया जाता है, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए—

(१) पहला भाव—इसे प्रथम, तनु, लाभ, केतु आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के स्वरूप, आकृति, आयु, चिह्न, जाति, मस्तिष्क, विवेक, शील, सुख-दुःख आदि के विषय में विचार किया जाता है। लग्नेश भी स्थिति एवं बलाबल के आधार पर जातक को कार्यकुशलता एवं जातीय-उन्नति-अवनति का ज्ञान भी इसी भाव से प्राप्त होता है।

इस भाव का कारक 'शूर्य' है। यदि इस भाव में मिथुन, कन्या, तुला वधवा कुम्भ—इनमें से कोई राशि हो तो उसे बलवान माना जाता है।

(२) दूसरा भाव—इसे द्वितीय, धन, वित्त, पणफर आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के स्वर, सौन्दर्य, सत्यवादन, आंख, नाक, कान, कुल, कुटुम्ब मित्त, सुखोपभोग, बन्धन, गायन, कय-विक्रय, रत्न, स्वर्ण-चाँदी, धन, संचित पूँजी आदि के विषय में विचार किया जाता है।

(३) तीसरा भाव—इसे तृतीय, सहज पराक्रम, मातृ, आपोक्षितम आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के पराक्रम, शौर्य, धैर्य, साहस, कर्म, सहोदर, सेवक, आयुष्य, काम, योगाभ्यास तथा अय-स्वाप्त, दमा आदि रोगों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(४) चौथा भाव—इसे चतुर्थ, सुहृद्, सुख, केन्द्र आदि नामों से भी पुकारा

जाता है। इसके द्वारा जातक की जाता, पिता का सुख, अन्तःकरण, घर, गांव, उपवन, चतुष्पद, सम्पत्ति, वाहन, निधि, दयालुता, उदारता, छल-कपट तथा यकृत एवं उदर रोग आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। यह स्थान विशेष कर 'भाता' का है।

इस भाव के कारक चन्द्रमा तथा बुध हैं।

(५) पाँचवाँ भाव—इसे पंचम, बुध, विद्या, पणफर, त्रिकोण आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक की विद्या, बुद्धि, सन्तान, विनय, नीति, प्रबन्ध-कुशलता, देवभक्ति, धन प्राप्ति के उपाय, आकस्मिक-धन की प्राप्ति, नौकरी छूटना, मामा का सुख, हाथ का यश तथा वस्ति, गर्भाशय, मूत्रपिण्ड आदि के विषय में विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक बुध है।

(६) छठा भाव—इसे षष्ठ, रिपु, त्रिक, उपचय, आपोक्त्विम आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के शत्रु, चिन्ता, सन्देह, जागीर, यश, मामा की स्थिति, गुदा तथा पीड़ा, व्रण, रोग आदि के विषय में विचार किया जाता है।

इस भाव के कारक शनि तथा मंगल हैं।

(७) सातवाँ भाव—इसे सप्तम, जाया, केतु आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक को स्त्री, कामेच्छा, काम चिन्ता, रमणशक्ति, विवाह, स्वास्थ्य, मित्त, दैनिक आय, व्यवसाय, झगड़े-झंझट, जननेन्द्रिय तथा बवाभीर की बीमारी आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव में 'वृश्चिक' राशि को बलवान मानते हैं।

(८) आठवाँ भाव—इसे अष्टम, आयु, जीवन, मृत्यु, चतुरस्र, पणफर आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक को आयु, जीवन, मृत्यु, मृत्यु के कारण, मानसिक चिन्ताएँ, पुरातत्त्व, संकट, ऋण, समुद्र-यात्रा, जननेन्द्रियों के रोग आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक 'शनि' है।

(९) नवाँ भाव—इसे नवम, धर्म, भाग्य, त्रिकोण आदि नामों से पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के पुण्य, धर्म, तप, शील, तीर्थ-यात्रा, दान, प्रवाम, विद्या, मानसिक वृत्ति, पिता का सुख एवं भाग्योदय आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव के कारक 'सूर्य' तथा 'शुक्र' हैं।

(१०) दसवाँ भाव—इसे दशम, कर्म, राज्य, केन्द्र आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के ऐश्वर्य-भोग, यश, नेतृत्व, प्रभुत्व, सम्मान, राज्य-संबन्ध व्यवसाय, नौकरी, अधिकार तथा पिता के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव में शेष, वृष तथा सिंह राशियां, धनु राशि का उत्तरादं तथा मकर राशि का पूवादं बलवान होता है।

इस भाव के कारक सूर्य, बुध, वृष तथा शनि हैं।

(११) ग्यारहवाँ भाव—इसे एकादश, लाभ, आय, उपधय, पणफर आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक की आय, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, रत्न, वाहन, मांगलिक-कार्य आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक 'गुरु' है।

(१२) बारहवाँ भाव—इसे द्वादश, व्यय, त्रिक आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के व्यय, व्यसन, दान, बाहरी-सम्बन्ध, यात्रा, रोग, दण्ड, हानि आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक 'शनि' है।

विभिन्न नामों से प्रमुख विचारणीय विषय निम्नांकित कुण्डली चक्र में प्रदर्शित हैं :—

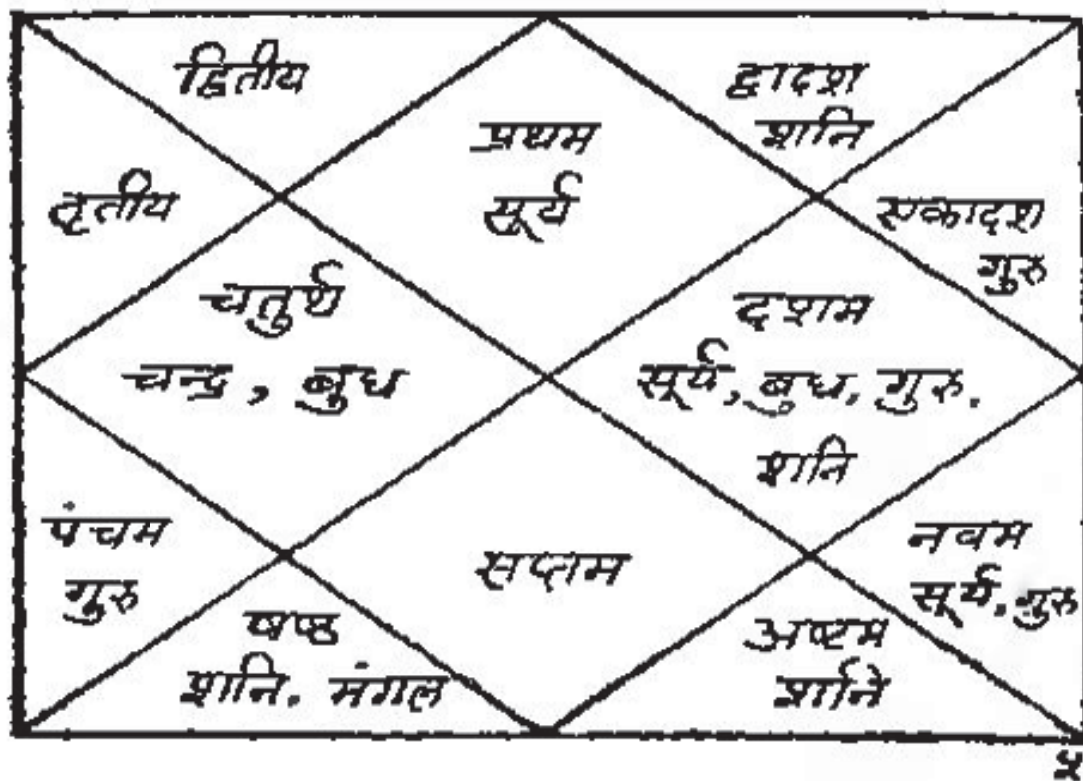
विभिन्न भावों - विचारणीय विषय

	दूसरा	पहला	बारहवाँ	
तीसरा	धन, सुख, शरीर, आकृति,	व्यय, हानि	ग्यारहवाँ	
स्वप्न, धर्म	मस्तिष्क, जाति, आयु	दण्ड	आय, लाभ,	
पराक्रम	चौथा	विवेक, शील	दसवाँ	सम्पत्ति
	माता, सुख, भूमि,		राज्य, पिता, कर्म	
	भवन, सवारी, सम्पत्ति		व्यवसाय, नौकरी	
	दया, दृष्ट	सातवाँ	अधिकार	
पाँचवाँ	स्त्री, विवाह, प्रेम,		यश	नवाँ
सन्तानबुद्धि	दैनिक आय, स्वास्थ्य		धर्म, भाग्य	
विद्या	छठा	मित्र, ऋण	आठवाँ	तीर्थ
	रोग,		जीवन, मृत्यु,	दान
	चिन्ता, ग्राम, कष्ट		पुरातत्व, मरण, संकट	

४

विभिन्न भाव के कारक ग्रहों को आगे दिए गए कुण्डलीचक्र में प्रदर्शित किया गया है—

विभिन्न भावों के कारक



भावों की त्रिकोण, केन्द्रादि संज्ञा

नामों की (१) त्रिकोण, (२) केन्द्र, (३) पणफर, (४) आपोक्लिम तथा (५) मारक—ये पांच विशिष्ट संज्ञाएँ भी हैं, इनके विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) त्रिकोण—पाँचवें तथा नववें भाव को 'त्रिकोण' कहते हैं।

(२) केन्द्र—पहले, चौथे, सातवें तथा दसवें—इन चारों भावों को 'केन्द्र' कहा जाता है।

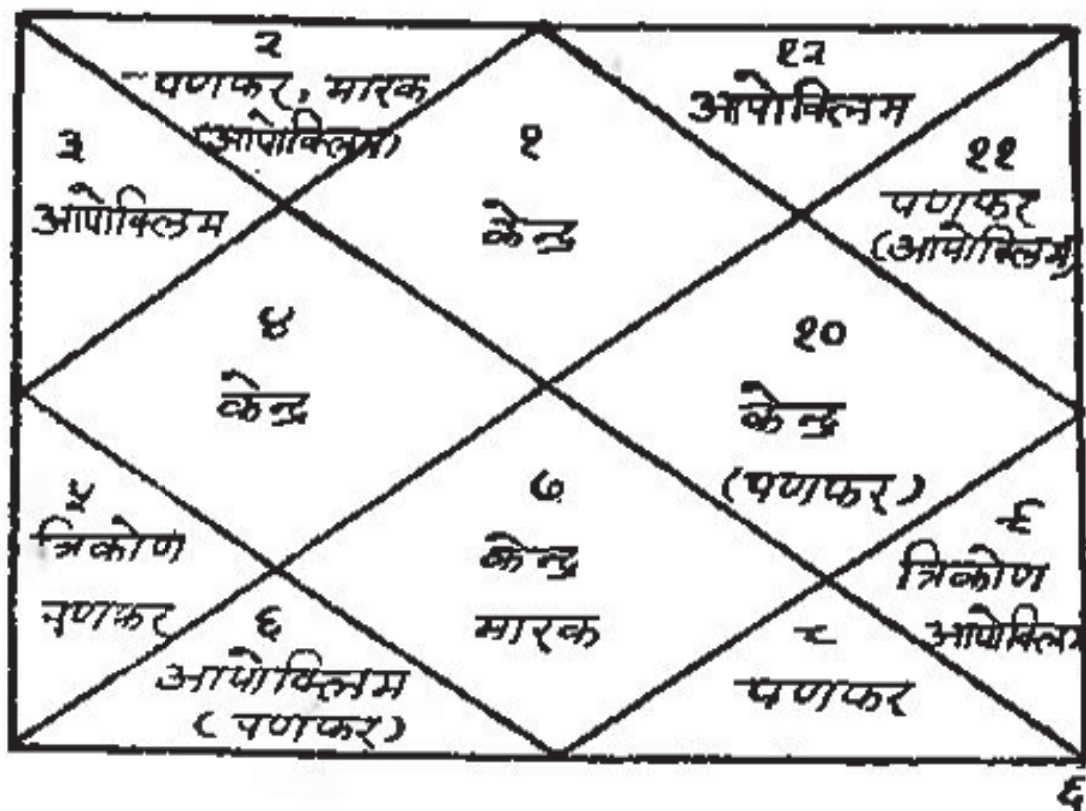
(३) पणफर—दूसरे, पाँचवें, आठवें तथा बारहवें—इन चारों नामों के 'पणफर' कहा जाता है।

(४) आपोक्लिम—तीसरे, छठे, षष्ठ तथा बारहवें—इन चारों भावों को 'आपोक्लिम' कहा जाता है।

(५) मारक—दूसरे तथा सातवें भाव को 'मारक' कहा जाता है।

टिप्पणी—कुछ विद्वान् दूसरे तथा दसवें भाव को 'पणफर' तथा तीसरे और बारहवें भाव को 'आपोक्लिम' मानते हैं। कुछ अन्य विद्वान् छठे तथा आठवें भाव को 'पणफर' तथा दूसरे और बारहवें भाव को 'आपोक्लिम' मानते हैं।

त्रिकोणादि बोधक चक्र



टिप्पणी—मतान्तरों को कुण्डली चक्र के कोष्ठकों में प्रदर्शित किया गया है ।

मूल त्रिकोण

निम्नानुसार जो ग्रह जिस राशि से जितने अंश पर हो उसे सुख त्रिकोण-स्थित समझना चाहिए—

१. सूर्य—सिंह राशि में १ से २० अंश तक ।
२. चन्द्र—वृष राशि में ४ से ३० अंश तक ।
३. मंगल—मेघ राशि में १ से १८ अंश तक ।
४. बुध—कन्या राशि में १ से १५ अंश तक ।
५. गुरु—धनु राशि में १ से १३ अंश तक ।
६. शुक—तुला राशि में १ से १० अंश तक ।
७. शनि—कुम्भ राशि में १ से २० अंश तक ।

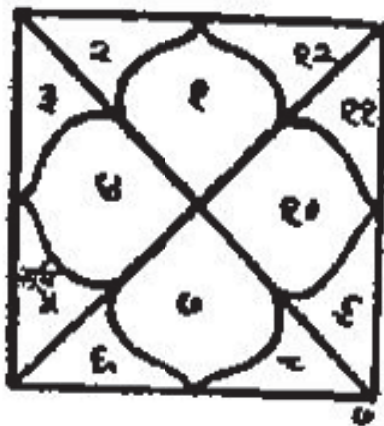
टिप्पणी—राहु को कर्क राशि में तथा केतु को मकर राशि में मूल त्रिकोण माना जाता है ।

मूल त्रिकोण की राशि एवं ग्रह-बोधक चक्र

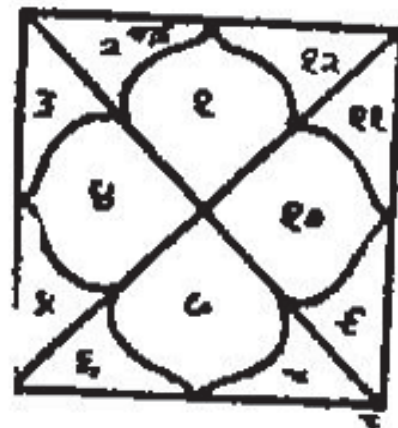
ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बुध	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	सिंह १ से २० अंश तक	वृष ४ से ३० अंश तक	मेष १ से १८ अंश तक	कन्या १ से १५ अंश तक	धनु १ से १३ अंश तक	तुला १ से १० अंश तक	कुम्भ १ से २० अंश तक	कर्क	मकर

नीचे की पहली ६ उदाहरण कुण्डलियों में विभिन्न ग्रहों को उनके मूल त्रिकोण में स्थित अलग-अलग दिखाया गया है। अन्तिम उदाहरण कुण्डली में सभी ग्रहों को एक साथ अपनी-अपनी मूल त्रिकोण राशियों में स्थित दिखाया गया है। ये सभी कुण्डलियाँ मेष सन्म की हैं। इन्हीं के आधार पर अन्य लग्न वाली कुण्डलियों के विषय में भी समझ लेना उचित है—

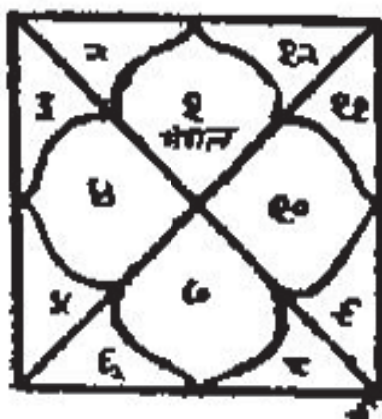
मूल त्रिकोणस्य 'सूर्य'



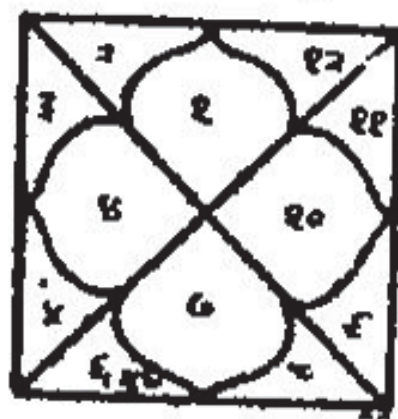
मूल त्रिकोणस्य 'चन्द्र'



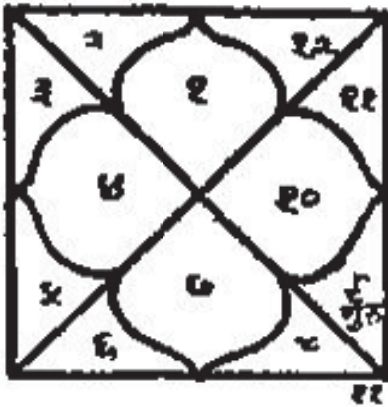
मूल त्रिकोणस्य 'मंगल'



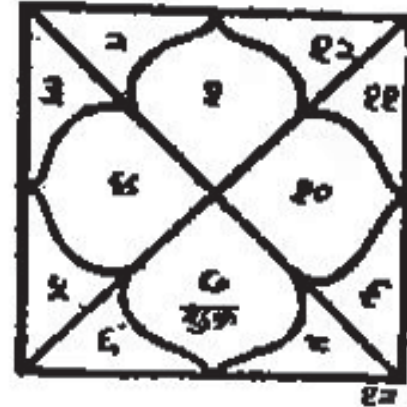
मूल त्रिकोणस्य 'बुध'



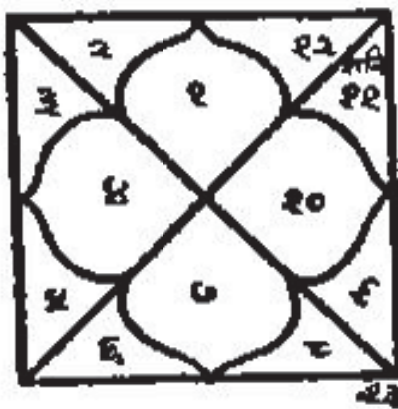
मूल त्रिकोणस्थ 'गुरु'



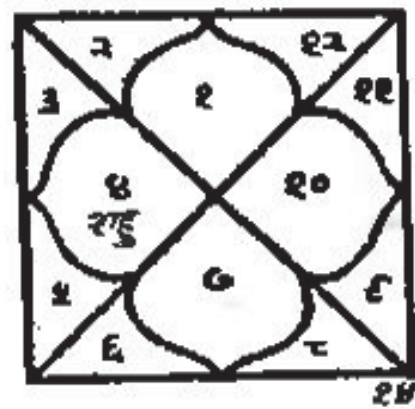
शुक्र त्रिकोणस्थ 'शुक्र'



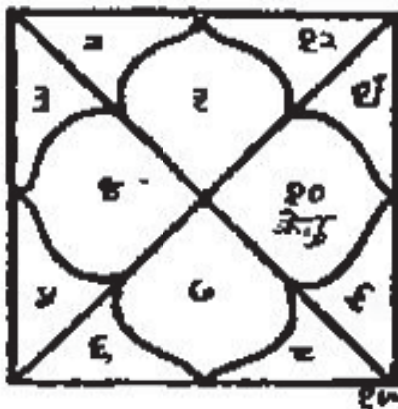
शुक्र त्रिकोणस्थ 'शनि'



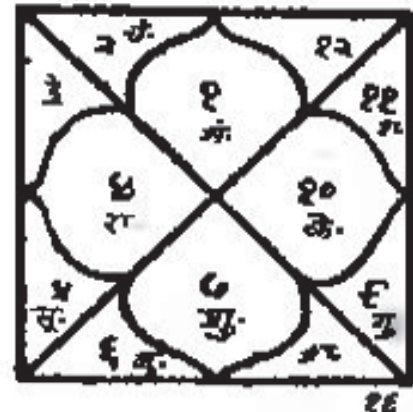
मूल त्रिकोणस्थ 'राहु'



मूल त्रिकोणस्थ 'केतु'



मूल त्रिकोणस्थ 'सभी ग्रह'



ग्रहों की उच्च स्थिति

कौनसा ग्रह किस राशि के कितने अंश बीत जाने पर उच्च का माना जाता है, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए—

१. सूर्य—'मेष' राशि के १० अंश पर।
२. चन्द्र—'वृष' राशि के ३ अंश पर।
३. मंगल—'मकर' राशि के २८ अंश पर।
४. बुध—'कन्या' राशि के १५ अंश पर।

५. गुरु—'कर्क' राशि के ५ अंश पर।
६. शुक—'मीन' राशि के २७ अंश पर।
७. शनि—'तुला' राशि के २० अंश पर।

टिप्पणी—कुछ विद्वान् मिथुन राशि के १५ अंश पर तथा कुछ वृष राशि में 'राहु' को उच्च मानते हैं। इसी प्रकार, कुछ के मत में धनु राशि के १५ अंश पर तथा कुछ बृश्चिक राशि में 'केतु' को उच्च का मानते हैं।

ग्रहों की नीच स्थिति

जिस ग्रह को जिस राशि के जितने अंशों पर उच्च का माना जाता है, उससे सातवीं राशि पर उतने हो अंशों में वह नीच का माना जाता है। यथा—

१. सूर्य—'तुला' राशि के १० अंश पर।
२. चन्द्र—'बृश्चिक' राशि के ३ अंश पर।
३. मंगल—'कर्क' राशि के २८ अंश पर।
४. बुध—'मीन' राशि के १५ अंश पर।
५. गुरु—'मकर' राशि के ५ अंश पर।
६. शुक—'कन्या' राशि के २७ अंश पर।
७. शनि—'मेष' राशि के २० अंश पर।

• टिप्पणी—कुछ विद्वानों से मतानुसार 'राहु' धनु राशि के १५ अंश पर तथा कुछ के मतानुसार बृश्चिक राशि में नीच का माना जाता है। इसी प्रकार, कुछ के मत में मिथुन राशि के १५ अंश तक तथा कुछ वृष राशि में 'केतु' को नीच का मानते हैं।

ग्रहों का बलाबल

ग्रहों के बल चार प्रकार के कहे गये हैं—

१. सर्वोच्चबली—उच्च का होने पर।
२. उच्च बली—शूल त्रिकोण में होने पर।
३. बली—स्वकी (अपने घर) का होने पर।
४. निर्बल—नीच का होने पर।

टिप्पणी—जो ग्रह जिस राशि का स्वामी होता है, यदि वह उसी राशि में बैठा हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वकी' कहा जाता है।

विभिन्न ग्रहों के उच्च क्षेत्रीय, सुख त्रिकोणस्थ, स्वकी तथा नीच का होने के सम्बन्ध में और अधिक स्पष्टता को नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए—

१. सूर्य—'सिंह' राशि स्थित सूर्य स्वक्षेत्री होता है। सिंह राशि के १ से २० अंश तक उसका मूलत्रिकोण, तथा २१ से ३० अंश तक स्वक्षेत्र माना जाता है। मेष राशि के १० अंश तक उच्च का और तुला राशि के १० अंश तक नीच का होता है।

२. चन्द्र—'कर्क' राशि स्थित चन्द्र स्वक्षेत्री होता है। वृष राशि के ३ अंश तक उच्च का, एवं वृष राशि के ४ से ३० अंश तक मूलत्रिकोण स्थित माना जाता है। वृश्चिक राशि के ३ अंश तक नीच का होता है।

३. मंगल—'मेष' अथवा 'वृश्चिक' राशि में स्थित मंगल स्वक्षेत्री होता है, परन्तु मेष राशि के १ से १० अंश तक मूलत्रिकोणगत तथा १६ से ३० अंश तक स्वक्षेत्री माना जाता है। मकर राशि के २८ अंश तक उच्च का तथा कर्क राशि के २८ अंश तक नीच का होता है।

४. बुध—'कन्या' अथवा 'मिथुन' राशि में स्थित बुध स्वक्षेत्री होता है, परन्तु कन्या राशि के १ से १८ अंश तक मूलत्रिकोणगत तथा १६ से ३० अंश तक स्वक्षेत्री माना जाता है। कन्या राशि के १५ अंश तक उच्च का तथा मीन राशि के १५ अंश तक नीच का होता है। इसी प्रकार कन्या राशि स्थित बुध १ से १५ अंश तक उच्च का, साथ ही १ से १८ अंश तक मूलत्रिकोणगत तथा १६ से ३० अंश तक स्वक्षेत्री माना जाता है।

५. गुरु—'धनु' अथवा 'मीन' राशि में स्थित स्वक्षेत्री होता है, परन्तु धनु राशि के १ से १३ अंश तक उसे मूलत्रिकोणगत तथा १४ से ३० अंश तक स्वक्षेत्री माना जाता है। कर्क राशि के ५ अंश तक उच्च का तथा मकर राशि के ५ अंश तक नीच का होता है।

६. शुक्र—'वृष' अथवा 'तुला' राशि स्थित शुक्र स्वक्षेत्री होता है, परन्तु तुला राशि के १ से १० अंश तक उसका मूलत्रिकोण तथा ११ से ३० अंश तक स्वक्षेत्र माना जाता है। मीन राशि के २७ अंश तक उच्च का तथा कन्या राशि के २७ अंश तक नीच का होता है।

७. शनि—'मकर' अथवा 'कुम्भ' राशि स्थित शनि स्वक्षेत्री होता है, परन्तु कुम्भ राशि के १ से २० अंश तक उसका मूलत्रिकोण तथा २१ से ३० अंश तक स्वक्षेत्र माना जाता है। तुला राशि के २० अंश तक उच्च का तथा मेष राशि के २० अंश तक नीच का होता है।

८. राहु—कन्या राशि में स्थित राहु स्वक्षेत्री होता है। मिथुन राशि के १५ अंश तक उच्च का तथा धनु राशि के १५ अंश तक नीच का माना जाता है। इसके विपरीत कुछ विद्वानों की राय में राहु वृष राशि में उच्च का तथा वृश्चिक राशि में नीच का होता है। कर्क राशि को राहु का मूल त्रिकोण माना जाता है।

९. केतु—मिथुन राशि में स्थित केतु स्वक्षेत्री होता है। धनु राशि के १५

अंश तक उच्च का, मियुन राशि के १५ अंश तक नीच का माना जाता है। इसके विपरीत कुछ विद्वानों की राय में केतु बृश्चिक राशि में उच्च का तथा वृष राशि में नीच का होता है। मकर राशि को केतु का मूलत्रिकोण माना जाता है।

ग्रहों के पद

नवग्रहों में सूर्य तथा चन्द्र को राजा, बुध को युवराज, मंगल को मेनापति, गुरु तथा शुक्र को मन्त्री एवं शनि को सेवक का पद दिया गया है। अशु, जिस जातक के ऊपर जिस ग्रह का जितना अधिक प्रभाव होता है, वह उसे अपने ही अनुरूप बनाने की चेष्टा करता है।

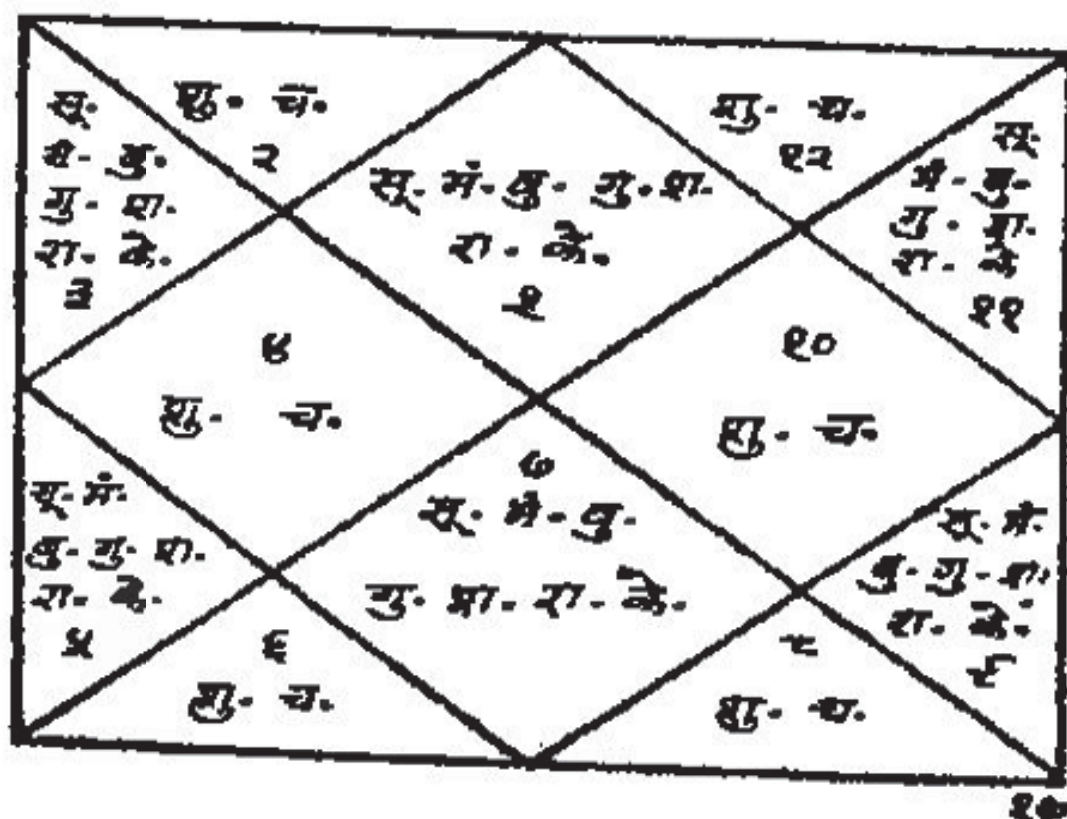
ग्रहों के ६ प्रकार के बल

ग्रहों के बल ६ प्रकार के कहे गये हैं, उन्हें निम्नानुसार समझ लेना चाहिए—

(१) स्थान बल—उच्च, स्वग्रही, मित्रग्रही अथवा मूल त्रिकोणम्य ग्रह को 'स्थान बली' माना जाता है।

चन्द्र तथा शुक्र 'सम राशि' अर्थात् वृष, कर्क, कन्या, बृश्चिक, मकर एवं मीन राशि में स्थित होने पर तथा सूर्य, मंगल, गुरु, शनि, राहु एवं केतु 'विपम राशि' अर्थात् मेष, मियुन, सिंह, तुला, घनु एवं कुम्भ में स्थित होने पर भी 'स्थान बली' कहे जाते हैं।

स्थान-बल निरूपण चक्र

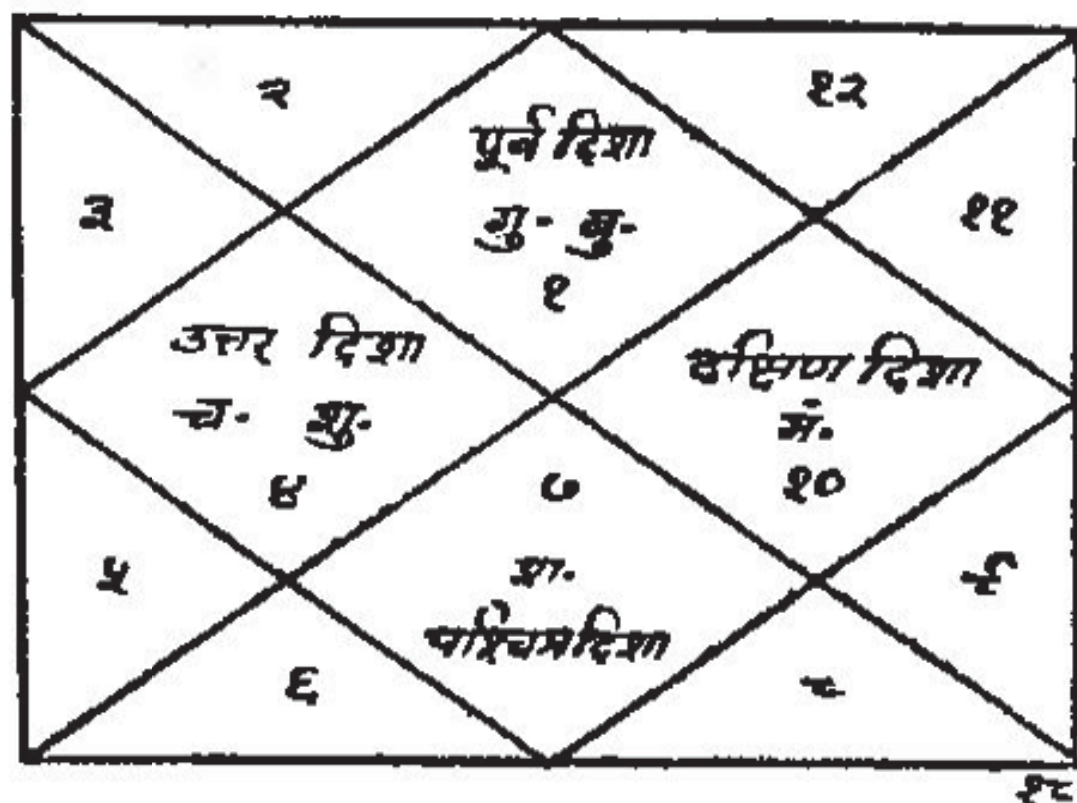


उक्त उदाहरण कुम्भली की भाँति ही अन्य कुम्भलियों में भी ग्रहों के स्थानबल के विषय में समझ लेना चाहिए।

(२) दिग्बल—जन्मकुण्डली में प्रथम भाव की पूर्व, चतुर्थ की उत्तर, सप्तम की पश्चिम तथा दशमभाव की दक्षिण दिशा माना जाता है ।

गुरु तथा शनि प्रथमभाव अर्थात् लग्न (पूर्व दिशा) में, चन्द्रमा तथा शुक्र चतुर्थभाव (उत्तर दिशा) में, शनि सप्तमभाव (पश्चिम दिशा) में तथा मंगल दशमभाव (दक्षिण दिशा) में स्थित हों तो उन्हें 'दिग्बली' माना जाता है ।

निम्नांकित उदाहरण कुण्डली में दिशाओं तथा दिग्बली ग्रहों की स्थिति की प्रदर्शित किया गया है—



(३) कालबल—यदि जातक का जन्म राशि के समय हुआ हो तो उसकी जन्मकुण्डली के ग्रहों में से (१) चन्द्रमा, (२) मंगल और (३) शनि—ये तीनों ग्रह कालबली होते हैं और यदि जातक का जन्म दिन में हुआ हो तो (१) सूर्य, (२) बुध और (३) शुक्र—ये तीनों ग्रह कालबली होते हैं ।

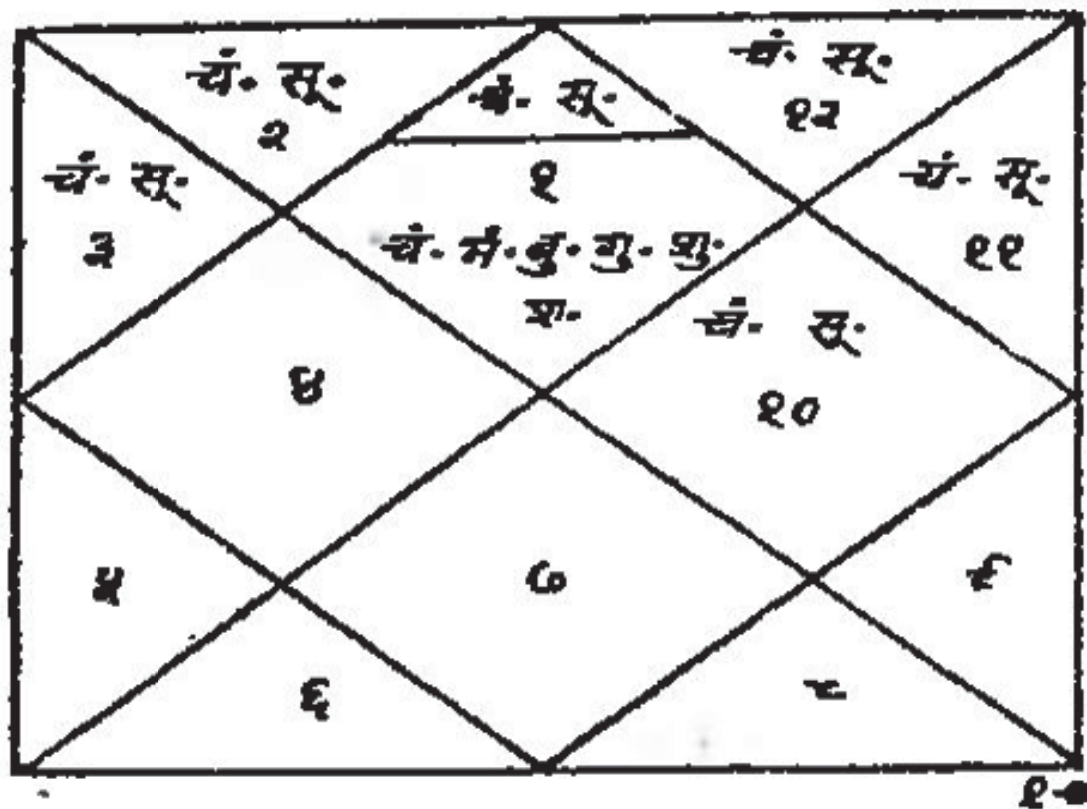
मतान्तर में, 'बुध' को दिन-रात्रि दोनों ही समय में कालबली माना जाता है ।

(४) नैसर्गिक बल—शनि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र तथा सूर्य—ये ग्रह उत्तरोत्तर एक दूसरे से अधिक बली होते हैं । अर्थात् शनि से मंगल अधिक बलवान होता है, मंगल से बुध, बुध से गुरु, गुरु से शुक्र, शुक्र से चन्द्र तथा चन्द्र से सूर्य अधिक बलवान होता है । इसी क्रम की विपरीत स्थिति में ग्रह एक दूसरे से उत्तरोत्तर कम बलवान होते हैं अर्थात् सूर्य से चन्द्रमा कम बलवान है तथा चन्द्र से शुक्र, शुक्र से गुरु, गुरु से बुध, बुध से मंगल तथा मंगल के शनि कम बली होता है ।

(५) चेष्टाबल—मकर से मिथुन तक (मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृष और मिथुन) किसी भी राशि में स्थित सूर्य तथा चन्द्रमा चेष्टावली होते हैं और मंगल, बुध, गुरु, शुक तथा शनि—ये पाँचों ग्रह चन्द्रमा के साथ रहने पर चेष्टावली होते हैं।

निम्नांकित उदाहरण कुण्डली में ग्रहों के 'चेष्टाबल' को प्रदर्शित किया गया है इसी भाँति अन्य कुण्डलियों में भी समझें।

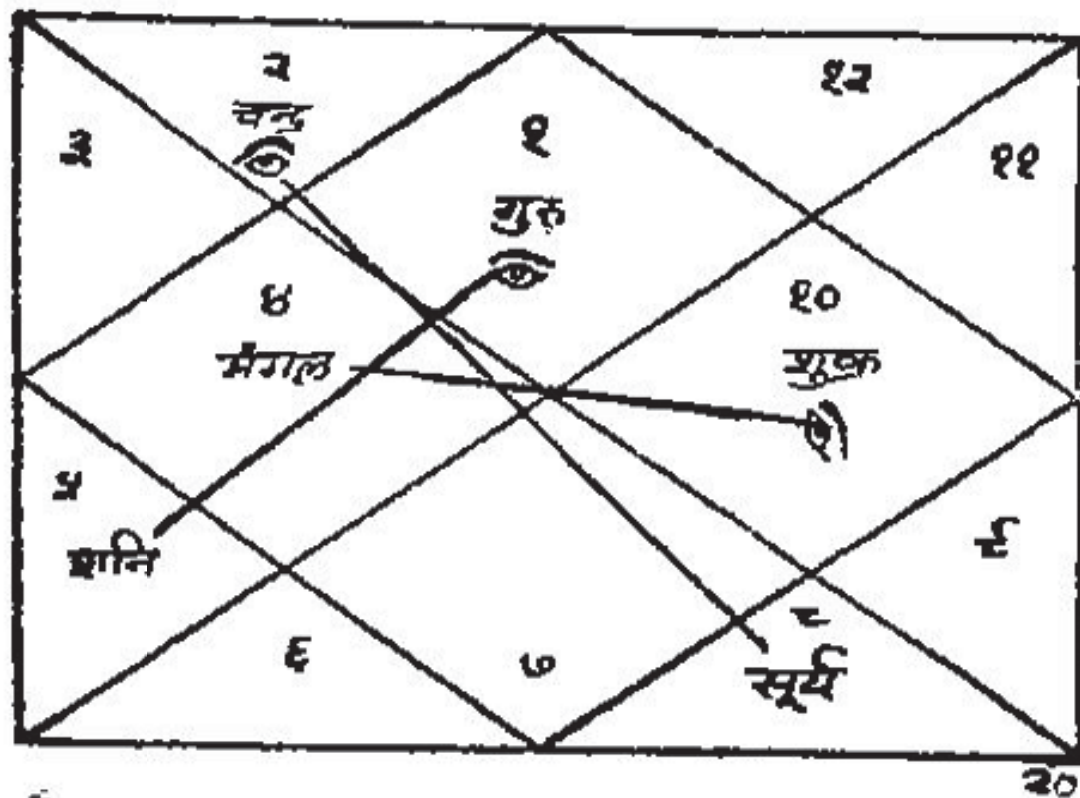
ग्रहों का चेष्टाबल निरूपण चक्र



(६) दृग्बल—जन्मकुण्डली में जिन क्रूर (दुष्ट या पाप) ग्रहों के ऊपर शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ती है, वे उनकी शुभ दृष्टि की पाकर 'दृग्बली' ही जाते हैं। जैसे—किसी जातक की कुण्डली में शनि पंचम भाव में बैठा ही तथा बुध लग्न में बैठा ही तो क्रूर-ग्रह शनि के ऊपर शुभ ग्रह गुरु की पूर्ण दृष्टि पड़ने के कारण शनि दृग्बली ही जाएगा। किस ग्रह की दृष्टि किन-किन भावों पर पड़ती है इसका वर्णन आगे किया गया है।

नीचे का उदाहरण कुण्डली में क्रूर-ग्रहों के ऊपर शुभ ग्रहों की दृष्टि की प्रदर्शित किया गया है। इसी के अनुसार अन्यत्र भी समझ लेना चाहिए।

ग्रहों का प्रबलन निरूपण चक्र



आवश्यक ज्ञातव्य—पूर्वोक्त ६ प्रकार के बलों में से किसी भी प्रकार के बल को प्राप्त बलवान ग्रह जिस भाव में बैठा होता है जातक को उस भाव का विशेष फल अपने स्वभावानुसार देता है। किसी भाव स्थित किसी भी ग्रह के फलाफल को यथार्थ जानकारी के लिए उस भाव में स्थित राशि तथा ग्रह के स्वभाव एवं बल आदि का समन्वयन करके ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए।

ग्रहों की दृष्टि

ग्रहों की दृष्टियाँ चार प्रकार की मानी गई हैं—

- (१) एक पाद या एक घरण दृष्टि (चतुर्थांश दृष्टि)।
- (२) द्विपाद या दो घरण दृष्टि (अर्ध्यांश दृष्टि)।
- (३) त्रिपाद या तीन घरण दृष्टि (तीन चौथाई दृष्टि)।
- (४) पूर्ण दृष्टि (सम्पूर्ण दृष्टि)।

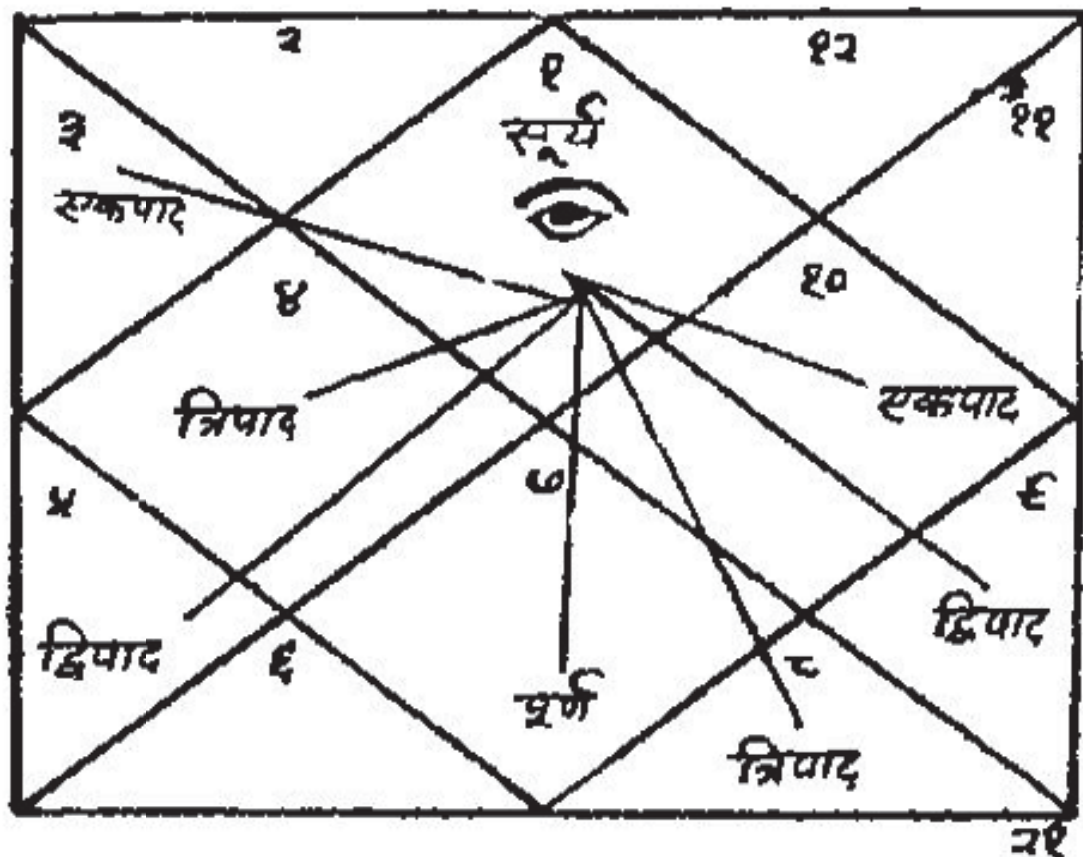
जन्मकुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में बैठा होता है, उस भाव से तृतीय तथा दशम भाव को एकपाद दृष्टि से, पंचम तथा नवम भाव को द्विपाद दृष्टि से, चतुर्थ तथा अष्टम भाव को त्रिपाद दृष्टि से तथा सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। यह नियम सभी ग्रहों पर समान रूप से लागू होता है। परन्तु इन दृष्टियों के अतिरिक्त मंगल जिस भाव में बैठा होता है, वहाँ से सप्तम भाव के अतिरिक्त चतुर्थ तथा अष्टम भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसी प्रकार गुरु जिस भाव में बैठा हो, वहाँ से सप्तम भाव के अतिरिक्त पंचम तथा नवम भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है एवं शनि जिस भाव में बैठा हो, वहाँ से सप्तम भाव के अतिरिक्त

तृतीय तथा दशम भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है। अपूर्ण दृष्टि को 'खण्ड दृष्टि' भी कहते हैं।

राहु तथा केतु की दृष्टि अन्य ग्रहों के समान सीधी न पड़कर उल्टी पड़ती है। जैसे लग्न में बंठा हुआ मंगल तृतीय तथा दशम भाव को एक पाद दृष्टि से देखेगा तो लग्न में बैठे हुए राहु-केतु एकादश तथा चतुर्थ भाव को एक पाद दृष्टि से देखेंगे।

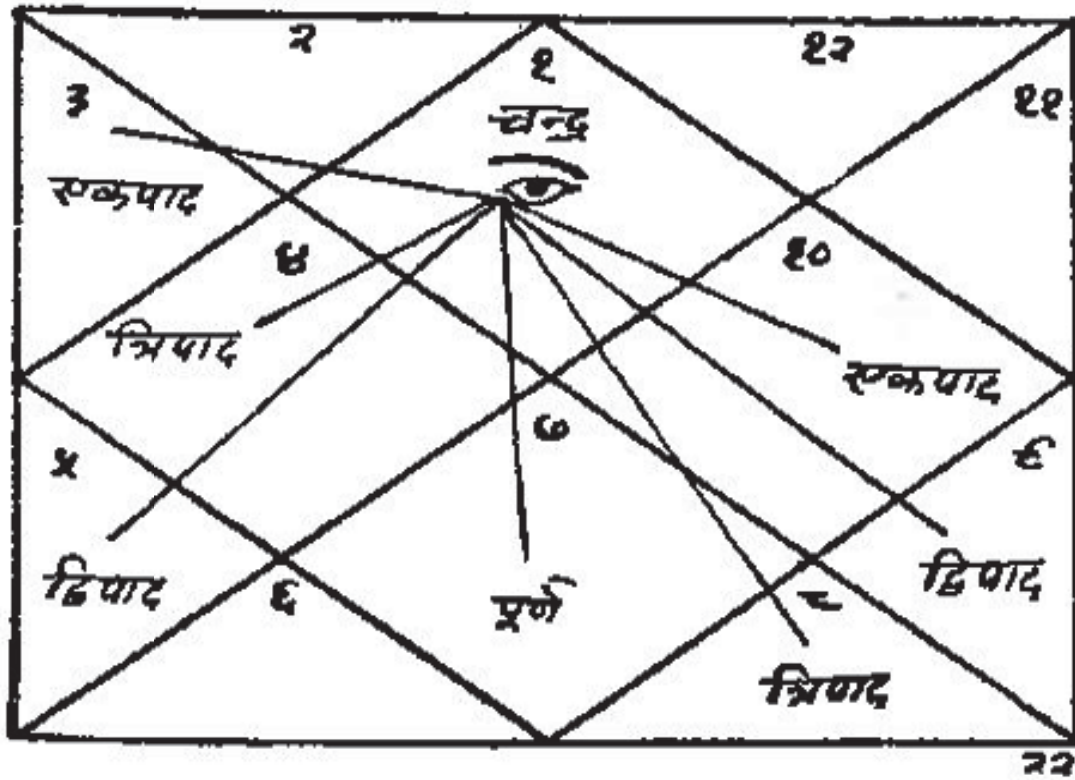
आगे दी गई मेष राशि की उदाहरण कुण्डलियों में लग्न (प्रथम भाव) स्थित विभिन्न ग्रहों की विभिन्न भावों पर पड़ने वाली एक पाद, द्विपाद, त्रिपाद तथा पूर्ण दृष्टि की अलग-अलग प्रदर्शित किया गया है। इसी भाँति अन्यत्र भी समझ लेना चाहिए।

'सूर्य' की विभिन्न भावों पर दृष्टि



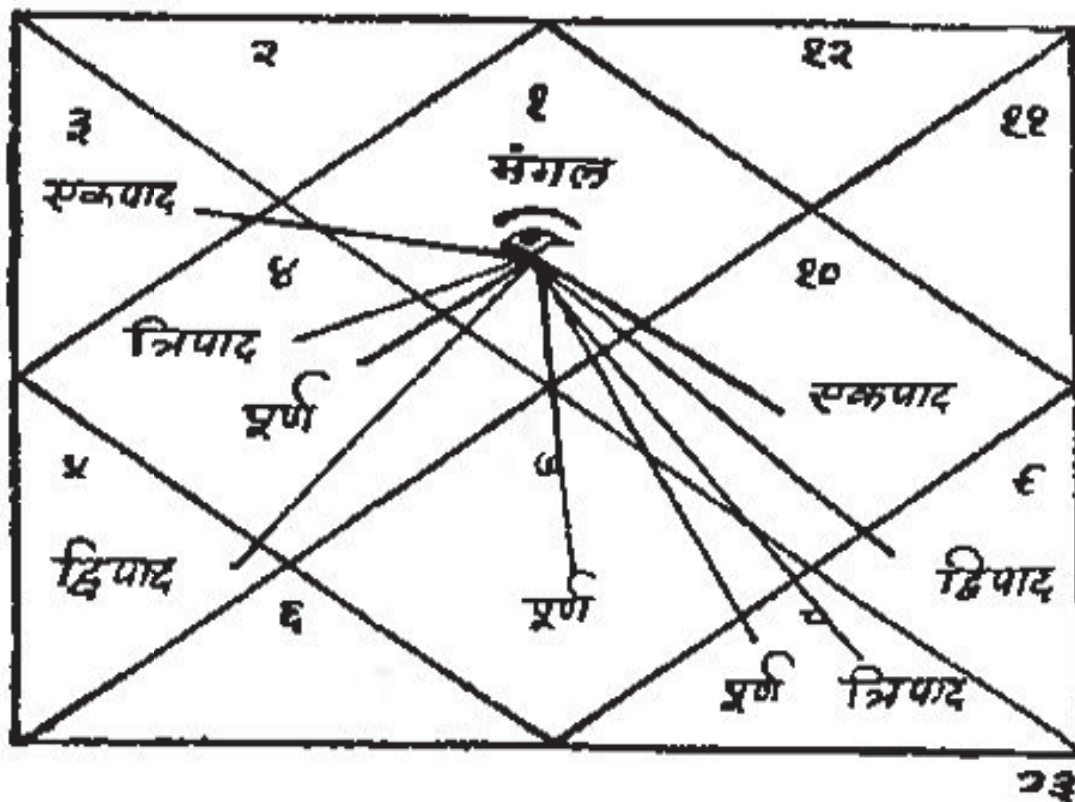
टिप्पणी—जिस भाव में भी 'सूर्य' बैठा हो, उस भाव से उपर्युक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'चन्द्रमा' की विभिन्न भावों पर दृष्टि



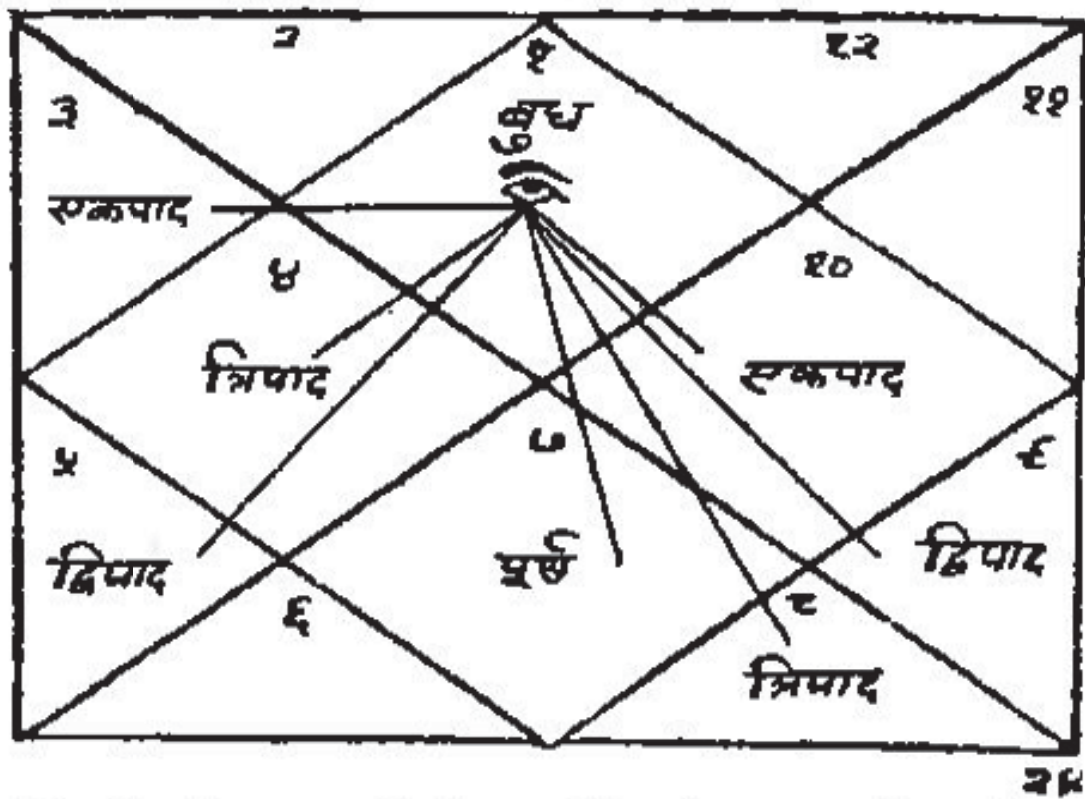
टिप्पणी—जिस भाव में भी 'चन्द्रमा' बैठा हो, उस भाव से उपर्युक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'मंगल' की विभिन्न भावों पर दृष्टि



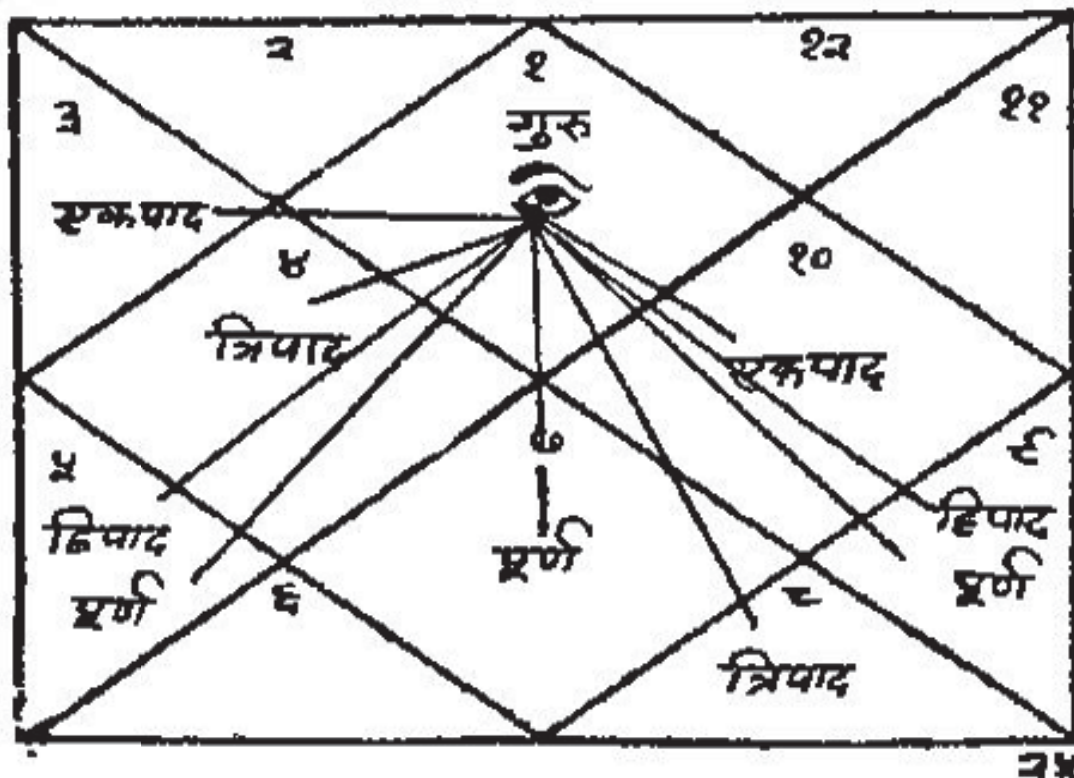
टिप्पणी—जिस भाव में भी मंगल बैठा हो, उस भाव से उपर्युक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'बुध' की विभिन्न भावों पर दृष्टि



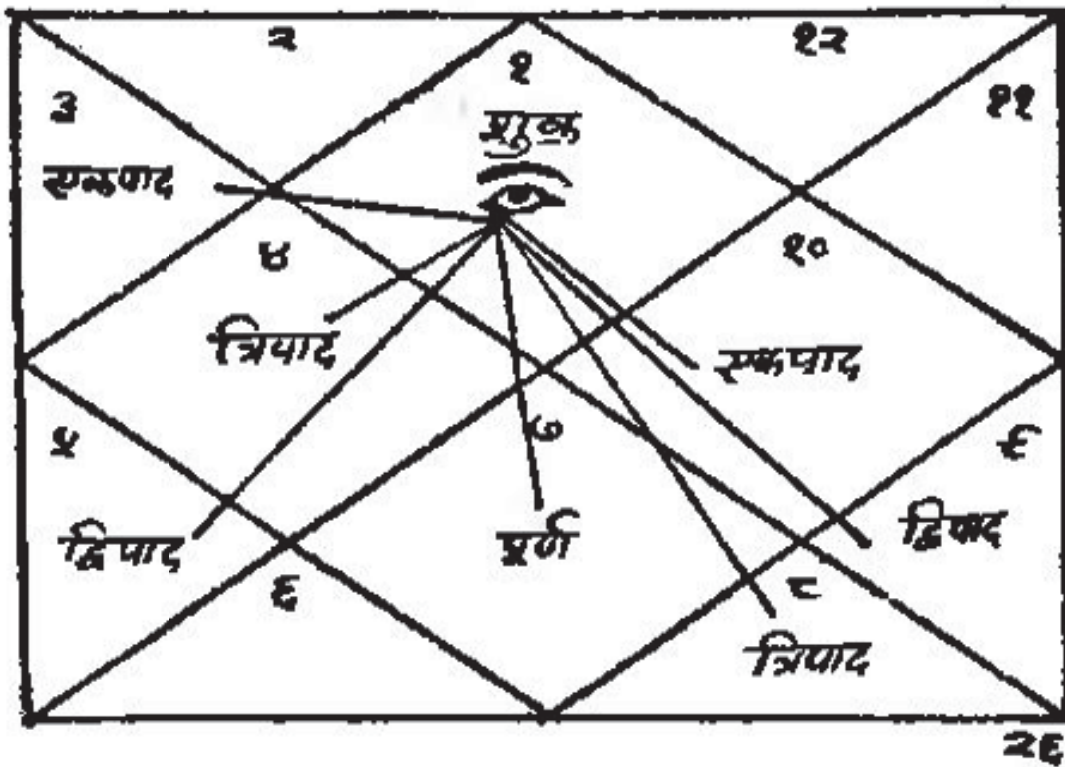
टिप्पणी—जिस भाव में भी 'बुध' बैठा हो, उस भाव से उपर्युक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए ।

'गुरु' की विभिन्न भावों पर दृष्टि



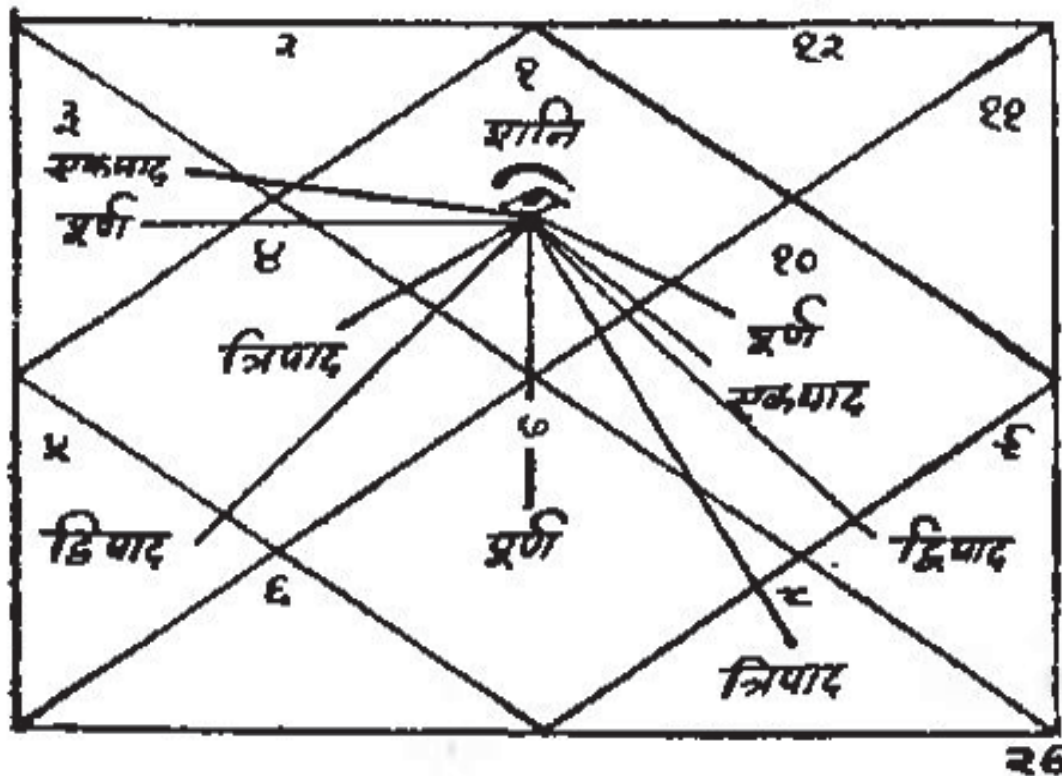
टिप्पणी—जिस भाव में भी 'गुरु' बैठा हो, उस भाव से उपर्युक्त आधार पर उसका खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए ।

'शुक्र' की विभिन्न भावों पर दृष्टि



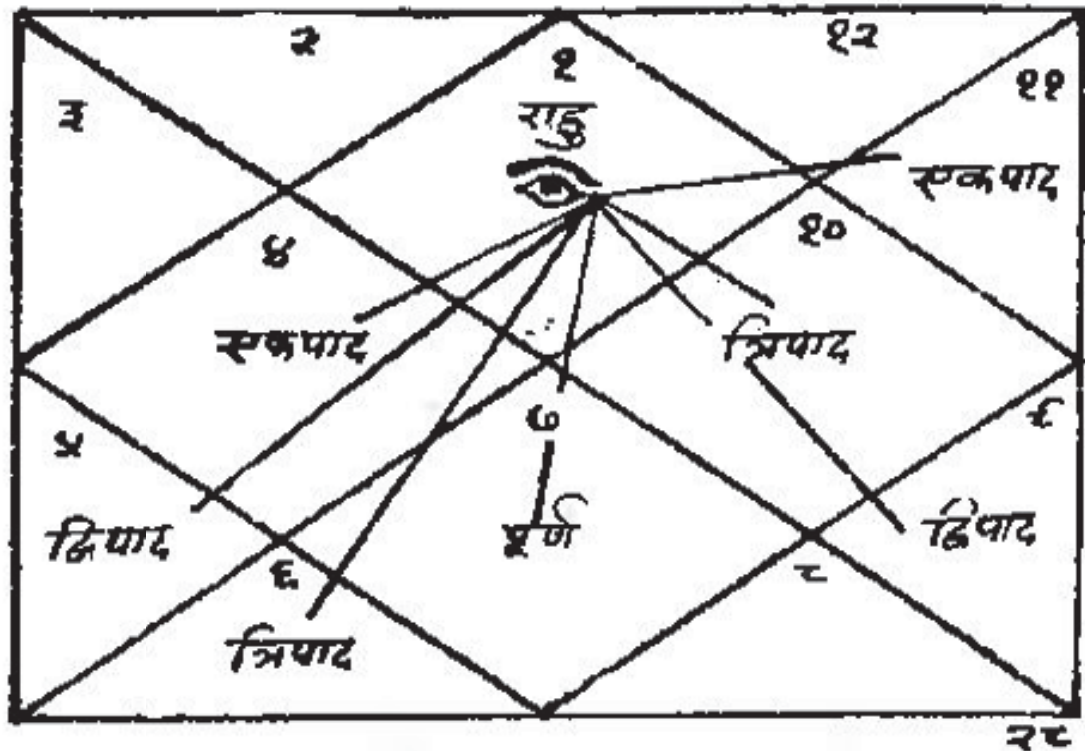
टिप्पणी—जिस भाव में भी 'शुक्र' बैठा हो, उस भाव से उपर्युक्त बाधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए ।

'शनि' की विभिन्न भावों पर दृष्टि



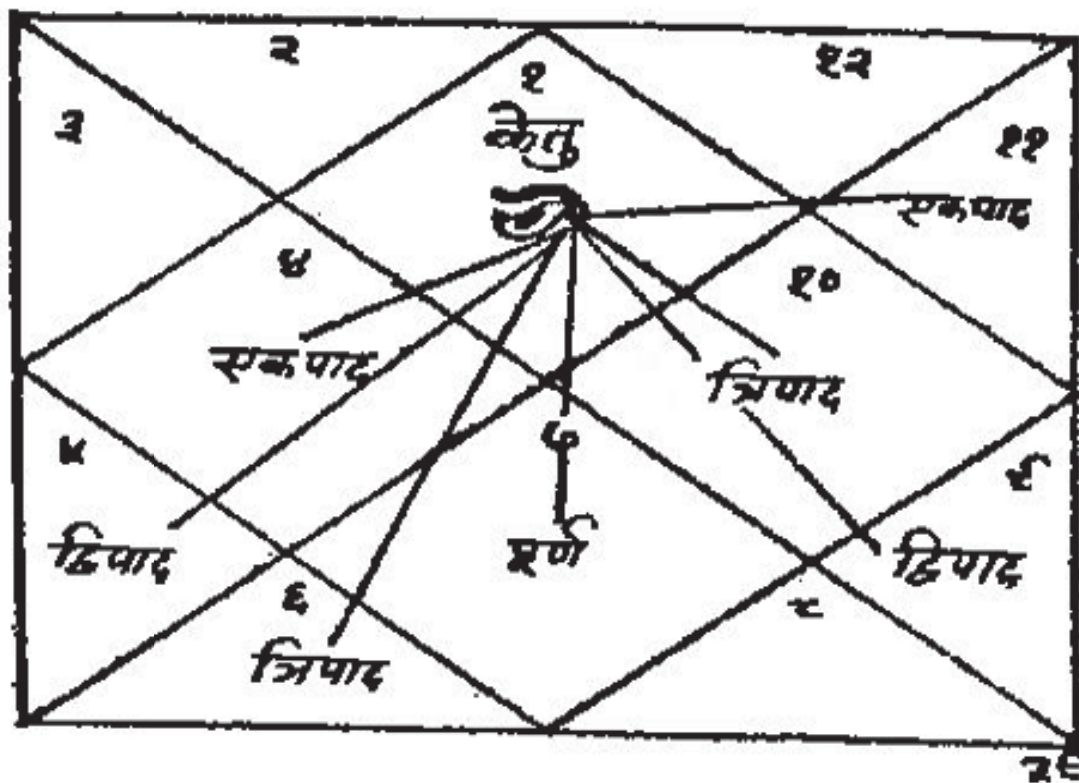
टिप्पणी—जिस भाव में भी 'शनि' बैठा हो, उस भाव से उपर्युक्त बाधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए ।

'राहु' की विभिन्न भावों पर दृष्टि



टिप्पणी—जिस भाव में भी 'राहु' बैठा हो, उस भाव से उपयुक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'केतु' की विभिन्न भावों पर दृष्टि



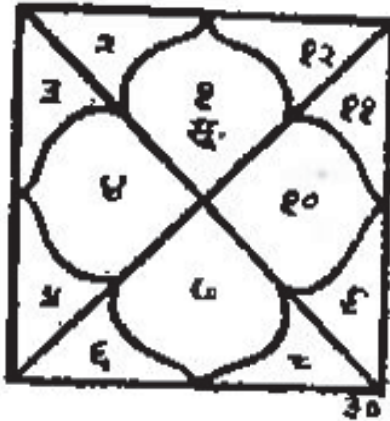
टिप्पणी—जिस भाव में भी 'केतु' बैठा हो, उस भाव से उपयुक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

विशेष टिप्पणी—कुछ ज्ञानियों के मतानुसार राहु तथा केतु की खण्ड दृष्टियाँ एकपाद, द्विपाद तथा त्रिपाद होती ही नहीं हैं। प्राचीन भारतीय ज्योतिष में राहु-केतु की न तो नहीं के अन्तर्गत गणना की गई है और न इनके दृष्टि-सम्बन्ध का ही

उच्चराशिस्थ ग्रहों का फलादेश

उच्चराशिस्थ ग्रहों का संक्षिप्त विशिष्ट फलादेश निम्नानुसार समझना चाहिए। यहाँ प्रदर्शित सभी उदाहरण कुण्डलियाँ मेष लग्न की हैं। अन्य लग्नों की कुण्डलियों के विषय में भी इन्हीं के आधार पर जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

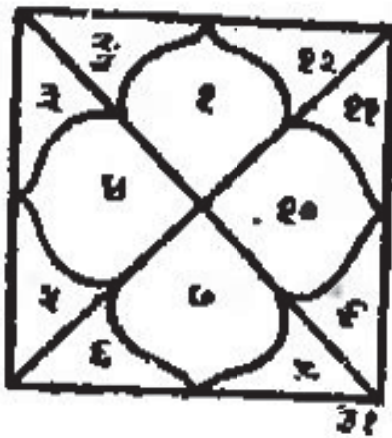
उच्चराशिस्थ 'सूर्य'



उच्चराशिस्थ 'सूर्य'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'सूर्य' उच्च (मेष) राशि का हो, वह गौरवर्ण, भाग्यवान, धैर्यवान, धनी, सम्पन्न, यशस्वी, सुखी, विद्वान्, दण्डाधिकारी, सेनापति, शूरवीर तथा बलवान् होता है।

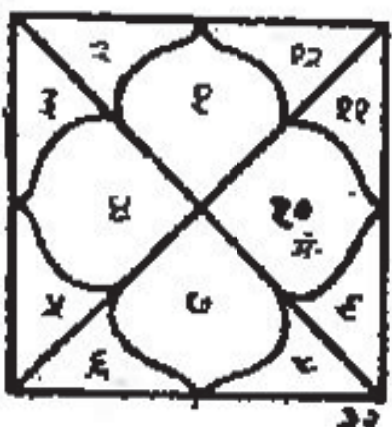
उच्चराशिस्थ 'चन्द्र'



उच्चराशिस्थ 'चन्द्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'चन्द्र' उच्च (वृष) राशि का हो, वह सुखी, यशस्वी, सम्मानित, स्त्री-वियोगी, अलंकार-प्रिय, विलासी, मिष्ठान्न भोजी, चपल स्वभाव, लोकप्रिय तथा उदार हृदय वाला होता है।

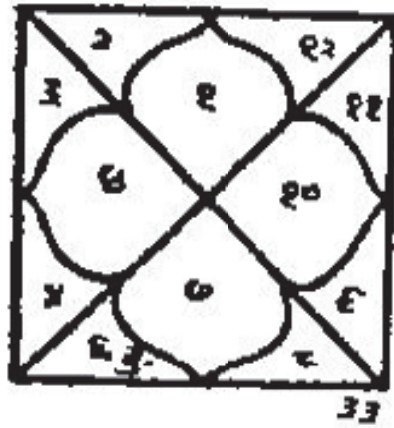
उच्चराशिस्थ 'मंगल'



उच्चराशिस्थ 'मंगल'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'मंगल' उच्च (मकर) राशि का हो, वह उग्र स्वभाव, कस्त्रविद्या में निष्णात, संग्रामप्रवी, साहसी, कर्तव्यनिष्ठ, शूर-वीर, बलिष्ठ, क्रोधी तथा राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला होता है।

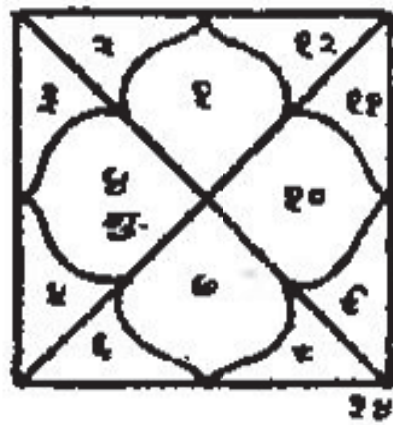
उच्चराशिस्थ 'बुध'



उच्चराशिस्थ 'बुध'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'बुध' उच्च (कन्या) राशि का हो, वह बड़ा विद्वान्, अत्यन्त बुद्धिमान, लेखक, सम्पादक, सुखी, राजा अथवा राजभान्य, शत्रु-नाशक तथा अपने वंश की वृद्धि करने वाला, निष्पाप, धर्मवान्, परन्तु आलसी स्वभाव का होता है।

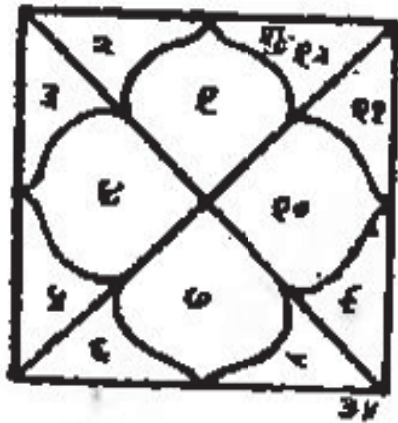
उच्चराशिस्थ 'बुध'



उच्चराशिस्थ 'गुरु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'गुरु' उच्च (कर्क) राशि का हो, वह सुन्दर, विद्वान्, चतुर, मृगोल, सद्गुणी, सुखी, राजप्रिय, मन्त्री, शासक, ऐश्वर्य-शाली, सत्कर्म करने वाला, अनेक संवकों से मुक्त तथा सदाचारी होता है।

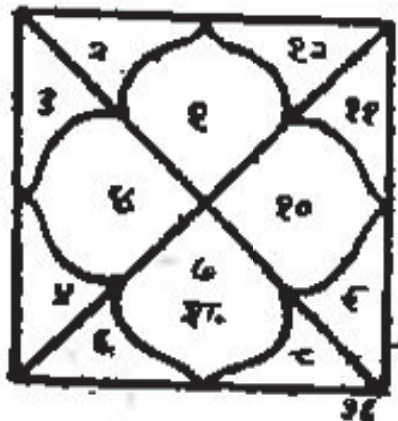
उच्चराशिस्थ 'शुक्र'



उच्चराशिस्थ 'शुक्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शुक्र' उच्च (मीन) राशि का हो, वह मुन्नी, धार्मिक, संगीतप्रिय, कामी, बिलासी, कला-प्रेमी, यन्त्र-पंथ का ज्ञाता, उद्योगी, कवि, संगीतज्ञ तथा यशस्वी होता है।

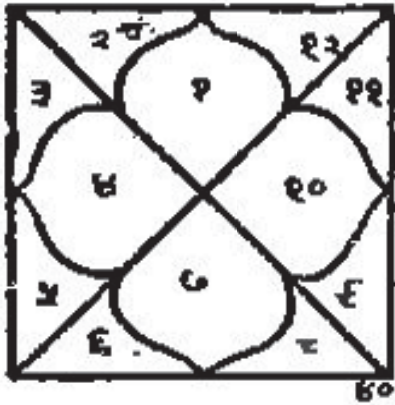
उच्चराशिस्थ 'शनि'



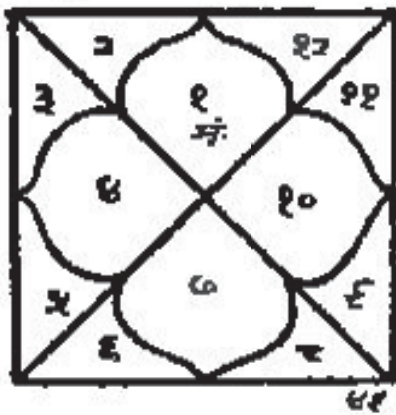
उच्चराशिस्थ 'शनि'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शनि' उच्च (तुला) राशि का हो, वह सुखी, यशस्वी, ऐश्वर्यशाली, पृथ्वीपति, राजा, कृषक, सम्पन्न, धार्मिक, शत्रुओं से मुक्त, साहसी, दुर्गम-करने वाला, लोक-प्रसिद्ध सम्मानित तथा धूर्त होता है।

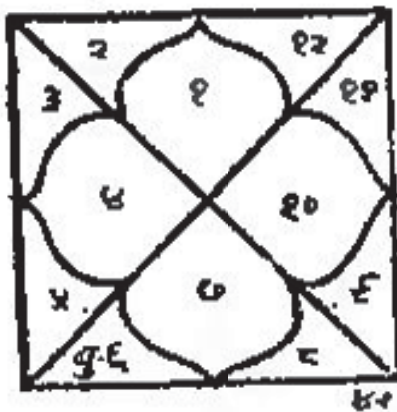
मूल त्रिकोणस्थ 'चन्द्र'



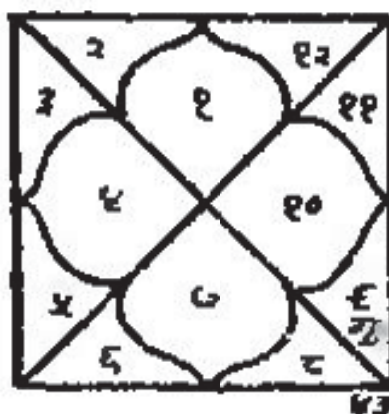
मूल त्रिकोणस्थ 'मंगल'



मूल त्रिकोणस्थ 'बुध'



मूल त्रिकोणस्थ 'शुक्र'



मूल त्रिकोणस्थ 'चन्द्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'चन्द्रमा' मूल त्रिकोणस्थ (वृष राशि के ४ से ३० अंश तक) हो, वह सुन्दर, भाग्यवान, ऐश्वर्यशाली धनवान, भोगी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

मूल त्रिकोणस्थ 'मंगल'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'मंगल' मूल त्रिकोणस्थ (मेघ राशि के १८ अंश तक) हो, वह सामान्य धनी, अपयशी, स्वार्थी, क्रोधी, दुष्ट, निर्दय, लम्पट, खल, चरित्रहीन घृण्य, धमी तथा साहसी होता है।

मूल त्रिकोणस्थ 'बुध'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'बुध' मूल त्रिकोणस्थ (कन्या राशि के १६ से २० अंश तक) हो, वह विद्वान्, राजमान्य, धनवान, प्राध्यापक, चिकित्सक, सैनिक, व्यवसायी, महत्वावादी, विजयी, विनोदी तथा बुद्धिमान होता है।

मूल त्रिकोणस्थ 'शुक्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शुक्र' मूल त्रिकोणस्थ (मिथु राशि के १३ अंश तक) हो, वह तपस्वी, सुखी, भयभीत, सम्मानित, गजप्रिय, भोगी, उच्च अधिकारी, परम बुद्धिमान तथा नगर या मठ का स्वामी होता है।

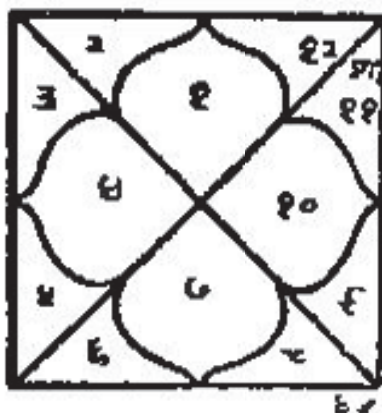
मूलत्रिकोणस्थ 'शुक्र'



मूलत्रिकोणस्थ 'शुक्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शुक्र' मूल त्रिकोणस्थ (तुला राशि के १० अंश तक) हो, वह अनेक पुरस्कारों का विजेता, स्त्रियों को प्रिय, जागीरदार तथा वाहन, भूमि, भवन आदि के सुखों से सम्पन्न, राजों के समान ऐश्वर्यवान्, प्रतापी तथा यशस्वी होता है।

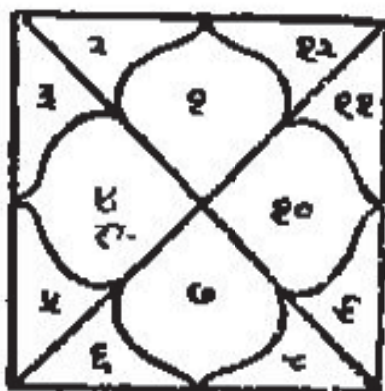
मूलत्रिकोणस्थ 'शनि'



मूलत्रिकोणस्थ 'शनि'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शनि' मूल-त्रिकोणस्थ कुम्भ (राशि के २० अंश तक) हो, वह कर्तव्य-निष्ठ, वैज्ञानिक, अस्त्र-शस्त्रों का निर्माता एवं ज्ञाता, यान-चालक, शूर-वीर, साहसी, सेनापति, कुल का पालन करने वाला, सुखी तथा धन-धान्य से पूर्ण होता है।

मूलत्रिकोणस्थ 'राहु'

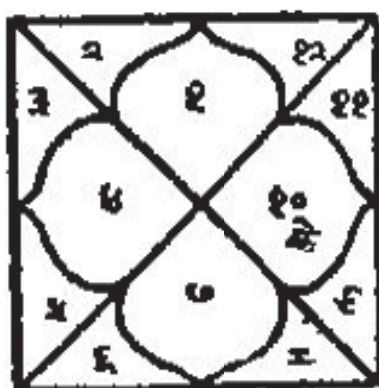


मूलत्रिकोणस्थ 'राहु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'राहु' मूल त्रिकोणस्थ (कर्क राशि में) हो, वह धनी, लोभी तथा वाचाल होता है।

टिप्पणी—प्राचीन ज्योतिषी 'राहु' का मूलत्रिकोण नहीं मानते।

मूलत्रिकोणस्थ 'केतु'



मूलत्रिकोणस्थ 'केतु'

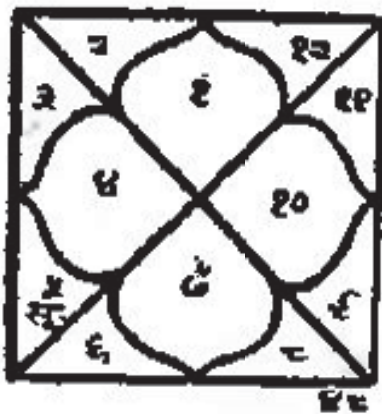
जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'केतु' मूल-त्रिकोणस्थ (मकर राशि में) हो, वह सुखी, धनी, वाचाल, प्रवासी तथा गुप्त युक्तियों वाला होता है।

टिप्पणी—प्राचीन ज्योतिषी 'केतु' का मूलत्रिकोण नहीं मानते।

स्वक्षेत्रस्थ ग्रहों का फलादेश

स्वक्षेत्री अर्थात् अपनी राशि में स्थित विभिन्न ग्रहों का संक्षिप्त फलादेश निम्नानुसार समझना चाहिए। यहाँ प्रदर्शित सभी उदाहरण कुण्डलियाँ भेष लग्न की हैं। अन्य लग्नों की कुण्डलियों के विषय में भी इन्हीं के आधार पर जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

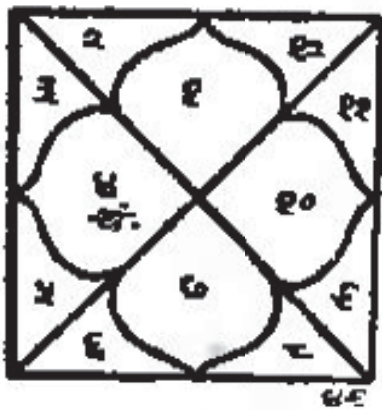
स्वक्षेत्रस्थ 'सूर्य'



स्वक्षेत्रस्थ 'सूर्य'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'सूर्य' स्वक्षेत्री (सिंह राशि का) हो, वह सुन्दर, सुखी, ऐश्वर्यवान्, पराक्रमी, व्यभिचारी, निरन्तर उद्योग तथा परिश्रम करने वाला, धर्मवान, साहसी, तेजस्वी तथा अत्यन्त उग्रस्वभाव का होता है।

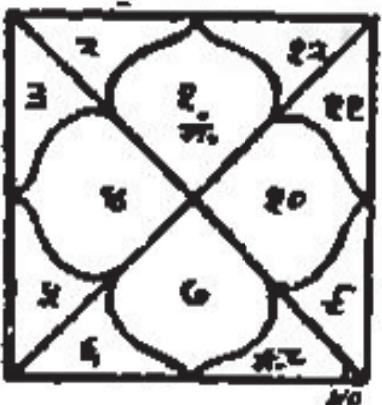
स्वक्षेत्रस्थ 'बुध'



स्वक्षेत्रस्थ 'बुध'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'बुध' स्वक्षेत्री (कनक राशि का) हो, वह सुन्दर, धनी, तेजस्वी, भाग्यवान्, विनम्र, साधु चरित्र, परोपकारी, दयालु, भनस्वी, यशस्वी तथा सहृदय होता है।

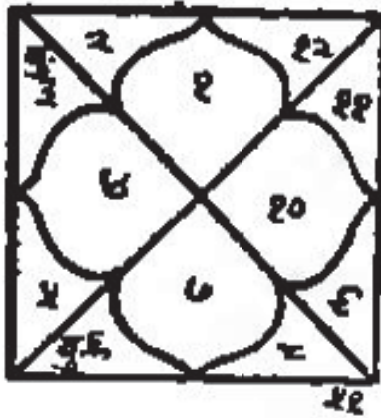
स्वक्षेत्रस्थ 'मंगल'



स्वक्षेत्रस्थ 'मंगल'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'मंगल' स्वक्षेत्री (भेष अथवा शूरेयक राशि का) हो, वह भाहमी, बलवान, यशस्वी, कृषक, भूस्वामी अथवा मैनिक, धनी तथा कथम स्वभाव वाला होता है।

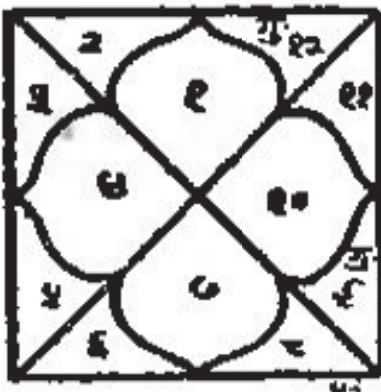
स्वक्षेत्रस्य 'बुध'



स्वक्षेत्रस्य 'बुध'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'बुध' स्वक्षेत्री (कन्या अथवा मिथुन राशि का) हो, वह विद्वान्, बुद्धिमान, सम्पादक, शास्त्रज्ञ, लेखक तथा अनेक कलाओं का ज्ञाता होता है।

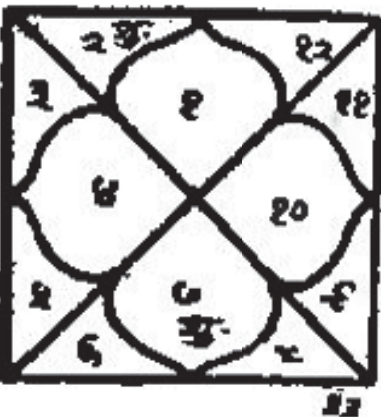
स्वक्षेत्रस्य 'गुरु'



स्वक्षेत्रस्य 'गुरु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'गुरु' स्वक्षेत्री (धनु अथवा मीन राशि का) हो, वह सुखी, शास्त्रज्ञ, वैद्य, काव्य-प्रेमी, कवि, विद्वान्, आत्मवली तथा धनवान् होता है।

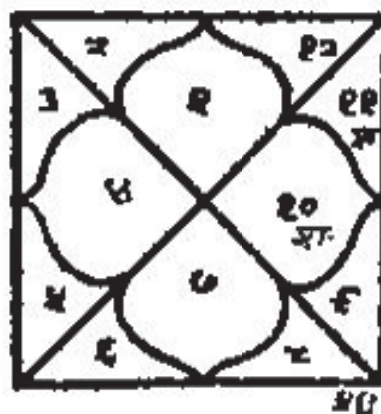
स्वक्षेत्रस्य 'शुक्र'



स्वक्षेत्रस्य 'शुक्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शुक्र' स्वक्षेत्री (वृष अथवा तुला राशि का) हो, वह विद्वान्, गुणी, विचारक, धनवान्, स्वतन्त्र प्रकृति का, कृषि-सम्बन्धी व्यवसाय करने वाला तथा सुन्दर होता है।

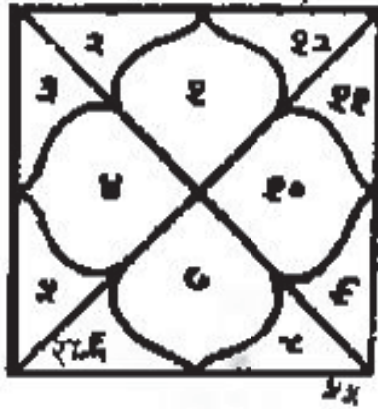
स्वक्षेत्रस्य 'शनि'



स्वक्षेत्रस्य 'शनि'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शनि' स्वक्षेत्री (भकर अथवा कुम्भ राशि का) हो, वह पराक्रमी, कष्ट-सहिष्णु, उग्र स्वभाववाला, सुन्दर नेत्रोंवाला, यशस्वी तथा लोकप्रिय होता है।

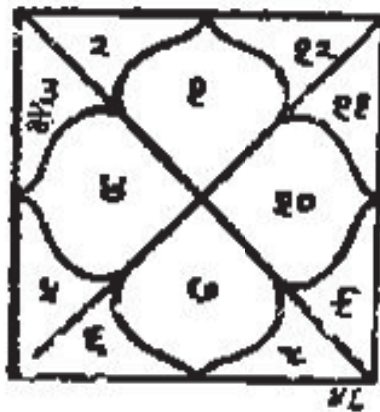
स्वक्षेत्रस्थ 'राहु'



स्वक्षेत्रस्थ 'राहु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली से 'राहु' स्वक्षेत्री (कन्या राशि का) हो, वह सुन्दर, यशस्वी तथा भाग्यवान् होता है।

स्वक्षेत्रस्थ 'केतु'



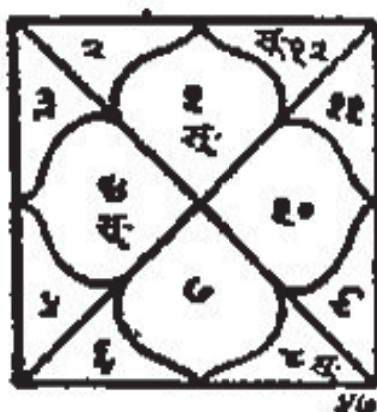
स्वक्षेत्रस्थ 'केतु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'केतु' स्वक्षेत्री (मिथुन राशि का) हो, वह धर्मवान्, कष्ट-महिष्णु, कर्मठ, चिन्ताशील तथा गुप्त-युक्तियों वाला होता है।

मित्र क्षेत्रस्थ ग्रहों का फलादेश

अपने मित्रग्रह की राशि में स्थित विभिन्न ग्रहों का संक्षिप्त फलादेश निम्नानुसार समझना चाहिए। यहाँ प्रदर्शित सभी उदाहरण-कुण्डलियाँ भेष लग्न की हैं। अन्य लगनों की कुण्डलियों के विषय में भी इन्हीं के आधार पर जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

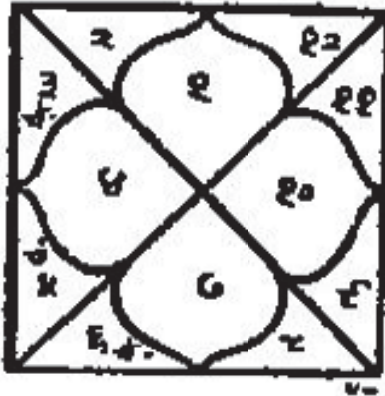
मित्रक्षेत्रस्थ 'सूर्य'



मित्रक्षेत्रस्थ 'सूर्य'

जिस जातक की कुण्डली में 'सूर्य' अपने मित्रग्रहों (चन्द्रमा, मंगल अथवा गुरु) की राशि (कर्क, मेष, धनु, वृश्चिक अथवा मीन) में स्थित हो, वह व्यवहारकुशल, यशस्वी, दानी, सीभाग्यवान्, शास्त्रज्ञ, सुप्रसिद्ध तथा दृढ़मैत्री करने वाला होता है।

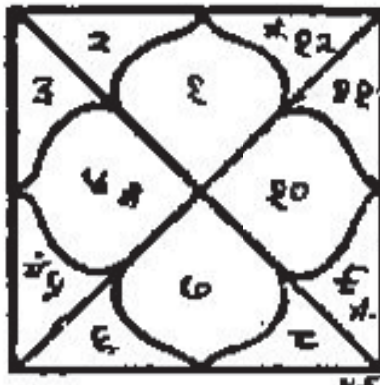
मित्रक्षेत्रस्थ 'चन्द्र'



मित्रक्षेत्रस्थ 'चन्द्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'चन्द्रमा' अपने मित्रग्रहों (सूर्य अथवा बुध) की राशि (सिंह, कन्या अथवा मिथुन) में बैठा हो, वह सुखी, धनी, गुणी, चतुर तथा भाग्यवान होता है।

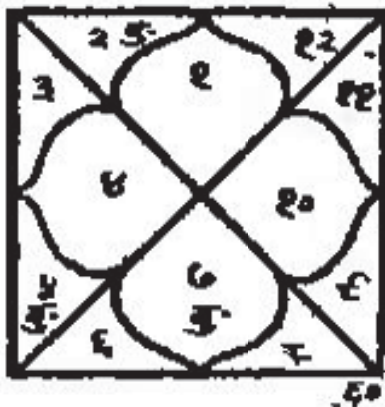
मित्रक्षेत्रस्थ 'मंगल'



मित्रक्षेत्रस्थ 'मंगल'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'मंगल' अपने मित्र ग्रहों (सूर्य, चन्द्र अथवा गुरु) की राशि (सिंह, कर्क, धनु अथवा मीन) में बैठा हो, वह धनी, मिल-प्रेमी, तेजस्वी, पराक्रमी, शक्तिशाली, शास्त्र द्वारा भीतिकोपाजन करने वाला तथा उग्र स्वभाव वाला होता है।

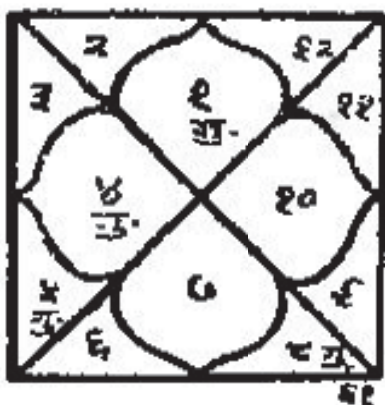
मित्रक्षेत्रस्थ 'बुध'



मित्रक्षेत्रस्थ 'बुध'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'बुध' अपने मित्रग्रहों (सूर्य अथवा शुक) की राशि (सिंह, वृष अथवा तुला) में बैठा हो, वह शास्त्रज्ञ, विनोदी-स्वभाव का, कार्यदक्ष, सुन्दरस्वरूप वाला, यशस्वी, ज्ञानी तथा धनवान् होता है।

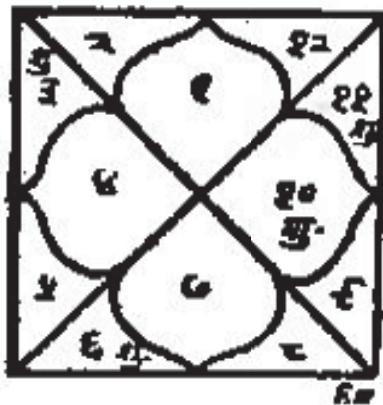
मित्रक्षेत्रस्थ 'गुरु'



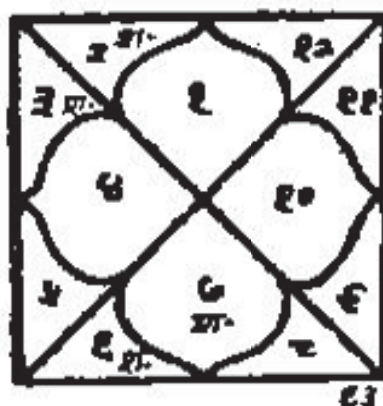
मित्रक्षेत्रस्थ 'गुरु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'गुरु' अपने जिस ग्रहों (सूर्य, चन्द्र अथवा मंगल) की राशि (सिंह, कर्क, मेष अथवा वृश्चिक) में बैठा हो, वह सुखी, उन्नतिशील, बुद्धिमान, प्रसिद्ध यशस्वी, सत्कर्म करने वाला तथा श्रेष्ठ लोगों द्वारा पूजित होता है।

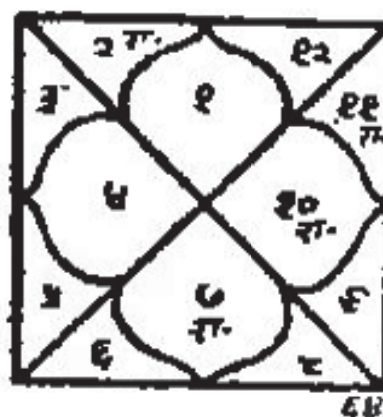
मित्रक्षेत्रस्थ 'शुक्र'



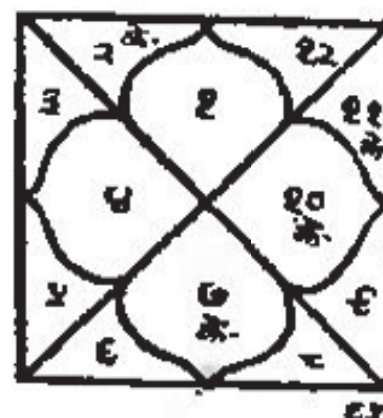
मित्रक्षेत्रस्थ 'शनि'



मित्रक्षेत्रस्थ 'राहु'



मित्रक्षेत्रस्थ 'केतु'



मित्रक्षेत्रस्थ 'शुक्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शुक्र' अपने मित्र ग्रहों (बृष अथवा शनि) की राशि (कन्या, मिथुन, मकर अथवा कुम्भ) में बैठा हो, वह सुखी, गुणो, सन्तानिदान, धनवान तथा बन्धु-बान्धवों को प्रिय होता है।

मित्रक्षेत्रस्थ 'शनि'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शनि' अपने मित्र ग्रहों (बृष अथवा शुक्र) की राशि (कन्या, मिथुन, बृष अथवा तुला) में बैठा हो, वह सुखी, धनी, परान्न-भोजी, प्रेमी-स्वभाव का, कुकर्म करने वाला तथा कर्मो-कमी दुःख पाने वाला होता है।

मित्रक्षेत्रस्थ 'राहु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'राहु' अपने मित्र ग्रहों (शुक्र अथवा शनि) की राशि (बृष, तुला, मकर अथवा कुम्भ) में बैठा हो, वह धनी, गुप्त योजना-कर्ता, सुखी, मिथ्यावादी, बुद्धिमान, पराक्रमी, गारुड तथा कुकर्म-गत होता है।

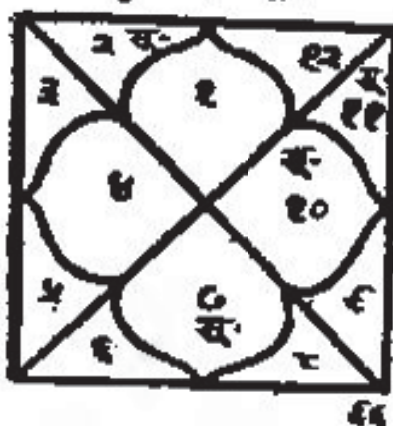
मित्रक्षेत्रस्थ 'केतु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'केतु' अपने मित्र ग्रहों (शुक्र अथवा शनि) की राशि (बृष, तुला, मकर अथवा कुम्भ) में बैठा हो, वह भ्रमणशील, सुखी तथा परोपकारी होता है।

शत्रुक्षेत्रस्थ ग्रहों का फलादेश

अपने शत्रु की राशि में स्थित विभिन्न ग्रहों का संक्षिप्त फलादेश निम्नानुसार समझना चाहिए। यहाँ प्रदर्शित सभी उदाहरण-कुण्डलियाँ मेष लग्न की हैं। लग्न लग्नों की कुण्डलियों के विषय में भी इन्हीं के आधार पर जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। जिस जातक की जन्मकुण्डली में जितने अधिक ग्रह शत्रुक्षेत्री होते हैं, वह उतना ही दुःखी, दरिद्र, भ्राम्यहीन, चिन्तित तथा निराश रहता है। यदि तीन या इससे अधिक ग्रह शत्रुक्षेत्री हों, तो वह जीवनभर दुःखी रहकर अन्तिम भाग में सुख पाता है।

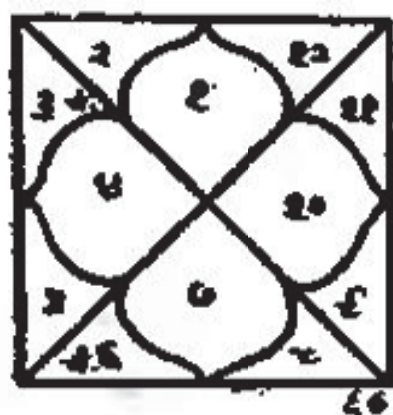
शत्रुक्षेत्रस्थ 'सूर्य'



शत्रुक्षेत्रस्थ 'सूर्य'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'सूर्य' अपने शत्रु (शुक्र अथवा मणि) की राशि (वृष, तुला, मकर अथवा कुम्भ) में बैठा ही, वह सदैव दुःख पाने वाला, नौकरी करने वाला, विषयों से पीड़ित तथा नीच स्वभाव का होता है।

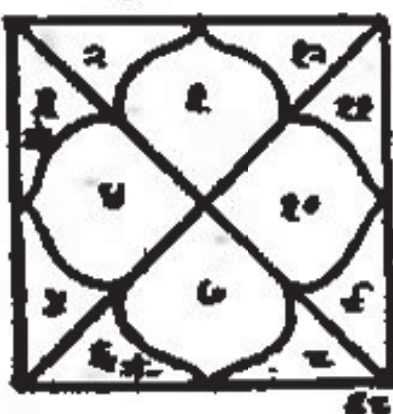
शत्रुक्षेत्रस्थ 'चन्द्र'



शत्रुक्षेत्रस्थ 'चन्द्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'चन्द्रमा' अपने शत्रु (राहु अथवा केतु) की राशि (कन्या अथवा मिथुन) में बैठा ही, वह हृदयरोगी तथा अपनी माता के कारण दुःख पाने वाला होता है।

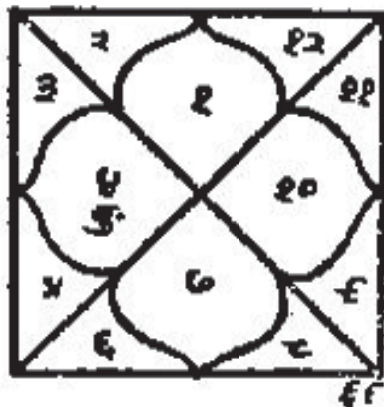
शत्रुक्षेत्रस्थ 'मंगल'



शत्रुक्षेत्रस्थ 'मंगल'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'मंगल' अपने शत्रु (बुध) की राशि (मिथुन अथवा कन्या) में बैठा हो, वह विकलांग, व्याकुल, बीन-मलीन तथा स्त्रियों के शक्त में रहने वाला होता है।

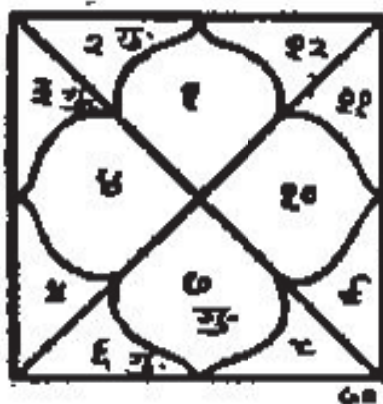
शत्रुक्षेत्रस्थ 'बुध'



शत्रुक्षेत्रस्थ 'बुध'

जिस जातक को जन्मकुण्डली में 'बुध' अपने शत्रु ग्रह (चन्द्रमा) की राशि (ककं) में बैठा हो, वह सामान्य सुख पाने वाला, वासनाशील, कर्तव्यहीन, दुःखी, मूर्ख परन्तु अपनी बात का घनी होता है।

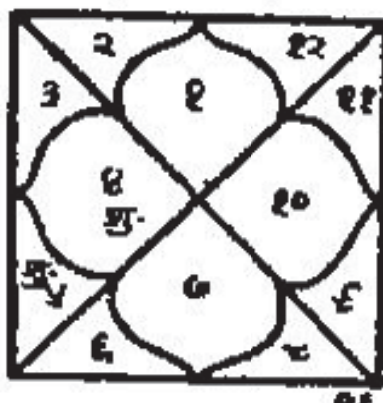
शत्रुक्षेत्रस्थ 'गुरु'



शत्रुक्षेत्रस्थ 'गुरु'

जिस जातक को जन्मकुण्डली में 'गुरु' अपने शत्रु (शुक्र अथवा बुध) की राशि (वृष, तुला, कन्या अथवा मियुन) में बैठा हो, वह भाग्यशाली, श्रेणी, अनुर, क्षुधातुर तथा अपनी आजीविका को स्वयं ही नष्ट कर लेने वाला होता है।

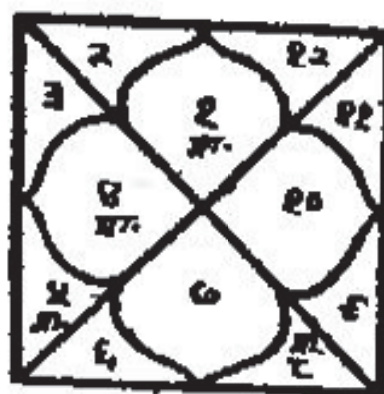
शत्रुक्षेत्रस्थ 'शुक्र'



शत्रुक्षेत्रस्थ 'शुक्र'

जिस जातक को जन्मकुण्डली में 'शुक्र' अपने शत्रु (बुध अथवा चन्द्रमा) की राशि (सिंह अथवा ककं) में बैठा हो, वह दास्य-वृत्ति (नौकरी) करके अपनी आजीविका का उपाजन करने वाला, दुःखी तथा दुर्बल होता है।

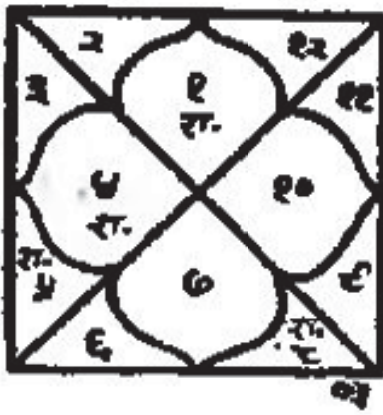
शत्रुक्षेत्रस्थ 'शनि'



शत्रुक्षेत्रस्थ 'शनि'

जिस जातक को जन्मकुण्डली में 'शनि' अपने शत्रु (सूर्य, चन्द्र अथवा मंगल) की राशि (सिंह, ककं, मेष अथवा वृश्चिक) में बैठा हो, वह किसी-न-किसी कारण से निरंतर चिन्तित एवं दुःखी बना रहने वाला, मलिन-हृदय वाला, रोगी तथा धनहीन होता है।

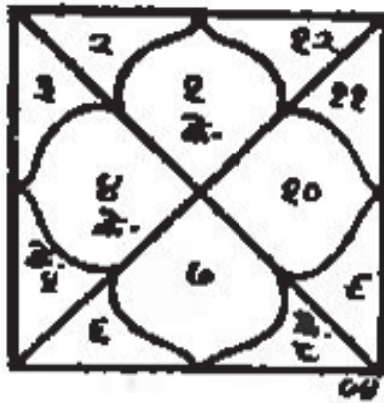
शत्रुक्षेत्रस्थ 'राहु'



शत्रुक्षेत्रस्थ 'राहु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'राहु' अपने शत्रु (सूर्य, चन्द्र, अथवा मंगल) की राशि (सिंह, कर्क, मेष अथवा वृश्चिक) में बैठा हो, वह शत्रुक्षेत्री शनि जैसा फल प्राप्त करता है। सूर्य अथवा चन्द्रमा की राशि पर बैठा हो तो उनके प्रभाव को अधिक हानि पहुँचाता है।

शत्रुक्षेत्रस्थ 'केतु'



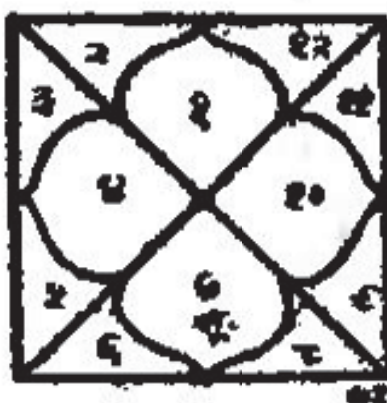
शत्रुक्षेत्रस्थ 'केतु'

जिस जातक को जन्मकुण्डली में 'केतु' अपने शत्रु (सूर्य, चन्द्र अथवा मंगल) की राशि (सिंह, कर्क, मेष अथवा वृश्चिक) में बैठा हो, वह शत्रुक्षेत्री शनि जैसा फल प्राप्त करता है। सूर्य अथवा चन्द्रमा की राशि पर बैठा हो तो उनके प्रभाव में बहुत कमी ला देता है।

नीच राशिस्थ ग्रहों का फलादेश

नीच राशिस्थ विभिन्न ग्रहों का सक्षिप्त फलादेश निम्नानुसार समझना चाहिए। यहाँ प्रदर्शित सभी उदाहरण-कुण्डलियाँ मेष लग्न की हैं। अन्य लगनों से कुण्डलियों के विषय में भी इन्हीं के आधार पर जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। जिस जातक की जन्मकुण्डली में जितने अधिक ग्रह नीच राशिस्थ होते हैं, वह उतना ही अशुभ फल प्राप्त करता है। यदि तीन या अधिक ग्रह नीच राशि के हों तो वह जातक मूर्ख होता है।

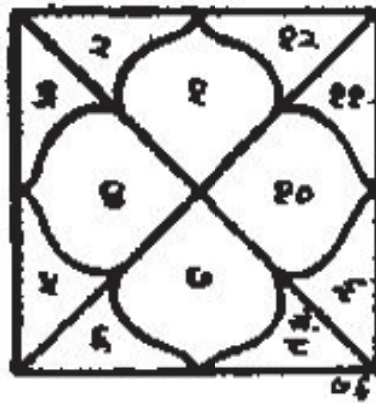
नीचराशिस्थ 'सूर्य'



नीचराशिस्थ 'सूर्य'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'सूर्य' नीच राशि (तुला) का हो, वह बन्धु-सेवी, पाप कर्म करने वाला, कटुभाषी, आत्म-बलहीन, किसी पर विश्वास न करने वाला, अल्पकेशी तथा विकृत दाँतों वाला होता है।

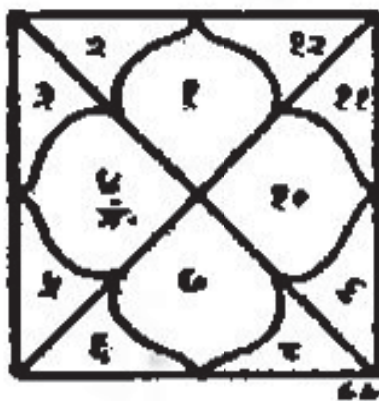
नीचराशिस्य 'चन्द्र'



नीचराशिस्य 'चन्द्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'चन्द्रमा' नीच राशि (वृश्चिक) का हो, वह नीच प्रकृति वाला, रोगी, अल्पधनी, कुबुद्धि, बकवादी, संशयालु तथा घूर्तों एवं नाचने तथा बाला बजाने वालों की संगति करने वाला होता है।

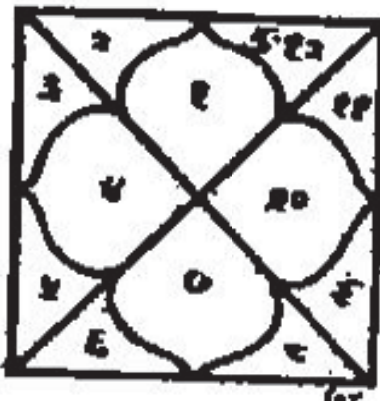
नीचराशिस्य 'मंगल'



नीचराशिस्य 'मंगल'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'मंगल' नीच राशि (कर्क) का हो, वह नीच स्वभाव का, कृतघ्न, चोर, दुष्ट हृदय वाला, रात्रि में भ्रमण करने वाला, परन्तु बुद्धिमान, गुणवान तथा धनवान होता है।

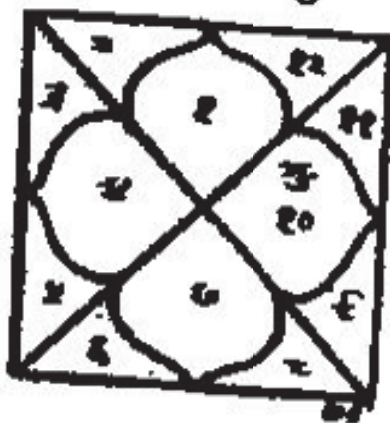
नीचराशिस्य 'बुध'



नीचराशिस्य 'बुध'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'बुध' नीचराशि (मीन) का हो, वह बन्धु-विरोधी, चंचल-स्वभाव वाला तथा उप प्रकृति वाला, क्षुद्र बुद्धि एवं सन्तान-विहीन होता है। उसकी पत्नी सुशीला तथा पतिव्रता होती है।

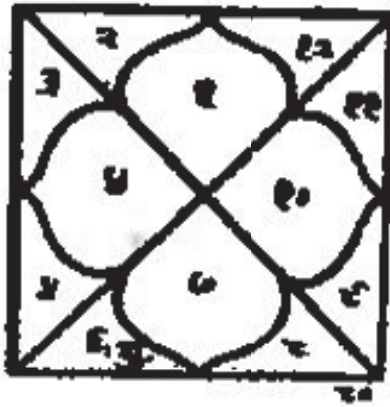
नीचराशिस्य 'शुक्र'



नीचराशिस्य 'शुक्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शुक्र' नीचराशि (मकर) का हो, वह अपयश प्राप्त करने वाला, अपवादी, दुष्ट होता है। परन्तु इसके भाग्य ही कुछ भोगने वाला, बहुत से लोगों का भरण-पोषण करने वाला, परदेश में रहने वाला तथा फल-फूस एवं सुन्दर स्त्री से भुक्त भी होता है।

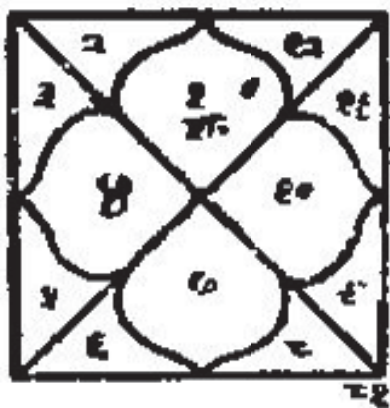
नीचराशिस्थ 'शुक्र'



नीचराशिस्थ 'शुक्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शुक्र' नीचराशि (कन्या) का हो, वह किसी-किसी कारणवश निरन्तर दुःखी बना रहने वाला, विनोदी, कौतुकी, चतुर, पंडित तथा सब कलाओं में कुशल होता है।

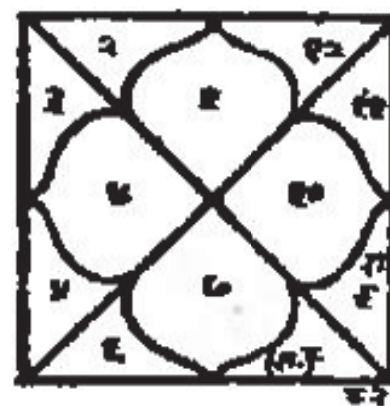
नीचराशिस्थ 'शनि'



नीचराशिस्थ 'शनि'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शनि' नीचराशि (मेष) का हो, वह स्वतन्त्र-विचारक, बन्धु-बान्धवों से युक्त, स्वेच्छाचारी, दृढ़ शरीर वाला, उच्च अधिकारी, ग्राम आदि का अधिपति, सुखी, सुन्दर तथा चंचल स्वभाव का होता है। मत्तान्तर से वह दुःख एवं दरिद्रता भी भोगता है।

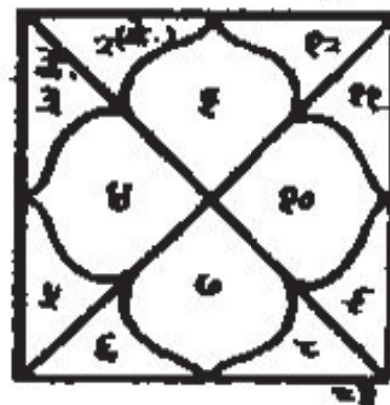
नीचराशिस्थ 'राहु'



नीचराशिस्थ 'राहु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'राहु' नीचराशि (घनु, मत्तान्तर से बृश्चिक) का हो, वह क्रूर, पापी, दुर्बुद्धि, बन्धु-बान्धवों से हीन, अल तथा दुष्ट हृदय वाला होता है।

नीचराशिस्थ 'केतु'



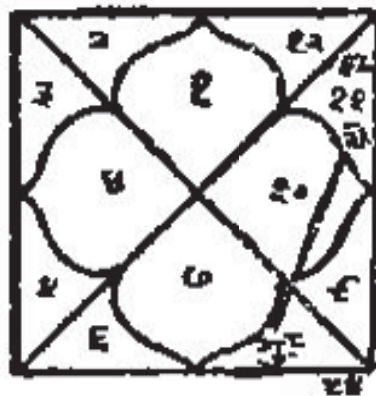
नीचराशिस्थ 'केतु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'केतु' नीचराशि (मिथुन, मत्तान्तर से बृष) का हो तो वह सुशील, दुःखी, काना, कामी, शत्रुघ्न तथा स्त्री-विहीन होता है।

ग्रहों का दृष्टि-सम्बन्ध और स्थान-सम्बन्ध

ग्रहों के दृष्टि सम्बन्ध दो प्रकार के होते हैं—(१) सामान्य दृष्टि सम्बन्ध और (२) पारस्परिक दृष्टि सम्बन्ध। इनके विषय में नीचे निम्ने अनुसार संज्ञना चाहिए—

सामान्य दृष्टि-सम्बन्ध

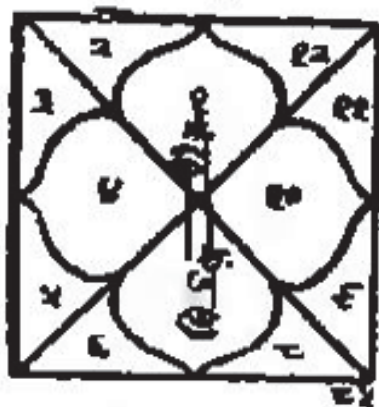


सामान्य दृष्टि-सम्बन्ध

जब कोई ग्रह अपने स्थान से किसी अन्य स्थान (भाव) की देखता है अथवा उस स्थान (भाव) में बैठे हुए किसी ग्रह को देखता है तो उसे 'सामान्य दृष्टि-सम्बन्ध' कहा जाता है।

उदाहरण कृण्डली में गुरुदश भाव में बैठा हुआ शनि अपने स्थान से दसवें अष्टम भाव में बैठे हुए गुरु को देख रहा है, अतः इसे गुरु के साथ शनि का 'सामान्य दृष्टि-सम्बन्ध' कहा जाएगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के 'सामान्य दृष्टि-सम्बन्ध' के विषय में भी समझ लेना चाहिए। कौन-सा ग्रह अपने स्थान से किन-किन भावों को दित दृष्टियों से देखता है, इस विषय का वर्णन पहले ही किया जा चुका है।

पारस्परिक दृष्टि-सम्बन्ध



पारस्परिक दृष्टि-सम्बन्ध

जब कोई दो ग्रह अलग-अलग भावों में बैठे हुए एक दूसरे के ऊपर अपनी दृष्टि डालते हैं तो उसे उन ग्रहों का 'पारस्परिक दृष्टि-सम्बन्ध' कहा जाता है।

उदाहरण कृण्डली में मकर में बैठा हुआ मंगल सप्तम भाव में बैठे हुए शनि से अपनी पूर्ण दृष्टि डाल रहा है तथा सप्तम भाव में बैठा हुआ शनि मकर में बैठे हुए मंगल की पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। अतः यह दोनों ग्रहों का पारस्परिक दृष्टि-सम्बन्ध हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के बारे में भी समझ लेना चाहिए।

स्थान-सम्बन्ध



स्थान-सम्बन्ध

जब कोई दो ग्रह अलग-अलग एक दूसरे के स्थान (भाव) में बैठे हों, तो उसे उन ग्रहों का 'स्थान-सम्बन्ध' कहा जाएगा।

उदाहरण कृण्डली में चन्द्रमा की कर्क राशि में गुरु बैठा है तथा गुरु की मेष राशि में चन्द्रमा बैठा है। इस प्रकार ये दोनों ग्रह एक-दूसरे के स्थान में बैठे हैं।

फलतः इनमें 'स्थान-सम्बन्ध' हो गया। इसी भाँति अन्य ग्रहों के 'स्थान-सम्बन्ध' के बारे में भी समझ लेना चाहिए।

ग्रहों का जातक के जीवन पर प्रभाव

उक्त 'सामान्य दृष्टि-सम्बन्ध', 'पारस्परिक दृष्टि-सम्बन्ध' तथा 'स्थान-सम्बन्ध' के कारण ग्रह अपने गुण-कर्म-स्वभाव आदि का एक दूसरे से मिलकर, जातक के जीवन पर प्रभाव डालते हैं। तात्पर्य यह कि ऐसे सम्बन्धों से एक ग्रह का स्वभाव दूसरे में सम्मिलित हो जाता है। ऐसी स्थिति में, यदि दोनों ग्रह परस्पर 'मित्र' हुए तो वे जातक के जीवन पर अपना विशेष प्रभाव प्रदर्शित करेंगे, यदि 'शत्रु' हुए तो एक-दूसरे के विपरीत प्रभाव डालेंगे, और यदि 'सम' हुए तो संयुक्त सामान्य-प्रभाव डालेंगे।

ग्रहों के उक्त पारस्परिक सम्बन्धों का विचार करते समय उनकी उच्च-नीच, स्वक्षेत्री, शत्रुक्षेत्री आदि स्थितियों पर भी विचार करना आवश्यक है। उन सबके समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलेगा, वही सच्चा फलादेश होगा।

लग्न और राशि

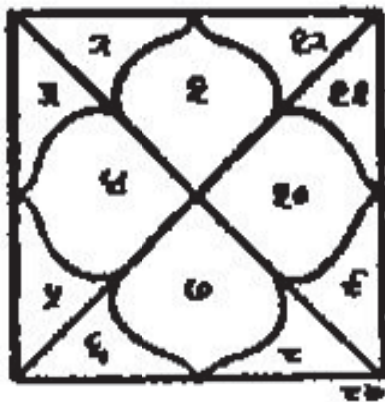
जन्मकुण्डली में द्वादश भाव होते हैं। जातक के जन्म के समय जो राशि आकाशमण्डल में दिखाई दे रही होती है, उसी को 'लग्न' मान कर कुण्डली के प्रथम भाव में स्थापित किया जाता है, शेष राशियों को क्रमशः उससे आगे के भावों में स्थापित किया जाता है। उदाहरण के लिए यदि किसी जातक का जन्म आकाशमण्डल में सिंह राशि के दिग्दर्शन के समय हुआ तो सिंह राशि के सूचक अंक ५ को जन्म-कुण्डली के प्रथम भाव में लिखा जाएगा और वह कहा जाएगा कि जातक का जन्म सिंह लग्न में हुआ है। उसी समय भचक्र में चन्द्रमा यदि सिंह राशि में ही भ्रमण कर रहा होगा तो चन्द्रमा को भी कुण्डली के पहले भाव अर्थात् लग्न वाले खाने में ही लिखा जाएगा और यह कहा जाएगा कि जातक का जन्म सिंह लग्न तथा सिंह राशि में ही हुआ है। परन्तु यदि चन्द्रमा उस समय भचक्र की तुला राशि में भ्रमण कर रहा होगा तो चन्द्रमा की कुण्डली के तीसरे खाने अर्थात् अंक ७ वाली जगह में लिखा जायगा और यह कहा जायगा कि जातक का जन्म सिंह लग्न में तथा तुला राशि में हुआ है।

लग्न और राशि के इस अन्तर को खूब अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। जातक की जन्मकुण्डली के प्रथम भाव में जिस राशि का अंक होगा, उसे जातक को 'लग्न' कहा जाएगा तथा जिस भाव में चन्द्रमा की स्थिति होगी, उसे जातक की 'राशि' कहा जाएगा।

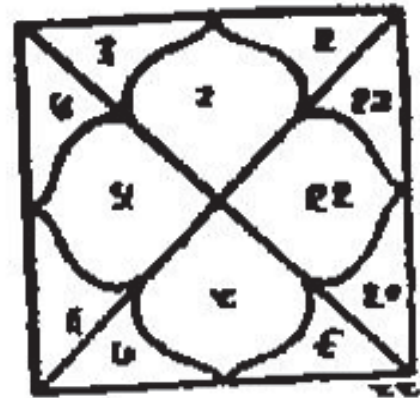
ध्याये १२ उदाहरण कुण्डलियों के माध्यम से वह बताया बना है कि विभिन्न लग्नों की कुण्डलियों का स्वरूप कैसा होता है।

कुण्डली में कौन-सा ग्रह कहां बैठेगा, इसका निर्णय जातक के जन्म के समय तथा उस समय भचक्र में विभिन्न ग्रहों की स्थिति के अनुसार पञ्चांग के आधार पर किया जाता है। इस विषय के सम्यक्-ज्ञान के लिए या तो किसी ज्योतिषी से सम्पर्क करना चाहिए अथवा हमारी लिखी पुस्तक 'ज्योतिष शास्त्र' का अध्ययन करना चाहिए।

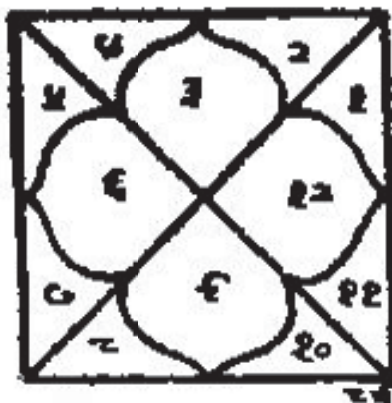
• 'मेष' लग्न की कुण्डली



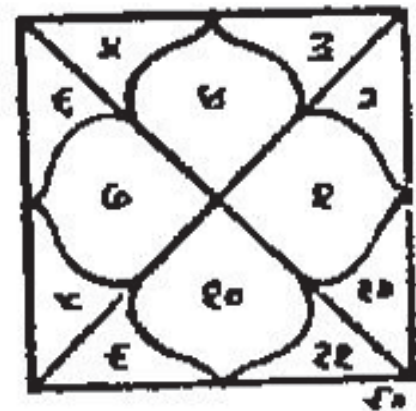
'वृष' लग्न की कुण्डली



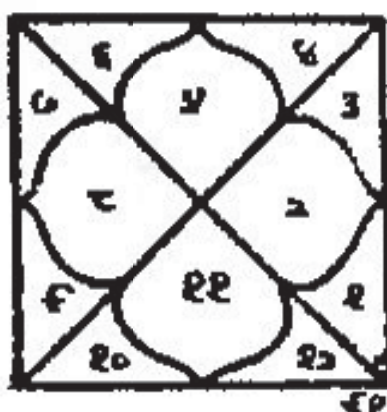
'मिथुन' लग्न की कुण्डली



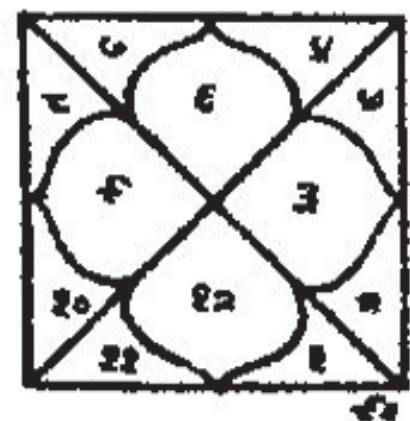
'कर्क' लग्न की कुण्डली



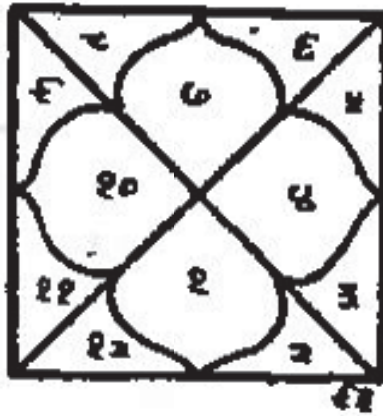
'मिह' लग्न की कुण्डली



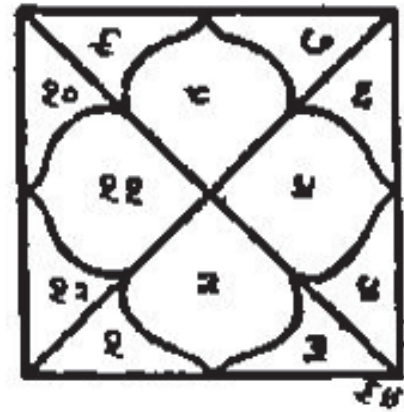
'कन्या' लग्न की कुण्डली



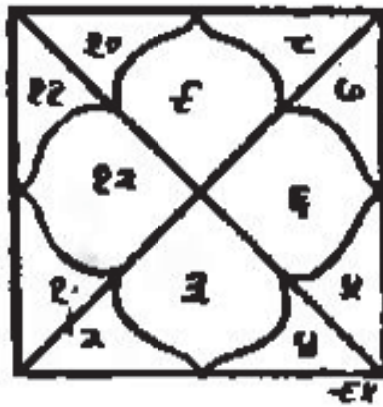
'तुला' लग्न की कुण्डली



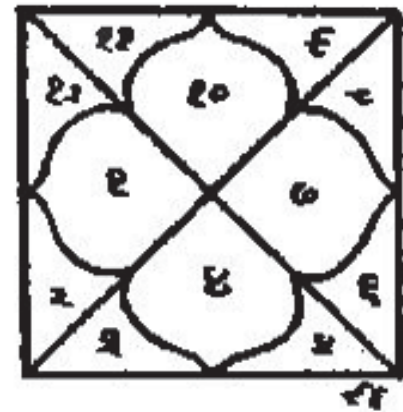
'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली



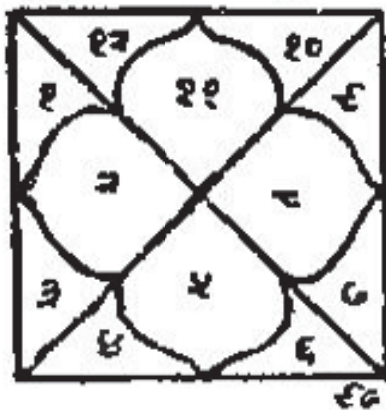
'धनु' लग्न की कुण्डली



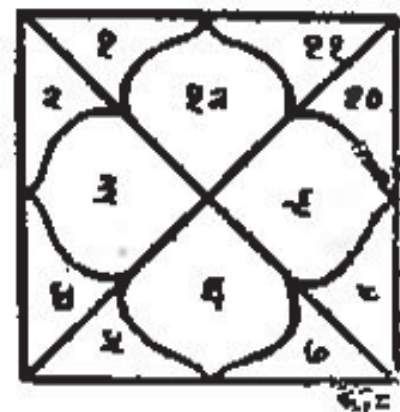
'मकर' लग्न की कुण्डली



'कुम्भ' लग्न की कुण्डली

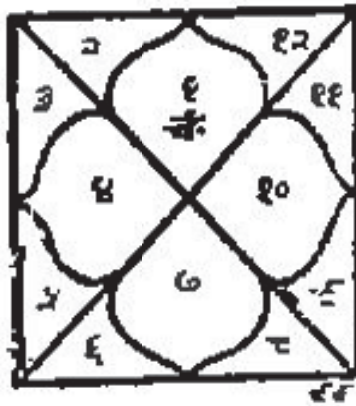


'मीन' लग्न की कुण्डली

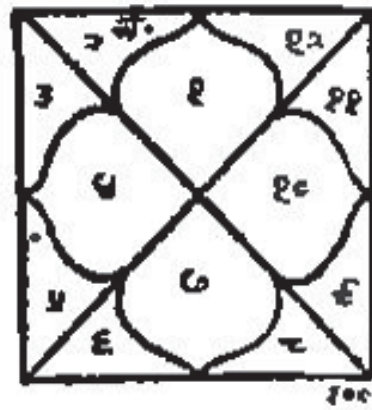


विभिन्न राशियों की कुण्डली के स्वरूप की नीचे प्रदर्शित उदाहरण कुण्डलियों के आधार पर समझ लेना चाहिए। ये सभी कुण्डलियाँ भेष लग्न की हैं, परन्तु इनमें 'चन्द्रमा' की स्थिति को अलग-अलग भावों में दिखाया गया है। जिन कुण्डली के जिस भाव में चन्द्रमा बैठा है उस भाव में स्थित राशि ही जातक की जन्मकालीन राशि माने जायेंगी। इन कुण्डलियों के आधार पर अन्य लग्न वाली कुण्डलियों से भी राशि का निश्चय किया जा सकता है।

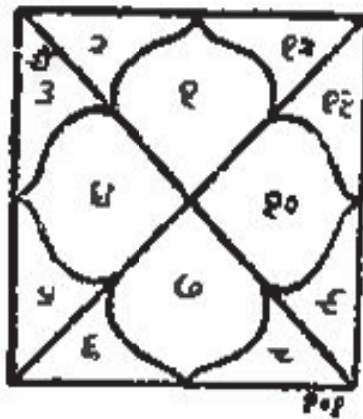
'मिथ' राशि की कुण्डली



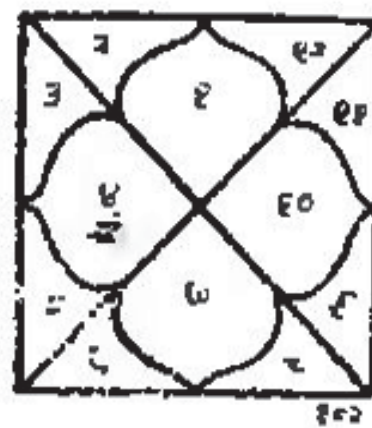
'बृष' राशि की कुण्डली



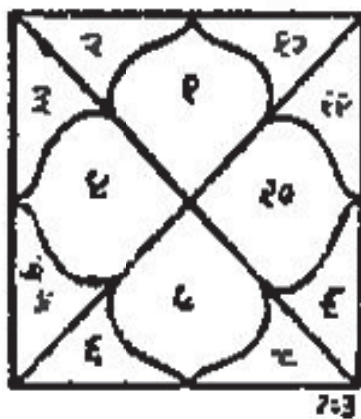
'मिथुन' राशि की कुण्डली



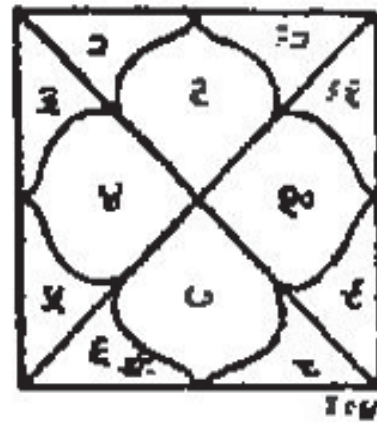
'कक' राशि की कुण्डली



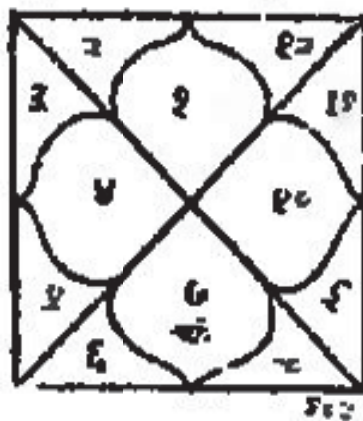
'सिंह' राशि की कुण्डली



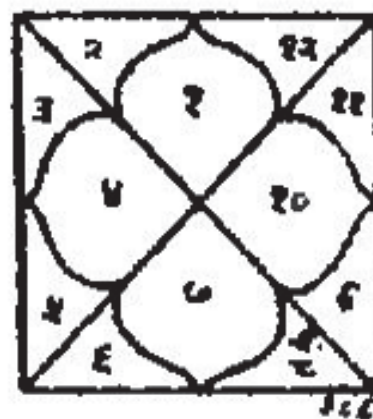
'कन्या' राशि की कुण्डली



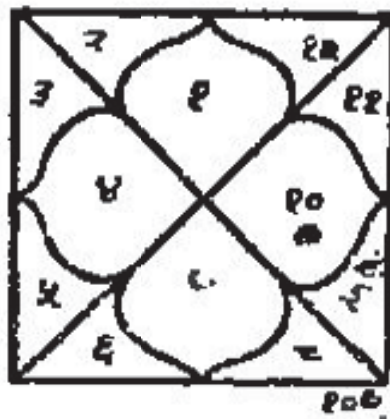
'मृगश' राशि की कुण्डली



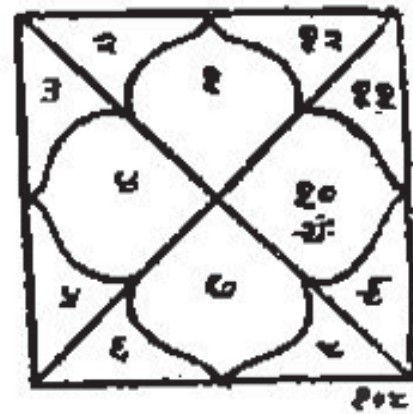
'दशिनक' राशि की कुण्डली



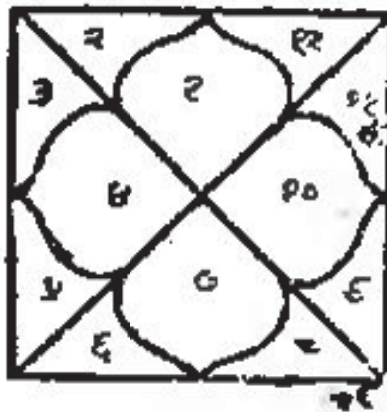
'धनु' राशि की कुण्डली



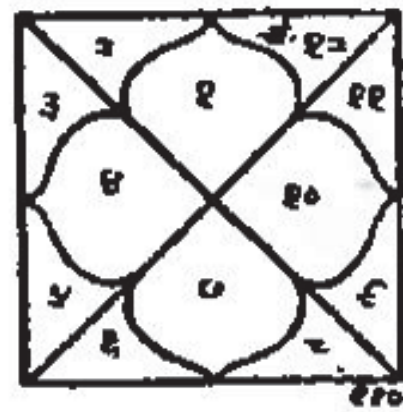
'मकर' राशि की कुण्डली



'कुम्भ' राशि की कुण्डली



'मीन' राशि की कुण्डली



स्थानाधिपति

जासक की जन्मकुण्डली में जो राशि जिस स्थान (भाव या खाने) में स्थित होती है, उस राशि का स्वामी ग्रह ही उस स्थान भाव का अधिपति अर्थात् 'स्थानाधिपति' होता है। जैसे—किसी कुण्डली के चतुर्थभाव में सिंह राशि (५) स्थित है तो सिंह राशि के स्वामी 'सूर्य' की ही उस स्थान अर्थात् भाव का अधिपति अर्थात् 'सुखेश' माना जायेगा, फिर चाहे वह सूर्य कुण्डली के अन्य किसी भी भाव में स्थित क्यों न हो। मान लीजिए कि वह चतुर्थभाव में न रह कर दशमभाव में बैठा है तो वह कहा जायेगा कि 'चतुर्थेश या मुखेश राज्य अर्थात् दशमभाव में चला गया है।' इसी प्रकार सब भावों, राशियों तथा ग्रहों के सम्बन्ध में समझ कर किस भाव का स्थानाधिपति कहाँ बैठा है, इसकी जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

स्थानाधिपतियों के नाम

विभिन्न भावों के स्वामियों तो निम्नलिखित नामों से पुकारा जाता है :

१. प्रथम भाव के स्वामी को—प्रथमेश, लग्नेश, देहाधीश ।
२. द्वितीयभाव के स्वामी को—द्वितीयेश, धनेश, द्रव्येश ।
३. तृतीयभाव के स्वामी की—तृतीयेश, सहजेश, पराक्रमेश ।

४. चतुर्थभाव के स्वामी को—चतुर्थेश, सुश्लेश, सुहृदेश ।
५. पंचमभाव के स्वामी को—पंचमेश, सन्तानेश, विद्येश ।
६. षष्ठ भाव के स्वामी को—षष्ठेश, द्वेषेश, शत्रवेश ।
७. सप्तमभाव के स्वामी को—सप्तमेश, जायेश, मदनेश ।
८. अष्टमभाव के स्वामी को—अष्टमेश, जीवनेश, कालेश ।
९. नवमभाव के स्वामी को—नवमेश, भाग्येश, धर्मेश ।
१०. दशमभाव के स्वामी को—दशमेश, राज्येश, कर्मेश ।
११. एकादशभाव के स्वामी को—एकादशेश, लाभेश, उत्तमेश ।
१२. द्वादशभाव के स्वामी को—द्वादशेश, व्ययेश, दण्डेश ।

विशिष्ट ज्ञातव्य-विषय

१. भावों की गणना लग्न से आरंभ की जाती है । लग्न को पहला भाव (घर) मान कर क्रमशः उसके बाईं ओर की गिनते हुए द्वादश भावों की गणना करनी चाहिए । लग्न कोई भी क्यों न हो, इससे क्रमिक-गणना में कोई अन्तर नहीं आता ।

२. जन्मकुण्डली के द्वादश भावों में स्थित विभिन्न राशियों के भावों की उनके लिए निश्चित अर्थों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है । जैसे—मेष के लिए १, वृष के लिए २, मियुन के लिए ३, कर्क के लिए ४, सिंह के लिए ५, कन्या के लिए ६, तुला के लिए ७, वृश्चिक के लिए ८, धनु के लिए ९, मकर के लिए १०, कुम्भ के लिए ११ और मीन के लिए १२ ।

३. उच्चस्थ, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री अथवा उच्चक्षेत्र एवं स्वक्षेत्र पर दृष्टि डालने वाले ग्रह जिस स्थान पर बैठे होते हैं अथवा जहाँ दृष्टि डालते हैं, उस स्थान के फल की वृद्धि करते हैं । यथा—

‘सूर्य’ सिंह, मेष, वृश्चिक, धनु अथवा मीन राशि पर बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि डालता हो ।

‘शुक्र’ कर्क, वृष, सिंह, मियुन अथवा कन्या राशि पर बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि डालता हो ।

‘शुभ’ मेष, वृश्चिक, मकर, सिंह, कर्क, धनु अथवा मीन राशि पर बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि डालता हो ।

‘शुभ’ मियुन, कन्या, सिंह, वृष अथवा तुला राशि पर बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि डालता हो ।

‘शुभ’ धनु, मीन, कर्क, सिंह, मेष अथवा वृश्चिक राशि पर बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि डालता हो ।

‘शुभ’ वृष, तुला, मीन, कन्या, मियुन, मकर अथवा कुम्भ राशि पर बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि डालता हो ।

‘शनि’ मकर, कुम्भ, तुला, कन्या, मियुन, वृष अथवा तुला राशि पर बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि डालता हो ।

‘राहु’ मियुन (मतान्तर से वृष) राशि पर बैठा हो, अथवा लग्न से तीसरे, छठे अथवा ग्यारहवें में से किसी भी ऐसे स्थान में बैठा हो, जहाँ धनु राशि न हो ।

‘केतु’ धनु (मतान्तर से वृश्चिक) राशि पर बैठा हो अथवा लग्न से तीसरे, छठे अथवा ग्यारहवें में से किसी भी ऐसे स्थान में बैठा हो, जहाँ मियुन राशि न हो ।

केन्द्र अर्थात् पहले, चौथे, सातवें एवं दसवें भाव में बैठे हुए सभी ग्रह विशेष शक्तिशाली होने के कारण अपना पूर्ण प्रभाव प्रदर्शित करते हैं ।

५. त्रिकोण अर्थात् पाँचवें एवं नवें भाव में बैठे हुए सभी ग्रह जातक के धन की वृद्धि करते हैं ।

६. दूसरे तथा ग्यारहवें भाव में बैठे हुए सभी ग्रह जातक के धन की वृद्धि करते हैं । विशेषतः ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ प्रत्येक ग्रह विशेष लाभकारी होता है ।

७. तृतीय भाव में बैठे हुए ग्रह जातक के पराक्रम की बढ़ाते हैं ।

८. प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम, दशम तथा एकादश भाव में बैठे हुए ग्रह उत्तम फल देते हैं ।

९. षष्ठ, अष्टम तथा द्वादश भाव में बैठे हुए ग्रह जातक के लिए कठिनाइयों उपस्थित करते हैं ।

१०. लग्न से तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें भाव में क्रूर ग्रहों—शनि, केतु का बैठना शक्ति एवं सुभफल देने वाला होता है ।

११. ग्यारहवें भाव में बैठे हुए सभी ग्रह सुभफल देते हैं ।

१२. आठवें तथा बारहवें भाव में बैठे हुए सभी ग्रह जातक को थोड़ी-बहुत हानि अवश्य पहुँचाते हैं ।

१३. जिस भाव का जो ग्रह कारक माना गया है, वह यदि वकेला उसी भाव में बैठा हो तो उस भाव को बिगाड़ देता है ।

१४. जिस भाव का स्वामी उच्च राशिस्थ, स्वश्रेणी, मित्रश्रेणी अथवा मूल त्रिकोण स्थित होता है, उस भाव का सुभ फल प्राप्त होता है ।

१५. जिस भाव में सुभ ग्रह बैठा हो, उसका फल उत्तम होता है तथा जिसमें पाप ग्रह बैठा हो, उसके सुभ फल की हानि पहुँचती है ।

१६. जो ग्रह सूर्य के बराबर अथवा उसके निकटवर्ती अंशों पर होता है, उसे ‘पूर्ण अस्त’ माना जाता है । जो ग्रह सूर्य से ८ अंश की दूरी पर होता है, उसे ‘आधा अस्त’ माना जाता है तथा जो ग्रह सूर्य के 15 अंश की दूरी पर होता है उसे ‘पूर्ण उदय’ माना जाता है ।

पूर्ण उदय ग्रह पूर्ण प्रभाव देता है, आधा अस्त ग्रह आधा प्रभाव देता है तथा पूर्ण अस्त ग्रह प्रभावहीन होता है।

१७. जिन भाव का अधिपति किसी शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो, अथवा जिस भाव में शुभ ग्रह बैठा हो अथवा जिस भाव की शुभग्रह देख रहा हो, उसका फल शुभ होता है।

१८. जिन भावमें कोई पाप ग्रह बैठा हो अथवा उस भाव के अधिपति के भाव कोई पाप ग्रह बैठा हो अथवा उस भाव या उस भाव के अधिपति पर पाप ग्रह की दृष्टि पड़ रही हो तो उसका फल अशुभ होता है।

१९. किसी भाव का स्वामी पाप ग्रह हो और वह लग्न में नृनीय स्थान में बैठा हो तो शुभ फल देगा, परन्तु किसी भाव का स्वामी शुभ ग्रह हो और वह उस भाव से तीसरे स्थान पर बैठे तो मध्यम फल देगा।

२०. जिस भाव में उसका अधिपति ग्रह अथवा शुक्र, बुध या गुरु में कोई बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि पड़ रही हो अथवा वह अपने भाव के स्वामी के अतिरिक्त किसी अन्य ग्रह संयुक्त अथवा दृष्ट न हो तो वह शुभ फल देने वाला निश्च होगा।

२१. आठवें भाव में जो राशि हो, उसका स्वामी जिस भाव में बैठा होता है, उसे विगाड़ देता है।

२२. राहु, केतु जिन भाव में रहते हैं, उसे विगाड़ देते हैं।

२३. चन्द्रमा, बुध, शुक्र, केतु तथा गुरु—ये सब क्रमशः एक दूसरे में अधिक शुभ ग्रह हैं। ये ग्रह यदि अपनी राशियों में बैठे हों तो अधिक शुभ फल देते हैं और यदि पाप ग्रहों (सूर्य, मंगल, शनि तथा राहु) की राशि में बैठे हों तो अल्प शुभ फल देते हैं। स्मरणीय है कि फल का विचार करते समय केतु को प्रायः पापग्रह माना जाता है, परन्तु कभी केतु की गणना शुभ ग्रहों में की जाती है।

२४. सूर्य, मंगल, शनि तथा राहु—ये सब क्रमशः एक दूसरे में अधिक पाप ग्रह हैं। ये ग्रह यदि अपनी राशि में बैठे हों तो अधिक शुभ फल देते हैं। यदि अपने मित्र की राशि, अपनी उच्च राशि अथवा किसी शुभ ग्रह की राशि में बैठे हों तो न्यून मात्रा में अशुभ फल देते हैं।

२५. राहु जिसे अशुभ फल देता है, केतु उसे शुभ फल देता है तथा केतु जिसे अशुभ फल देता है, राहु उसे शुभ फल देता है—यह इन दोनों ग्रहों की एक विशेषता है।

२६. आठवें भाव का अधिपति अर्थात् अष्टमेश जिस भाव में बैठा होता है, उस भाव को विगाड़ता है।

२७. राहु-केतु जिस भाव में बैठे होते हैं, उसे विगाड़ देते हैं।

दैनिक ग्रहगोचर का प्रभाव

जन्मकुण्डली जातक के जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति की परिचयक होनी है तथा उन ग्रहों की स्थिति का जातक के जीवन पर स्थायी प्रभाव पड़ता रहता है, परन्तु थाकाक्रमण्डल में विभिन्न ग्रह निरन्तर भ्रमण करते रहते हैं जिनका तात्कालिक-अस्थायी प्रभाव भी जातक के दैनिक-जीवन पर पड़ता रहता है। इस प्रकार प्रत्येक ग्रह प्रत्येक प्राणी के जीवन पर अपना दो प्रकार से प्रभाव डालता है। अस्तु, स्थायी प्रभाव के साथ ही ग्रहों के अस्थायी प्रभाव का विचार करना भी आवश्यक होता है। दैनिक ग्रह गोचर में किस समय कौनसा ग्रह किस स्थान पर चल रहा है, इसका ज्ञान 'पंचांग' द्वारा प्राप्त किया जाता है। इस विषय की जानकारी किसी ज्योतिषी से पूछ कर, अथवा एतद् विषयक हमारी अन्य पुस्तकों का अध्ययन करके प्राप्त की जा सकती है।

इस पुस्तक के द्वितीय खण्ड में जन्मकुण्डली के जिस भाग तथा राशि में स्थित स्थायी ग्रहों के जिस फलादेश का उल्लेख किया गया है, दैनिक ग्रहगोचर कुण्डली के विभिन्न भागों तथा राशियों में स्थित विभिन्न ग्रहों का फलादेश भी टीक देना ही होता है। किस दिन, मास अथवा वर्ष में दैनिक ग्रह गोचरस्थ ग्रहों का फलादेश किस उदाहरण कुण्डली द्वारा ज्ञात करना चाहिए, इसका उल्लेख द्वितीय खण्ड में प्रत्येक लग्न की उदाहरण-कुण्डलियों का फलादेश आरम्भ करने से पूर्ण ही कर दिया गया है।

जन्म कुण्डलीस्थ ग्रह के स्थायी तथा दैनिक ग्रहगोचर के अस्थायी फलादेश के समन्वय स्वरूप भी भी निष्कर्ष निकले, उमी को सूत्रा फलादेश मसजना चाहिए।

'वर्ष कुण्डली' स्थित ग्रहों के फलादेश का ज्ञान भी जन्मकुण्डली स्थित ग्रहों के फलादेश की भाँति इसी पुस्तक की सहायता द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। वर्षकुण्डली स्थित 'मृ' तथा 'वर्ष' के विशिष्ट फलादेश के विषय में किसी ज्योतिषी द्वारा जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। अथवा हमारी लिखी पुस्तक 'वर्षकुण्डली फल विचार' का अध्ययन करना चाहिए।

सम्मिलित परिवार का फलादेश

सम्मिलित परिवार होने पर उस परिवार के सभी सदस्यों की जन्मकुण्डली के ग्रहों का शोड़ा-बहुत प्रभाव एक दूसरे पर पड़ता रहता है। अतः सम्मिलित-परिवार के किसी सदस्य के विषय में ग्रहों का फलादेश ज्ञात करने समय यदि उस परिवार के अन्य सदस्यों की जन्मकुण्डलियों का भी सम्यक् अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला जाय तो उचित रहेगा। इस पुस्तक की सहायता के किसी भी स्त्री, पुरुष, बालक युवा अथवा वृद्ध मनुष्य की जन्मकुण्डलीस्थ ग्रहों के शुभाशुभ प्रभाव की जानकारी सरलतापूर्वक प्राप्त की जा सकती है।

गलत जन्मकुण्डली का संशोधन

जन्मकुण्डलीस्य ग्रहों के फलादेश की यथार्थता शुद्ध लग्न पर निर्भर करती है। यदि लग्न ठीक न होगी तो जन्मकुण्डली के ग्रहों का फलादेश भी ठीक नहीं बैठेगा।

शुद्ध 'लग्न' का निर्णय जातक के ठीक जन्म समय के आधार पर किया जाता है। समय में थोड़ा-सा भी अन्तर पड़ जाने से लग्न के अशुद्ध हो जाने की सम्भावना रहती है, अतः लग्न की शुद्धता का विचार कर लेना आवश्यक है।

लग्न की शुद्धता का विचार करने की एक सरल विधि यहाँ दी जा रही है। इसके आधार पर गलत लग्न वाली कुण्डली का बिना किसी विशेष परिश्रम के सुधार किया जा सकता है। विधि इस प्रकार है—

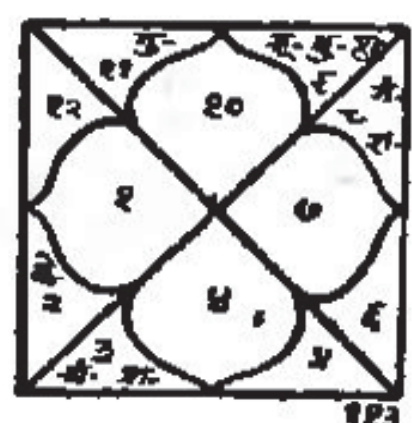
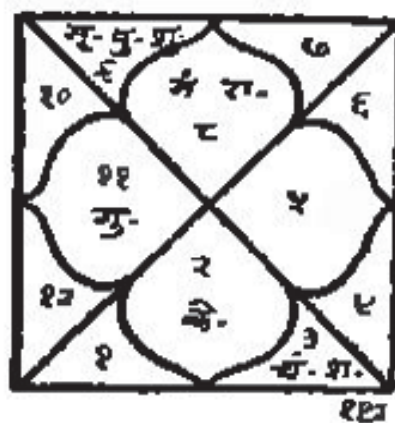
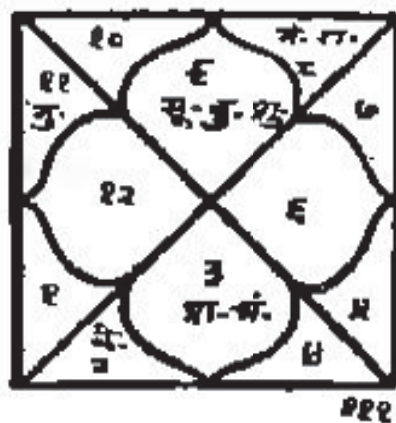
उपस्थित जन्मकुण्डली के ग्रहों के फलादेश से यदि ज्ञात हो कि यह जातक के जीवन से ठीक मिला रहा है, तब तो कोई ज्ञात ही नहीं, परन्तु यदि फलादेश ठीक न मिले तो लग्न की अशुद्ध समझ कर तो कुण्डलियाँ ऐसी तैयार करनी चाहिए, जिनमें से एक में लग्न जाने की तथा दूसरी में पीछे की हो, फिर उन दोनों कुण्डलियों के विभिन्न भावों में उपस्थित कुण्डली के आधार पर ग्रहों को लिखकर उनके फलादेश का अध्ययन करें तथा जिस कुण्डली का फलादेश ठीक बैठता हो, उसी लग्न की कुण्डली को शुद्ध समझें।

उदाहरण के लिए नीचे तीन कुण्डली-चित्र दिये जा रहे हैं। उपस्थित कुण्डली 'वृश्चिक' लग्न की है, मिले बीच में प्रदर्शित किया गया है। पहली तथा तीसरी उसी के आधार पर धनु तथा मकर लग्न की कुण्डलियाँ दिखाई गई हैं। इन तीनों कुण्डलियों में से जिसका फलादेश जातक के जीवन पर ठीक-ठीक घटे, उसी की लग्न शुद्ध समझनी चाहिए।

'धनु' लग्न की कुण्डली

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली

'मकर' लग्न की कुण्डली

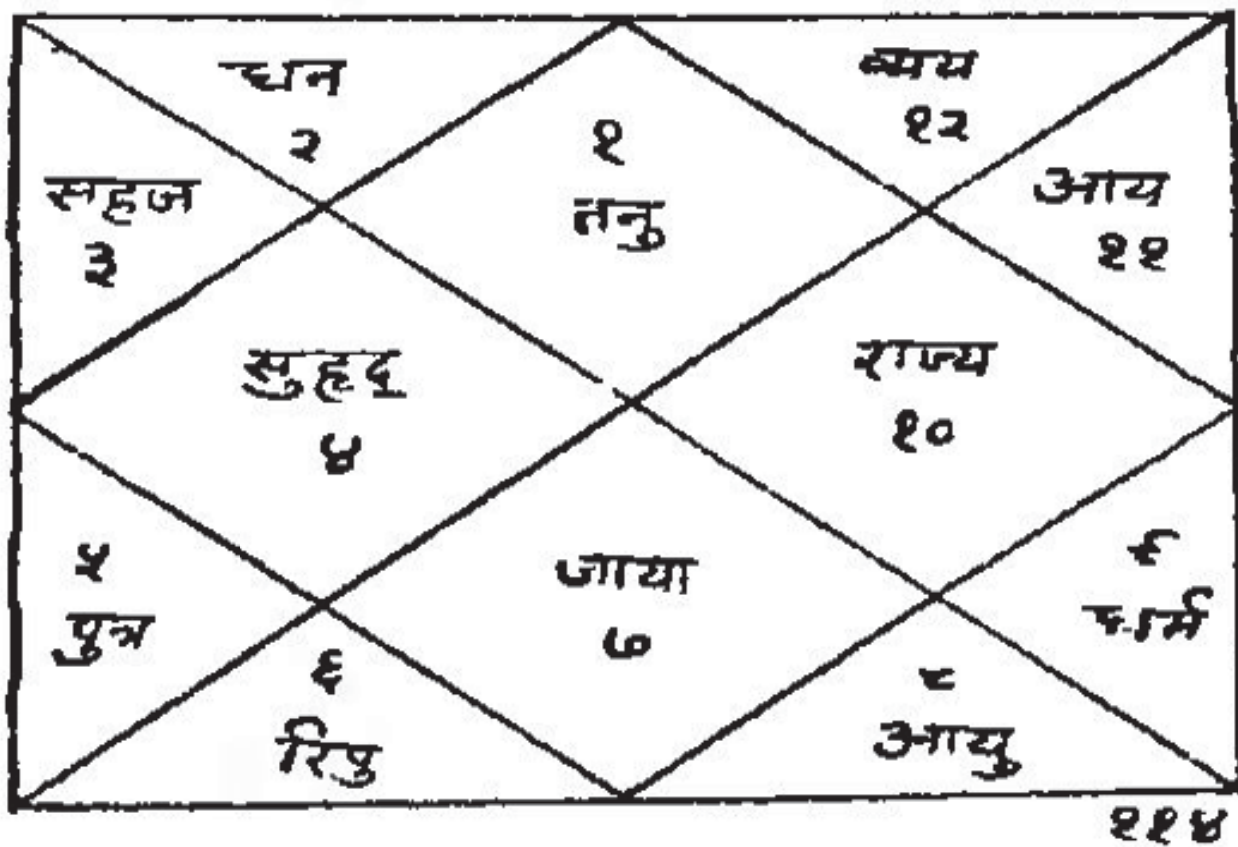


इन उदाहरण-कुण्डलियों में जिस प्रकार लग्न को बदल कर उसके आधार पर विभिन्न भावों में विभिन्न ग्रहों का बैठाया गया है, इसी आधार पर किसी भी गलत लग्न वाली कुण्डली को शुद्ध किया जा सकता है।

हस्तलिखित, असली, प्राचीन
भृगुसंहिता फलित प्रकाश



फलादेश



2

द्वितीय खण्ड

[द्वादश लक्ष्णों की कुण्डलियों का फलादेश]

विभिन्न लग्नों वाली जन्मकुण्डलियों का फलादेश जानने की विधि

इस द्वितीय खण्ड में विभिन्न लग्नों वाली कुण्डलियों के विभिन्न भागों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन अलग-अलग उदाहरण-कुण्डलियों द्वारा प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक लग्न की उदाहरण कुण्डलियों को अलग-अलग अध्यायों में बाँट कर, विभिन्न ग्रहों के फलादेश को सूर्यादि के क्रम से अलग-अलग लिखा गया है। किस लग्न वाली कुण्डली का फलादेश किन संख्याओं वाली उदाहरण कुण्डलियों में देखना चाहिए, इसे निम्नानुसार समझ लें—

१. 'मेघ लग्न'—उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६ से २२३ तक
२. 'बृष' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या २२५ से ३३२ तक
३. 'मिथुन' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या ३३४ से ४४१ तक
४. 'कर्क' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४३ से ५५० तक
५. 'सिंह' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या ५५२ से ६५९ तक
६. 'कन्या' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६१ से ७६८ तक
७. 'तुला' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७० से ८७७ तक
८. 'शुक्रिक' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७९ से ९८६ तक
९. 'धनु' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या ९८८ से १०९५ तक
१०. 'मकर' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या १०९७ से ११०४ तक
११. 'कुम्भ' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०६ से १२१३ तक
१२. 'मीन' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या १२१५ से १३२२ तक

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों का जातक के जीवन पर स्वामी प्रभाव पड़ता है, परन्तु तात्कालिक शोचर कुण्डली के ग्रह भी उसके जीवन पर अपने स्थितिकाल में अस्थायी प्रभाव डालते रहते हैं। अतः जिस समय जो ग्रह जिस राशि पर चल रहा हो, उसके बारे में पंचांग अथवा किसी ज्योतिषी द्वारा जानकारी प्राप्त करके तात्कालिक प्रभाव के विषय में भी जरूर जान लेना चाहिए।

उदाहरण के लिए 'मृग' किसी जातक की मेघ लग्न वाली जन्मकुण्डली के द्वितीय भाग में बैठा है तो वह उदाहरण-कुण्डली संख्या ११७ के अनुसार जातक के जीवन पर अपना स्थायी प्रभाव डालता रहेगा। परन्तु जब वह तात्कालिक शोचर में मिथुन राशि पर चल रहा होगा, तब जातक के ऊपर मेघ लग्न वाली कुण्डली के, मिथुन राशि वाले तृतीय भाग में स्थित सूर्य के अनुसार उदाहरण-कुण्डली संख्या

११८ में वर्णित फलादेश रूपी प्रभाव भी तब तक डालता रहेगा, जब तक कि वह गोचर में उस राशि से हट कर आगे कर्क राशि में नहीं चला जाता। कर्क राशि में पहुँच कर उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६ के अनुसार प्रभाव डाल उठेगा। इसी प्रकार गोचर की सब राशियों तथा उनके ग्रहों के अस्थायी-फलादेश के विषय में समझ लेना चाहिए।

उक्त विधि के प्रत्येक ग्रह के स्वामी तथा अस्थायी प्रभाव को जानकर, उसके समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उमी को अपने वर्तमान काल का यथार्थ फलादेश समझना चाहिए। गोचर के आधार पर किस ग्रह का फलादेश किस उदाहरण-कुण्डली में देखा जाय, इसका निर्देश प्रत्येक लग्न की उदाहरण-कुण्डलियों के आरम्भ में यथास्थान किया गया है।

स्मरणीय है कि इस ग्रंथ में प्रदर्शित प्रत्येक लग्न की उदाहरण-कुण्डलियों में विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन अलग-अलग किया गया है, अतः प्रत्येक जन्मकुण्डली का फलादेश ज्ञात करने के लिए ६ उदाहरण-कुण्डलियों के अध्ययन की आवश्यकता पड़ेगी। यही नियम गोचर कुण्डली के फलादेश पर भी लागू होगा।

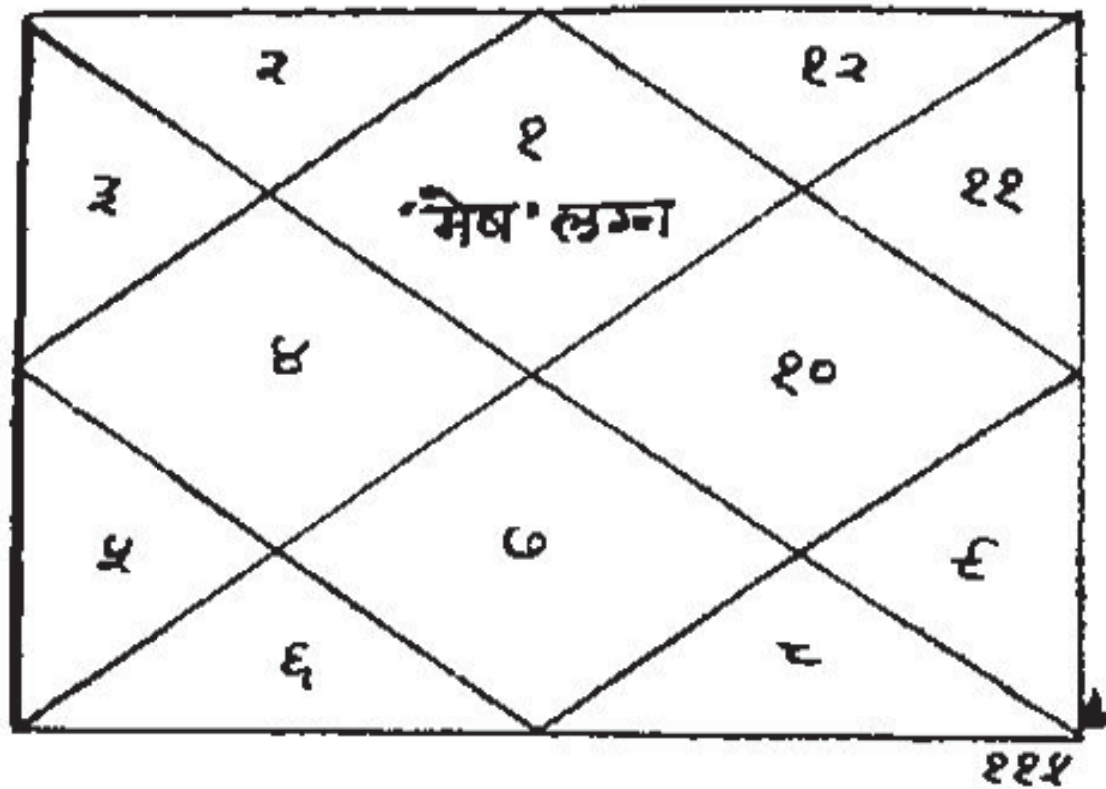
यदि लग्न कुण्डली के किसी भाव में नौ या उससे अधिक ग्रह एक साथ बैठे हों तो उसके विशिष्ट शभाव को 'ग्रहों' की श्रुति, सम्बन्धी वाले तृतीय खण्ड में देखना चाहिए।

स्मरणीय है कि जो ग्रह जितने अंश का होता है, उसी के अनुरूप वह न्यूनाधिक फल प्रदान करता है। अतः ग्रहों के अंशों की जानकारी रखना भी आवश्यक है। यह जानकारी पंचांग अथवा किसी ज्योतिषी द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

उक्त विधि से इस पुस्तक द्वारा संसार के किसी भी स्त्री-पुरुष की जन्म कुण्डली का फलादेश ज्ञात किया जा सकता है। यदि ग्रंथ में वर्णित किसी विषय की समझने में कोई कठिनाई हो अथवा जन्मपत्र-निर्माण आदि ज्योतिष सम्बन्धी भी कोई जानकारी प्राप्त करनी हो तो जवाबी-पत्र लिख कर निम्न पते पर पूछताछ की जा सकती है। पता यह है—

पं० राजेश दीक्षित, कृष्णापुरी, मथुरा (उ० प्र०)

‘मेष लग्न’



[‘मेष’ लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भागों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

‘मेष’ लग्न का फलादेश

‘मेष’ लग्न में जन्म लेने वाले जातक का शरीर शकड़गा तथा कुछ कालिमा लिए गौर वर्ण का होता है। वह स्वभाव से गजोगुणी, पित्त प्रकृति वाला, उग्र, अहंकारी, चंचल, अत्यन्त चतुर, बुद्धिमान, धर्मात्मा, उदार, कुल-दीपक तथा अल्प-संततिवान् होता है। स्त्रियों के प्रति उसका स्वार्थपूर्ण अल्प जगाव अथवा द्वेष होता है।

इस लग्न वाले जातक को अपनी आयु के ६, ८, १५, २१, ३६, ४४, ५६ तथा ६३वें वर्ष में धन-हानि एवं शारीरिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। आयु के १६, २०, २८, ३४, ४१, ४८ तथा ५१वें वर्ष में उसे धन, वाहन, मीमांस्य आदि का सुख प्राप्त होता है।

‘मेष’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी-फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६ से २२३ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में दाएं, ११६ से आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'मेष' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण कुण्डली-संख्या ११६ से १२७ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को शोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ११६
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ११७
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ११८
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ११९
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १२०
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२१
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १२२
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२३
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १२४
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १२५
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १२६
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १२७

'मेष' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२८ से १३९ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को शोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १२८
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १२९
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३०
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३१
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३२

- (घ) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३३
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३४
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३५
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३६
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३७
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३८
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३९

'मेष' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४० से १५१ के बीच देखना चाहिए ।

२—'मेष' लग्न वालों को शोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १४०
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १४१
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १४२
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १४३
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १४४
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १४५
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १४६
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १४७
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १४८
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १४९
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १५०
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १५१

'मेष' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'बुध' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १५२ से १६३ के बीच देखना चाहिए ।

२—'मेष' लग्न वालों को शोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'बुध' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १५२
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १५३
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १५४
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १५५
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १५६
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १५७
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १५८
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १५९
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १६०
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १६१
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १६२
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १६३

'मेष' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १६४ से १७५ के बीच देखना चाहिए ।

२—'मेष' लग्न वालों को शेषर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १६४
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १६५
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १६६
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १६७
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १६८
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १६९
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १७०
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १७१
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १७२
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १७३
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १७४
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १७५

‘मेष’ लग्न में ‘शुक्र’ का फलादेश

१—‘मेष’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘शुक्र’ का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १७६ से १८७ के बीच देखना चाहिए ।

२—‘मेष’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘शुक्र’ का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में ‘शुक्र’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या १७६
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या १७७
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या १७८
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या १७९
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या १८०
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या १८१
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या १८२
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या १८३
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या १८४
- (ञ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या १८५
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या १८६
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर हो तो संख्या १८७

‘मेष’ लग्न में ‘शनि’ का फलादेश

१—‘मेष’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘शनि’ का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १८८ से १९९ के बीच देखना चाहिए ।

२—‘मेष’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘शनि’ का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में ‘शनि’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या १८८
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या १८९
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या १९०
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या १९१

- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १६२
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १६३
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १६४
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १६५
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १६६
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १६७
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १६८
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १६९

'मेष' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २०० से २११ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को अपनी गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'राहु' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २००
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २०१
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २०२
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २०३
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २०४
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २०५
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २०६
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २०७
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २०८
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २०९
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २१०
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २११

'मेष' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या २१२ से २२३ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली से विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

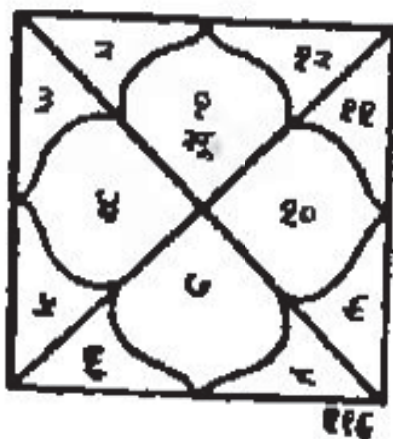
जिस वर्ष में 'केतु'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २१२
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २१३
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २१४
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २१५
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २१६
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २१७
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २१८
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २१९
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २२०
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २२१
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २२२
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २२३

'मेष' लग्न में 'सूर्य'

'मेष' लग्न वाली कुण्डली से 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : प्रथमभाव : सूर्य



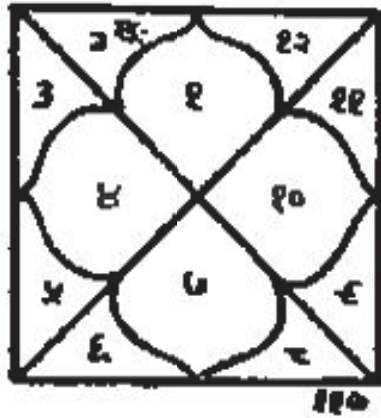
पहले भाव में अपने मित्र मंगल को राशि में उच्चस्थ सूर्य अपने मित्र मंगल की राशि पर है, अतः जातक तेजस्वी, विद्वान्, साहसी, स्वस्थ, स्वाभिमानी तथा पराक्रमी होगा। महत्वाकांक्षा, व्यवहार-कुशलता, धैर्य आदि सद्गुण प्राप्त होंगे तथा सन्तानें भी अधिक होंगी।

परन्तु सूर्य की सप्तमभाव पर नीच-दृष्टि पड़ने के कारण जातक से दाम्पत्य-सुख में कमी रहेगी। पत्नी

(यदि स्त्री की जन्मकुण्डली हो तो पति) अधिक सुन्दर नहीं होगी। पति-पत्नी में मन-मुटाव भी रह सकता है। दैनिक जीविकोपार्जन के क्षेत्र में भी अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ आती रहेंगी।

‘मेघ’ लग्न की कुण्डली से ‘द्वितीयभाव’ ‘सूर्य’ का फलादेश

मेघ लग्न : द्वितीय भाव : सूर्य

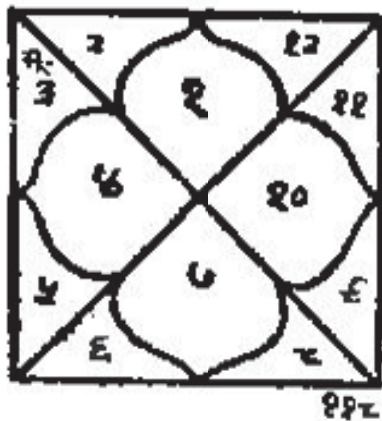


दूसरे भाव में अपने षष्ठ शुक्र को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना होगा। इस कुण्डली में सूर्य पंचमभाव का स्थायी होकर षष्ठ की राशि पर बैठा है, अतः जातक के विद्याध्ययन एवं संतान पक्ष में भी कठिनाइयाँ आती रहेंगी। कुटुम्ब, रत्न तथा बन्धन-विषयक विवाद भी उठते रहेंगे। यहाँ से सूर्य अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है, अतः

जातक की आयु दीर्घ होगी तथा उसे गुदा अथवा आकस्मिक धन का लाभ भी होगा।

‘मेघ’ लग्न कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित सूर्य का फलादेश

मेघ लग्न : तृतीय भाव : सूर्य

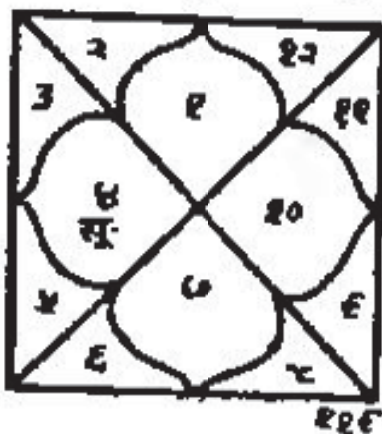


तीसरे भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के बुद्धिबल एवं पराक्रम में वृद्धि होगी। सूर्य को सातवीं दृष्टि भाग्य-भवन पर होने से जातक भाग्यवान्, धर्मात्मा, दानी तथा तीर्थसेवी होगा। नवें भाव में सूर्य के मित्र तथा शुभग्रह गुरु की राशि होने से कारण जातक शुभ कार्य करने वाला तथा भगवद् भक्त होगा।

तृतीय भाव से भाई तथा वाणी का तो विचार किया जाता है, अतः यह जातक भाइयों का सुख प्राप्त करेगा तथा अजीबस्वी वाणी वाला होगा।

‘मेघ’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

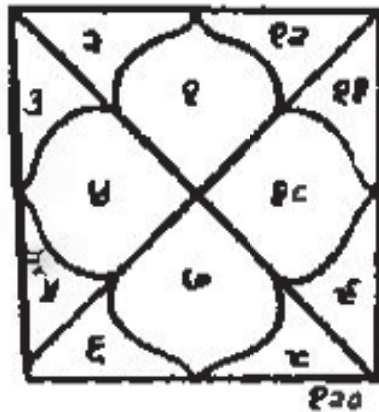
मेघ लग्न : चतुर्थ भाव : सूर्य



चौथे भाव में अपने मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक भूमि, गृह, वाहन आदि अनेक प्रकार के सुख प्राप्त करेगा। वह विद्वान् तथा विद्या द्वारा सुख प्राप्त करने वाला भी होगा। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपने षष्ठ शनि की राशि वाले दशम भाव को देखता है अतः जातक की अपने पिता से अनबन रहेगी तथा राजकीय मामलों में विफलताएँ आयेंगी। परंतु सूर्य से प्रभाव से कुछ-कुछ सम्मान अवश्य बना रहेगा।

‘मेष’ लग्न की कुम्हली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

मेष लग्न : पंचमभाव : सूर्य



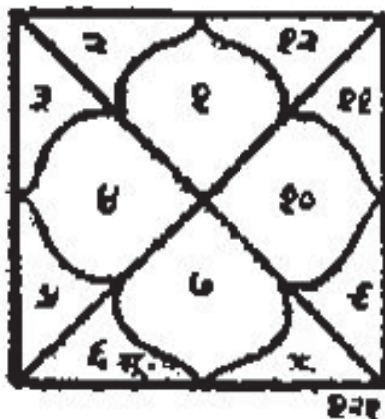
पाँचवें भाव में स्वसेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक बड़ा विद्वान्, बुद्धिमान्, यशस्वी तथा सन्तान-सुख से परिपूर्ण रहेगा। यहाँ से सूर्य को सप्तम दृष्टि अपने शत्रु शनि की राशि वाले ग्यारहवें भाव पर पड़ती है, अतः भाव के साधनों में रुकावटें आती रहेंगी तथा आर्थिक लाभ के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ेगा।

इस ग्रह स्थिति का जातक कटुभाषी तथा अहंकारी होता है, जिसके कारण लोग परोक्ष में उसकी निन्दा भी करते हैं।

‘मेष’ लग्न की कुम्हली के ‘षष्ठभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

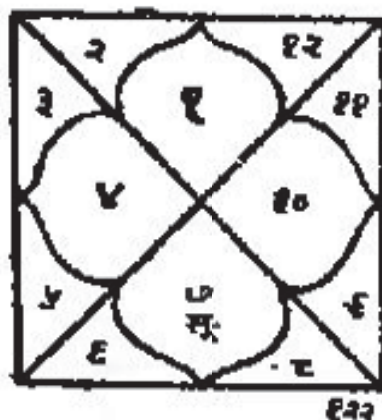
छठे भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर निरन्तर विजय प्राप्त करता रहेगा। पंचमभाव का स्वामी षष्ठभाव में होने के कारण विद्याध्ययन में कुछ कठिनाइयाँ तो आयेंगी, परन्तु जातक परम विद्वान् तथा बुद्धिमान भी होगा। सूर्य की सप्तदृष्टि व्ययस्थान में पड़ने के कारण जातक शहरी संबंधों से लाभ एवं सफलता पाने वाला, विदेशों में सम्मानित तथा अधिक खर्च करने वाला भी होगा। इसे सन्तानपक्ष से कुछ चिन्ताएँ अवश्य बनी रहेंगी। शत्रुपक्ष कठिनाइयाँ खड़ी करता रहेगा, परन्तु यह हारेगा तो।

मेष लग्न : षष्ठभाव : सूर्य



‘मेष’ लग्न कुम्हली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

मेष लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

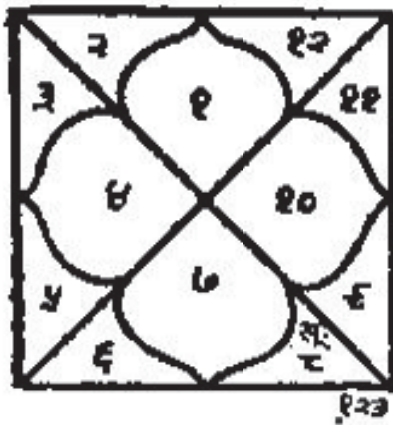


सातवें भाव में अपने शत्रु शुक की राशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने स्वराज्य एवं स्त्री से विषय में निरन्तर कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। सप्तम उच्चदृष्टि से जिस मंगल की राशि वाले लग्नभाव को देखने के कारण जातक संदेह का तेजस्वी तथा स्वाभिमानी होगा। वह युक्ति एवं बुद्धिबल से अपना काम निकालने में प्रवीण होगा। सूर्य के पंचमेश होने के कारण जातक का विद्या तथा सन्तानका पक्ष भी कमजोर रहेगा तथा जीवन-यापन के

क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती रहेंगी।

'मित्र' लग्न कुम्हली से 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

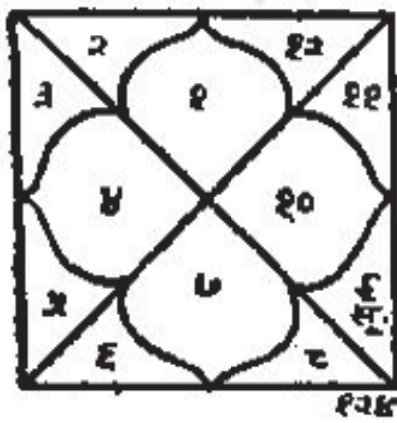
मेष लग्न : अष्टमभाव : सूर्य



आठवें भाव में मित्र मंगल को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातस्व एवं गुप्त धन सम्बन्धी लाभ तो होगा परन्तु आठवाँ घर मृत्यु-भवन होने से विद्या एवं संतान पक्ष में कमजोरी रहेगी। दैनिक जीवन में भी कठिनाइयाँ आती रहेंगी। सातवीं दृष्टि से शत्रु के द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक को घन एवं कुटुम्ब विषयक असन्तोष भी निरन्तर घना रहेगा। कुल मिलाकर जीवन संघर्षपूर्ण रहेगा।

'मित्र' लग्न की कुम्हली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : नवमभाव : सूर्य

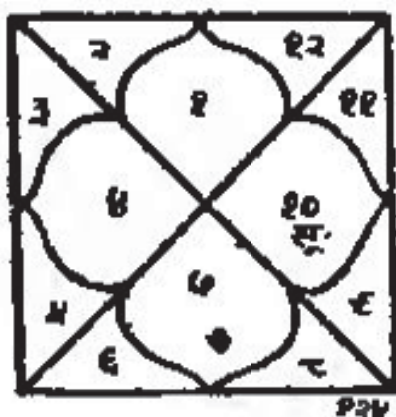


नवें भाव में अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक श्रेष्ठ विद्या, बुद्धि एवं ज्ञान का स्वामी होगा। यह धर्म, धर्मज्ञ शास्त्रों का ज्ञाता, ईश्वर भक्त, यशस्वी, भाग्यवान, दयालु, दानी तथा तीर्थसेवी भी होगा। आर्योन्नति के क्षेत्र में निरन्तर, सफलताएँ मिलती रहेंगी।

सातवीं दृष्टि से अपने जिस बुध की राशि वाले तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम, भाई-बहन, साहस तथा योग्यताओं में वृद्धि होगी। सूर्य की वह स्थिति बहुत श्रेष्ठ है।

'मित्र' लग्न की कुम्हली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : दशमभाव : सूर्य

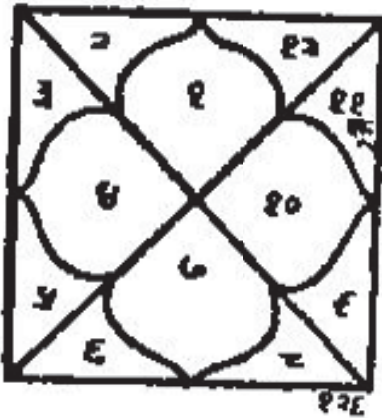


दसवें भाव में अपने शत्रु शनि को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने पिता, व्यवसाय, राज्य नौकरी तथा प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कुछ कमियों शिकार होना पड़ता है, परन्तु यह विदेशी भाषा एवं का राजभाषा का श्रेष्ठ जानकार होता है।

सातवीं दृष्टि से अपने मित्र चन्द्रमा की राशि से चौथे भाव को देखने से माता, भूमि, भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। ऐसा जातक अपने बुद्धिबल से राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्रों में सफलताएँ प्राप्त करता है।

'मेघ' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेघ लग्न : एकादशभाव : सूर्य

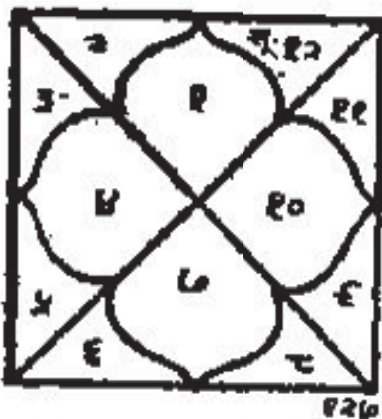


ग्यारहवें भाव में अपने शत्रु शनि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अर्थ-लाभ के लिए विशेष परिश्रम तो करना पड़ता है, परन्तु लाभ भी अत्यधिक होता है। ग्यारहवें भाव में पापग्रह शक्तिशाली माना जाता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले पंचभाव से देखने के कारण जातक को विद्या, बुद्धि तथा संतान का भी विशेष लाभ होता है। ऐसा जातक अपनी स्वायं पूर्ति के लिए कटुभाषी भी होना है तथा उसी से लाभ भी उठाता है।

'मेघ' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेघ लग्न : द्वादशभाव : सूर्य



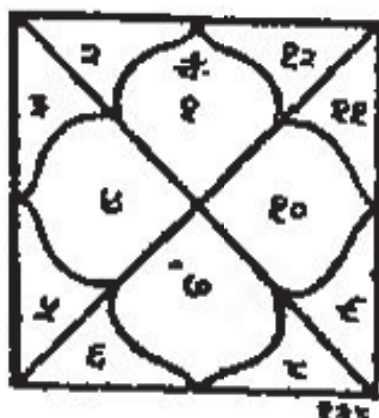
बारहवें भाव में अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का बाहरी स्थानों से श्रेष्ठ सम्बन्ध होता है, परन्तु व्यय को अधिकता भी बनी रहती है। उसे अपना श्रम चलाने के लिए बुद्धिबल का अधिक प्रयोग करना पड़ता है। संतान एवं विद्या पक्ष की हानि तथा चिन्ता के योग भी उपस्थित होते हैं।

सातवीं दृष्टि से अपने मित्र बुध की राशि वाले षष्ठभाव की देखने के कारण जातक को शत्रुपक्ष पर विजय प्राप्त होती है, परन्तु वह मानसिक चिन्ताओं का शिकार भी बना रहता है।

'मेघ' लग्न में 'चन्द्रमा'

'मेघ' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मेघ लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

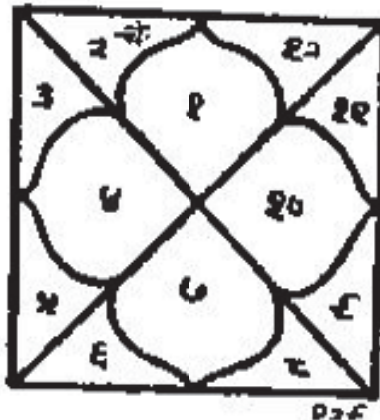


पहले भाव में अपने मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक मानसिक तथा पारिवारिक सुख-शांति प्राप्त करता है।

सातवीं दृष्टि से शुक की राशि वाले सप्तम भाव की देखने के कारण स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। ऐसे जातक का दाम्पत्य-जीवन सुखी तथा नारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहता है।

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

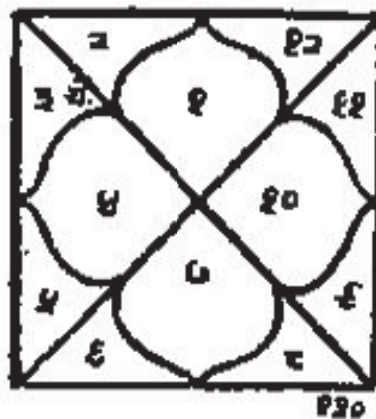


दूसरे भाव में सामान्य मित्र बुध की राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक बड़ा धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है। उसे कौटुम्बिक सुख भी यथेष्ट मिलता है, परन्तु माता के पक्ष में स्थित वृष्टि का अनुभव भी होता है।

सातवीं नीच दृष्टि से मित्र मंगल की राशि वाले आठवें भाव को देखने के कारण जातक की आयु, स्वास्थ्य तथा पुरातत्त्व विषयक वृष्टियों का सामना करना पड़ता है। उसका दैनिक जीवन भी कुछ अशौचपूर्ण बना रहता है।

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

मेष लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

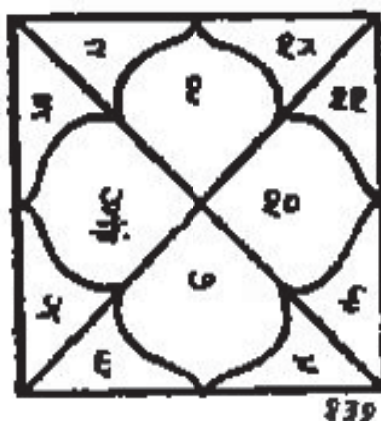


तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा उसे भाई-बहिनों का सुख मिलता है। चौथे घर का स्वामी होने के कारण चन्द्रमा जातक को भूमि, भवन, याहन आदि का सुख भी देता है।

सातवीं दृष्टि से मित्र गुरु की राशि से नवें भाव को देखने के कारण जातक धर्मात्मा, उदार, शानी, विद्वान्, भाग्यवान तथा यशस्वी भी होता है। कुल विद्या कर इस ग्रह स्थिति वाला जातक जीवन में अनेक प्रकार को सफलताएँ प्राप्त करता रहता है।

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

मेष लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र



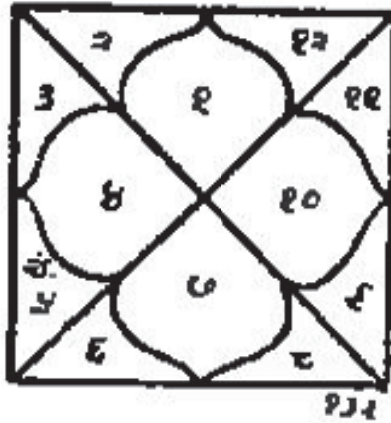
चौथे भाव में स्वराशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन, सम्पत्ति आदि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा मनोरंजन के साधन निरंतर उपलब्ध होते रहते हैं।

सातवीं दृष्टि से शत्रु शनि की राशि वाले दशम भाव को देखने के कारण जातक का अपने पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं सम्मान के क्षेत्र में कभी धनी रहती है। कुल विद्या कर—ऐसा जातक सब प्रकार से सपन्न होते हुए भी यशस्वी सम्मानित नहीं हो पाता।

'शेव' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

पाँचवें भाव में अपने मित्र सूर्य की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभावसे जातक बड़ा विद्वान्, बुद्धिमान एवं सन्ततिवान् होता है।

मेघ लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

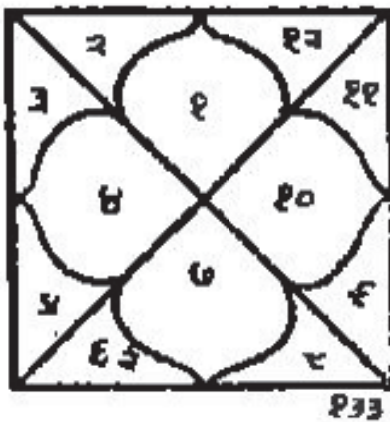


सातवीं दृष्टि से अपने शत्रु शनि की राशि वाले ग्यारहवें भाव को देखने के कारण उसे आय के माधनों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु उन्हें वह अपने धैर्य एवं शान्त स्वभाव से सहन कर लेता है। कुल मिला कर ऐसी ग्रह स्थिति का व्यक्ति धीर, गंभीर, ज्ञान, योग्य, विद्वान्, मन्तोपी, माता से सुखी, भू-सम्पत्ति का स्वामी, परन्तु व्यवसाय एवं लाभ के क्षेत्र में कठिनाइयाँ उठाने वाला होता है।

'शेव' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

छठे भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष में शांति का अनुभव करता है तथा विपत्तियों पर अपने धैर्य एवं विनम्रता के बल पर विजय प्राप्त करता है। उसके घरेलू दाना-वरण में भी अशांति एवं कमियाँ बनी रहती हैं।

मेघ लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

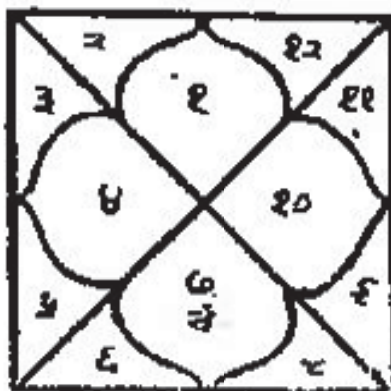


सातवीं दृष्टि से अपने मित्र गुरु की राशि वाले बारहवें भाव को देखने के कारण जातक शुभ कार्यों में व्यय करता है तथा बाहरी स्थानों में लाभ एवं सुख भी प्राप्त करता है। कुल मिला कर ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक विनम्र, धैर्यवान्, शुभकर्म करने वाला तथा घरेलू जीवन में दृष्टियों का शिकार बना रहने वाला होता है।

'शेव' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सातवें भाव में अपने सामान्य मित्र शुक की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक स्त्री-सुख एवं भोग-विलास की प्राप्ति करने वाला, सुन्दर, एवं भूमि तथा सम्पत्ति का सुख पाने वाला होता है।

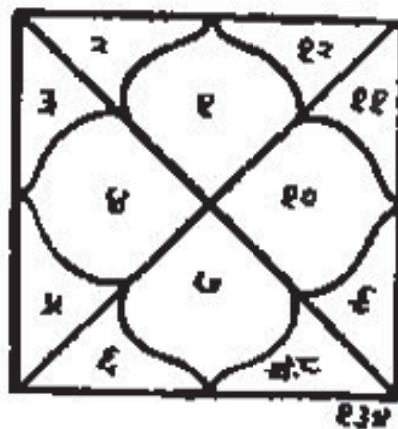
मेघ लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र



सातवीं दृष्टि से अपने मित्र मंगल की राशि वाले पहले भाव को देखने के कारण जातक शारीरिक, मीन्दर्ष, सम्मान, मनोरंजन, सुख आदि की प्राप्ति करता है। कुल मिला कर ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक सुन्दर, विलासी, यशस्वी तथा व्यावसायिक एवं सुख के क्षेत्र में सफलता पाने वाला होता है।

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

मेष लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र



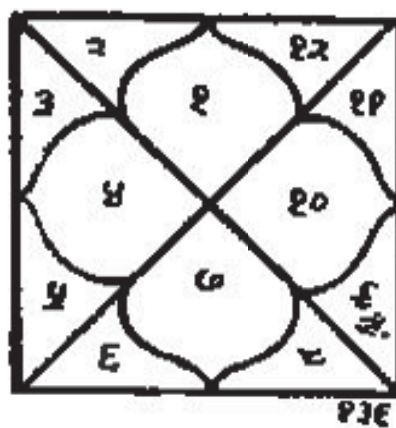
आठवें भाव में अपने मित्र भगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा अचल सम्पत्ति के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है। उने पुरातत्त्व तथा आयु संबंधी संकट भी उठाने पड़ते हैं तथा घरेलू-सुखशान्ति में भी कमी रहती है।

सातवीं उच्चदृष्टि से शुक की राशि वाले द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक को धन प्राप्ति के योग निरन्तर मिलते रहते हैं तथा वह धन एवं सुख को अर्जित करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील भी बना

रहता है।

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

मेष लग्न : नवमभाव : चन्द्र



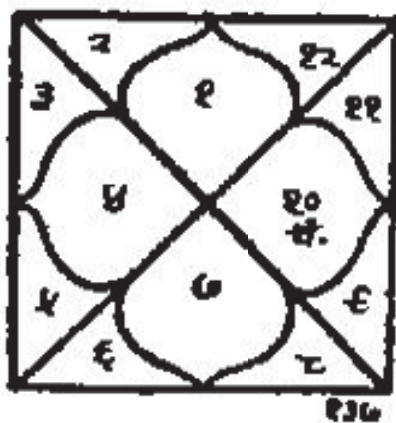
नवें भाव में अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक धर्म-कर्म, दान, पुण्य, तीर्थ-यात्रा आदि की ओर अधिक आकर्षित रहता है। उसे माता, भूमि तथा सम्पत्ति का सुख भी प्राप्त होता है।

सातवीं दृष्टि से चन्द्रमा अपने मित्र सुख की राशि वाले तृतीयभाव को देखता है। अतः जातक के भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होगा तथा पराक्रम में भी वृद्धि बनी रहेगी। कुल मिलाकर इस ग्रह-स्थिति का

जातक लीभाग्यशाली, धन-सम्पत्तिवान, भाई-बहिनों से युक्त तथा धार्मिक आचार-विचारों वाला होता है।

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

‘मेष’ लग्न : दशमभाव : चन्द्र



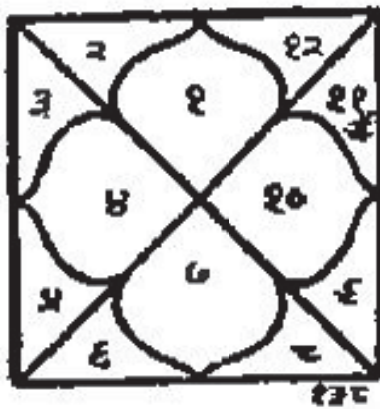
दसवें भाव में अपने शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का अपने पिता से वैमनस्य रहता है, परन्तु उसे राज्य में सम्मान की प्राप्ति होती है और वह अपने परिश्रम एवं अध्यवसाय द्वारा व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त करता है।

सातवीं दृष्टि से चन्द्रमा अपनी राशि वाले चतुर्थ भाव की देखता है, अतः उसे माता, भूमि, भवन, सम्पत्ति आदि का अच्छा सुख मिलना है। ऐसा व्यक्ति अपने

परिश्रम द्वारा अपना मकान बनवाता तथा सुख प्राप्त करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : एकादशभाव : चन्द्र

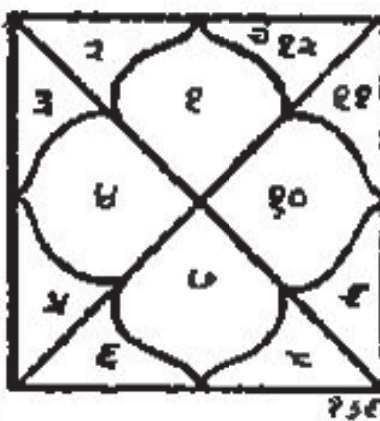


ग्यारहवें भाव में अपने शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने मनोबल के प्रभाव से अपनी आय के साधनों को बढ़ाता तथा सुखी जीवन बिताता है। सामान्यतः उसे आय के साधनों में कुछ कठिनाइयाँ आती रहती है।

सातवीं दृष्टि से चन्द्रमा अपने मित्र की राशि वाले पंचम भाव को देखता है, अतः जातक विद्वान् बुद्धिमान् तथा मन्तवितवान् होता है। कुल मिलाकर ऐसी ग्रह स्थिति वाला व्यक्ति विद्या बुद्धि के द्वारा अपनी उन्नति करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : द्वादशभाव : चन्द्र



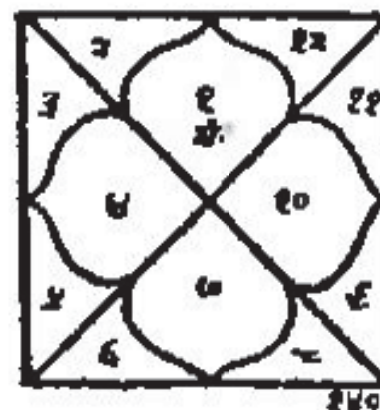
बारहवें भाव में अपने मित्र गुरु की राशि में स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शुभ कार्यों तथा शान-शीकत में खर्च करने वाला तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध रखने वाला होता है।

सातवीं दृष्टि से चन्द्रमा अपने मित्र बुध का राशि वाले षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शुरुआत पर शान्ति से विजय पायेगा तथा अपनी बुद्धिमत्ता से हर प्रकार के अगड़ों को निपटाने में सफल हुआ करेगा। कुल मिला कर ऐसी ग्रहस्थिति का व्यक्ति सुखी तथा सन्तुष्ट जीवन बिताने वाला एवं शत्रुपक्ष पर अपनी शालीनता से विजय पाने वाला होता है।

'मेष' लग्न में 'मंगल'

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न : प्रथमभाव : मंगल

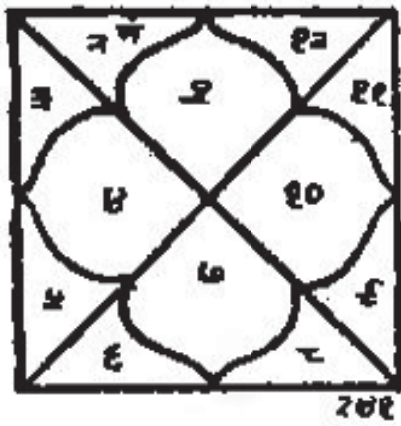


पहले भाव में स्वराशि स्थित मंगल के प्रभाव से जातक पुण्य शरीर वाला आत्म-बली तथा साहसी होता है। आठवें भाव का स्वामी होने तथा उसे पूर्ण दृष्टि के कारण मंगल जातक की कमी-कमी रोगों का शिकार भी बना देता है परन्तु आयु लम्बी देता है।

सातवीं दृष्टि से शुक की राशि वाले षष्ठम भाव को भी देखता है। अतः जातक की अपनी पत्नी तथा व्यवसाय के मामले में कुछ हानि भी उठानी पड़ती है।

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलविवेक

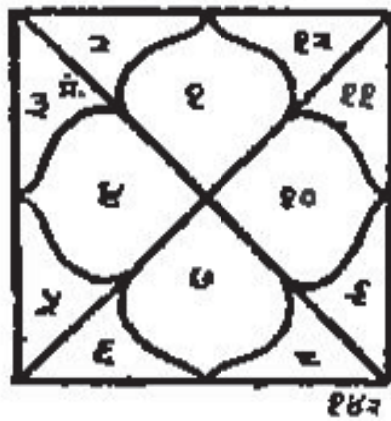
मेष लग्न: द्वितीयभाव: मंगल



दूसरे भाव में अपने शत्रु शुक की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन-संबंध में कमी तथा शरीर में कष्ट का सामना करना पड़ता है। चतुर्थ दृष्टि से पंचमभाव की देखने के कारण जातक मिला तथा संतान के पक्ष में कुछ कठिनाइयों का सामना करता है। सातवीं दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण दीर्घायु एवं पुरातत्त्व का लाभ देता है। आठवीं दृष्टि से नवमभाव की देखने के कारण भाग्योन्नति में भी रुकावटें डालता रहता है।

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलविवेक

मेष लग्न: तृतीयभाव: मंगल



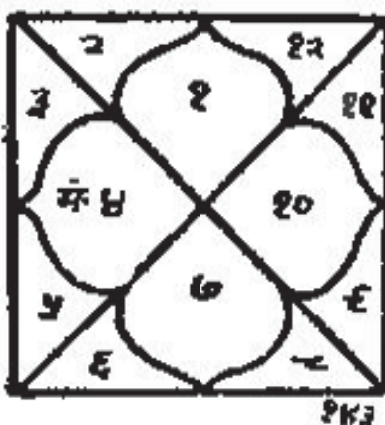
तीसरे भाव में अपने मित्र सुख की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक पराक्रमी तथा साहसी होता है, परन्तु मंगल के व्यष्टमेधी होने के कारण भाई-बहिन के सुख में कमी आ जाती है।

चौथी दृष्टि से षष्ठभाव की देखने के कारण जातक शत्रुजयी होता है और हिम्मत से काम लेकर उन पर अपना प्रभाव डालता है। सातवीं दृष्टि के मित्र बुध की राशि वाले नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति करता है तथा आठवीं दृष्टि से शत्रु शनि

की राशि वाले दशमभाव को देखने के कारण राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ भी उपस्थित करता रहता है।

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलविवेक

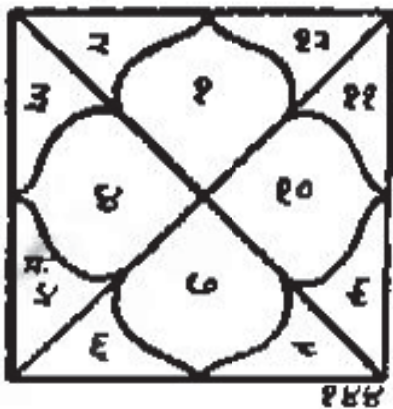
मेष लग्न: चतुर्थभाव: मंगल



चौथे भाव में अपने मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित मीथ के मंगल के प्रभाव से जातक को माता के सुख, भूमि, धवन तथा सुख के क्षेत्र में कमी रहती है। चौथी दृष्टि से शत्रु शुक की राशि वाले सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री के सुख में कमी रहती है। सातवीं उच्च दृष्टि से शत्रु शनि की राशि वाले दशमभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य द्वारा लाभ होता है। आठवीं दृष्टि के शत्रु शनि की राशि वाले ग्यारहवें भाव को देखने के कारण लाभ प्राप्ति के लिए जातक की अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न : पंचमभाव : मंगल

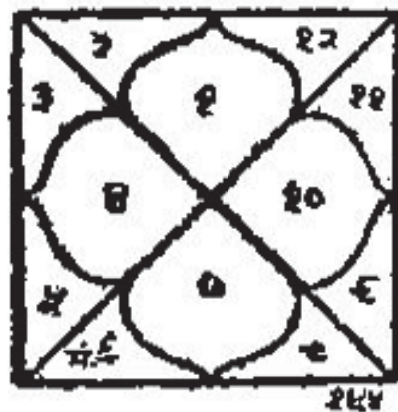


पाँचवें भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। चौथी दृष्टि से स्वराशि के अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु तथा पुरातत्त्व का साथ देता है। सातवीं दृष्टि से सम-शनि की राशि के ग्यारहवें भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ के योग उपस्थित करता है तथा आठवीं दृष्टि से मित्र गुरु के बारहवें भाव की देखने के कारण खर्च अधिक कराता है तथा बाहरी

स्थानों से आजीविका के सम्बन्ध बनाता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

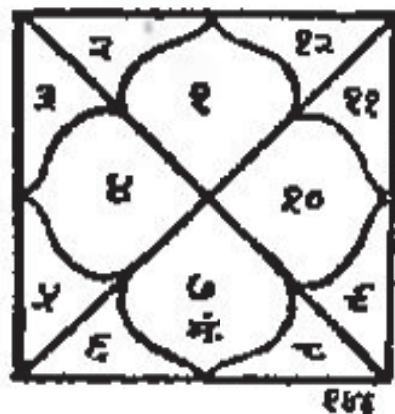
मेष लग्न : षष्ठभाव : मंगल



छठे भाव में मित्र सूर्य की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रुजयी, साहसी तथा निर्भय होता है। चौथी दृष्टि से शनि की राशि के दसवें भाव को देखने के कारण आर्योन्नति में कठिनाइयाँ देता है। सातवीं दृष्टि से मित्र गुरु की राशि के बारहवें भाव को देखने के कारण खर्च अधिक तथा बाहरी स्थानों से लाभ कराता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि वाले प्रथमभाव को देखने के कारण जातक की शरीर से स्वस्थ, स्वामिभनी तथा प्रवण प्रभाव वाला बनाये रखता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

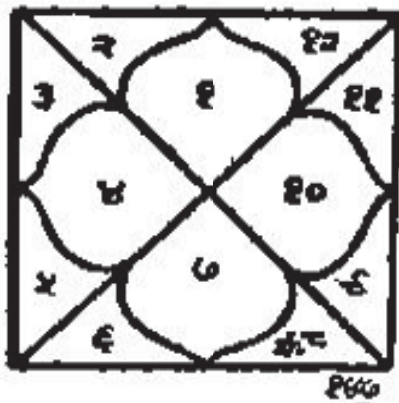
मेष लग्न : सप्तमभाव : मंगल



सातवें भाव में शुक की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को मंत्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। चौथी उच्च दृष्टि से शनि की राशि के दशमभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य द्वारा उन्नति के साधन तथा यश देता है। सातवीं दृष्टि में स्वराशि वाले प्रथमभाव को देखने से जातक के शरीर को स्वस्थ तथा प्रभावशाली बनाता है। आठवीं दृष्टि से शुक की राशि वाले द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक को धन तथा कुटुम्ब वृद्धि के लिए अधिक परिश्रम करने पर भी न्यून सफलता देता है।

‘मेघ’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

मेघ लग्न: अष्टमभाव: मंगल

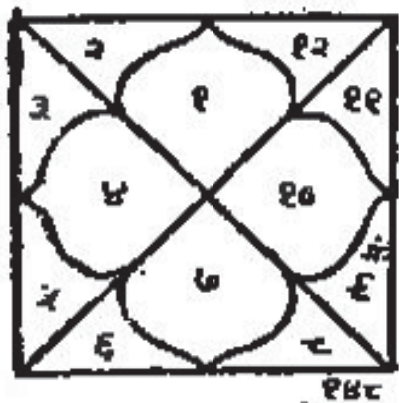


आठवें भाव में स्वराशि स्थित मंगल के प्रभाव से जातक दीर्घायु तथा पुरातत्त्व का लाभ प्राप्त करता है, परन्तु लग्न का स्वामी भी होने के कारण शारीरिक सौन्दर्य में कमी देता है। चतुर्थ दृष्टि से शनि की राशि वाले एकादश भाव को देखने के कारण आय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता देता है। सातवीं दृष्टि से शत्रु शुक की राशि वाले द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के बारे में चिन्ता बनी

रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि के तृतीयभाव के देखने के कारण जातक के पराक्रम की बढ़ाता है, परन्तु अष्टमेश होने के कारण भाई-बहिन के सुख में कमी भी लाता है।

‘मेघ’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

मेघ लग्न: नवमभाव: मंगल

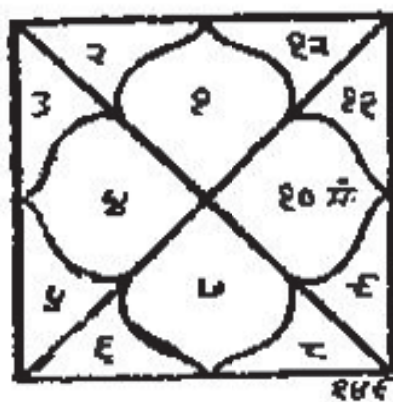


नवें भाव में मित्र राशिस्थ मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य की उन्नति होती है, परन्तु मंगल के अष्टमेश होने के कारण कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से बारहवें भाव को देखने से खर्च की अधिकता तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु मंगल के अष्टमेश भी होने के कारण भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। आठवीं नीच दृष्टि से चतुर्थ

भाव को देखने के कारण यात्रा, भूमि, भवन आदि-के सुख में कमी बनी रहती है।

‘मेघ’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ में स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

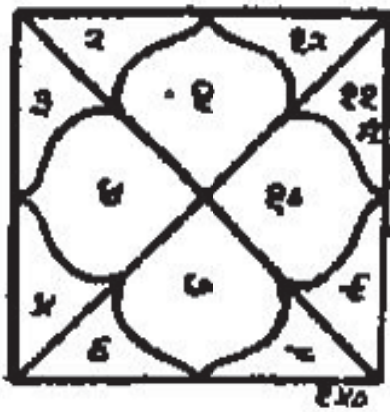
मेघ लग्न: दशमभाव: मंगल



दसवें भाव में शनि को राशि पर स्थित उच्च मंगल के प्रभाव के जातक अपने पिता से शत्रुता रखता है, परन्तु व्यवसाय एवं राज्य के क्षेत्र में उन्नति करता है। चौथी दृष्टि से स्वक्षेत्री प्रथम-भाव को देखने के कारण शारीरिक प्रभाव में उन्नति देता है। सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, वृद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में जातक को विशेष सफलता प्राप्त होती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

'मेष' लग्न : एकादशभाव : मंगल

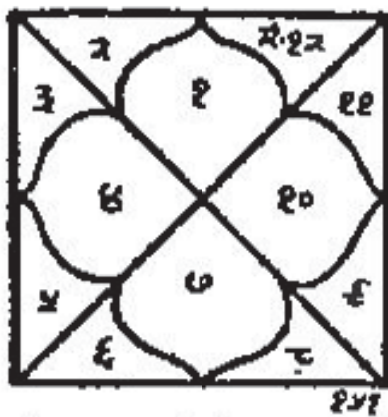


बारहवें भाव में शनि को राशिस्थ मंगल के प्रभाव से जातक की आय में वृद्धि होती रहती है, परन्तु अष्टमेश दोष होने के कारण कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। चौथी दृष्टि से शत्रु की राशि वाले द्वितीयभाव में देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब सम्बन्धी असन्तोष रहता है। सातवीं दृष्टि से मित्रराशि के पंचमभाव को देखने से मन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कमी बनी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष पर

प्रभाव बढ़ता है तथा जातक बड़ा साहसी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

'मेष' लग्न : द्वादशभाव : मंगल



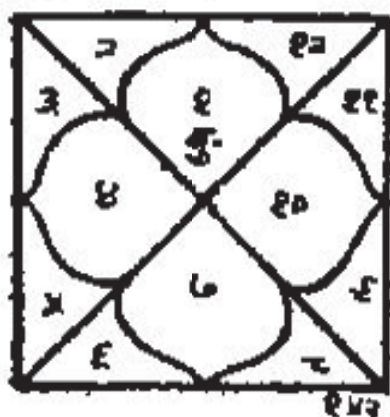
बारहवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक बाहरी ग्यानों में भ्रमण करने वाला तथा अत्यधिक खर्च करने वाला होता है। उसके शारीरिक सौंदर्य में भी कमी रहती है।

चौथी मित्र दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण जातक पराक्रमी होता है, परन्तु मंगल के अष्टमेश होने के कारण भाई-बहिनों के सुख में कमी जा आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से छठे भाव को देखने के कारण जातक शत्रु पक्ष में प्रबल रहता है। आठवीं दृष्टि से शुरु की राशि वाले सप्तम भाव को देखने से स्त्री-सुख में कमी आती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

'मेष' लग्न में 'बुध'

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

'मेष' लग्न : प्रथमभाव : बुध

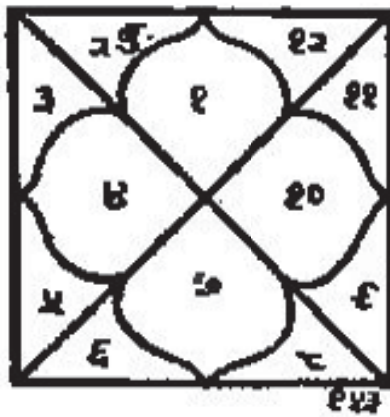


पहले भाव में मित्र राशिस्थ बुध के प्रभाव से जातक पुरुषार्थी होता है, परन्तु बुध के अष्टमेश दोष के कारण रोग-पीड़ित भी रहता है। इसी कारण भाई-बहिनों के सुख में भी कुछ कमी जा आती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सातवें भाव को देखने के कारण व्यवसाय के क्षेत्र में तो पश्चिम द्वारा सफलता प्राप्त होती है, परन्तु स्त्री-सुख में कुछ कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिल पाती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलविवेक

मेष लग्न : द्वितीयभाव : बुध

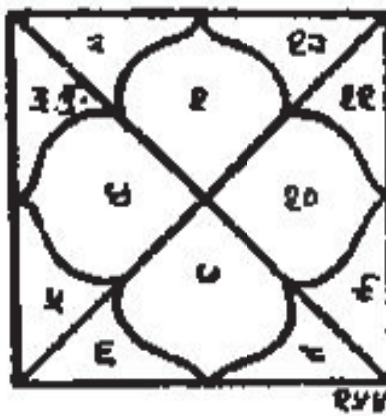


दूसरे भाव में मित्र राशिस्थ बुध के प्रभाव से जातक के धन एवं पुरुषार्थ में वृद्धि तो होती है, परन्तु बुध के अष्टमेश होने के कारण धनप्राप्ति के क्षेत्र में कठिनाइयों तथा हानि का सामना भी करना पड़ता है। बुध के तृतीयेश होने के कारण भाई-बहिन के सुख में भी कमी आ जाती है।

सातवीं भिन्नदृष्टि से अष्टमभाव की देखने के कारण जातक की वायु में वृद्धि होती है तथा उसे पुरातत्त्व सम्बन्धी लाभ भी होते हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलविवेक

मेष लग्न : तृतीयभाव : बुध

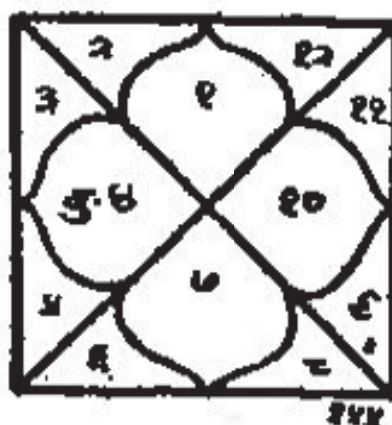


तीसरे भाव में स्वराशिस्थ बुध के प्रभाव से जातक अत्यन्त पराक्रमी तथा हिम्मती होता है, परन्तु फलहीन होने के कारण जहाँ शत्रुओं पर विजय दिलाता है, वहाँ भाई-बहिन के सुख में कमी भी के आता है।

सातवीं भिन्नदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक अपने ही पराक्रम से भाग्य की वृद्धि करता है तथा कुछ कमी के साथ धर्म-पालन की ओर भी प्रेरित करता रहेगा। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक विवेकी, परिश्रमी तथा पराक्रमी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलविवेक

मेष लग्न : चतुर्थभाव : बुध

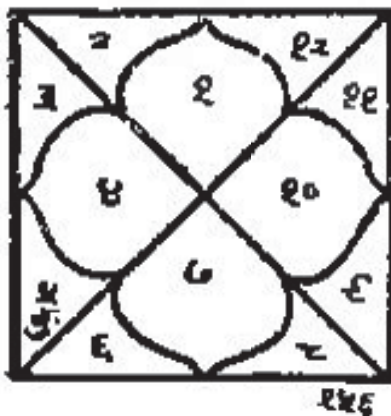


चौथे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की माता, भूमि, धन तथा सुख के पक्ष में कुछ कमियाँ बनी रहती हैं।

सातवीं भिन्नदृष्टि से नवमभाव की देखने के कारण जातक की पिता एवं राज्य पक्ष द्वारा सम्मान तथा सफलताएँ मिलती हैं। ऐसी ग्रह स्थिति का जातक यशस्वी होता है तथा प्रत्येक क्षेत्र में कुछ परेशानियों के बाद ही सफलता प्राप्त करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलविश

मेषलग्न : पंचमभाव : बुध

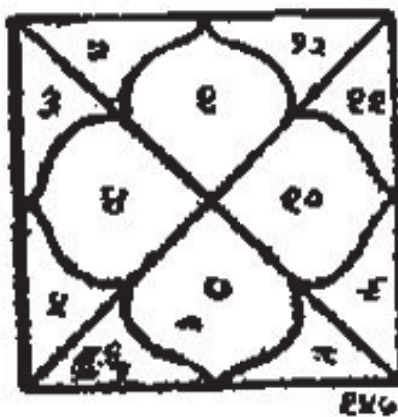


पंचवें भाव में मित्रराशिस्थ बुध के प्रभाव से जातक अपने विशेष परिश्रम द्वारा विद्या, वृद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है, क्योंकि बुध में स्थानाधिपति दोष है।

सातवीं मित्रदृष्टि से ग्यारहवें भाव को देखने के कारण जातक अपने बुद्धि-विवेक द्वारा भाग्य तथा आय की वृद्धि करता है। बुध के एष्टश होने के कारण जातक को शत्रुपक्ष में भी सफलता मिलती रहती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलविश

मेष लग्न : षष्ठभाव : बुध



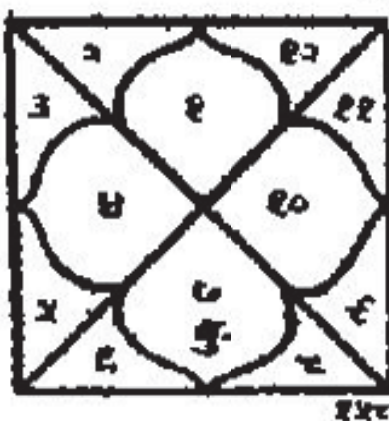
छठे भाव में स्वक्षेत्री तथा उच्च के बुध के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर अत्यधिक प्रभाव रखने वाला तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा बड़े-बड़े काम कर दिखाने वाला होता है।

बुध के पराक्रमेश के साथ एष्टश भी होने के कारण भाई-बहिनों से कुछ विरोध रहना है तथा अपने पराक्रम के बारे में भी कुछ आन्तरिक कमी का अनुभव करता रहता है।

सातवीं नीच दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक को खर्च तथा बाहरी सम्बन्धों में कुछ हानियाँ भी उठानी पड़ती हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलविश

मेषलग्न : सप्तमभाव : बुध

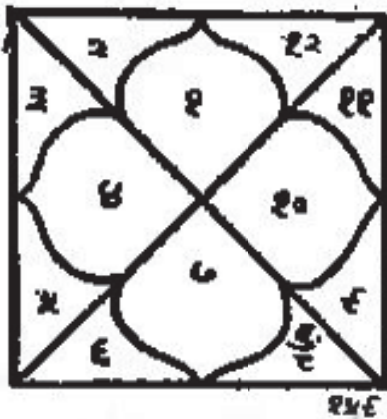


सातवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव में जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा व्यक्तमार्ग में सफलता पाता है, परन्तु एष्टश होने के कारण स्त्री-पक्ष में कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से मित्र मंगल की राशि वाले प्रथमभाव को देखने के कारण जातक को मामान्य शारीरिक कष्ट तथा रोगों का शिकार भी बनना है। भाई-बहिन के द्वारा जातक को सहयोग मिलना रहता है तथा विवेक-बुद्धि भी प्रबल रहती है।

'मेघ' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेघलग्न : अष्टमभाव : बुध

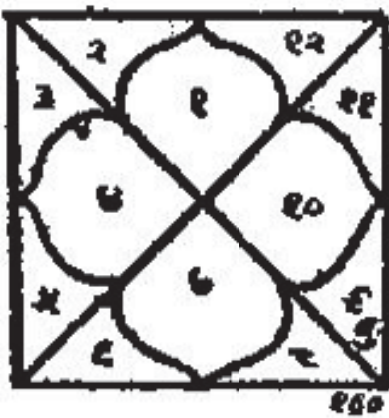


आठवें भाव में मित्र मंगल की राशि में स्थित तृतीयेश एवं षष्ठेश बुध के प्रभाव से जातक को पराक्रम, आयु तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कठिनाइयाँ आती हैं तथा शत्रुपक्ष से हानि पहुँचने की संभावना भी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से बुध द्वितीयभाव से देखता है, अतः जातक को धन उपाजित करने के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है। कुल मिलाकर ऐसी ग्रह स्थिति के जातक का जीवन सघर्षपूर्ण रहता है।

'मेघ' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेघलग्न : नवमभाव : बुध

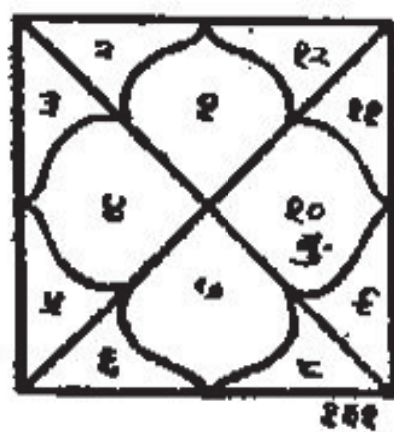


नवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित षष्ठेश बुध के कारण जातक की भाग्य-पक्ष में कठिनाइयों का अनुभव होता है, परन्तु शत्रुपक्ष के सम्बन्ध से भाग्यवृद्धि में सफलता भी मिलती है।

सातवीं दृष्टि से बुध स्वराशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक का पराक्रम बढ़ा रहता है और उसे स्व-विवेक तथा भाई-बहिनों द्वारा लाभ प्राप्त होता रहता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक कुछ परेशानियों के साथ ही उन्नति कर पाता है।

'मेघ' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेघलग्न : दशमभाव : बुध

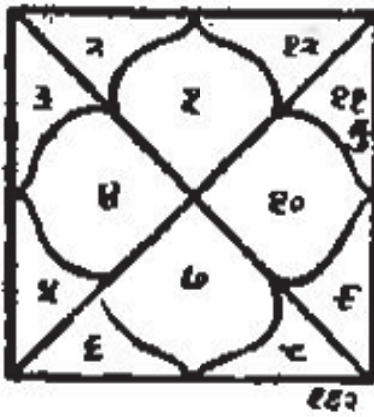


दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने पराक्रम तथा पुरुषार्थ द्वारा अत्यधिक उन्नति करता है, परन्तु बुध के षष्ठेश होने के कारण पिता से कुछ वैमनस्य भी रहता है। राज्यपक्ष में सम्मान तथा शत्रुपक्ष में सफलता प्राप्त होती है।

सातवीं शत्रु दृष्टि से बुध चन्द्रमा की राशि के चौथे भाव की देखता है, अतः माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी ला देता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेष लग्न : एकादशभाव : बुध

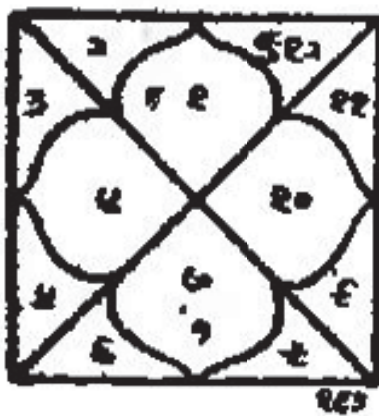


ग्यारहवें भाव में मित्र राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम एवं बुद्धि-विवेक द्वारा आय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त करता है। उसे भाई-बहिन का लाभ भी मिलता है, परन्तु पठेश होने के कारण कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि में पंचमभाव को देखने के कारण विद्या के क्षेत्र में सफलता देता है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान पक्ष में भी सुख दिलाता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेष लग्न : द्वादशभाव : गुरु



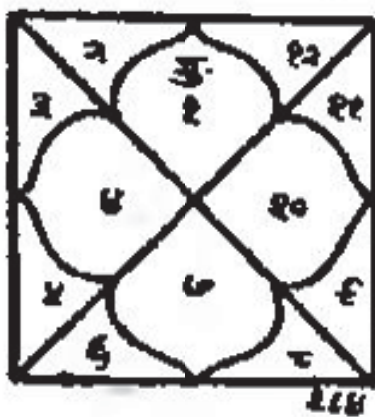
बारहवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित षष्ठेश बुध के प्रभाव से जातक को खर्च तथा बाहरी सम्बन्धों के विषय में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है एवं भाई-बहिन के सुख में भी न्यूनता आती है।

सातवीं उच्चदृष्टि से बुध अपनी राशि वाले षष्ठ-भाव को देखता है अतः जातक स्व-विवेक द्वारा शत्रुपक्ष पर सफलता पाने में समर्थ होता है तथा गुप्त सुमितियों एवं धर्म से काम लेने वाला भी होता है।

'मेष' लग्न में 'गुरु'

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

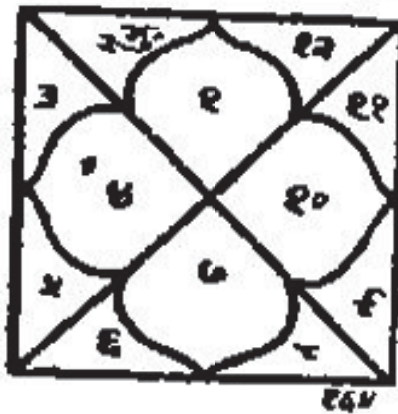
मेष लग्न : प्रथमभाव : गुरु



पहले भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अत्यधिक धन, उन्नति एवं बाह्य-स्थानों से प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से गुरु पंचमभाव को देखता है तथा जातक शत्रु विद्वान्, बुद्धिमान तथा सन्ततिवान् होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यक्तियों के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। नवीं दृष्टि से स्वराशि वाले नवमभाव को देखने के कारण जातक के भाग्य एवं धर्म में वृद्धि होती है।

'मेष' की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीयभाव : गुरु

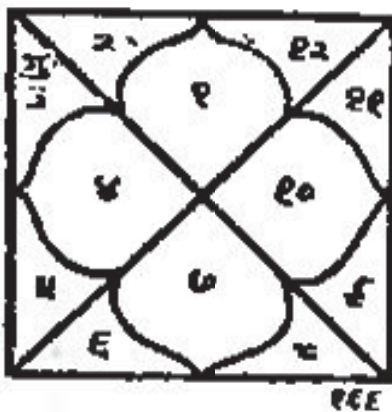


दूसरे भाव में शत्रु शुक की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक वाद्य-स्थानों के सम्पर्क से धन एवं भाग्य की वृद्धि करता है, परन्तु कभी-कभी हानि भी उठानी पड़ती है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि के षष्ठभाव की देखता है, अतः शत्रुपक्ष में बुद्धिमानी से सफलता प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव की देखने के कारण जातक की पुरा-वस्व एवं आयु का लाभ होता है। नवीं दृष्टि से शनि की राशि वाले दशमभाव को देखने के कारण

पिता एवं राज्य के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : तृतीयभाव : गुरु

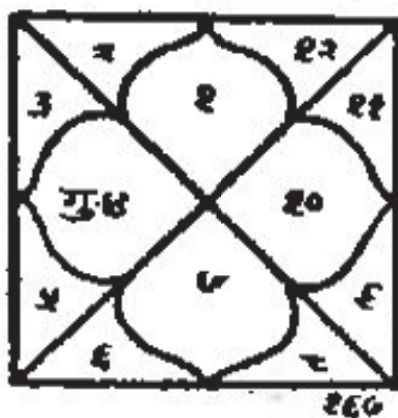


तीसरे भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की पराक्रम तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। पाँचवीं शत्रु दृष्टि-से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं दृष्टि से स्व-राशि वाले नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। नवीं दृष्टि से शत्रु शनि की राशि वाले ग्यारहवें भाव को देखने के कारण जातक

की आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

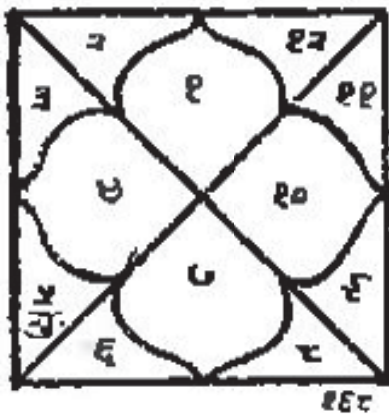


चौथे भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन आदि का पर्याप्त सुख मिलता है। पाँचवीं मित्र दृष्टि से अष्टमभाव की देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। सातवीं नीच दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य सुख में कमी रहती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों से अच्छा सम्बन्ध रहता है, परन्तु व्यय की अधिकता

रहती है। ऐसा जातक धनी, सम्पत्तिवान, दीर्घायु तथा खर्चीला होता है।

‘मेघ’ लग्न की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

मेघ लग्न : पंचमभाव : गुरु

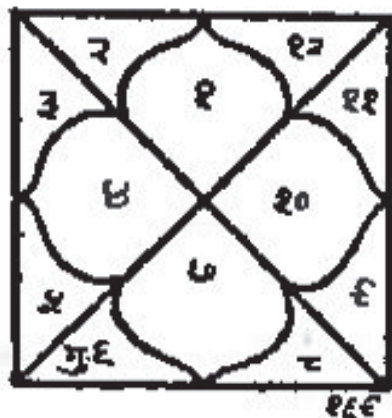


पाँचवें भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक विद्वान्, बुद्धिमान तथा मस्तनिवान होता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि वाले नवें भाव को देखता है अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण जातक की आमदनी के क्षेत्र में कभी-कभी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। नवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक का शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ बना रहता है। ऐसी ग्रह स्थिति

का जातक विद्वान्, बुद्धिमान, धर्मिन् तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है।

‘मेघ’ लग्न की कुण्डली के ‘षष्ठभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

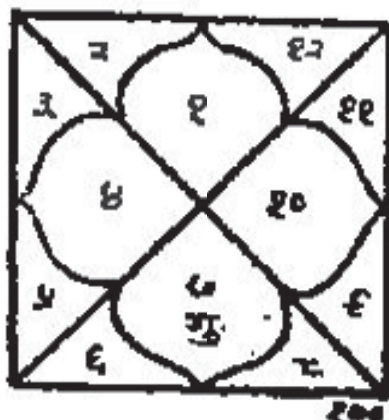
मेघ लग्न : षष्ठभाव : गुरु



छठे भाव में अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रुपक्ष में सफलता मिलती है तथा कुछ रुकावटों के बावजूद भाग्योन्नति भी होती है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य-सम्बन्ध में कमी आती है। मानवी दृष्टि से द्वादश-भाव को स्वराशि में देखने के कारण व्यय को अधिपत्ता रहती है तथा बाहरी सचधों से सफलता मिलती है। नवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण कुटुम्ब से मतभेद रहता है तथा धन-प्राप्ति में कठिनाइयाँ आती हैं।

‘मेघ’ लग्न की कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

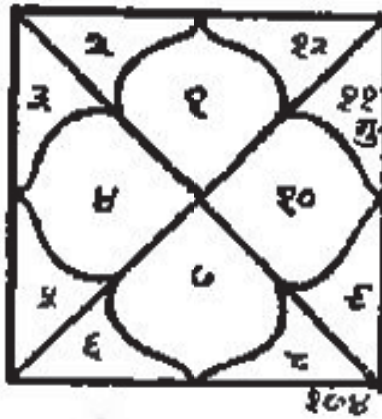
मेघ लग्न : सप्तमभाव : गुरु



सातवें भाव में शत्रु शुक की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव की देखने के कारण आमदनी के मार्ग में रुकावटें आती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से लग्न को देखने के कारण जातक का शरीर सुन्दर तथा व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। नवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहन तथा पराक्रम का पक्ष अच्छा बना रहता है।

'मेघ' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेघ लग्न : एकादशभाव : गुरु

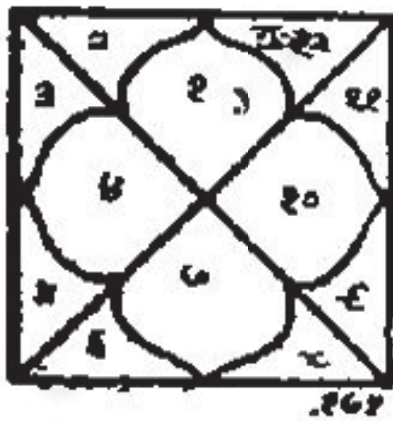


ग्यारहवें भाव में शत्रु शक्ति को राशि पर स्थित भाग्येश गुरु के प्रभाव में जातक के भाग्य की उन्नति में कुछ कमी बनी रहती है। पांचवीं मित्रदृष्टि से गुरु तृतीयभाव को देखता है, परन्तु व्ययेश होने के कारण भाई तथा पत्राक्रम के क्षेत्र में भी वृष्टिपूर्ण सफलता देता है। मातवीं मित्रदृष्टि में पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं संतान पक्ष का सहयोग मिलना है। नवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के

क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों के साथ ही सफलता मिलती है।

'मेघ' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेघ लग्न : द्वादशभाव : गुरु



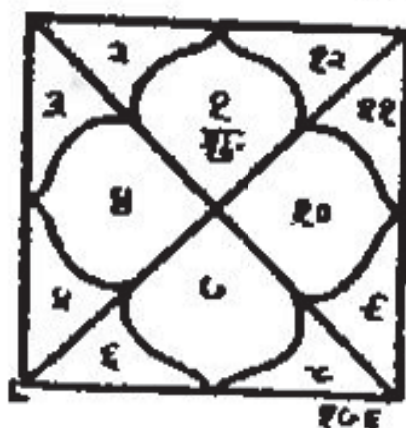
बारहवें भाव में स्वराशि स्थित गुरु के प्रभाव में जातक का खर्च अधिक रहना है तथा बाहरी-स्थानों से लाभ भी होता है। पांचवीं मित्रदृष्टि से गुरु चतुर्थ-भाव को देखता है, अतः जातक को माना, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। मातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः शत्रुपक्ष में जातक अपनी समझदारी से सफलता प्राप्त करता है। नवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक के आयु तथा पुरातन्त्र के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। ऐसी

स्थिति का जातक हरक्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ ही सफलता पाता है।

'मेघ' लग्न में 'शुक्र'

'मेघ' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेघ लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

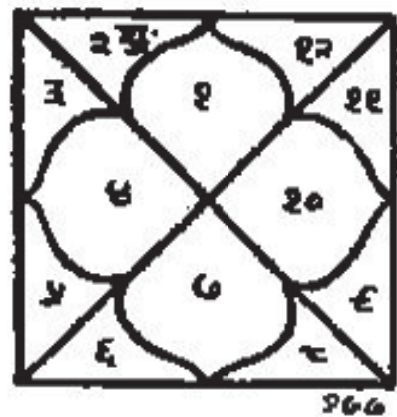


पहले भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक सुन्दर शरीर वाला, सम्मानित, बलिष्ठ तथा चतुर होता है।

सातवीं दृष्टि के शुक्र स्वराशि वाले सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलनी हैं परन्तु शुक्र के घनेश होने के कारण व्यवसाय तथा कुटुम्ब के पक्ष में कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलान्वेश

मेष लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

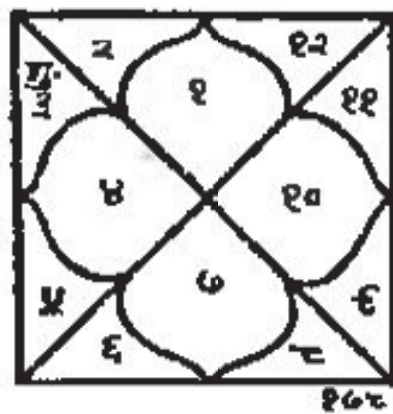


दूसरे भाव में स्वराशि स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक धनी, कुटुम्बवान तथा सौभाग्यशाली होता है, परन्तु शुक्र के बन्धनेश के साथ सप्तमेश भी होने के कारण स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ भी आती हैं।

सातवीं शतदृष्टि से शुक्र अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को स्वयोग्यता के कारण ही आयु तथा पुरातन्त्र का लाभ मिलता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलान्वेश

मेष लग्न : तृतीयभाव : शुक्र

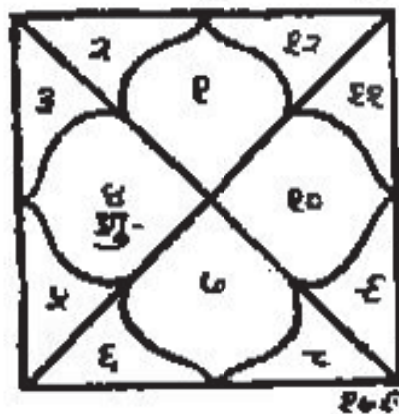


तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम, चातुर्य, साहस एवं भाई-बहिनों की वृद्धि होती है, परन्तु सप्तमेश होने के कारण स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं।

सातवीं समदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक भाग्यवान तथा धर्मात्मा भी होता है। संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली, धार्मिक, पराक्रमी, धनी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलान्वेश

मेष लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

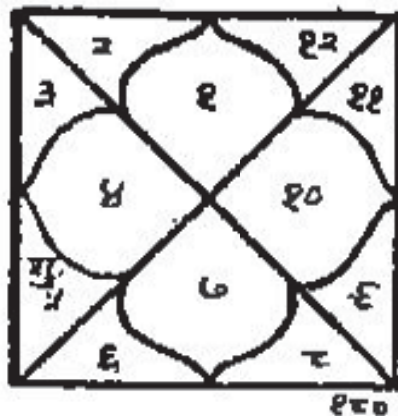


चौथे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है, परन्तु शुक्र के द्वितीयेश तथा केन्द्रस्थ होने के कारण धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता रहता है। इसी प्रकार स्त्री तथा व्यवसाय के सुख में भी कुछ न्यूनता बनी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव की देखने के कारण जातक की राज्य तथा पिता के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी उन्नति होती है।

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

मेष लग्न : पंचमभाव : शुक्र

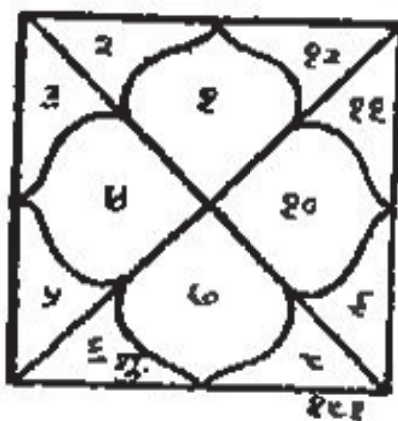


पाँचवें भाव में शत्रु सूर्य की राशि में त्रिकोणस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक को सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के लाभ सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र दृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण जातक की आमदनी अच्छी बनी रहती है। संक्षेप में इस ग्रह स्थिति का जातक विद्वान्, भवतिथान्, सुखी, धनवान तथा भाग्यशाली होता है।

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘षष्ठभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

मेष लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

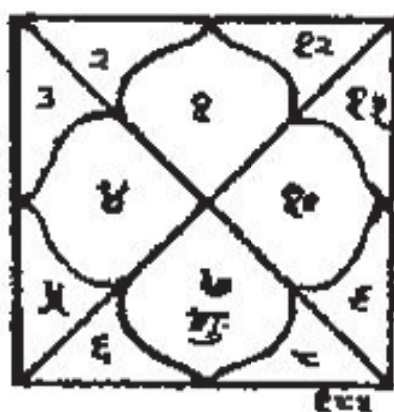


छठे भाव में मित्र गुरु को राशि पर नीचस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु क्षेत्र में गुप्त-चतुर्य में काम लेता है तथा कठिनाइयों का शिकार बनता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक के खर्च में अधिकता बनी रहती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में सफलता मिलती है। ऐसी ग्रह स्थिति से जातक को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं तथा सफलता पाने के लिए बुद्धि-बल का अधिक प्रयोग करना पड़ता है।

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

मेष लग्न : सप्तमभाव : शुक्र

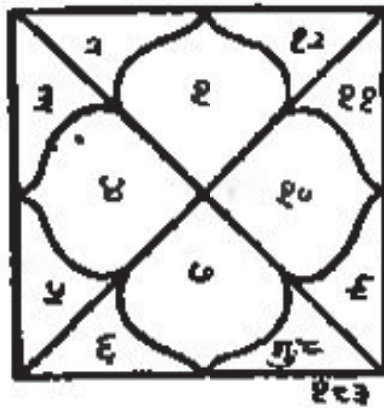


सातवें भाव में केन्द्रस्थ स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में विशेष सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं दृष्टि से लग्न की देखने के कारण जातक सुन्दर, कार्यकुशल, शारीरिक दृष्टि से पुष्ट तथा प्रतिष्ठित भी होता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक सुखी, प्रतिष्ठित, होशियार तथा स्त्री, धन कुटुम्ब आदि के सुख से भरा-पूरा रहता है।

'मेघ' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेघ लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

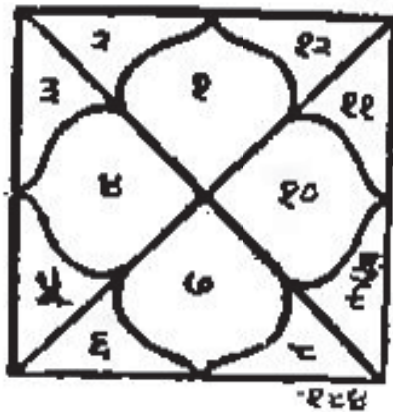


आठवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित द्वितीयेश तथा सप्तमेश शत्रु के प्रभाव से जातक को धन, कुटुम्ब, स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक कठिन परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि करता है तथा अपने चातुर्य द्वारा प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है।

'मेघ' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेघ लग्न : नवमभाव : शुक्र



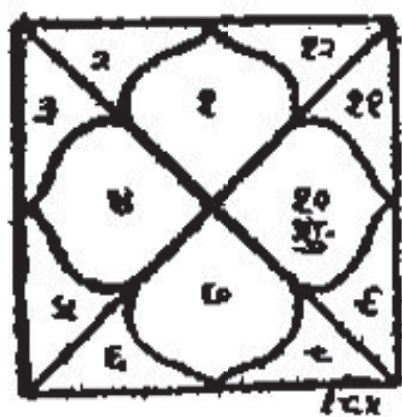
नवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर त्रिकोणस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक भाग्यवान तथा चतुर होता है, साथ ही उसे स्त्री तथा कुटुम्ब का अच्छा सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का अच्छा सुख भी मिलता है।

संक्षेप में, ऐसी ग्रह-स्थिति वाला जातक सुखी, धनी, भाग्यवान, धर्मात्मा, पराक्रमी तथा भाई-बहिनों के सुख से युक्त होता है।

'मेघ' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेघ लग्न : दशमभाव : शुक्र



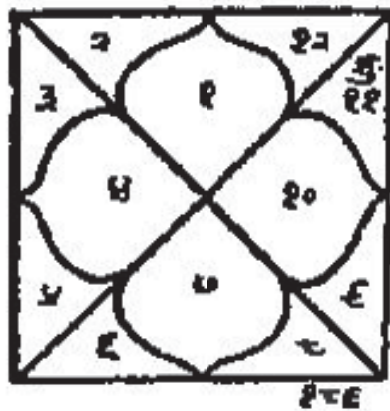
दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता एवं राज्य क्षेत्र से सुख प्राप्त होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से केन्द्रस्थ शुक्र द्वारा धतुर्य-भाव की देखने से जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है।

संक्षेप में ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी, सुखी, राज्य द्वारा सम्मानित, माता, पिता तथा स्त्री के सुख की पाने वाला, यशस्वी तथा परम चतुर होता है।

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ में स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

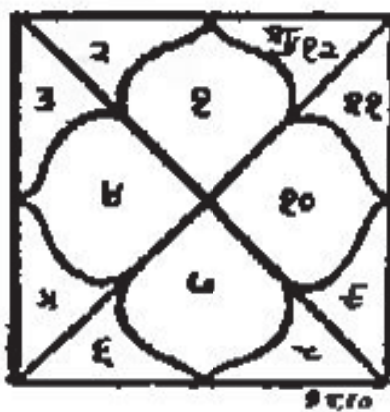
मेष लग्न: एकादशभाव: शुक्र



संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी, सुखी, चतुर तथा स्वार्थी होता है।

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ में स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

मेष लग्न: द्वादशभाव: शुक्र



बारहवें भाव में अपने सामान्य शत्रु शुरु की राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक बाहरी संस्पर्धों द्वारा बड़ी चतुराई से धन तथा यश प्राप्त करता है तथा बहुत खर्चीला भी होता है।

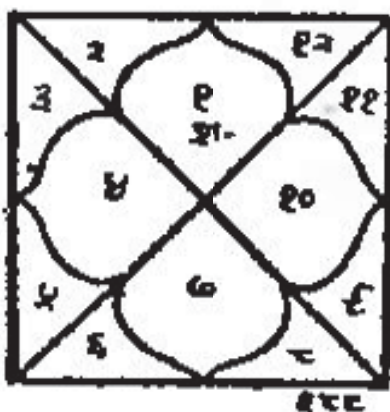
सातवीं नीच दृष्टि से मित्र राशि के षष्ठ-भाव को देखने के कारण जातक शत्रु पक्ष में छल-छिद्र एवं भेद युक्ति से लाभ निकालता है तथा शत्रुओं द्वारा कुछ हानि भी उठाता है। संक्षेप में

ऐसी ग्रह स्थिति का जातक सर्वव्य-पूर्ण सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

‘मेष’ लग्न में ‘शनि’

‘मेष’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

मेष लग्न: प्रथमभाव: शनि

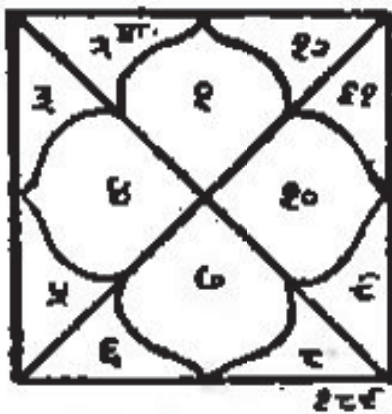


पहले भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा भान-प्रतिष्ठा में कमी रहती है तथा राज्य के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। तीसरी मित्रदृष्टि तृतीयभाव पर पढ़ने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों की वृद्धि होती है, सातवीं मित्रदृष्टि सप्तमभाव पर पढ़ने से स्त्री यथा व्यवसाय पक्ष में सफलता देता है तथा दसवीं दृष्टि से स्वराजि

वाले दशमभाव को देखने के कारण राज्य तथा मित्र के क्षेत्र में प्रतिष्ठा की वृद्धि भी करता है।

‘शेष’ लग्न की कुम्हली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलविशेष

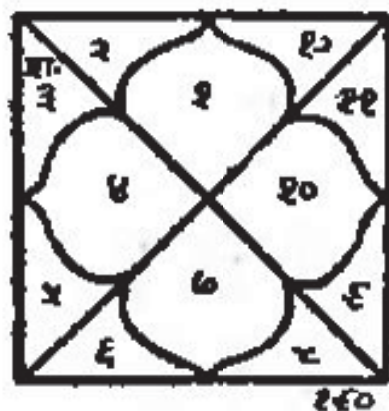
शेष लग्न : द्वितीयभाव : शनि



दूसरे भाव में मित्त शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक धनी तथा कुटुम्बवान होता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने के कारण माता, भूमि एवं भवन से सुख में कुछ कमी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होने पर भी जातक को अशान्तियों का सामना करना पड़ता है। बसवीं दृष्टि से स्वराशि वाले एकादश-भाव को देखने से जातक की आयु में वृद्धि होती है। संक्षेप में ऐसी ग्रह स्थिति बाधा जातक धनी तथा ऐश्वर्यवान होता है।

‘शेष’ लग्न की कुम्हली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलविशेष

शेष लग्न : तृतीयभाव : शनि

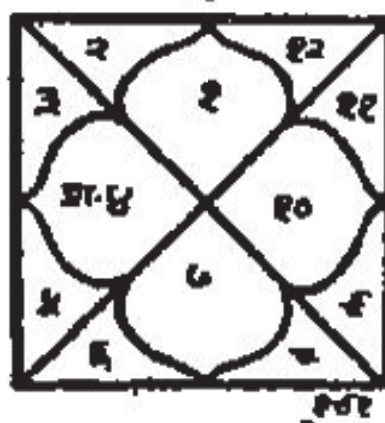


तीसरे भाव में मित्त बुध की राशि पर स्थित दशमेश तथा एकादशेश शनि के प्रभाव से जातक का पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहनों के सुख में वृद्धि होती है। साथ ही पिता, राज्य द्वारा सहयोग मिलता है। तीसरी शत्रु दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या तथा सन्तान पक्ष में कमी रहती है। सातवीं शत्रु दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से कारण खर्च अधिक होता है

तथा बाहरी स्थान के सम्बन्ध भी अतन्तोपजनक रहते हैं।

‘शेष’ लग्न की कुम्हली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलविशेष

शेष लग्न : चतुर्थभाव : शनि

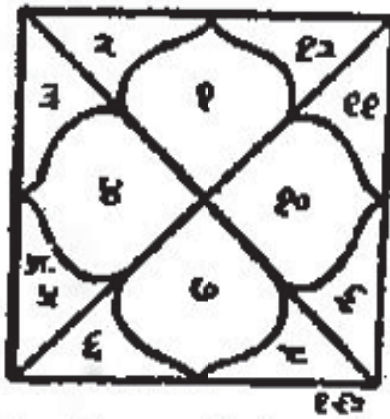


चौथे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि-भवन के साधनों में कुछ कमी रहती है, परन्तु सुख में वृद्धि होती है। तीसरी मित्तदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष से लाभ होता है तथा शत्रुओं पर प्रभाव डालता रहता है। सातवीं दृष्टि स्वराशि वाले दशमभाव में पड़ने से पिता राज्य व्यवसाय एवं सामान के क्षेत्र में वृद्धि होती रहती है। बसवीं नीचदृष्टि से लग्न की

देखने के कारण जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा वह चिन्ताओं का भी कुछ शिकार बना रहता है।

श्रेष्ठ लग्न की कुण्डली के पंचमभाव स्थित शनि का फलादेश

मेष लग्न: पंचमभाव: शनि

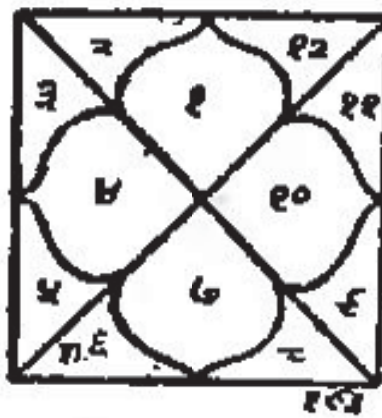


पाँचवें भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित त्रिकोणस्थ शनि के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान पक्ष से मतभेद रहता है। तीसरी उच्चदृष्टि से मित्रराशि से सप्तभाव की देखने के कारण व्यवसाय एवं स्त्री पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले एकादशभाव की देखने से आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है तथा राज्य एवं पिता से भी लाभ

होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब का भी खूब लाभ होता है।

श्रेष्ठ लग्न की कुण्डली के षष्ठभाव स्थित शनि का फलादेश

मेष लग्न: षष्ठभाव: शनि

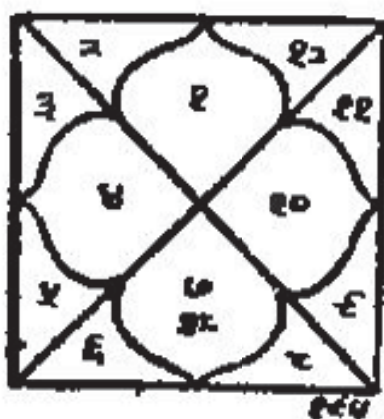


छठे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित दशमेश तथा एकादशेश शनि से प्रभाव से जातक को पिता के साथ वैमनस्य रहता है तथा राज्य पक्ष में कठिनाई से सफलता मिलती है। परन्तु आमदनी अच्छी रहती है तथा शत्रुओं पर विजय भी मिलती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने में आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कठिनाइयों में सफलता मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक होना है तथा वाहरी संबंधों

से असन्तोष रहता है। दसवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव की देखने से कारण पगक्रम तथा भाई-बहनों के सुख में वृद्धि होती है। ऐसा जातक बड़ा हिम्मती तथा प्रभावी होता है।

श्रेष्ठ लग्न की कुण्डली के सप्तमभाव स्थित शनि का फलादेश

मेष लग्न: सप्तमभाव: शनि

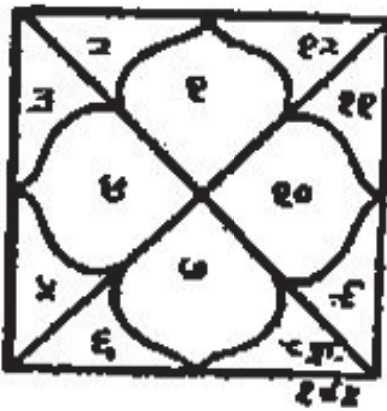


सातवें भाव में मित्र शुक की राशि पर स्थित दशमेश तथा एकादशेश शनि के प्रभाव से जातक को व्यवसाय एवं स्त्री-पक्ष में विशेष सफलता मिलती है। पिता तथा राज्य से बहुत लाभ होता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से नवमभाव की देखने के कारण आयुवृद्धि में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु मंगल की राशि वाले प्रथमभाव की देखने से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि एवं भवन के क्षेत्र में कुछ असन्तोष

रहता है तथा बरेषु सुखों में भी कमी आती है।

'श्रेष्ठ' लग्न को कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

श्रेष्ठ लग्न : अष्टमभाव : शनि

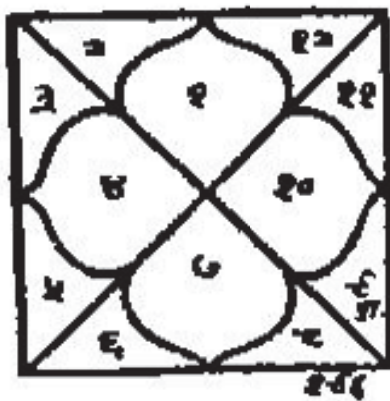


आठवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित एकादशेश शनि से प्रभाव से जातक को पुरातत्व एवं आयु का तो लाभ होता है, परन्तु आमदनी के क्षेत्र में कमी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि वाले दशम भाव की देखने के कारण राज्य तथा पिता-पक्ष से अल्प लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से कठिन परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब के क्षेत्र में सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव की

देखने के कारण विद्या तथा सन्तान पक्ष में सुटि रहती है। ऐसा जातक उवान का तेज तथा क्रोधी भी होता है।

'श्रेष्ठ' लग्न को कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

श्रेष्ठ लग्न : नवमभाव : शनि

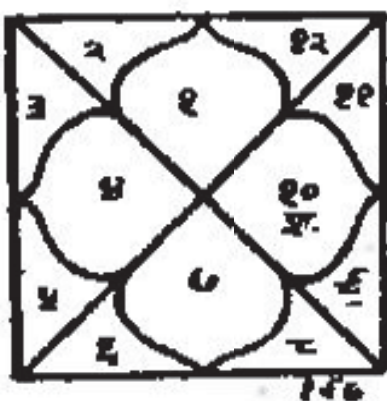


नवें भाव में शत्रु बुध की राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य की आरम्भ में कम तथा बाद में विशेष उन्नति होती है। धर्म का पालन भी कम ही होता है। पिता तथा राज्य द्वारा लाभ मिलता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि वाले ग्यारहवें भाव की देखने के कारण आमदनी अच्छी रहती है तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति भी होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव की देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि के साथ भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव की देखने

के कारण शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है। संक्षेप, ऐसी ग्रह स्थिति का जातक शत्रुजयी, यशस्वी तथा धनी होता है।

'श्रेष्ठ' लग्न को कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित शनि का फलादेश

श्रेष्ठ लग्न : दशमभाव : शनि

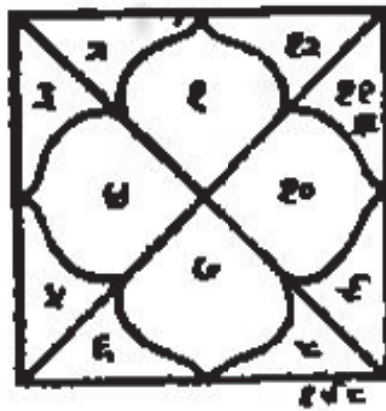


दसवें भाव में स्वराशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक पिता तथा राज्य द्वारा विशेष शान्ति तथा लाभ प्राप्त करता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी-स्वानों के संबंध असंतोषजनक रहते हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने के कारण माता, भूमि, भवन के सुख में कमी रहती है तथा दसवीं उच्चदृष्टि से सप्तमभाव की देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलती है। संक्षेप में ऐसा जातक ऐश्वर्यवान्, विलासी तथा सुखी

जीवन बिताने वाला होता है।

'मेष' लग्न को कुम्हती के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेषलग्न : एकादशभाव : शनि

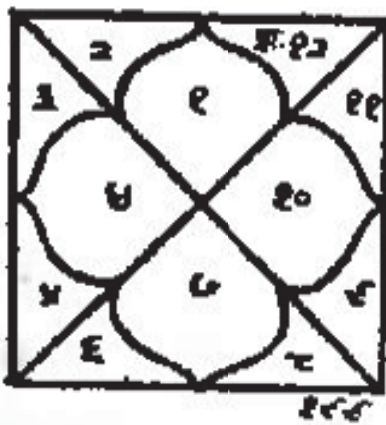


बारहवें भाव में स्वराशि स्थित दशमेश शनि से प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है। उसे पिता तथा राज्य द्वारा भी यथेष्ट लाभ मिलता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से शत्रु की राशि वाले प्रथमभाव को देखने से जातक से शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या तथा संतान पक्ष में भी छुटि धनी रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु की वृद्धि तो होती है, परन्तु पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है एवं दैनिक

जीवन में कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

'मेष' लग्न को कुम्हती के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेषलग्न : द्वादशभाव : शनि



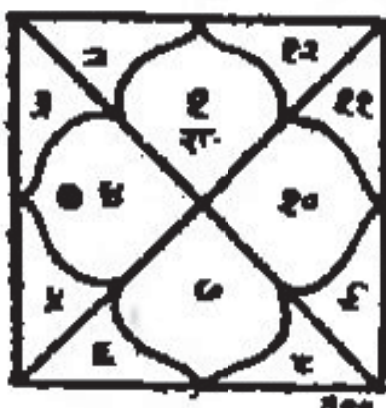
बारहवें भाव में शत्रु बुध की राशि पर स्थित शनि से प्रभाव से जातक का खर्च अत्यधिक होता है तथा बाहरी स्थानों, पिता एवं राज्य के पक्ष से भी हानि उठानी पड़ती है। तीसरी मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव से देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। सातवीं मित्रदृष्टि से छठेभाव को देखने से शत्रुपक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव की देखने के कारण भाग्योन्नति में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं तथा विशेष परिश्रम द्वारा

थोड़ी ही सफलता मिल पाती है।

'मेष' लग्न में 'राहु'

'मेष' लग्न को कुम्हती के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

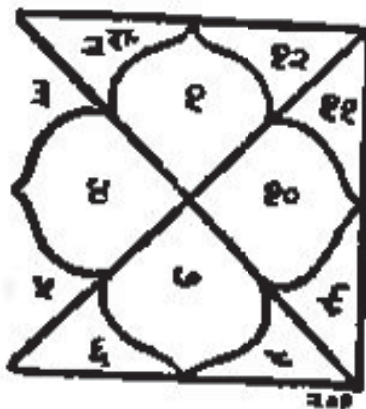
मेष लग्न : प्रथमभाव : राहु



पहले भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता। हृदय में विभिन्न प्रकार की चिन्तायें भी बनी रहती हैं। ऐसा जातक झूठ, फरेब तथा गुप्त मुक्तियों का आश्रय लेने वाला तथा बड़ा हिम्पती होता है।

शिव' लग्न की कुम्हली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

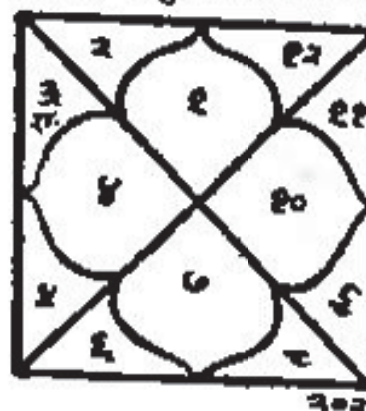
मेषलग्न : द्वितीयभाव : राहु



दूसरे भाव में मित शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक घन सम्बन्धी चिन्ताओं तथा अनेक प्रकार से संकटों से ग्रस्त बना रहता है। कौटुम्बिक क्लेश भी भोगने पड़ते हैं। परन्तु बारम्बार हानि उठाकर भी जातक अन्त में अपने युक्तिबल से घनी क्षतिपूर्ति करने में समर्थ हो जाता है तथा समाज में धनी व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित भी होता है।

शिव' लग्न की कुम्हली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

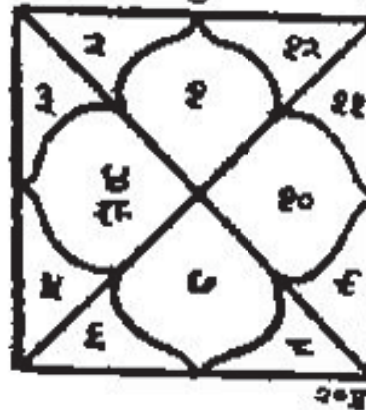
मेषलग्न : तृतीयभाव : राहु



तीसरे भाव में उच्चस्थ राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा उसे भाई-बहनों का सुख भी मिलता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक बड़ा हिम्मती, साहसी, युक्तिबल में प्रवीण तथा अपनी भीतरी कमजोरी की प्रकट न करने वाला होता है और अपने इन्हीं गुणों के कारण सफलता भी प्राप्त करता है।

शिव' लग्न की कुम्हली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

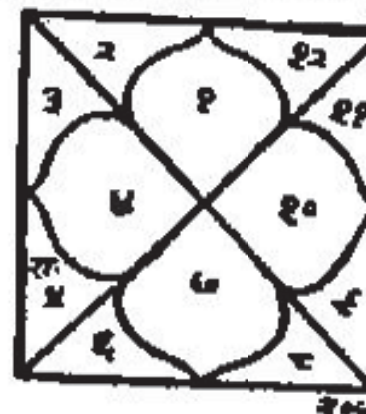
मेषलग्न : चतुर्थभाव : राहु



चौथे भाव में शत्रुस्थ राहु से प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी का शिकार होना पड़ता है। घरेलू शान्ति भी नहीं रहती। वह मानसिक-अशान्तियों का शिकार बना रहता है तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेकर भी अधिक सफल नहीं हो पाता।

शिव' लग्न की कुम्हली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

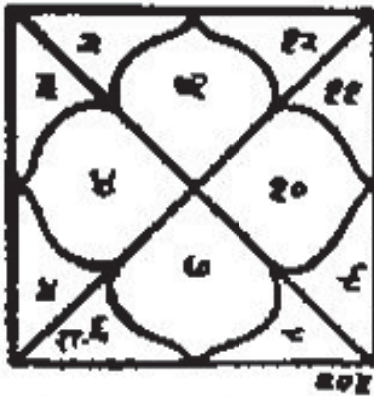
मेषलग्न : पंचमभाव : राहु



पाँचवें भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की विद्या-के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयों के बाद भी थोड़ी ही सफलता मिल पाती है। उसे सन्तान पक्ष से भी कष्ट होता है। परन्तु अपनी गुप्त युक्तियों से बल पर वह सामान्य सफलताएँ प्राप्त करता रहता है। ऐसा जातक कम पढ़ा-लिखा तथा परेशानियों में फँसा रहने वाला होता है।

शिव' लग्न की कुंडली के 'षष्ठभाष' स्थित 'राहु' का फलादेश

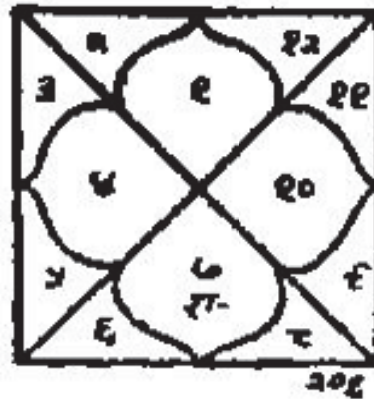
भेषलग्न : षष्ठभाष : राहु



छठेभाष में मित बुध की राशि पर १-यत राहु के प्रभाव से जातक अपने शत्रु-पक्ष में हिम्मत, बहादुरी तथा गुप्त युक्तियों से काम लेकर प्रभाव स्थापित करता है तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपने धैर्य को नहीं छोड़ता। ऐसा व्यक्ति बारम्बार मुसीबतों का शिकार बनता रहता है, परन्तु अपने साहस एवं धैर्य के बल पर उन सब पर विजय भी पाता रहता है।

शिव' लग्न की कुंडली के 'सप्तमभाष' स्थित 'राहु' का फलादेश

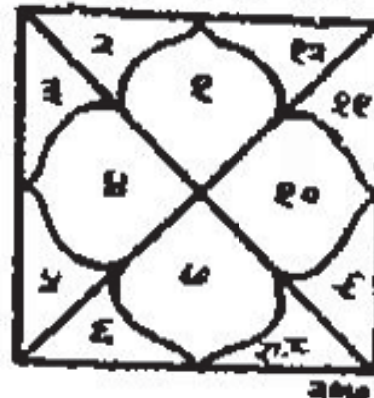
भेषलग्न : सप्तमभाष : राहु



सातवेंभाष में अपने मित शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में चिन्ता एवं कष्टों का शिकार होता है, परन्तु अपनी गुप्त-युक्तियों के बल पर उन कठिनाइयों का निराकरण करता है। व्यक्ति के पारिवारिक-जीवन में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं तथा जैसे-जैसे ही निर्वाह हो पाता है।

शिव' लग्न की कुंडली के 'अष्टमभाष' स्थित 'राहु' का फलादेश

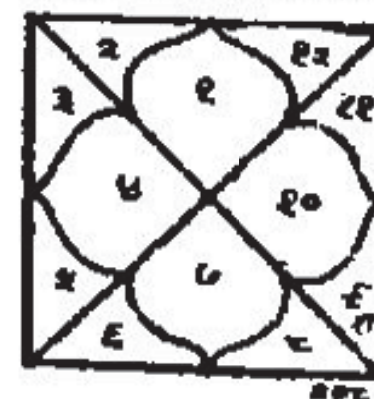
भेषलग्न : अष्टमभाष : राहु



आठवेंभाष में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की जीवन में अनेक बार घृस्त्यु-तुल्य कष्टों का शिकार होना पड़ता है। एक के बाद दूसरी मुसीबतें घेरे रहती हैं तथा पुराने-नए विषयक झगड़ें भी उठाने पड़ती हैं। वह गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेता है, फिर भी उसकी चिन्ताओं एवं परेशानियों का अन्त नहीं हो पाता।

शिव' लग्न की कुंडली के 'नवमभाष' स्थित 'राहु' का फलादेश

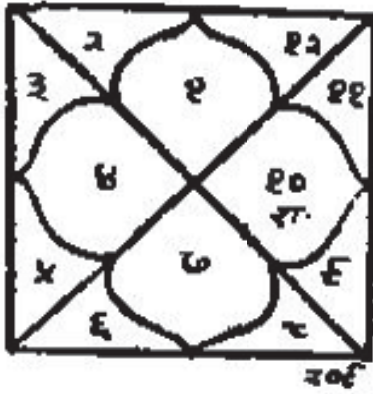
भेषलग्न : नवमभाष : राहु



नववेंभाष में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की धार्योन्नति में अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित होती रहती हैं। धर्म-पालन में भी श्रद्धा नहीं रहती। उसे बारम्बार अपयश, फल, निराशा एवं अयशमान का सामना करना पड़ता है तथा भार्यधिक दुःख उठाते रहने के बावजूद भी बहुत कम सफलताये मिल पाती हैं।

'शेष' लग्न की कुंडली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलान्वेश

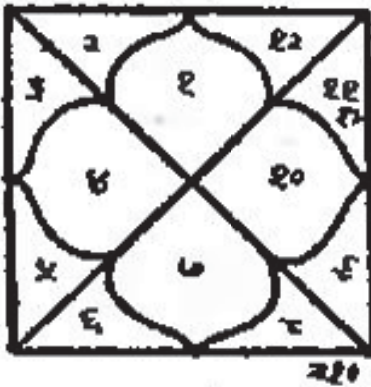
भेषलग्न : दशमभाव : राहु



दसवें भाव में मित शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा नौकरी, व्यवसाय एवं प्रतिष्ठा के क्षेत्र में भी बहुत संकट आते हैं। ऐसे जातक को भाग्योन्नति में बहुत कम सफलता मिलती है तथा अनेक प्रकार के दुःख भोगने पड़ते हैं।

'शेष' लग्न की कुंडली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलान्वेश

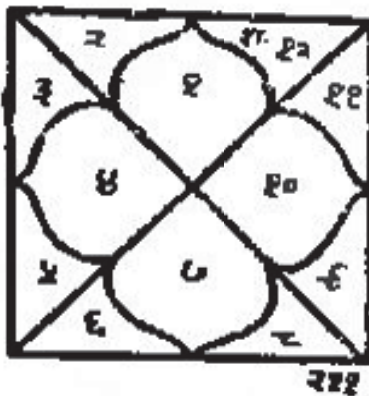
भेषलग्न : एकादशभाव : राहु



ग्यारहवें भाव में मित शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी बहुत अच्छी रहती है, परन्तु उसके लिए उसे कठोर परिश्रम भी करना पड़ता है। कभी-कभी लाभ के स्थान पर हानि के योग भी उपस्थित होते हैं। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक मितव्ययी, परिश्रमी, सनी तथा स्वार्थी होता है।

'शेष' लग्न की कुंडली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलान्वेश

भेषलग्न : द्वादशभाव : राहु

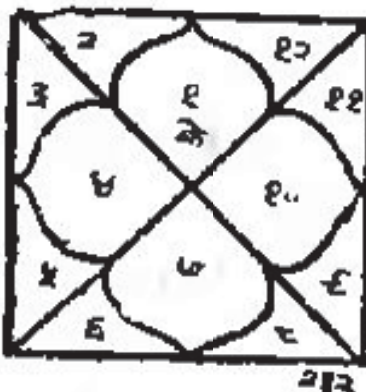


बारहवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को खर्च की आवश्यकता के कारण बहुत कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं तथा बाहरी स्थानों के संबंध से भी कष्ट मिलता है। बीच-बीच में कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करना तथा ठाठ-बाट से रहना—ये दोनों दाने भा साथ-साथ चलती हैं, परन्तु ऋण एवं व्यय के बोझ में मुक्ति नहीं मिल पाती।

'शेष' लग्न में 'केतु'

'शेष' लग्न की कुंडली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फल

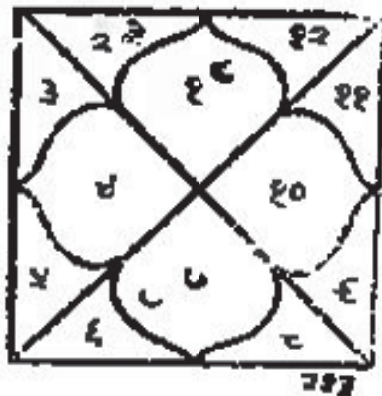
भेषलग्न : प्रथमभाव : केतु



पहले भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शारीरिक-कष्ट, मानसिक-विन्तायें तथा अन्य प्रकार की परेशानियों का शिकार बना रहता है। उसके शरीर में कहीं चोट भी लगती है तथा सौन्दर्य में भी कमी आ जाती है। ऐसा व्यक्ति हिम्मती, परिश्रमी तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने वाला होता है, परन्तु फिर भी अनेक वृष्टियों का शिकार बना रहता है।

‘शेष’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

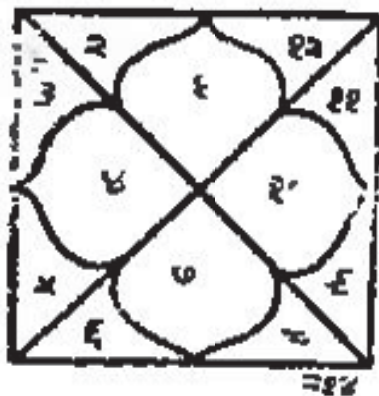
शेष लग्न : द्वितीयभाव : केतु



दूसरे भाव में मिव शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शारीरिक-कष्ट, चिन्ता, धन, की कमी, कौटुम्बिक परेशानी एवं अगड़ों का शिकार बना रहता है, परन्तु अपने मुक्ति-बल के आर्थिक स्थिति में थोड़ा-बहुत सुधार कर लेता है। भोतर से चिन्तित, तिधन तथा दुःखी रहने पर भी वह अपनी असलियत को प्रकट नहीं होने देता, फलतः लोग उसे धनवान ही समझते रहते हैं।

‘शेष’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

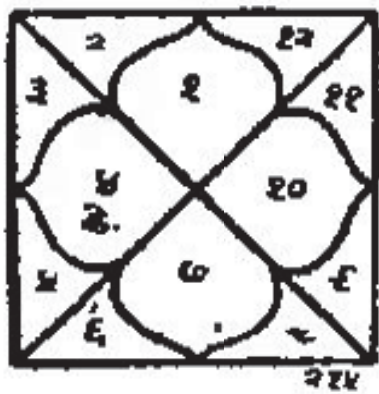
शेष लग्न : तृतीयभाव : केतु



तीसरे भाव में मिव बुध की राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के पक्ष में कमजोरी आती है तथा वह भीरु स्वभाव का होता है। गुप्त-युक्तियों के आश्रम से स्वार्थ साधन करना ही उसका उद्देश्य होता है, परन्तु अत्यधिक परिश्रम करने पर भी उसे सफलता बहुत कम ही मिल पाती है।

‘शेष’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

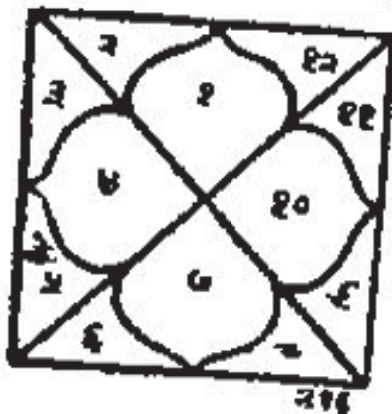
शेष लग्न : चतुर्थभाव : केतु



चौथे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में बहुत कमी रहती है तथा कुटुम्ब के विषय में भी अशान्तिबनी रहती है। चन्द्रमा की राशि पर केतु के होने कारण जातक का मनोबल क्षना रहता है, अतः उसी के बल पर वह अपने संकट का समय निकालता है। ऐसा जातक अपना देश छोड़ कर विदेश में भी जा सकता है।

‘शेष’ लग्न की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

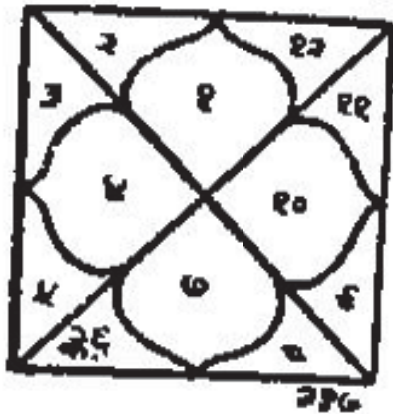
शेष लग्न : पंचमभाव : केतु



पाँचवें भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं। स्मरणशक्ति निर्बल होने के कारण वह अधिक विद्या प्राप्त नहीं कर पाता तथा मन्तानपक्ष से भी दुःखी रहता है। इस प्रह स्थिति का जातक स्वभाव से उग्र तथा कठोर बधन बोलने वाला होता है। अत्यन्त परिश्रम करने पर भी उसे कम सफलता ही मिलती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाब' स्थित 'केतु' का फलार्थ

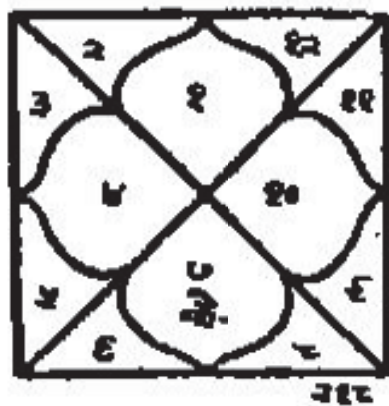
मेष लग्न : षष्ठभाब : केतु



छठे भाब में मित बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष पर विजयी बना रहता है। वह बड़ा हिम्मती, बहादुर तथा विवेकी होता है, परन्तु मन के भीतर कुछ कमजोरी भी छिपी रहती है। उसे ननसाल के पक्ष से कुछ हानि उठानी पड़ती है। संक्षेप में ऐसा व्यक्ति विवेकी, हिम्मती तथा शत्रुजयी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाब' स्थित 'केतु' का फलार्थ

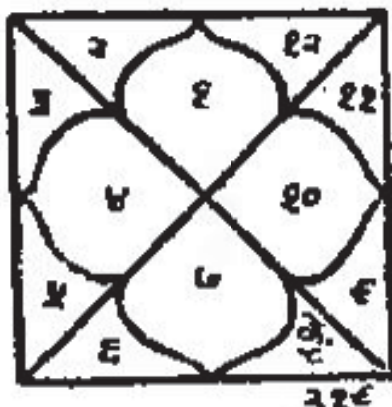
मेष लग्न : सप्तमभाब : केतु



सातवें भाब में मित शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा पारिवारिक-गृहस्थियों की सुलझाने में अनेक युक्तियों से काम लेना पड़ता है। अपनी गुप्त-युक्तियों द्वारा उसे व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में कुछ कमियों से साथ सफलता मिलती रहती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाब' स्थित 'केतु' का फलार्थ

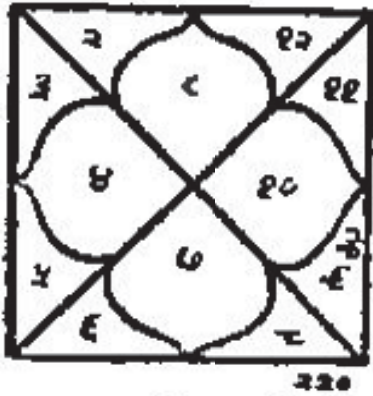
मेष लग्न : अष्टमभाब : केतु



आठवें भाब में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की अपने जीवन में कई बार मृत्यु-सुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि भी उठानी पड़ती है। गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेकर जातक अपनी कठिनाइयों पर कुछ विजय भी पाता है, परन्तु कष्टों का अन्त नहीं होता। उसके शरीर में भी कोई-न-कोई रोग बना ही रहता है।

'शेव' लग्न को कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

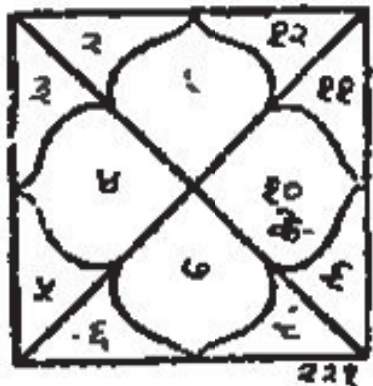
शेव लग्न : नवम भाव : केतु



नवें भाव में शुभ ग्रह गुरु की राशि में स्थित उच्च के प्रभाव से जातक भाग्यवान, धर्मत्मा तथा धनी होता है, परन्तु उसके जीवन में अनेक प्रकार के परिवर्तन भी आते रहते हैं तथा उसे अनेक प्रकार के संकटों एवं कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। कुल मिला कर ऐसा जातक संघर्षपूर्ण मुखी एवं घासिक जीवन व्यतीत करता है।

'शेव' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

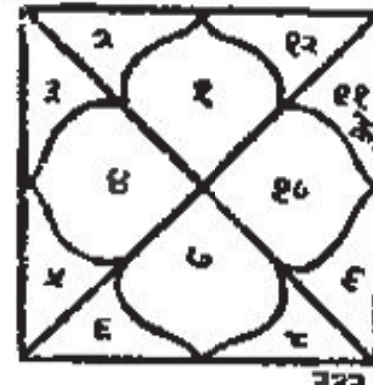
शेव लग्न : दशमभाव : केतु



दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अनेक कठिनाइयों से संघर्ष करना पड़ता है। उसे अपने व्यवसाय में अनेक बार परिवर्तन करने की आवश्यकता भी पड़ती है, परन्तु अपनी गुप्त-शक्तियों एवं कठिन परिश्रम के बल पर वह मान-प्रतिष्ठा तथा सफलताएँ प्राप्त करता है।

'शेव' लग्न को कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

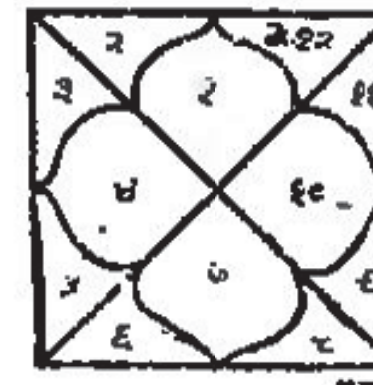
शेव लग्न : एकादशभाव : केतु



ग्यारहवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की आमदनी बहुत अच्छी रहती है। वह अपनी गुप्त शक्तियों के बल पर अधिक मुताफा कमाता है। परन्तु उसे अपनी आय के साधनों में अनेक बार परिवर्तन करने के साथ ही कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता भी पड़ती है।

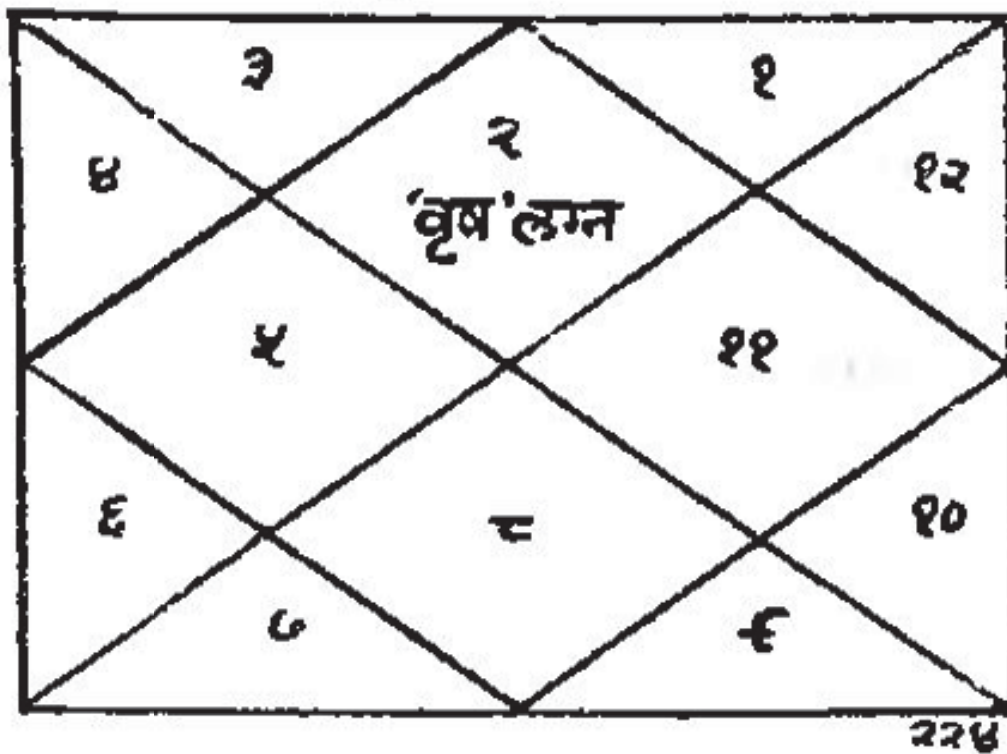
'शेव' लग्न को कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

शेव लग्न : द्वादशभाव : केतु



बारहवें भाव में अपने शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की बाहरी स्थान के सम्बन्धों में कष्ट प्राप्त होता है तथा स्वर्ण सम्बन्धी परेशानियाँ भी अधिक उठानी पड़ती हैं। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के परिवर्तन भी आते रहते हैं। शुक्र के शुभ ग्रह होने के कारण कभी-कभी अल्प लाभ भी होता है तथा अच्छे कार्यों में ही व्यय होता है।

'वृष' लग्न



['वृष' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भागों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'वृष' लग्न का फलादेश

'वृष' लग्न में जन्म लेने वाले जातक के शरीर का रंग गोरा अथवा गेहूँआ होता है। वह पुष्ट शरीर, लम्बे हाँत वाला, रजोगुणी, गुणवान, यशस्वी, बुद्धिमान, परम धैर्यवान, शूरवीर, साहसी, मधुरभाषी, यशस्वी, ईश्वरभक्त, ऐश्वर्यशाली, उदार, श्रेष्ठ संगति में बैठने वाला, कुंचित केशों वाला, दीर्घजीवी, शौकीन-मिजाज तथा स्त्रियो जैसे नाजूक-मिजाज वाला भी होता है। यह प्रकृति से अत्यन्त शान्त होता है, परन्तु अवसर पड़ने पर युद्ध अथवा संघर्ष में अपना प्रबल पराक्रम भी प्रकट कर दिखाता है।

'वृष' लग्न वाला जातक अपने परिवारीजनों से अनाहृत, अस्त्राघात पाने वाला, धन-अय-युक्त, मित्र-वियोगी, कलह-युक्त, चिन्ताओं से पीड़ित, मानसिक-रोगी, तथा मन-ही-मन दुःखी रहने वाला भी होता है।

कुछ विद्वानों के मतानुसार 'वृष' लग्न वाला जातक अपनी आयु के ३६वें वर्ष के बाद अनेक प्रकार के कष्टों को भी भोगता है।

'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी-फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डलियों में संख्या २०५ में ३३२ के बीच देखना चाहिए।

शेषर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देवों। इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

‘वृष’ लग्न में ‘सूर्य’ का फलादेश

१—‘वृष’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘सूर्य’ का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २२५ से २३६ के बीच देखना चाहिए।

२—‘वृष’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘सूर्य’ का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में ‘सूर्य’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या २२५
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या २२६
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या २२७
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या २२८
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या २२९
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या २३०
- (छ) ‘तुला’-राशि पर हो तो संख्या २३१
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या २३२
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या २३३
- (ञ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या २३४
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या २३५
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर हो तो संख्या २३६

‘वृष’ लग्न में ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

१—‘वृष’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘चन्द्रमा’ का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २३७ से २४८ के बीच देखना चाहिए।

२—‘वृष’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘चन्द्रमा’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन ‘चन्द्रमा’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या २३७
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या २३८
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या २३९
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या २४०
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या २४१
- (ज) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या २४२

- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २४३
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २४४
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २४५
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २४६
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २४७
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २४८

'वृष' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश का उदाहरण-कुण्डली २४६ से २६० के बीच देखना चाहिए ।

२—'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २४६
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २५०
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २५१
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २५२
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २५३
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २५४
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २५५
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २५६
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २५७
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २५८
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २५९
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २६०

'वृष' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'वृष' लग्न भावों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २६१ के २७२ के बीच देखना चाहिए ।

२—'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २६१

- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २६२
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २६३
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २६४
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २६५
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २६६
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २६७
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २६८
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २६९
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २७०
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २७१
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २७२

'वृष' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २७३ से २८४ के बीच देखना चाहिए ।

२—'वृष' लग्न वालों को मीन-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

विभिन्न वर्ष में 'वृष'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २७३
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २७४
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २७५
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २७६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २७७
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २७८
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २७९
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २८०
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २८१
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २८२
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २८३
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २८४

'वृष' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित

'शुक्र' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २८५ से २९६ के बीच देखना चाहिए ।

२—'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २८५
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २८६
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २८७
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २८८
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २८९
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २९०
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २९१
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २९२
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २९३
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २९४
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २९५
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २९६

'वृष' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २९७ से ३०८ के बीच देखना चाहिए ।

२. 'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए ।

जिस वर्ष में 'शनि'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २९७
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २९८
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २९९
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३००
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३०१
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३०२
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३०३
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३०४

- (अ) 'मनु' राशि पर हो तो संख्या ३०५
- (ब) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३०६
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३०७
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३०८

'वृष' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१. 'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३०६ से ३२० के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

विभिन्न वर्षों में 'राहु'—

- (क) 'शेष' राशि पर हो तो संख्या ३०६
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३१०
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३११
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३१२
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३१३
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३१४
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३१५
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३१६
- (झ) 'मनु' राशि पर हो तो संख्या ३१७
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३१८
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३१९
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३२०

'वृष' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३२१ से ३३२ के बीच देखना चाहिए।

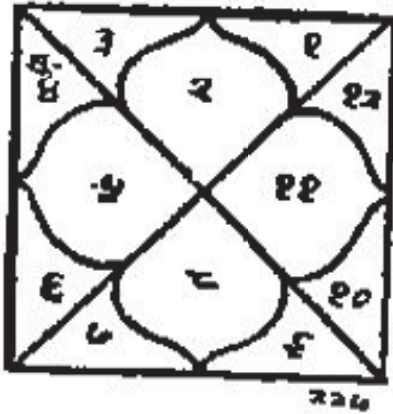
२. 'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

विभिन्न वर्षों में 'केतु'

- (क) 'शिव' राशि पर हो तो संख्या ३२१

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

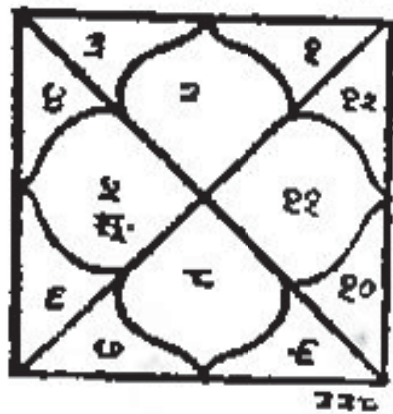


तीसरे भाव में मित्र 'चन्द्रमा' को राशि पर स्थित चतुर्थेश सूर्य के प्रभाव से जातक को भूमि, भवन एवं माता का सुख प्राप्त होता है। पराक्रम को वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख यी मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक को भाग्योन्नति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा धर्म-पालन में भी लापरवाही बनी रहती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

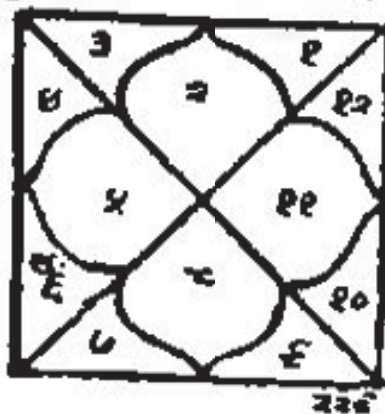


चौथे भाव में स्वराशिस्थ सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा परिवार का सुख यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होता है। जातक बड़े ठाठ-बाट से रहता है तथा दिखावा खूब करने पर भी उसके मन में कुछ अशान्ति बनी रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में असन्तोष रहता है तथा प्रतिष्ठा एवं सफलता पाने के लिए कठिन सवय करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : पंचमभाव : सूर्य

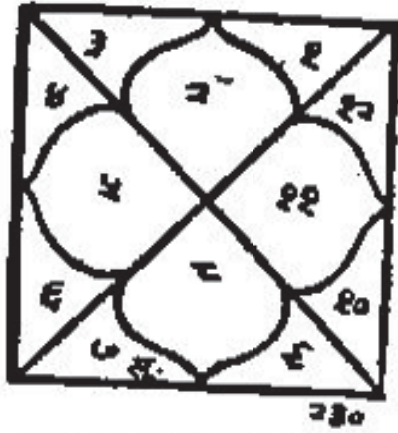


पाँचवें भाव में मित्र बुध को राशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख प्राप्त होता है तथा विद्या एवं सन्तान का पक्ष भी श्रेष्ठ रहता है। ऐसा जातक दूरदर्शी, गंभीर तथा बुद्धिमान होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादमभाव को देखने के कारण जातक को वायु के साधन भी अच्छे रहते हैं और उसे समय-समय पर विशेष लाभ के अवसर भी मिलते हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलविश

वृष लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

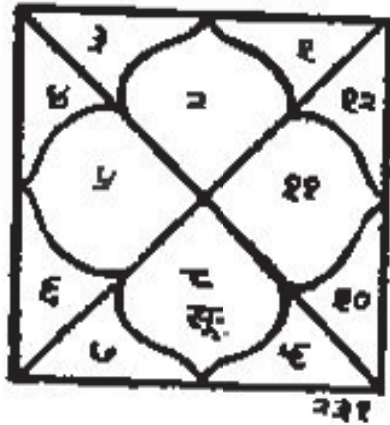


छठे भाव में शत्रु शुक्रको राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने शत्रुओं द्वारा कठिनाइयों का सामना तो करना पड़ता है, परन्तु वह उन पर अपना प्रभाव स्थापित कर लेता है, परन्तु फिर भी माता, भूमि व भवन के सुख में कमी रहती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक के बाहरी स्थानों से अच्छे सम्बन्ध रहते हैं। यद्यपि खर्च अधिक रहता है, परन्तु सुख भी प्राप्त होता है। ऐसे जातक को अपने लग्न स्थान से दूर जाकर भी रहना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलविश

वृषलग्न : सप्तमभाव : सूर्य

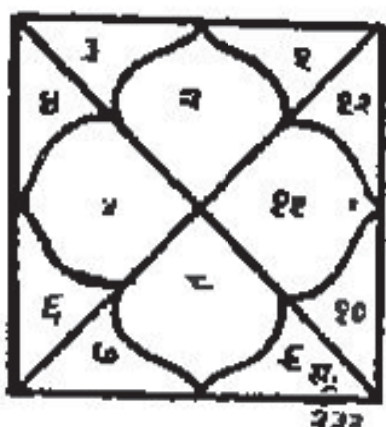


सातवें भाव में मित्र मंगल को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को व्यवसाय तथा स्त्री पक्ष में सफलताएँ मिलती हैं तथा भूमि, भवन एवं माता के सुख का भी लाभ होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा पारिवारिक सुख में कुछ कमी आती है तथा हृदय में भी थोड़ी अशान्ति बनी रहती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलविश

वृषलग्न : अष्टमभाव : सूर्य

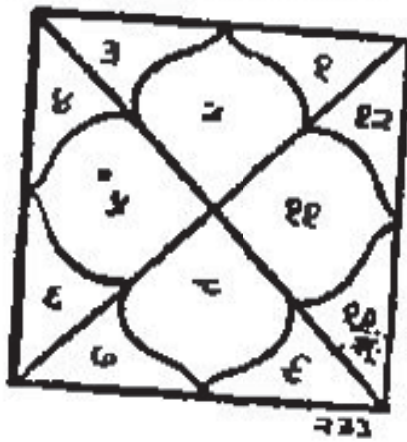


आठवें भाव में जिस गुरु को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने जन्म स्थान से दूर रहना पड़ता है तथा माता, भूमि, भवन एवं पारिवारिक सुख में भी विघ्न उपस्थित होते रहते हैं, परन्तु पुरातत्त्व एवं आयु का विशेष लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक को कुटुम्ब एवं धन का लाभ मिलता रहता है तथा वह धनी भी होता है।

'वृष' लग्न को कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : नवमभाव : सूर्य

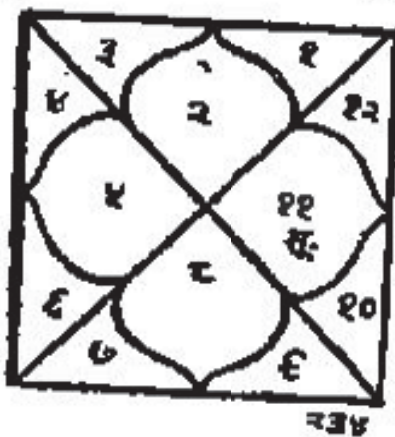


नवें त्रिकोण भाव में शत्रु शनि को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धर्म, मुख तथा सौभाग्य को वृद्धि होती है, परन्तु माता, भूमि एवं भवन के सम्बन्ध में कुछ असन्तोष रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। ऐसा जातक अपने पराक्रम एवं बुद्धि बल के उपयोग द्वारा ही कुछ कमियों के साथ सफलता प्राप्त करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : दशमभाव : सूर्य

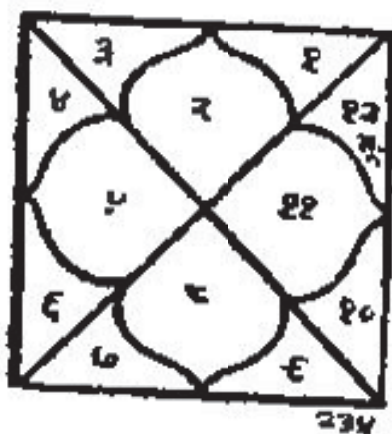


दसवें केन्द्र भाव में शत्रु शनि को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ अपूर्ण सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से स्वराशि वाले चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन आदि के सुख का जाम होता है तथा पारिवारिक सुख भी बढ़ता है।

'वृष' लग्न को कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : एकादशभाव : सूर्य

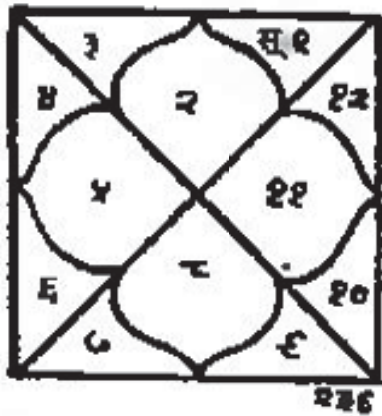


ग्यारहवें भाव में मित्र गुरु को राशि पर स्थित उष्णग्रह सूर्य के प्रभाव से जातक को आमदयी में अत्यधिक वृद्धि होती रहती है तथा माता, कुटुम्ब, भूमि एवं भवन का सुख भी पर्याप्त मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण जातक के विद्या एवं सनातन पक्ष में भी वृद्धि होती है तथा उसका जीवन आनन्दपूर्ण व्यतीत होता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

वृष लग्न : द्वादशभाव : सूर्य



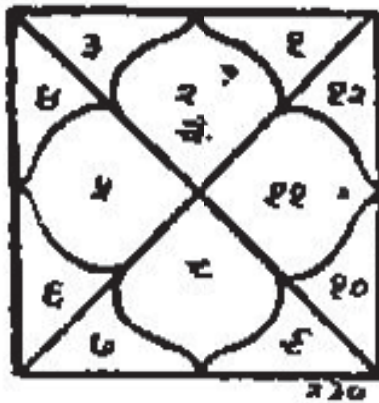
बारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर उच्चस्थ सूर्य के प्रभाव से जातक का बाहरी स्वार्थों से श्रेष्ठ सम्बन्ध रहता है, परन्तु खर्च अधिक होता है तथा माता, परिवार एवं भूमि-भवन के सुख में भी कुछ कमी रहती है।

सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु राशि के षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर बड़ी कठिनाइयों के बाद प्रभाव स्थापित हो पाता है। ऐसा जातक यदि परदेश में जाकर रहे तो उसे अधिक लाभ होता है।

‘वृष’ लग्न में ‘चन्द्रमा’

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

वृष लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

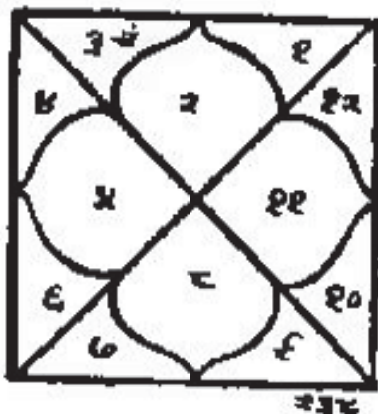


पहले भाव में सामान्य मित्र शुक की राशि पर स्थित चतुर्थेश उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव जातक का मनोबल बहुत बढ़ा रहता है। उसे अपने भाई-बहिनों का सुख यथेष्ट मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होकर सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से सप्तमभाव की देखने के कारण स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में असन्तोष बना रहता है तथा परिवार की चलाने में भी कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

वृष लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

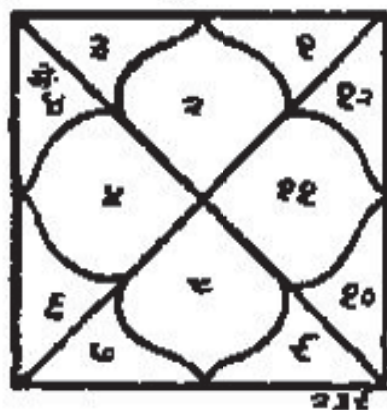


दूसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चतुर्थेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने पराक्रम द्वारा धनोपार्जन करता है तथा कुटुम्ब का सुख भी पाता है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख एवं पराक्रम में कुछ कमी धनी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र



तीसरे भाव में स्वराशिस्थ चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। वह अत्यन्त हिम्मती, उद्योगी तथा प्रसन्नचित्त वाला होता है, अतः सर्वत्र यश तथा प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण धर्म-पालन में विशेष रुचि नहीं होती तथा भाग्य वृद्धि के लिए अधिक परिश्रम भी करना पड़ता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

वृष लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

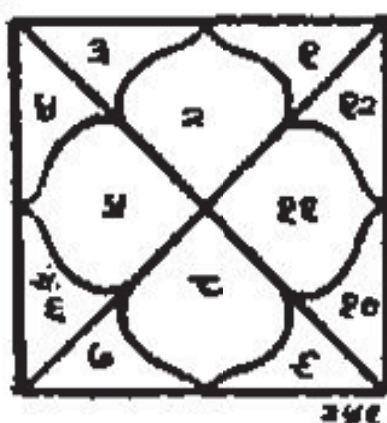


चौथे भाव में मित्र सूर्य को राशि पर स्थित चतुर्थेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के माना, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख में वृद्धि होती है। साथ ही भाई-बहिन का सुख भी मिलता है तथा पराक्रम बढ़ता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण जातक को पिता तथा राज्य के क्षेत्र में विशेष परिश्रम के भाव ही सफलता मिल पाती है। संक्षेप में, ऐसा जातक सुखी जीवन बिताता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

वृष लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

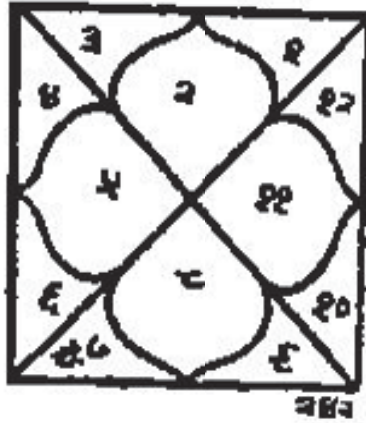


पाँचवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा मंतान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। छोटे भाई-बहिनों से प्रेमपूर्ण सम्बन्ध बना रहता है।

सातवीं सामान्य-मित्र दृष्टि से एकादश भाव की देखने के कारण जातक अपने बुद्धि-बल से आमदनी के साधनों को बढ़ता है तथा ऐश्वर्यशाली एवं धनी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

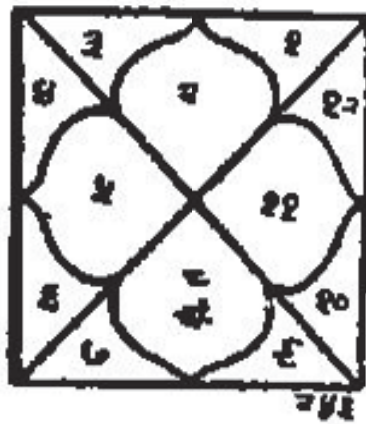


छठे भाव में अपने सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष पर अपना प्रभाव बनाये रखता है तथा झगड़े मुकद्दमों में सफलता प्राप्त करता है। अत्यन्त हिम्मती होते हुए भी जातक को कुछ भीतरी चिंताएँ घेरे रहती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव की देखने के कारण जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु व्यय (खर्च) अधिक बना रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

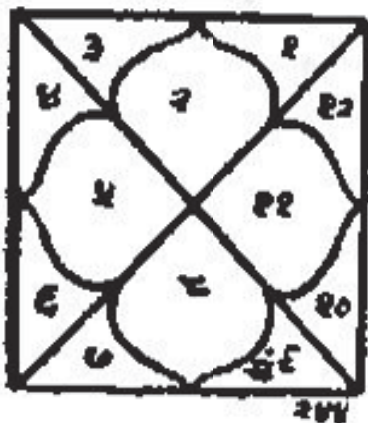


सातवें भाव में विद्य मंगल की राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को व्यवसाय तथा स्त्री के पक्ष में हानि, चिन्ता एवं कठिनाइयों का शिकार बनना पड़ता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से प्रथम भाव के देखने के कारण जातक सुन्दर शरीर वाला, प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होता है, साथ ही उसका हृदय भी बलवान बना रहता है। कुल मिला कर ऐसे जातक का जीवन संघर्ष पूर्ण होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

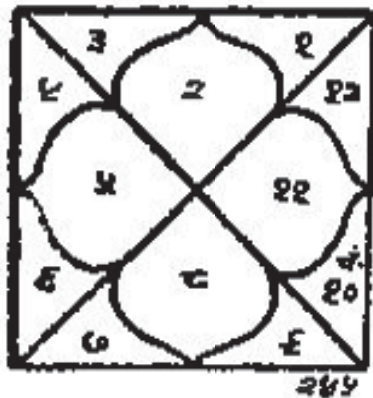


आठवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित चतुर्थेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में कमी आ जाती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है; परन्तु इस लाभ के लिए उसे अत्यधिक परिश्रम भी करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुंडली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : नवमभाव : चन्द्र

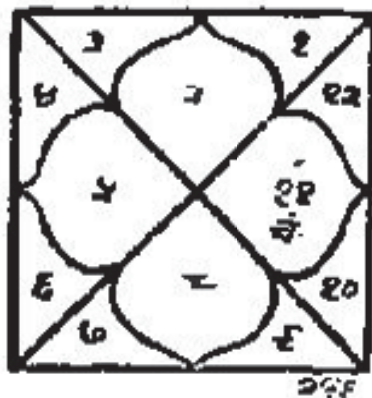


नवमभाव में शत्रु शक्ति की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक धर्मात्मा तथा भाग्यशाली होता है, साथ ही उसे भाई-बहिनों का सहयोग भी मिलता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले चतुर्थभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक हिम्मती, फुर्तीला तथा प्रसन्न स्वभाव वाला होता है।

'वृष' लग्न की कुंडली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : दशमभाव : चन्द्र



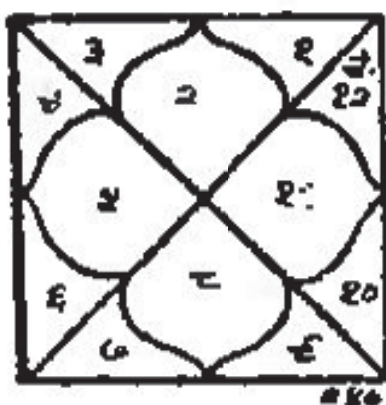
दशमभाव में शत्रु शक्ति की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का अपने पिता के साथ थोड़ा मतभेद रहता है तथा राज्य के क्षेत्र में भी अत्यधिक परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त होती है। भाई-बहिन का सुख अच्छा मिलता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण जातक को माना, भूमि, भवन तथा पारिवारिक-

सुख भी यथेष्ट मात्रा में उपलब्ध होता है।

'वृष' लग्न की कुंडली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : एकादशभाव : चन्द्र

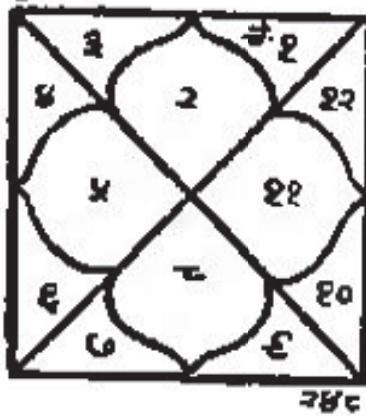


ग्यारहवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित चतुर्थेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है तथा भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण जातक की विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का भी अच्छा लाभ होता है। संक्षेप में ऐसा जातक बुद्धिमान, विद्वान्, सन्ततिवान्, धनी, मधुरभाषी तथा ऐश्वर्यकाशी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : द्वादशभाव : चन्द्र



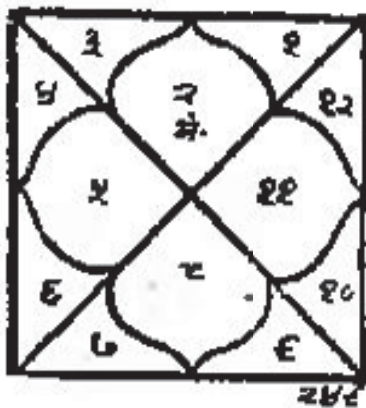
बारहवेंभाव में अपने मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च भी अधिक रहता है। धार्मिक-बहिर्जन के सुख तथा पराक्रम में भी कमी आ जाती है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से षष्ठ्यभाव को देखने के कारण जातक झगड़े-टंटे तथा शत्रुओं के क्षेत्र में बड़ी युक्तियों से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है।

'वृष' लग्न में 'मंगल'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : प्रथमभाव : मंगल

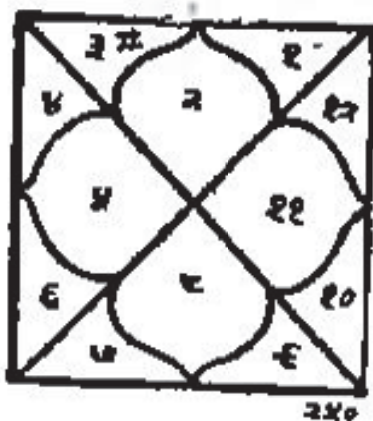


पहलेभाव में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित सप्तमेश एवं व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक की रक्त-विकार, घातुशीलता, दुर्बलता आदि की शिकायत रहती है, परन्तु सारोरिक-शक्ति का भी लाभ होता है। बाहरी स्थानों से अच्छे संबंध रहते हैं। चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से स्वक्षेत्रीय सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को

देखने से आयु एवं पुरातत्त्व संबंधी परेशानियाँ उपस्थित होती रहती हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : द्वितीयभाव : मंगल

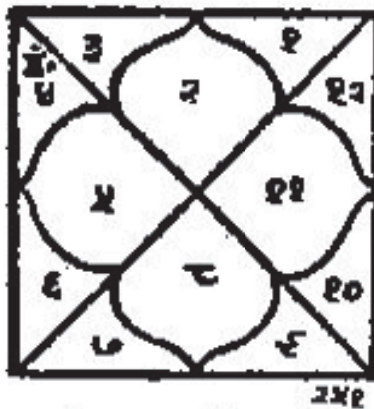


दूसरेभाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के विषय में चिन्तायें बनी रहती हैं, परन्तु बाहरी संबंधों से लाभ होता है। चौथी मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं संतान का पक्ष भी कमजोर रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी हानि तथा चिन्तायें उपस्थित होती रहती हैं। आठवीं उच्चदृष्टि से नवमभाव की देखने के कारण जातक के धर्म तथा भाग्य

की वृद्धि होती रहती है एवं जातक भाग्यशाली माना जाता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

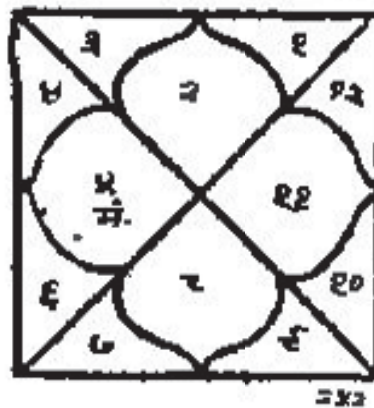
वृष लग्न : तृतीयभाव : मंगल



तिसरेभाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन तथा पराक्रम के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है। स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी ऐसा ही होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव की देखने के कारण जातक के शत्रु नष्ट होते हैं। सातवीं उच्चदृष्टि से नवमभाव के देखने के कारण धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव की देखने के कारण जातक को पिता एवं राज्य-पक्ष में हानि एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा प्रतिष्ठा के क्षेत्र में भी रुकावटें आती हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

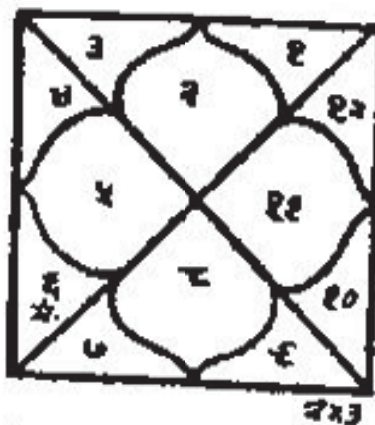
वृष लग्न : चतुर्थभाव : मंगल



चौथे भाव में विद्य सूर्य की राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को भूमि, भवन एवं माता के सुख की हानि होती है तथा घरेलू सुख भी कम मिलता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि के सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है। बाहरी स्थानों से सफलता मिलती है तथा खर्च अधिक रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य पक्ष में हानि उठानी पड़ती है। आठवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव की देखने के कारण आय के साधनों में वृद्धि होती है तथा बाहरी संबंधों द्वारा विलम्ब से लाभ होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

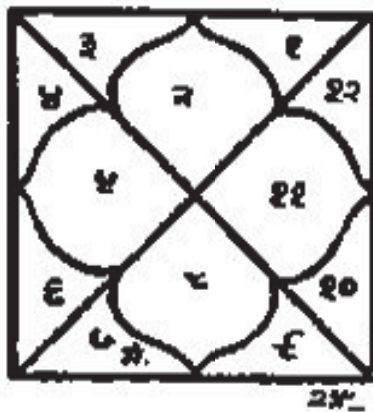
वृष लग्न : पंचमभाव : मंगल



पाँचवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में चिन्ता एवं हानि उठानी पड़ती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय पक्ष में भी चिन्ता रहती है। चौथी मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की हानि के योग भी उपस्थित होते हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव देखने के कारण बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। आठवीं दृष्टि के स्वराशि वाले द्वादश भाव की देखने के कारण खर्च अधिक होता है तथा व्यवसाय की उन्नति के लिए अधिक परिश्रम तथा खर्च करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : षष्ठभाव : मंगल

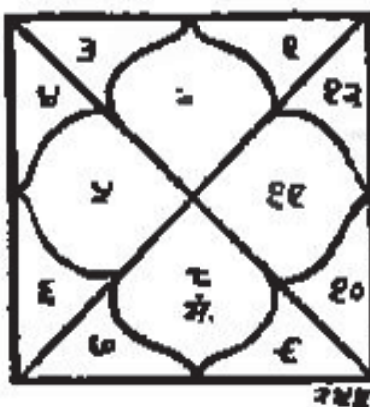


छठे भाव में शत्रु कुष्ठ की राशि में स्थित व्ययेश तथा सप्तमेश मंगल के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर प्रबल बना रहता है परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में हानियाँ उठाता है। चौथी उच्चदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण धर्म एवं भाग्य की वृद्धि करता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिकतर रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक का शरीर कमजोर रहता है तथा रक्त-वीर्य आदि के विकारों का भी शिकार बनना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

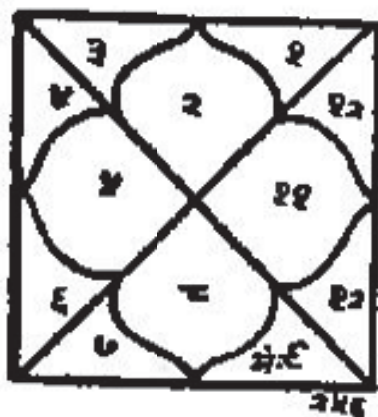
वृष लग्न : सप्तमभाव : मंगल



सातवें भाव में स्वराशि स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में शक्ति प्राप्त होने पर भी कठिनाइयाँ आती हैं तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक का शरीर दुर्बल रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब के धारे में चिन्ताएँ तथा कठिनाइयाँ उपस्थित रहती हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

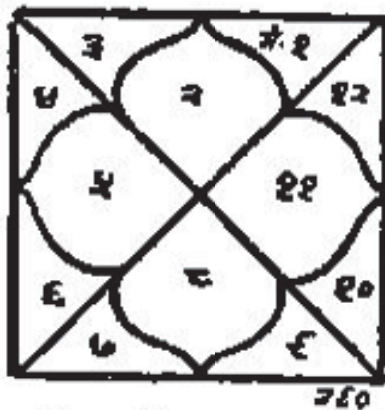
वृष लग्न : अष्टमभाव : मंगल



आठवें लाभ में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सप्तमेश तथा मित्र के प्रभाव से जातक की स्त्री, व्यवसाय, आयु तथा पुरातत्त्व विषयक हानियाँ उठानी पड़ती हैं तथा परदेश में बसना पड़ता है। चौथी मित्रदृष्टि से एक दशभाव को देखने के कारण विदेश द्वारा धन का लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव की देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब विषयक परेशानियाँ रहती हैं। आठवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव की देखने के कारण धार्मिक सुख तथा पराक्रम में भी कमी आ जाती है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलावेश

वृष लग्न : द्वादशभाव : मंगल

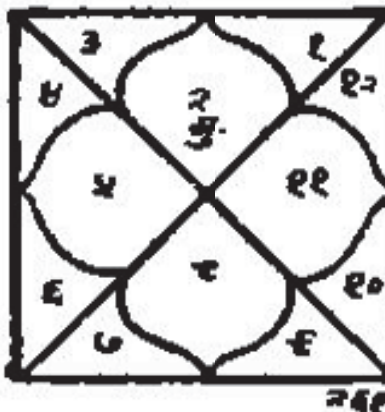


स्वराशि वाले सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में हानि-लाभ के योग बनसे बिगड़ते रहते हैं।

‘वृष’ लग्न में ‘बुध’

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलावेश

वृष लग्न : प्रथमभाव : बुध

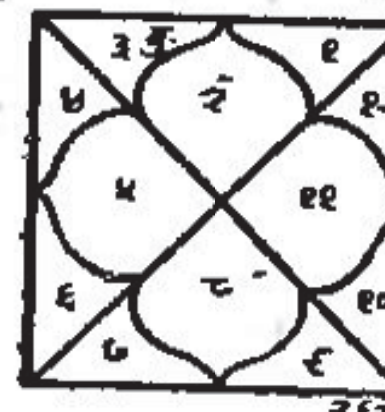


पहले भाव में मित्र शुक की राशि पर स्थित द्वितीयेश तथा पंचमेश बुध के प्रभाव से जातक सुन्दर, प्रतिष्ठित यशस्वी तथा कुटुम्ब एवं धन की शक्ति पाने वाला होता है। विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का पक्ष भी अच्छा रहता है।

सातवीं समदृष्टि के सप्तमभाव की देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता एवं सहयोग की प्राप्ति होती है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलावेश

वृष लग्न : द्वितीयभाव : बुध

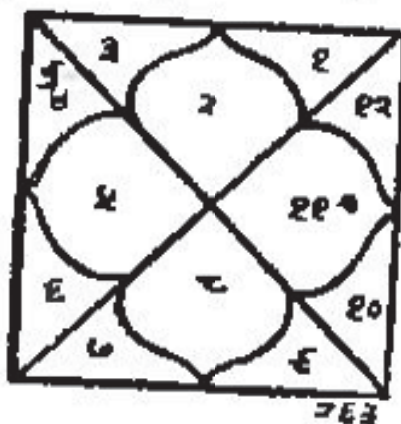


दूसरे भाव में स्वराशि स्थित बुध के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की उत्तम वृद्धि होती है, परन्तु सन्तान पक्ष में परेशानियाँ रहती हैं। विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव की देखने के कारण जातक को आयु तथा पुरातस्व का लाभ होता है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक ऐश्वर्यशाली जीवन बिताता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : बुध

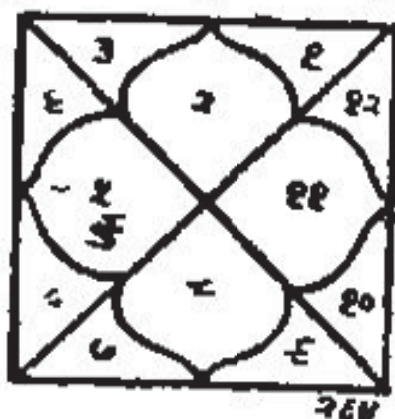


तीसरे भाव में चन्द्रमा की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। वह अपने पराक्रम द्वारा धन उपाजित करता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक की धर्म में रुचि बनी रहती है तथा भाग्य में भी वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति पराक्रमी, बुद्धिमान, विद्वान्, साहसी, धनी, धर्मात्मा एवं सज्जन स्वभाव का होता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

वृष लग्न : चतुर्थभाव : बुध

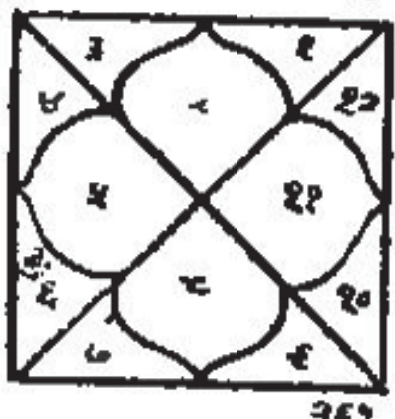


चौथे भाग में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक माता, भूमि, भवन तथा परिवार का यथेष्ट सुख प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति गंभीर, विवेकी, विद्वान तथा बुद्धिमान भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण जातक की पिता तथा राज्य से भी यथेष्ट लाभ होता है तथा व्यासायिक क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

वृष लग्न : पंचमभाव : बुध

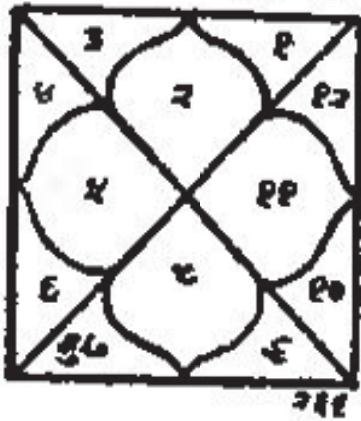


पाँचवें भाग में स्वराशि स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक बहु सन्ततिवाला, बुद्धिमान तथा विद्वान् होता है तथा बुद्धिबल से धनोपार्जन भी श्रूव करता है। कौटुम्बिक सुख उसे भरपूर मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण भाग्यदनी के क्षेत्र में कुछ कमी का अनुभव होता है, परन्तु जातक अपनी मित्रा एवं सन्तान पक्ष की सहायता से धन की वृद्धि करता है तथा सम्मान भी पाता है।

'बुध' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

बुध लग्न : षष्ठभाव : बुध

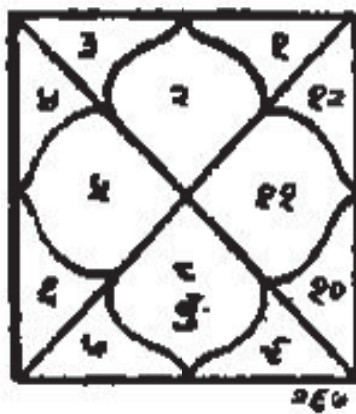


छठे भाव में मित्र शुक की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष द्वारा अशान्ति का अनुभव करता है, परन्तु अपने बुद्धि-बल से उस पर कुछ सफलता भी पा लेता है। सन्तान तथा कुटुम्ब से मतभेद एवं परेशानी के योग भी उपस्थित होते हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च की अधिकता रहती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सम्मान तथा धन मिलता रहता है।

'बुध' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

बुध लग्न : सप्तमभाव : बुध

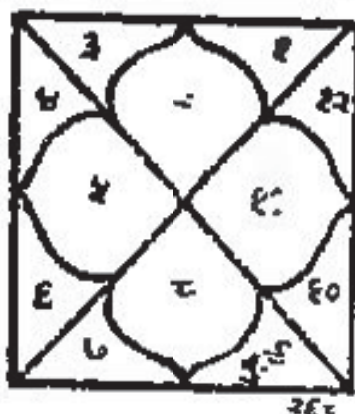


सातवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को बुद्धिमान स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। विद्या, कुटुम्ब तथा सन्तान पक्ष से सुख एवं धन प्राप्ति के योग भी उपस्थित होते रहते हैं।

सातवीं दृष्टि मित्र से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक को शारीरिक सौन्दर्य, यश, प्रतिष्ठा, बुद्धि, विवेक, धन एवं सफलताओं को प्राप्ति भी होती है।

'बुध' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

बुध लग्न : अष्टमभाव : बुध

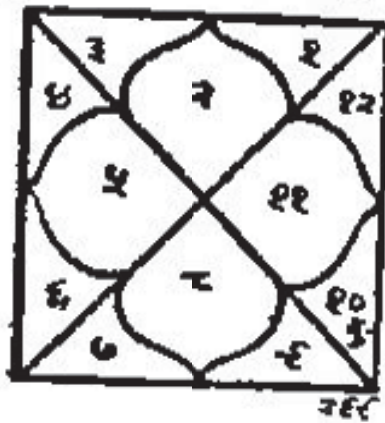


आठवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा धन-संचय की शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब, विद्या एवं सन्तान पक्ष से परेशानियों का अनुभव होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक कठिन परिश्रम द्वारा धनो-पार्जन करता है। ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन ऐश्वर्यपूर्ण होता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

वृष लग्न : नवमभाव : बुध

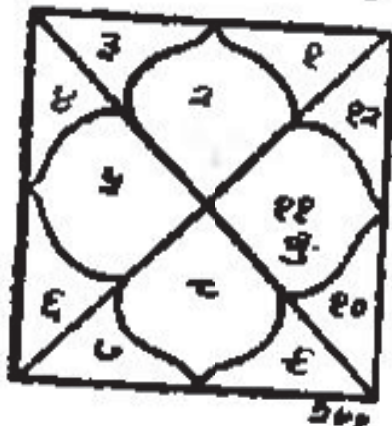


नवें भाव में मित्र शनि को राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक बुद्धि-योग द्वारा अपने भाग्य एवं धन को वृद्धि करता है तथा धर्म, विद्या, सन्तान एवं कुटुम्ब विषयक सुखों को भी प्राप्त करता है।

सातवीं दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक को भाई-बहिनो का सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी विशेष वृद्धि होती है। ऐसा जातक सुन्धी, धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

वृष लग्न : दशमभाव : बुध

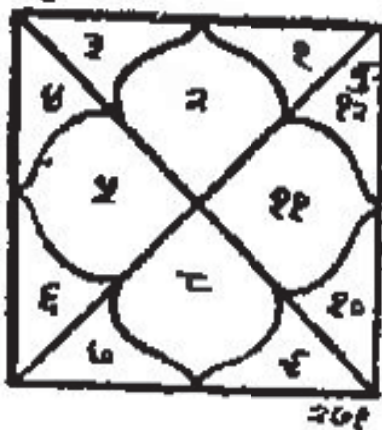


दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक पितृ एवं राज्य पक्ष से विशेष लाभ तथा सम्मान प्राप्त करना है। अपने बुद्धि-बल द्वारा व्यवसाय से पर्याप्त आर्थिक लाभ भी कमाता है। सन्तान पक्ष से भी सुखी रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण जातक को माता, भूमि, भवन तथा परिवार का यथेष्ट सुख की प्राप्त होता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

वृष लग्न : एकादशभाव : बुध

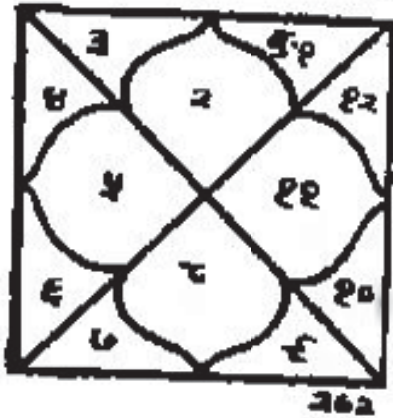


ग्यारहवें भाव में मित्र गुरु की राशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आय के क्षेत्र में कठिनाहर्षा आती है तथा धन-संचय में बाधा पड़ती है। कुटुम्ब, सन्तान एवं मित्र पक्ष से भी अल्प लाभ मिलता है तथा चिन्ताओं के कारण अस्तिष्क परेशान बना रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले पंचमभाव को देखने के कारण जातक विद्वान् तथा बुद्धिमान होता है तथा उसका सन्तान पक्ष की प्रबल बना रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : द्वादशभाव : बुध



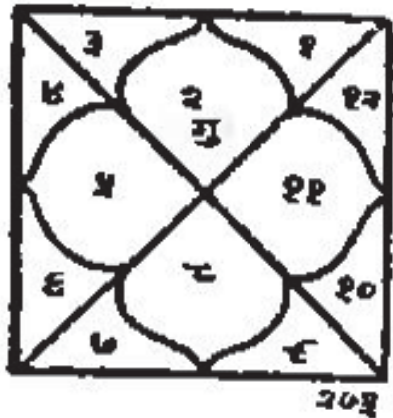
बारहवें भाव में मित्र भंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक बना रहता है। साथ ही विद्या, सन्तान, कुटुम्ब एवं धन के पक्ष से भी असन्तोष रहता है। सन्तान-पक्ष में हानि भी उठानी पड़ती है।

सातवीं मित्र दृष्टि में षष्ठभाव को देखने के कारण जातक अपने बुद्धि-बल द्वारा शत्रु-पक्ष पर सफलता प्राप्त करता रहता है।

'वृष' लग्न में 'गुरु'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न : प्रथमभाव : गुरु

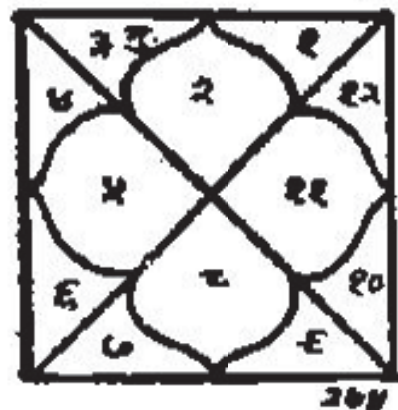


पहले भाव में शत्रु शुक की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शारीरिक परिश्रम द्वारा लाभ होता है तथा आयु एवं पुरातस्व की उन्नति होती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या-बुद्धि का लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष सामान्य रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से दृष्टिपूर्ण सफलताएँ मिलती हैं। नवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक के भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

ऐसा जातक परिश्रम द्वारा उन्नति करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न : द्वितीयभाव : गुरु

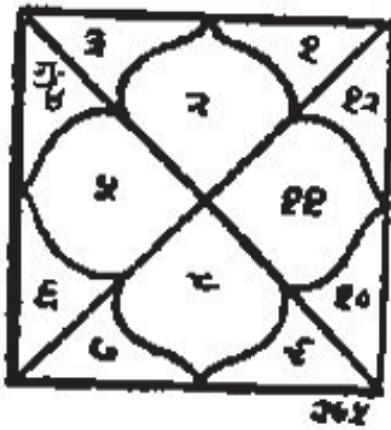


दूसरे भाव में अपने ^{सात} मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की धन तथा कौटुम्बिक सुख प्राप्त करने में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं दृष्टि से स्वराशि के अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि तथा पुरातस्व का लाभ होता है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठ-भाव को देखने से शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त होती है तथा नवीं समदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण राज्य पक्ष में सामान्य सफलता मिलती है, पिता से वैमनस्य रहता

है तथा व्यवसाय की उन्नति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

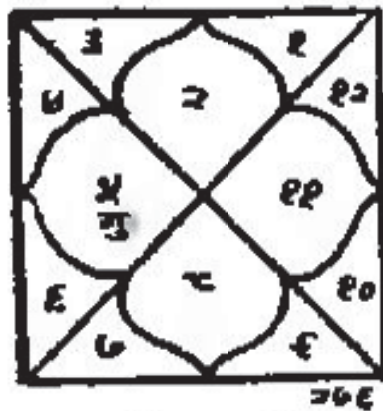
वृष लग्न : तृतीयभाव : गुरु



तीसरे भाव में मित्त चन्द्रमा की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के बुध में वृद्धि होती है। पाँचवीं मित्तदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में सफलता एवं उन्नति प्राप्त होती है। सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु राशिस्थ नवमभाव को देखने के कारण धार्मिक विचारों तथा भाग्य में कुछ त्रुटि बनी रहती है तथा नवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादश भवन को देखने के कारण आमदनी अच्छी होती रहती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

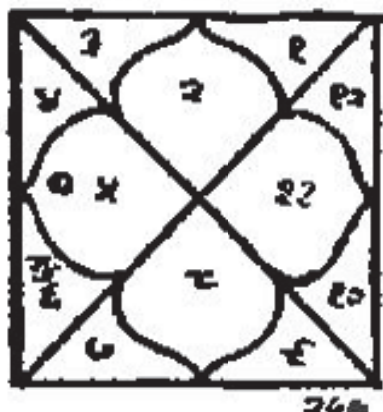
वृष लग्न : चतुर्थभाव : बुध



पहले भाव में मित्त सूर्य की राशि पर स्थित अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी रहती है, परन्तु भूमि, भवन एवं सम्पत्ति लाभ होता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि के अष्टम भाव को देखने से आयु में वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं प्रतिष्ठा पक्ष में कुछ कमी आती है तथा नवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु आमदनी से खर्च अधिक बना रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

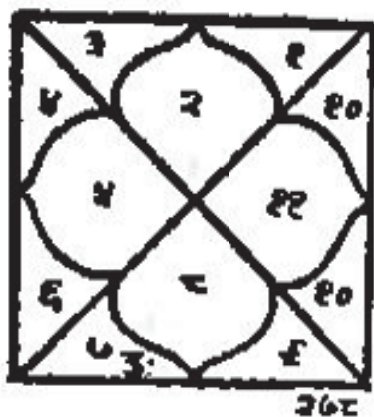
वृष लग्न : पंचमभाव : गुरु



पाँचवें भाव में मित्त बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का विशेष लाभ होता है, साथ ही वायु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। पंचम नीचदृष्टि से शत्रुराशि के नवमभाव को देखने के कारण धर्म एवं भाग्यपक्ष में कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादश भाव को देखने से बुद्धियोग द्वारा अच्छी आमदनी होती है। नवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक को जीविकोपार्जन के लिए शारीरिक श्रम अधिक करना पड़ता है।

'बुध' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

बुध लग्न : षष्ठभाव : बुध

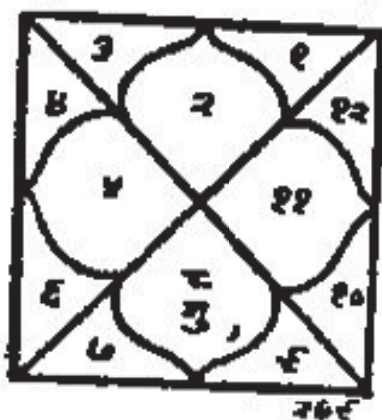


छठे भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित अष्ट-
मेश बुध के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष में अपनी बुद्धिमत्ता
से विजय प्राप्त करता है परन्तु आयु तथा पुरातत्त्व के
लाभ में कमी रहती है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव
को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में
कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को
देखने के कारण बाहरी सम्बन्धों के अच्छा लाभ होता है,
परन्तु स्वर्भ अधिक रहता है। नवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय
भाव को देखने के कारण विधेय परिश्रम करके धन-संचय

में सफलता मिलती है, परन्तु कौटुम्बिक सुख में कमी रहती है।

'बुध' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

बुध लग्न : सप्तमभाव : गुरु

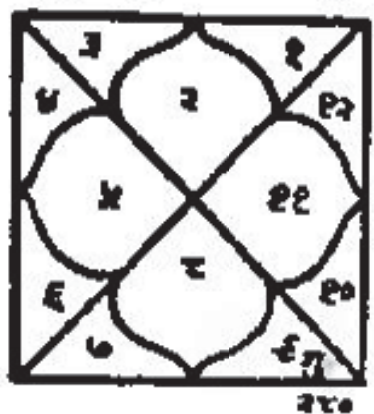


सातवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित
अष्टमेश तथा व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक की स्त्री
तथा व्यवसाय पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु आयु
एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। पाँचवीं दृष्टि से
स्वराशि वाले एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी
रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से
शरीर में दुर्बलता रहती है। नवीं उष्वदृष्टि से तृतीय
भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि
होती है। ऐसा जातक स्वार्थी, बनी तथा ऊपरी दृष्टि से

सज्जन प्रतीत होता है।

'बुध' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

बुध लग्न अष्टमभाव : गुरु

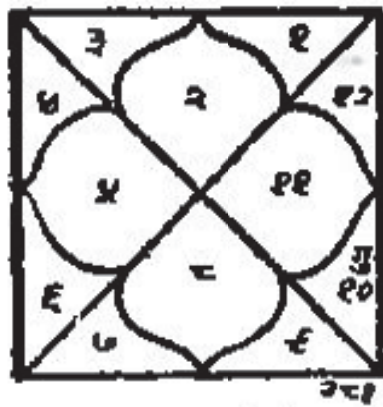


आठवें भाव में स्वराशि पर स्थित अष्टमेश गुरु के
प्रभाव से जातक को वायु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व
का लाभ होता है, परन्तु आयु के साधनों में कुछ
कठिनाइयों भी आती हैं। पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव
को देखने के कारण बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा
स्वर्भ की अधिकता रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय
भाव को देखने के परिश्रम द्वारा कुटुम्ब तथा धन की वृद्धि
होती है। नवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता,
भूमि, भवन एवं सुख के पक्ष में कुछ असन्तोष रहता है।

भूमि, भवन एवं सुख के पक्ष में कुछ असन्तोष रहता है।

'बुध' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुभ' का फलसारेण

बुध लग्न : नवमभाव : गुरु

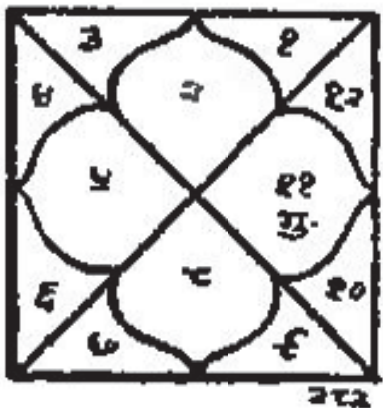


नवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित अष्टमेश एवं व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म-पालन में कमजोरी रहती है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक सौंदर्य में कमी रहती है तथा प्रभाव-वृद्धि के लिए विशेष यत्न करना पड़ता है। सातवीं उच्चदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण सन्तान तथा विद्या के पक्ष में कमजोरी रहती है।

कुल मिलाकर इस ग्रह-स्थिति के कारण जातक की उन्नति, प्रतिष्ठा, प्रभाव तथा ऐश्वर्य में कमियाँ बनी रहती हैं।

'बुध' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलसारेण

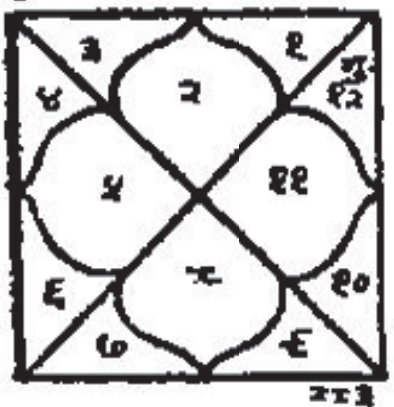
बुध लग्न : दशमभाव : गुरु



दसवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है, लाभ-प्राप्ति के मार्ग में भी सफलता कम मिलती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव के देखने के कारण धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सहयोग मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं भवन आदि का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष से परेशानी रहती है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है।

'बुध' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलसारेण

बुध लग्न : एकादशभाव : गुरु

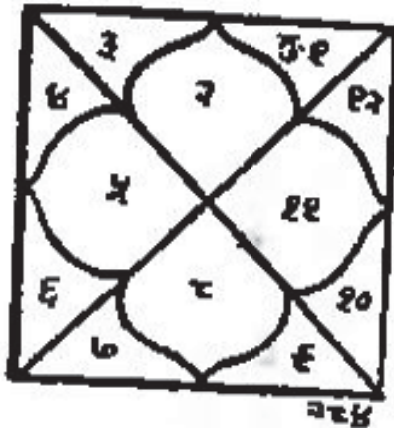


ग्यारहवें भाव में स्वराशिस्थ अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक की आयदनी अच्छी रहती है, परन्तु परिश्रम अधिक करना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। पंचम उच्च दृष्टि से तृतीयभाव की देखने के कारण पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख का लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष में कम लाभ होता है। नवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से

व्यवसाय द्वारा पर्याप्त लाभ होता है परन्तु स्त्री-पक्ष से कुछ कठिनाइयों के लाभ सुख मिलता है। ऐसा जातक ऐश्वर्यशाली होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलालोक

वृषलग्न : द्वादशभाव : गुरु

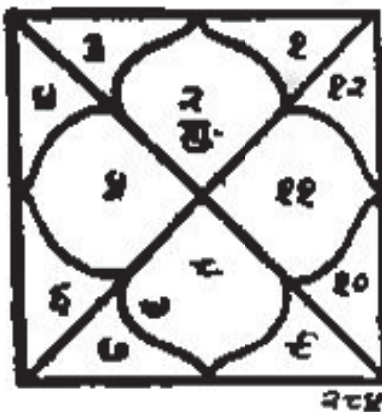


बारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की बाहरी स्थान के सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च की अधिकता रहती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ सुख के साधन प्राप्त होते हैं, परन्तु माता के सुख में कमी रहती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से छठे भाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर बुद्धिमानी द्वारा प्रभाव स्थापित होता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि के अष्टमभाव को देखने से आयुपक्ष में कुछ कमी रहती है, पुरातत्त्व की हानि होती है तथा आमदनी से खर्च अधिक बना रहता है।

'वृष' लग्न में 'शुक्र'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलालोक

वृषलग्न : प्रथमभाव : शुक्र



पहले भाव में स्वराशि में स्थित शुक्र के भाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं आत्मिक बल में वृद्धि होती है तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती रहती है। परन्तु कमी-कमी रोगों का शिकार भी बनना पड़ता है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में बुद्धिमानी द्वारा सफलता मिलती है। कुल मिलाकर ऐसी ग्रह स्थिति का जातक सुखी जीवन व्यतीत करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलालोक

वृषलग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

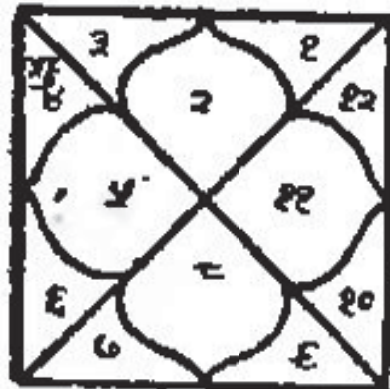


दूसरे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि करता है, परन्तु शारीरिक सुख में कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक को वायु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है, परन्तु शत्रु-पक्ष से चातुर्य द्वारा लाभ मिलता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : तृतीयभाव : शुक्र



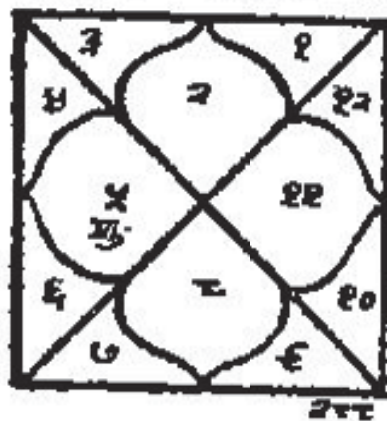
तीसरे भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन का सुख कुछ वैमनस्य के साथ प्राप्त होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक घर्माली तथा भाग्यवान् होता है।

ऐसी ग्रह स्थिति का जातक पराक्रमी, चतुर तथा परिश्रमी होता है और इन्हीं गुणों के यश पर धन, यश, भाव, प्रतिष्ठा आदि प्राप्त करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

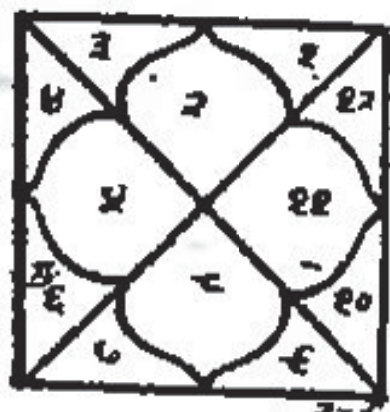


चौथे भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की माता के सुख में कमी आती है तथा भूमि, भवन के सुख के बारे में भी कुछ असन्तोष रहता है, परन्तु इन सब कमियों के बावजूद सुख के साधन प्राप्त होते रहते हैं। शत्रु-पक्ष पर शान्ति तथा चातुर्य द्वारा सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, 'राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा यश, मान, प्रतिष्ठा एवं सम्पत्ति का लाभ होता रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : पंचमभाव : शुक्र



पाँचवें भाव में नीचराशिस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक का विद्या तथा मन्तान-पक्ष कमजोर रहता है, परन्तु वह अपने बुद्धि-चातुर्य-द्वारा शत्रु-क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण कठिन परिश्रम एवं विभाग की सुझ-बुझ से आमदनी के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक, चिन्ता, असन्तोष, मस्तिष्क में परेशानी एवं शारीरिक मीन्द्र्य में कमी प्राप्त करता है।

‘बुध’ लग्न की कुम्बली के ‘षष्ठभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

बृषलग्न : षष्ठभाव : शुक्र

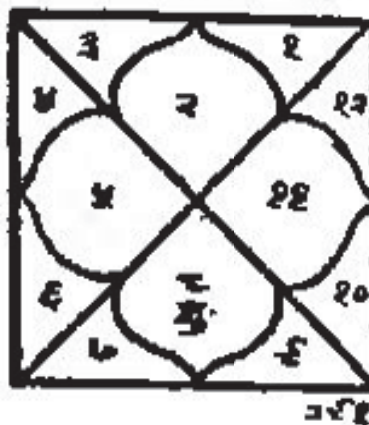


छठे भाव में स्वकेत शुक के प्रभाव से जातक शारीरिक शक्ति एवं चातुर्य के द्वारा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है, परन्तु शुक के लग्नेश होकर षष्ठभाव में बैठने के कारण शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी भी रहती है। माता द्वारा लाभ एवं परतन्त्रता का योग भी बनता है।

सातवीं समदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा धर्म की अधिकता रहती है। ऐसी ग्रहस्थिति बाला जातक किसी-न-किसी सगडे में फंसा ही रहता है, परन्तु बड़ा प्रतापी को होता है।

‘बुध’ लग्न की कुम्बली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

बृषलग्न : सप्तमभाव : शुक्र

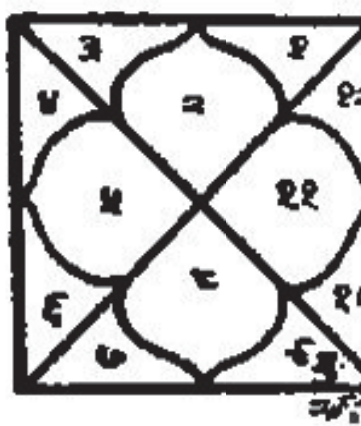


आठवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित शुक के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष से वैमनस्य तथा परेशानी के योग बनते हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठोर शारीरिक परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है।

सातवीं दृष्टि से स्वरशि वाले प्रथमभाव को देखने के कारण जातक सांसारिक कामों में परम दक्ष होता है, परन्तु शरीर रोगी भी बना रहता है।

‘बुध’ लग्न की कुम्बली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

बृषलग्न : अष्टमभाव : शुक्र



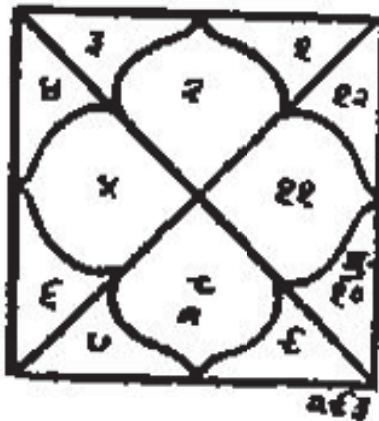
आठवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शुक के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा रोगादि का कष्ट बना रहता है। वायु को शक्ति प्राप्त होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ गुप्त चातुर्य के बल पर होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक कठिन परिश्रम से धन की वृद्धि करता है। माता के पक्ष में कमजोरी, शत्रु-पक्ष से कष्ट एवं उदर-

विफारादि के योग भी बनते हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : नवमभाव : शुक्र

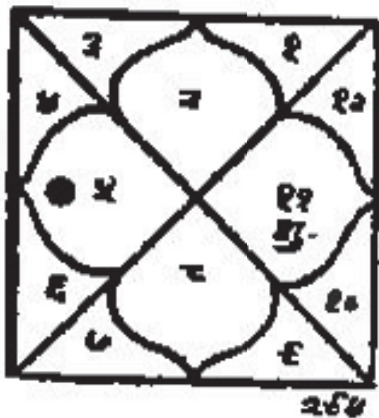


नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक शारीरिक श्रम द्वारा भाग्योन्नति करता है तथा शत्रुपक्ष में सफलता पाता है। शरीर सुन्दर होता है, परन्तु रोगादि के योग उपस्थित होते रहते हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ मर्दान्ता-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। शत्रु एवं झगड़े के क्षेत्र में विजय मिलती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : दशमभाव : शुक्र

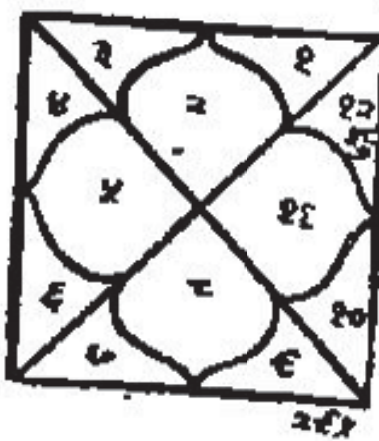


दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का पिता के साथ सामान्य बर्तनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों तथा परिश्रम के साथ सफलता मिलती है। शत्रुपक्ष पर प्रभाव बना रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति अहंकारी, सुश्री तथा उन्नतिशील होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : एकादशभाव : शुक्र

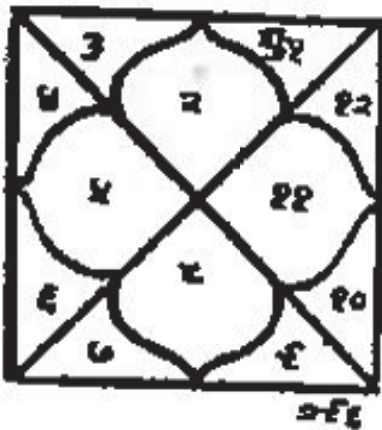


ग्यारहवें भाव में उच्च राशिस्थ शुक्र से प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा आमदनी को बढ़ाता है। यह सुन्दर होने के साथ ही रोगी भी रहता है तथा शत्रुपक्ष से लाभ मिलता है।

सातवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान पक्ष में कमी तथा विद्याध्ययन में सापरवाही रहती है। ऐसा व्यक्ति अनेक प्रयत्नों द्वारा अच्छा लाभ उठाता तथा उन्नति करता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

वृष लग्न : द्वादशभाव : शुक्र



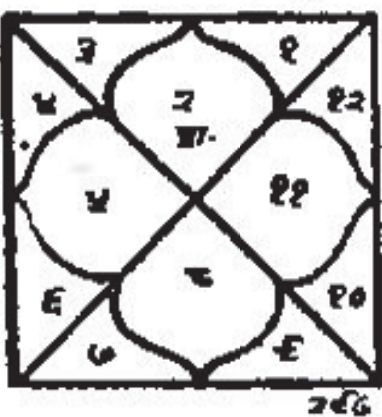
बाहरवें भाव में सामान्य मित्र मंगल की राशि में स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। वह शरीर से दुर्बल होने पर भी परिश्रमी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वरान्ति वाले षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष से कुछ हानि भी उठाता है। ऐसा व्यक्ति चतुर, रोगी तथा धन कमाने में कुशल परन्तु शत्रुओं द्वारा पीड़ित होता है।

‘वृष’ लग्न में ‘शनि’

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

वृष लग्न : प्रथमभाव : शनि



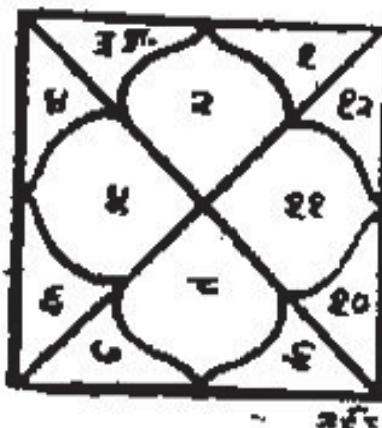
पहले भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक सुन्दर तथा भाग्यवान होता है।

तीसरी शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने के कारण भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ वृद्धि होती है। दसवीं दृष्टि से स्वरान्ति वाले दशम भाव को देखने से पिता एवं राज्य द्वारा लाभ तथा सम्मान

की प्राप्ति होती है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

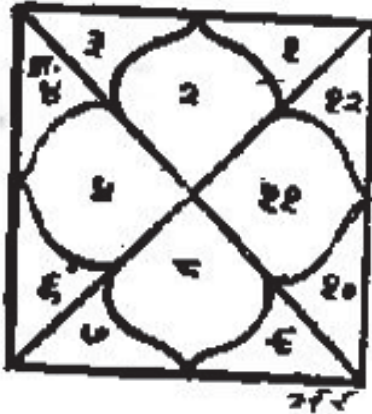
वृष लग्न : द्वितीयभाव : शनि



दूसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के धन-कुटुम्ब की वृद्धि होती है, परन्तु सुख में कुछ कमी आती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता के सुख में कमी होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु बढ़ती है। दसवीं शत्रु दृष्टि से एकादशभाव की देखने के कारण आमदनी के अच्छे अवसर प्राप्त होते हैं। राज्य के क्षेत्र में भी प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलविशेष

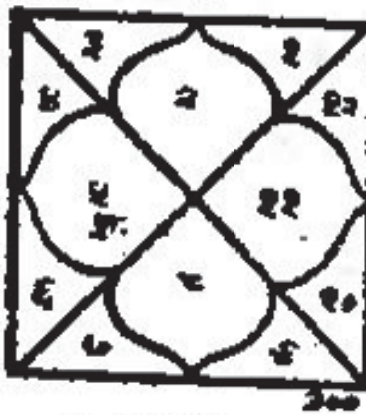
वृष लग्न : तृतीयभाव : शनि



तीसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव के जातक का भाई-बहिनों के साथ वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से विद्या तथा सन्तान के पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि के नवमभाव की देखने से भाग्य की अच्छी वृद्धि होती है। दसवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव की देखने के कारण धन में कमी रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों में भी लापरवाही बनी रहती है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलविशेष

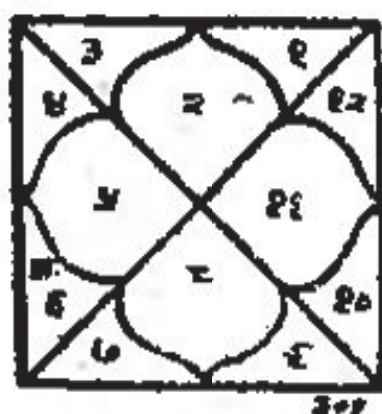
वृष लग्न : चतुर्थभाव : शनि



चौथे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित केतुस्य शनि के प्रभाव से जातक का माता के साथ वैमनस्य रहता है तथा सुमि-भवद के सुख में भी कमी रहती है। तीसरी उच्चदृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा मामा से शक्ति मिलती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से धारीरिक प्रभाव एवं सम्मान में वृद्धि होती है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलविशेष

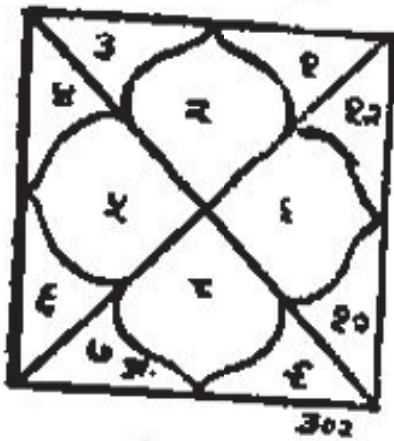
वृष लग्न : पंचमभाव : शनि



पाँचवें भाव में मित्र सुख की राशि पर स्थित शनिके प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से भ्रूरी तथा व्यवसाय के पक्ष में असंतोष रहता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से आय के साधनों से असंतोष रहता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव की देखने के कारण धन तथा पुत्रत्व की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा जातक धनी, प्रतिष्ठित तथा भाग्यवान होता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘षष्ठभाब’ स्थित ‘शनि’ का फलवैश

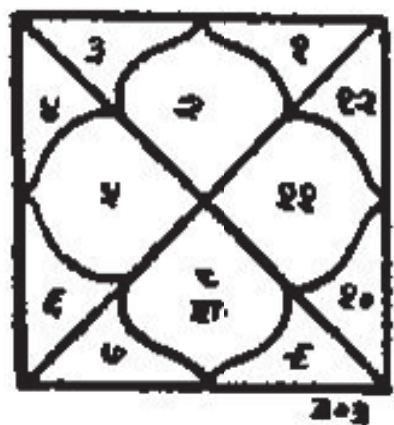
वृष लग्न : षष्ठभाब : शनि



छठे भाब में मित्र शुक्र की राशि पर उच्चस्थ शनि के प्रभाव से जातक सद्गुण-पक्ष में विशेष प्रभावी रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय से क्षेत्र में भी सफलताएँ पाता है। तीसरी मधु-दृष्टि से अष्टमभाब की देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में चिन्ता-मुक्त लाभ होता है। सातवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाब को देखने के कारण बाहरी स्थानों से असन्तोषजनक सम्बन्ध रहता है तथा खर्च की भी परेशानी रहती है। दसवीं मधु-दृष्टि से तृतीयभाब की देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है, पर भाई-बहिनों से मेल-मिलाप नहीं रहता।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘सप्तमभाब’ स्थित ‘शनि’ का फलवैश

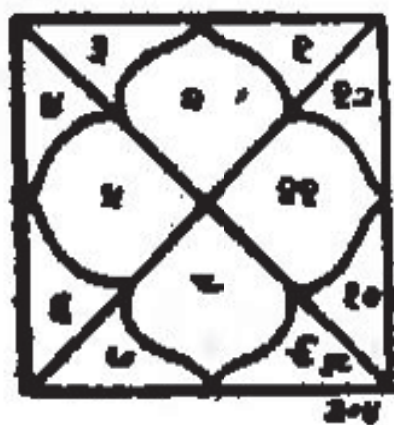
वृष लग्न : सप्तमभाब : शनि



सातवें भाब में मधु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं उन्नति प्राप्त होती है, परन्तु कुटुम्ब के संचालन में कुछ कठिनाइयाँ बना रहती है। पिता तथा राज्य से भी सक्ति प्राप्त होती है। तीसरी दृष्टि से नवमभाब की स्वराशि में देखने से भाग्यसक्ति बलवान होती है तथा धर्म में भी रूचि रहती है। सातवीं मित्र-दृष्टि के प्रथमभाब की देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। दसवीं मधु-दृष्टि से चतुर्थ भाब को देखने से माता, सुमि व भवन के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाब’ स्थित ‘शनि’ का फलवैश

वृष लग्न : अष्टमभाब : शनि

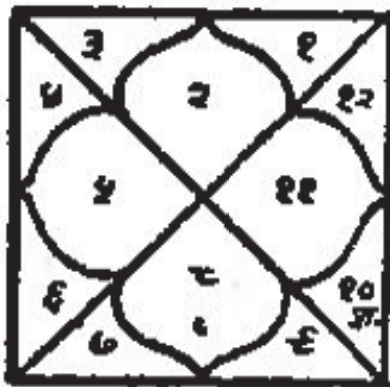


आठवें भाब में मधु शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के साथ दीर्घायु प्राप्त होती है। तीसरी दृष्टि से भाग्य, दशमभाब की देखने से पिता, राज्य एवं सम्मान के पक्ष में कुछ कमी रहती है। भाग्योन्नति के लिए बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाब को देखने के कारण प्रयत्नपूर्वक धन का संचय होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाब की देखने से अज्ञान तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। ऐसे जातक

की आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

‘बृष’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

बृष लग्न : नवमभाव : शनि



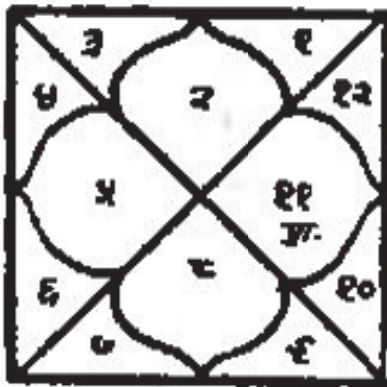
३०५

नवें भाव में स्वराशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक धर्मात्मा तथा भाग्यवान् होता है, साथ ही उसे पिता तथा राज्य से भी श्रेष्ठ लाभ होता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से कुछ शलत रास्तों से आमदनी में वृद्धि होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से मनमुटाव रहता है। दसवीं उच्च दृष्टि से षष्ठभाव की देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर अत्यन्त प्रभाव स्थापित होता है तथा

माता से भी लाभ होता है।

‘बृष’ लग्न की कुण्डली से ‘दशमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

बृष लग्न : दशमभाव : शनि



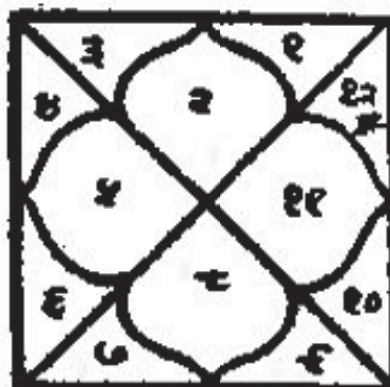
३०६

दसवें भाव में स्वराशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक को पिता, व्यवसाय एवं राज्य द्वारा पर्याप्त लाभ होता है तथा प्रलिष्ठा मिलती है। तीसरी नीच दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों में कुछ टुटि रहती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख में कमी आती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री-पक्ष

भाग्यशाली होता है, परन्तु दैनिक जीवन में चिन्ताएँ रहती हैं। ऐसा जातक बड़ा भाग्यवान् तथा सफल व्यवसायी होता है।

‘बृष’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

बृष लग्न : एकादशभाव : शनि



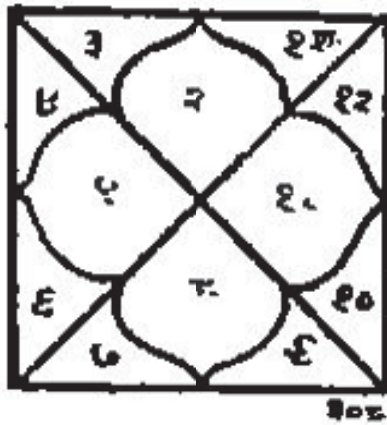
३०७

ग्यारहवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की अपनी आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलताएँ मिलती हैं तथा पिता एवं राज्य-पक्ष से भी असन्तोषपूर्ण लाभ होता है। यों, भाग्य की शक्ति प्रबल रहती है। तीसरी मित्र दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से सारौरिक प्रभाव तथा आयु की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के

क्षेत्र में सफलता मिलती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातत्व के विषय में कुछ कठिनाइयों का अनुभव होता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलान्वेश

वृष लग्न : द्वादशभाव : शनि



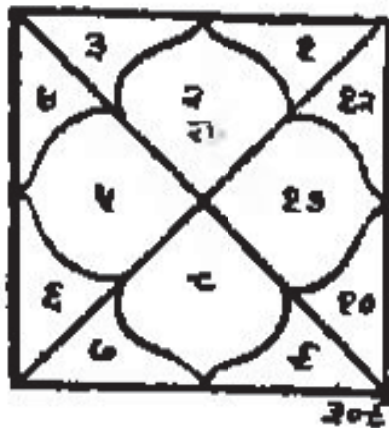
बारहवें भाव में नीच राशिस्य शनि के प्रभाव से जातक की खर्च एवं बाहरी सम्बन्धों में परेशानियों का अनुभव होता है। राज्य, पिता, व्यवसाय, भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में भी कमियाँ रहती हैं। तीसरी मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सामान्य साथ होता है। सातवीं उच्च दृष्टि से षष्ठ भाव की देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़े-मुकदमे आदि में लाभ होता है। दसवीं दृष्टि

से स्वराशि के नवमभाव की देखने से भाग्य की थोड़ी-बहुत वृद्धि होती है, परन्तु सम्मान के क्षेत्र में कमी घनी रहती है।

‘वृष’ लग्न में ‘राहु’

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलान्वेश

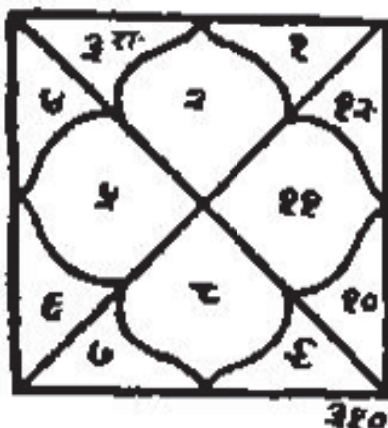
वृष लग्न : प्रथमभाव : राहु



पहले भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ हानि होती है, परन्तु उसे गुप्त चतुराई एवं मनोबल द्वारा स्वार्थ-साधन में सफलता मिलती है। ऐसा जातक बड़ा साहसी तथा हिम्मती होता है। वह अनेक युक्तियों से अपने प्रभाव तथा व्यक्तित्व की बढ़ाने में सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे यूच्छा अथवा घोट का शिकार भी बनना पड़ता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलान्वेश

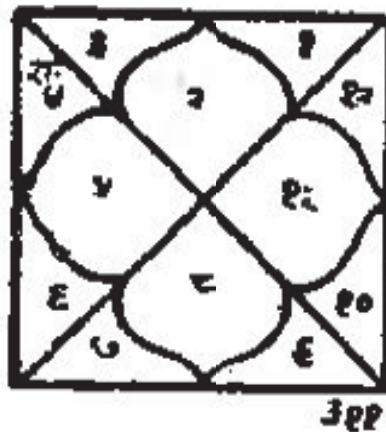
वृष लग्न : द्वितीयभाव : राहु



दूसरे भाव में स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक अनेक युक्तियों तथा चातुर्य के बल पर अपने धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि करता है, परन्तु बीच-बीच में उसे कठिनाइयों तथा संघर्षों का सामना भी करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलवैश

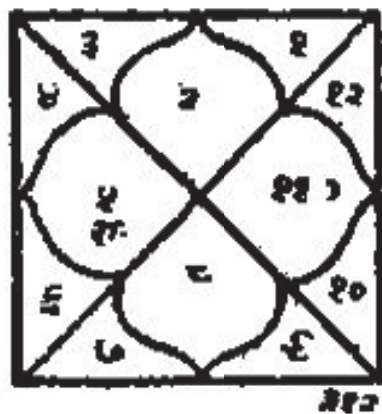
वृष लग्न : तृतीयभाव : राहु



तीसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि में स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाई-बहिन तथा पराक्रम के क्षेत्र में कुछ कष्ट का अनुभव होता है, परन्तु वह अपनी भीतरी कमजोरियों तथा चिन्ताओं की बड़ी शत्रुताई से छिपाकर हौसला बनाये रखता है और प्रकट रूप में बड़ा हिम्मती होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलवैश

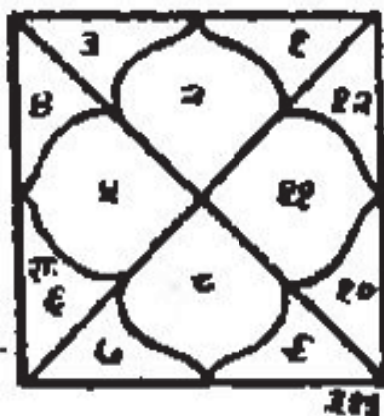
वृष लग्न : चतुर्थभाव : राहु



चौथे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की माता, भूमि, भवन तथा सुख के क्षेत्र में कष्टों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। परदेश में जाकर रहना पड़ता है तथा अनेक दुःख उठाने पड़ते हैं, अन्त में कठिन परिश्रम तथा गुप्त उपायों द्वारा सामान्य धन एवं सुख प्राप्त करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलवैश

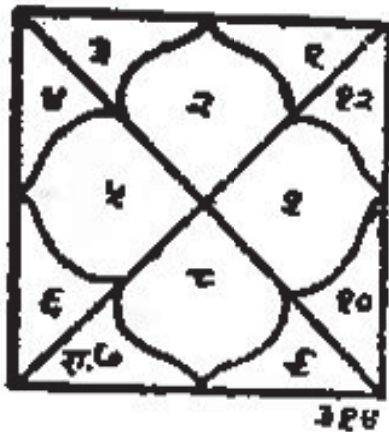
वृष लग्न : पंचमभाव : राहु



पाँचवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान का सुख मिलता है तथा मस्तिष्क-सम्बन्धी कुछ कमियों के साथ विद्या एवं बुद्धि की उन्नति होती है। ऐसा जातक अधिक बोलने वाला, गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला तथा नशेबाज होता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘षष्ठभाब’ स्थित ‘राहु’ का फलवारेण

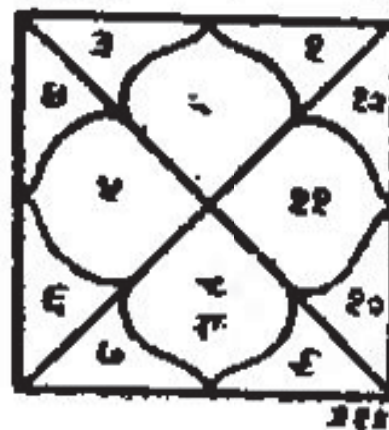
वृष लग्न : षष्ठभाब : राहु



छठे भाब में मित्त शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक ऋतु-पक्ष का हिम्मत के साथ मुकाबला करता और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है। परन्तु माया के सुख में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों तथा गुप्त विद्याओं में कुशल होता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘सप्तमभाब’ स्थित ‘राहु’ का फलवारेण

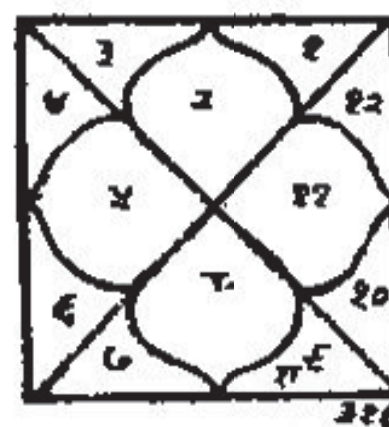
वृष लग्न : सप्तमभाब : राहु



सातवें भाब में ऋतु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष द्वारा कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर वह थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त कर लेता है। उसे इन्द्रिय-विकारों का भी सामना करना पड़ता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाब’ स्थित ‘राहु’ का फलवारेण

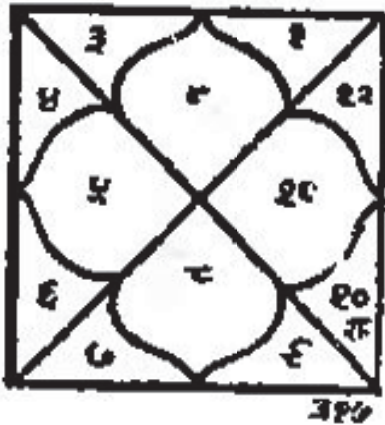
वृष लग्न : अष्टमभाब : राहु



आठवें भाब में ऋतु गुरु की राशि पर स्थित वीष के राहु के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातत्व के क्षेत्र में अनेक कठिनाइयों तथा हानियों का सामना करना पड़ता है। परन्तु वह सौम्य तथा सज्जन बना रहता है। ऐसा जातक गुप्त चिन्ताओं से ग्रस्त ही, गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है तथा बाहरी सम्बन्धों से जीवन-निर्वाह करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

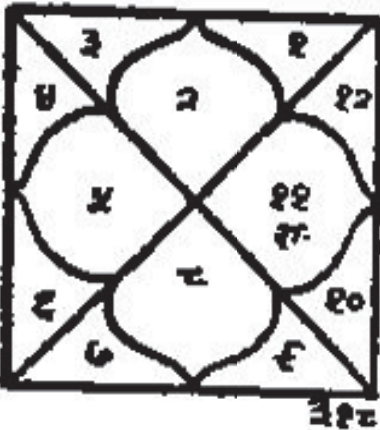
वृषलग्न : नवमभाव : राहु



नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा धैर्य, गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम का आश्रय लेकर ही वह कुछ सफलताएँ प्राप्त करता है। उसके जीवन में सुख-दुःख तथा गरीबी-अमीरी का क्रम निरन्तर आता-जाता बना रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

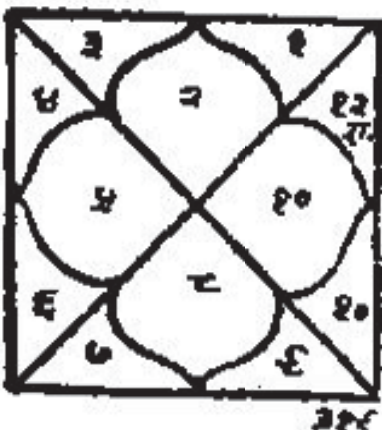
वृषलग्न : दशमभाव : राहु



दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की अपने पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा सफलता पाने के लिए गुप्त युक्तियों, परिश्रम एवं धैर्य का आश्रय लेना पड़ता है। परन्तु ऊपरी दृष्टि से वह एक अमीर तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति जान पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

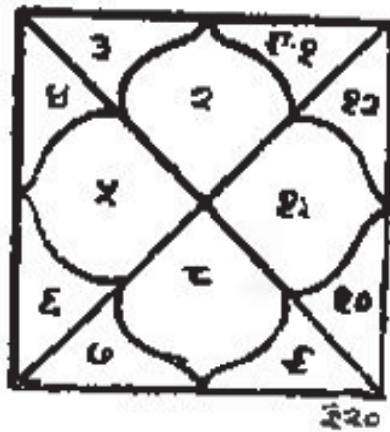
वृषलग्न : एकादशभाव : राहु



ग्यारहवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से कुछ रुकावटों के लाभ जातक की आमदनी के क्षेत्र में सफलताएँ प्राप्त होती रहती हैं। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के द्वारा लाभ कमाता है। संकटों में भी वह अपना धैर्य नहीं खोता, अतः अन्त में उसे सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी भी बहुत होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृषलग्न : द्वादशभाव : राहु



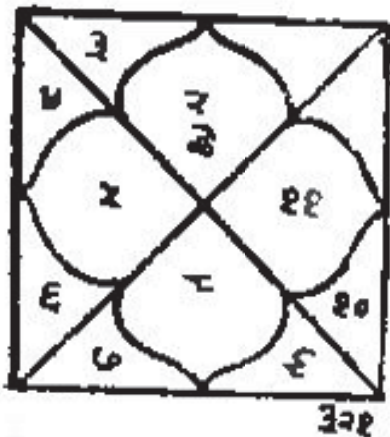
बारहवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को खर्च खलाने में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और चातुर्य तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है।

ऊपरी दिखावे में ऐसा व्यक्ति सम्पन्न तथा प्रभावशाली प्रतीत होता है। कठिन परिश्रम के द्वारा उसे सफलताएँ भी मिलती हैं।

'वृष' लग्न में 'केतु'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

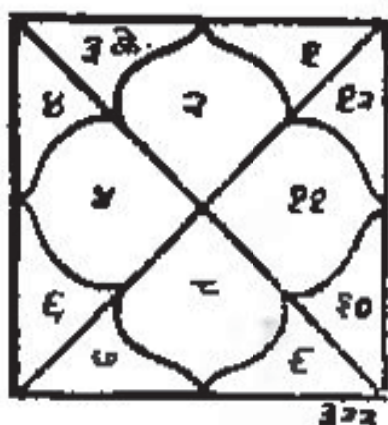
वृषलग्न : प्रथमभाव : केतु



पहले भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा मन में कुछ चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं। ऐसा व्यक्ति अपने शारीरिक श्रम एवं योग्यता के बलबूते पर अन्य लोगों को प्रभावित भी करता है। उसके शरीर पर किसी घाव अथवा चोट का चिह्न भी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

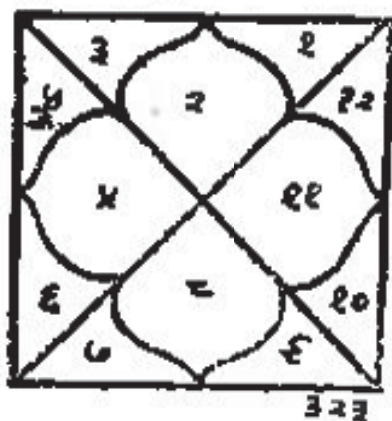
वृषलग्न : द्वितीयभाव : केतु



दूसरे भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित वीष के केतु के प्रभाव से जातक की धन एवं कुटुम्ब के मामले में अनेक चिन्ताओं तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए कठिन परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों का सहारा लेकर धन तथा कुटुम्ब के क्षेत्र में यत्किंचित् सफलता ही प्राप्त कर पाता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

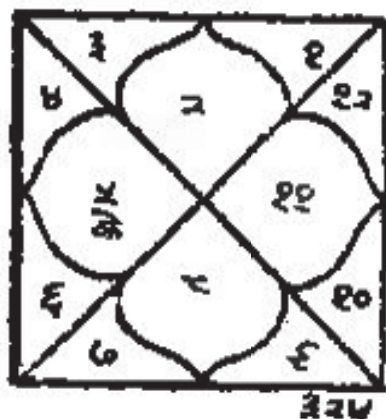
वृषलग्न : तृतीयभाव : केतु



तीसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कमी आती है तथा भाई-बहिनों के सम्बन्ध से भी कष्ट एवं हानि का सामना करना पड़ता है। परन्तु ऐसा जातक अपनी आन्तरिक दुर्बलता को छिपाये रखकर गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के सहारे अभावों को दूर करने में थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

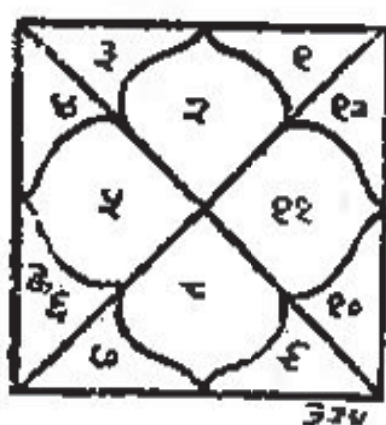
वृषलग्न : चतुर्थभाव : केतु



चौथे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की माता, भूमि, भवन तथा पारिवारिक सुख के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के सहारे जीवित रहता है। ऐसे व्यक्ति को स्वदेश त्याग कर परदेश में भी रहना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

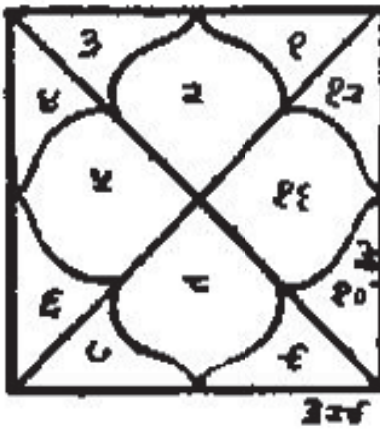
वृषलग्न : पंचमभाव : केतु



पाँचवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परन्तु अपने साहस एवं गुप्त युक्तियों के बल पर सामान्य सफलता भी प्राप्त कर लेता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, धैर्यवान् तथा अपने मन्तव्य को प्रकट न करने वाला होता है।

'वृष' राग की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : नवमभाव : केतु

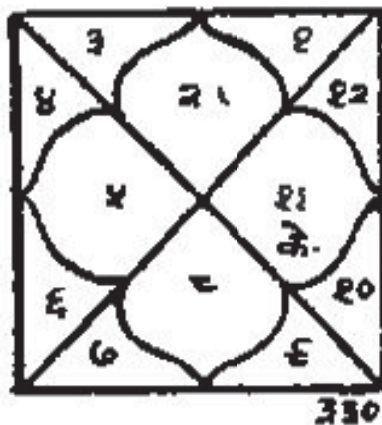


नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा अपने भाग्य की उन्नति करता है। धर्म में आस्था रखते हुए भी विशेष श्रद्धा नहीं दिखाता।

संक्षेप में, ऐसा जातक धर्म का दिखावा न करने वाला, साहसी, परिश्रमी तथा गुप्त शक्तियों द्वारा काम लेने वाला होता है।

'वृष' राग की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

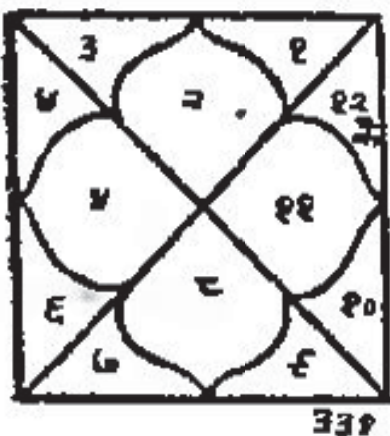
वृषलग्न : दशमभाव : केतु



दसवें भाव में अपने मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की पिता तथा राज्य के क्षेत्र में कुछ हानि उठानी पड़ती है। वह बड़े परिश्रम के साथ सामान्य सफलता प्राप्त करता है। वह ऊपरी दिखावे में अमीर, सुखी तथा सम्मानित प्रतीत होता है, परन्तु भीतर से कमजोरी बनी रहती है।

'वृष' राग की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

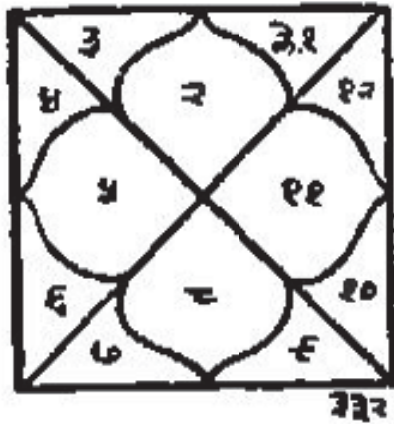
वृषलग्न : एकादशभाव : केतु



ग्याहरवें भाव में अपने शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की अपनी आमदनी के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उसके जीवन में कभी अच्छा लाभ होता है नो कभी विशेष संकट भी सामने आते हैं। ऐसा व्यक्ति माहसी तथा परिश्रमी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

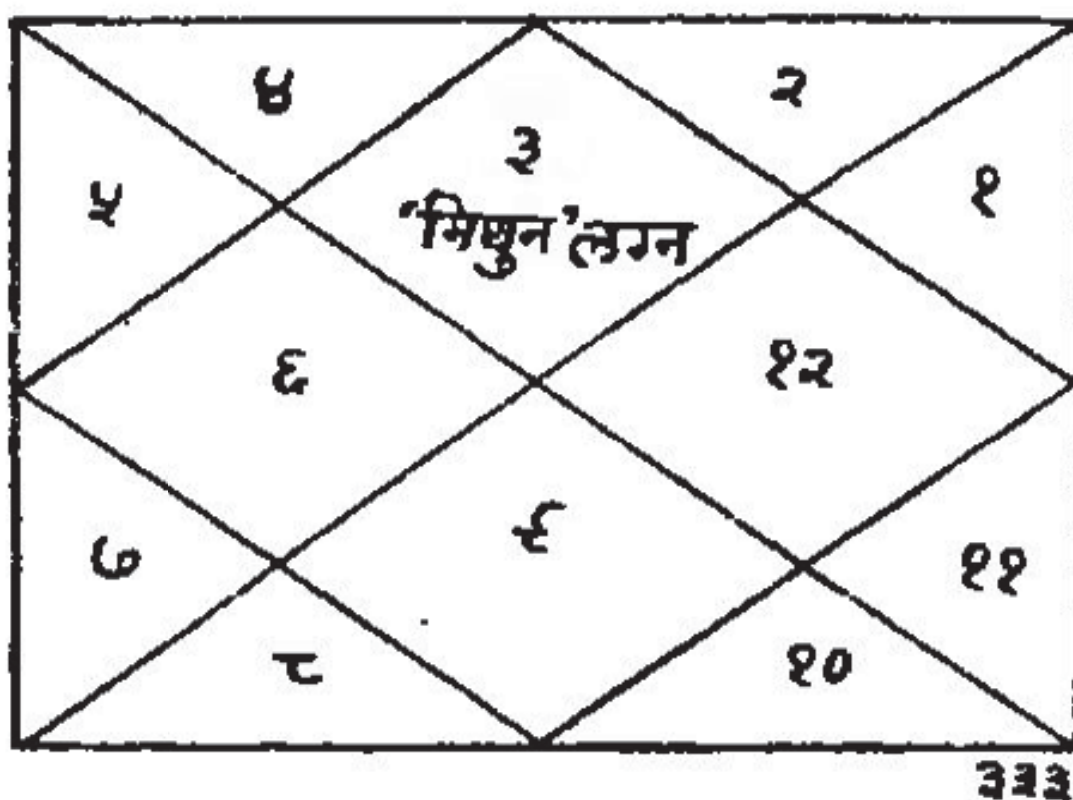
वृषलग्न : द्वादश भाव : केतु



बारहवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की अपना खर्च चलाने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी सम्बन्धों से की परेशानियाँ आती रहती हैं।

ऐसा जातक बड़ा परिश्रमी, उद्योगी, धैर्यवान् तथा साहसी होता है।

मिथुन लग्न



['मिथुन' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'मिथुन' लग्न का फलादेश

'मिथुन' लग्न में जन्म लेने वाले जातक का बेहतर शील तथा शरीर का रंग गेहूँवा होता है। वह नृत्य-वाद्य आदि संगीत की कलाओं का प्रेमी, कवि, हास्य-प्रवीण मिलिश, विनम्र, परोपकारी, तीर्थप्रेमी, गणितज्ञ, दूत-कर्म करने में कुशल, ऐश्वर्य-शाली, धनी, सुखी, चतुर, मधुरभाषी, दाती, सुशील, विषयी, स्त्रियों में आसक्त, बहुमित्रवान्, बहु सन्ततिवान्, अनेक प्रकार के भोगों का उपभोग करने वाला, सुन्दर केशों वाला, राजा के समीप रहने वाला तथा राजा द्वारा ही पीड़ा प्राप्त करने वाला होता है।

'मिथुन' लग्न वाला जातक अपनी प्रारंभिक अवस्था में सुखी, मध्यमावस्था में दुःखी तथा अन्तिमावस्था में पुनः सुखोपभोग करने वाला होता है। उसका भाग्योदय ३२ से ३५ वर्ष की आयु के बीच होता है। इस लग्न वाला जातक मध्यम आयु प्राप्त करता है।

‘मिथुन’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डलियों में संख्या ३३४ से ४४१ के बीच देखना चाहिए ।

गोचर कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए ।

‘मिथुन’ लग्न में ‘सूर्य’ का फलादेश

१. ‘मिथुन’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘सूर्य’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३३४ से ३४५ के बीच देखना चाहिए ।

२. ‘मिथुन’ लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘सूर्य’ का अस्थायी फलादेश, निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में ‘सूर्य’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर ही तो संख्या ३३४
- (ख) ‘वृष’ राशि पर ही तो संख्या ३३५
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर ही तो संख्या ३३६
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर ही तो संख्या ३३७
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर ही तो संख्या ३३८
- (च) ‘कन्या’ राशि पर ही तो संख्या ३३९
- (छ) ‘तुला’ राशि पर ही तो संख्या ३४०
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर ही तो संख्या ३४१
- (झ) ‘धनु’ राशि पर ही तो संख्या ३४२
- (ञ) ‘मकर’ राशि पर ही तो संख्या ३४३
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर ही तो संख्या ३४४
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर ही तो संख्या ३४५

‘मिथुन’ लग्न में ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

१. ‘मिथुन’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३४६ के ३५७ के बीच देखना चाहिए ।

२. 'मिथुन' लग्न वालों की गोचरकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३४६
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३४७
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३४८
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३४९
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३५०
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३५१
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३५२
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३५३
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३५४
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३५५
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३५६
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३५७

'मिथुन' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगल का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३५८ से ३६९ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगल का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

मित्र महीने में 'मंगल'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३५८
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३५९
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३६०
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३६१
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३६२
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३६३
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३६४
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३६५
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३६६
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३६७
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३६८
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३६९

‘मिथुन’ लग्न में ‘बुध’ का फलादेश

१. ‘मिथुन’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न षालों में स्थित ‘बुध’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३७० से ३८१ के बीच देखना चाहिए।

२. ‘मिथुन’ लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘बुध’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में ‘बुध’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ३७०
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ३७१
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ३७२
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ३७३
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ३७४
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ३७५
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ३७६
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या ३७७
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या ३७८
- (ञ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या ३७९
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ३८०
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर हो तो संख्या ३८१

‘मिथुन’ लग्न में ‘गुरु’ का फलादेश

१. ‘मिथुन’ लग्न वाले को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘गुरु’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३८२ से ३९३ के बीच देखना चाहिए।

२. ‘मिथुन’ लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘गुरु’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में ‘गुरु’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ३८२
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ३८३
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ३८४
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ३८५
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ३८६
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ३८७

- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३८८
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३८९
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३९०
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३९१
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३९२
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३९३

'मिथुन' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३९४ से ४०५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों को शोचर कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३९४
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३९५
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३९६
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३९७
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३९८
- (च) 'कन्या' राशि पर ही तो संख्या ३९९
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ४००
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ४०१
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ४०२
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४०३
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ४०४
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४०५

'मिथुन' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४०६ से ४१७ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों की शोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'शनि'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ४०६
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ४०७
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ४०८
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ४०९
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ४१०
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ४११
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ४१२
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर ही तो संख्या ४१३
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ४१४
- (ञ) 'मकर' राशि पर ही तो संख्या ४१५
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ४१६
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४१७

'मिथुन' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४१८ से ४२६ के बीच देखना चाहिए ।

२. 'मिथुन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ४१८
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ४१९
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ४२०
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ४२१
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ४२२
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ४२३
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ४२४
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ४२५
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ४२६
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४२७
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ४२८
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४२९

‘मिथुन’ लग्न में ‘केतु’ का फलादेश

१. ‘मिथुन’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘केतु’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४३० से ४४१ के बीच देखना चाहिए ।

२. ‘मिथुन’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘केतु’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

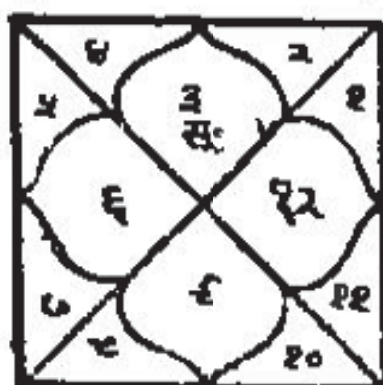
जिस वर्ष में ‘केतु’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ४३०
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ४३१
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ४३२
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ४३३
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ४३४
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ४३५
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ४३६
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या ४३७
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या ४३८
- (ञ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या ४३९
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ४४०
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर हो तो संख्या ४४१

‘मिथुन’ लग्न में ‘सूर्य’

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : सूर्य



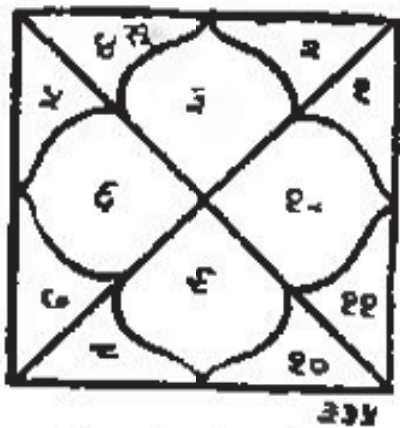
पहले भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक परम तेजस्वी, साहसी, परिश्रमी तथा उद्योगी होता है। वह बड़े-बड़े काम करता है। शरीर पुष्ट होता है। उसे भाई-बहनों का पर्याप्त सुख भी मिलता है।

यहाँ से सूर्य द्वारा सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव की देखने के कारण जातक की व्यवसाय एवं स्त्री-पक्ष में भी सफलता मिलती है तथा उसका गृहस्थ जीवन सुखी एवं स्नेहपूर्ण होता है।

ऐसी यह स्थिति वाला जातक बड़ा हिम्मती, फुर्तीला, क्रोधी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीय भाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वितीय भाव : सूर्य



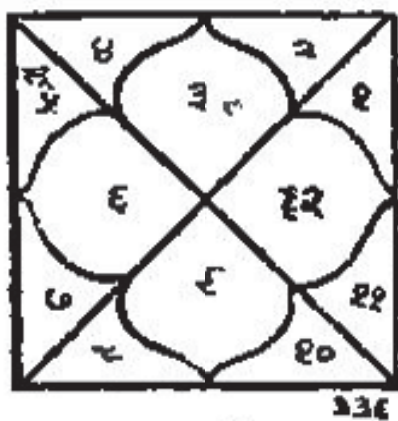
तथा हिम्मती होता है ।

दूसरे भाव में मित 'चन्द्रमा' की राशि पर सूर्य के प्रभाव से जातक अपने पराक्रम द्वारा धन तथा कुटुम्ब के सुख को बढ़ाता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ न्यूनता रहती है ।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव के देखने से जातक को पुरातस्व के लाभ में कमी रहती है तथा दैनिक जीवन में भी कुछ अशांति बनी रहती है । ऐसी ग्रहस्थिति का जातक धनी

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीय भाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : तृतीय भाव : सूर्य



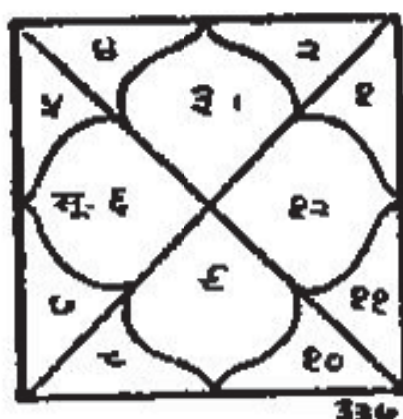
तथा सुखी होता है ।

तीसरे भाव में स्वराशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की भाई-बहिनों की पूर्ण शक्ति मिलती है तथा वह अत्यन्त पराक्रमी भी होत है ।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक के भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी आ जाती है । सामान्यतः ऐसी ग्रह-स्थिति वाला जातक बड़ा पराक्रमी, प्रभावशाली

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थ भाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : चतुर्थ भाव : सूर्य



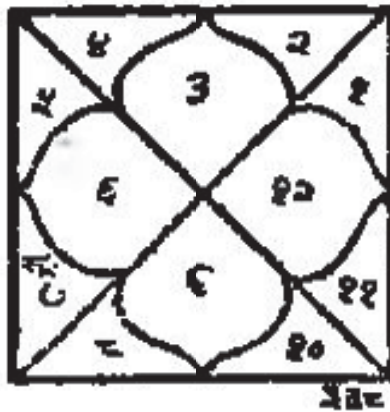
व्यक्ति बनी, सुखी तथा प्रभावशाली होता है ।

चौथे भाव में मित सुख की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है । साथ ही माता, भूमि, भवन, संपत्ति एवं सुख का भी लाभ होता है ।

सातवीं मितदृष्टि से दशमभाव को देखने से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं । ऐसा

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : सूर्य

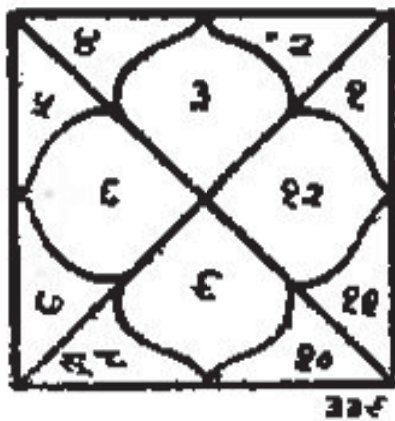


पाँचवें भाग में स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक की विद्या-बुद्धि में कमी रहती है तथा सन्तान से कष्ट मिलता है। पराक्रम में भी कमजोरी रहती है।

सातवीं उच्चदृष्टि से मित्रराशिस्थ एकादश भाव को देखने के कारण जातक भुक्त युक्तियों तथा असत्य-भाषण आदि का आश्रय लेकर धन कमाता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

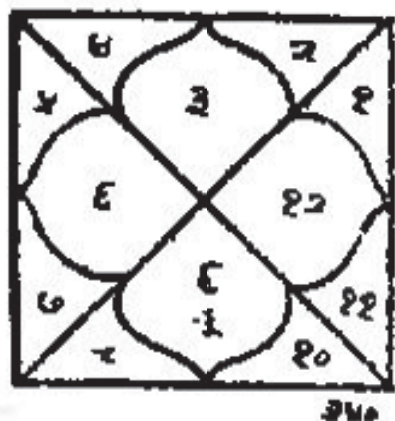


छठे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर विजय पाता है। भाई-बहनों के साथ कुछ वैमर्ग्य रहता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण धर्म की अधिकता रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कोई अधिक सुख नहीं मिलता। ऐसा व्यक्ति साहसी तथा कठिन परिश्रमी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

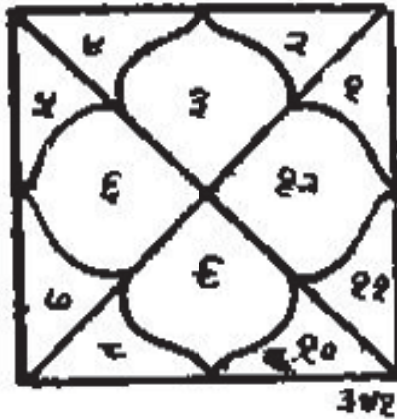


सातवें भाव में मित्र शुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की स्त्री से मुख, शक्ति एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है तथा परिश्रम द्वारा व्यवसाय में भी अच्छा लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि में प्रथम भाव को देखने के कारण जातक की शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव का लाभ भी होता है। ऐसे व्यक्ति का गार्हस्थ्य-जीवन सुखमय होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

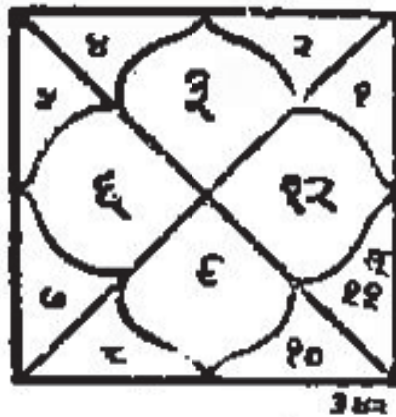


आठवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पुरातत्त्व एवं आयु के क्षेत्र में कमी जाती है तथा भाई-बहिन का सुख एवं पराक्रम भी न्यून रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण आर्थिक क्षेत्र में परिश्रम से लाभ होता है तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : नवमभाव : सूर्य

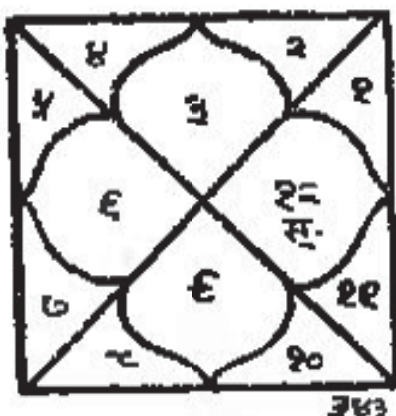


नवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति करता है तथा धर्म-पालन में उदासीन-सा रहता है। भाई-बहिनों से सम्बन्ध भी सन्तोष-जनक नहीं रहता।

सातवीं मित्रदृष्टि से स्वराशि वाले तृतीय भाग को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई के द्वारा थोड़ा सहयोग भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रमी, उद्योगी तथा तेजस्वी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : दशमभाव : सूर्य

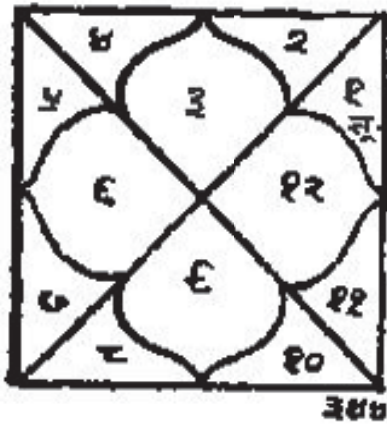


दसवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता की अच्छी शक्ति मिलती है तथा राज्य एवं व्यवसाय से भी लाभ तथा सम्मान प्राप्त होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भूमि, भवन, सुख एवं मातृ-पक्ष में सफलता मिलती है। ऐसा जातक सुखी एवं सन्तुष्ट रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : एकादशभाव : सूर्य

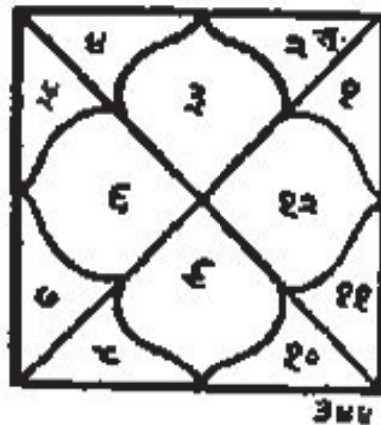


बारहवें भाव में उच्च राशिस्थ सूर्य के प्रभाव से जातक का पराक्रम बढ़ा रहता है और वह यथेष्ट लाभ प्राप्त करता है। भाई-बहिन के सुख में भी वृद्धि होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान-पक्ष में कुछ कमी आती है तथा विद्या-लाभ में भी रुकावटें पड़ती हैं। ऐसा व्यक्ति रुखे स्वभाव का तथा अत्यन्त परिश्रमी और साहसी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : सूर्य



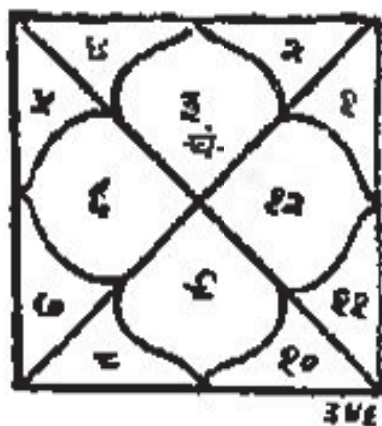
बारहवें भाव में शत्रु शुक की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का श्रम अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष में प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी भीतरी कमजोरी को दबाकर, ऊपर से बड़ी हिम्मत दिखाता है तथा परिश्रमी होता है।

'मिथुन' लग्न में 'चन्द्रमा'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

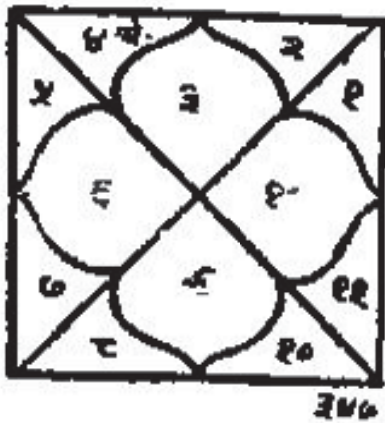


पहले भाव में मित बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपनी शारीरिक शक्ति तथा मनोबल से धनोपार्जन करता है तथा पर्याप्त कौटुम्बिक सुख की भोगता है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर, सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी पर्याप्त सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है।

'मिथुन' राशि की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

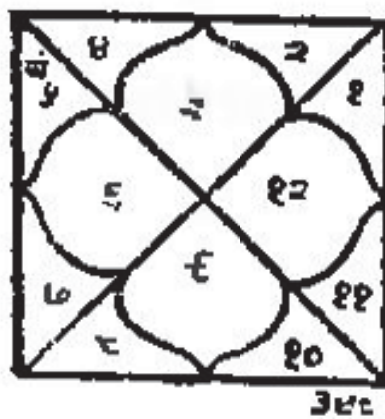


दूसरे भाव में स्वराशि में स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से छष्टमभाव को देखने के कारण जातक को दैनिक जीवन में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व को भी हानि होती है। मानसिक रूप से चिन्तित रहते हुए भी ऐसा जातक सुखी तथा यशस्वी होता है।

'मिथुन' राशि की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

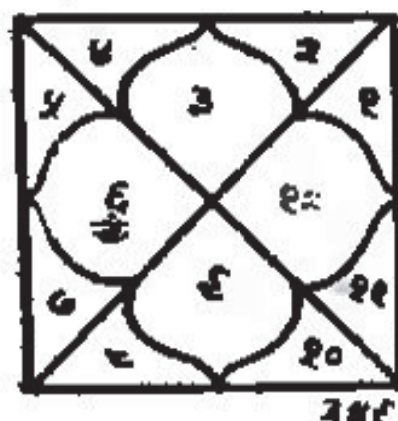


तीसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहनों के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में रुकावटें आती हैं तथा धर्म का पक्ष भी कमजोर रहता है। ऐसा जातक धनी, प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होता है। वह धर्म को विशेष महत्त्व नहीं देता।

'मिथुन' राशि की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

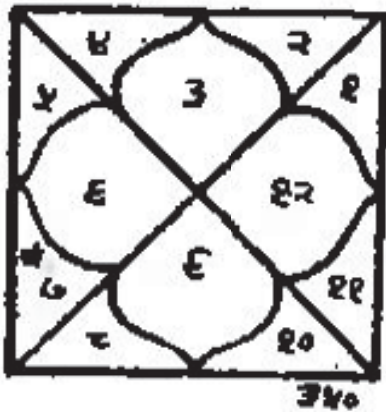


चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी आती है परन्तु भूमि, भवन, सम्पत्ति एवं कुटुम्ब का सुख खूब मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशमभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य के द्वारा भी सुख तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक धनी, सुखी, प्रभावशाली तथा व्यवसाय में सफलता पाने वाला होता है।

'मिथुन' सप्तमी कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

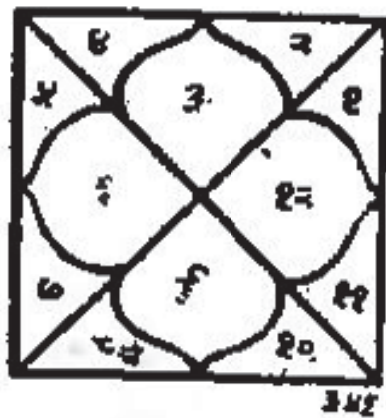


पाँचवें भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष में कुछ रुकावटें आती हैं, परन्तु विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी अच्छी रहती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, चतुर तथा प्रतिष्ठित होता है।

'मिथुन' सप्तमी कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र



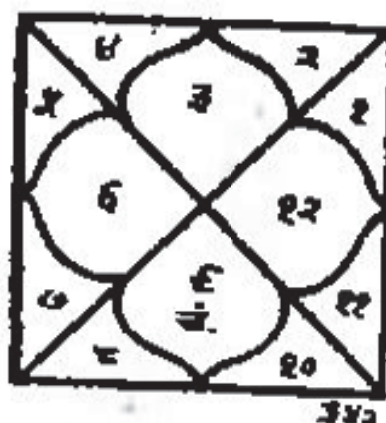
छठे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा घनोपाजन करता है तथा शत्रु-पक्ष द्वारा भी चोट खा सकता है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ होना है।

ऐसा व्यक्ति धन कमाने के विषय में अपयशी होता है।

'मिथुन' सप्तमी कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

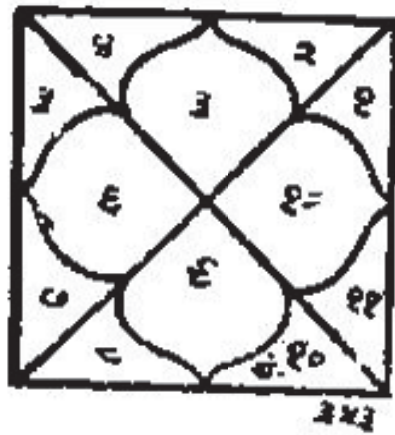


सातवें भाव में मित्र शुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष में कुछ रुकावटों के साथ सफलता मिलती है तथा विवाह के बाद भाग्योन्नति होती है। व्यवसाय एवं भोगादि का पर्याप्त सुख भी सभी मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक का शरीर सुन्दर होता है और प्रसिद्धा भी प्राप्त करता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

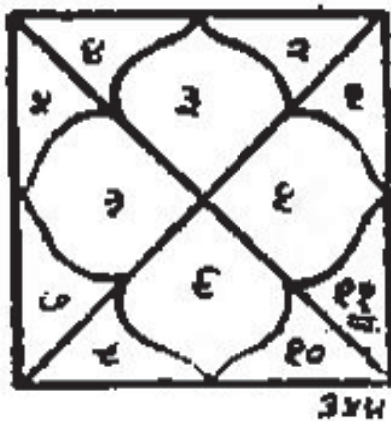


आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में परेशानी रहती है तथा धन एवं कुटुम्ब के सुख में भी बाधा आती है। दैनिक जीवन में भी परेशानियाँ रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वितीयभाव को देखने के कारण नव तथा कुटुम्ब की उन्नति के साधन प्राप्त होते रहते हैं तथा उनकी प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम भी करना पड़ता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : नवमभाव : चन्द्र

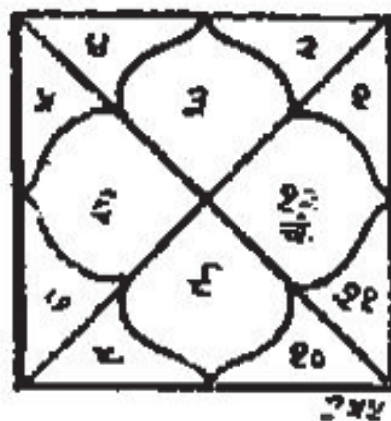


नवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक धन की वृद्धि के लिए धर्म का पालन करता है तथा भाग्य-पक्ष में कुछ असन्तोष के साथ लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण जातक की भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा उसके पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : दशमभाव : चन्द्र

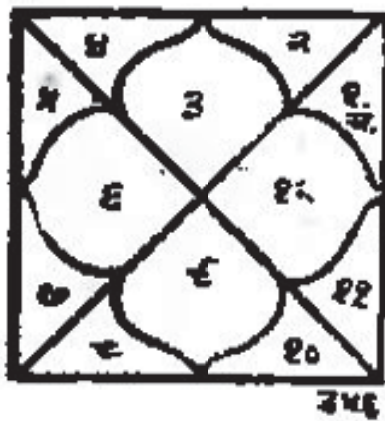


दसवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य द्वारा सहयोग, सुत्र, धन एवं प्रतिष्ठा आदि का लाभ होता है तथा व्यवसाय की उन्नति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण जातक को माता, भूमि, भवन एवं घरेलू-सुखों का भी लाभ होता है, परन्तु धन की उन्नति में कुछ अटकाव सा अनुभव होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : एकादशभाव : चन्द्र



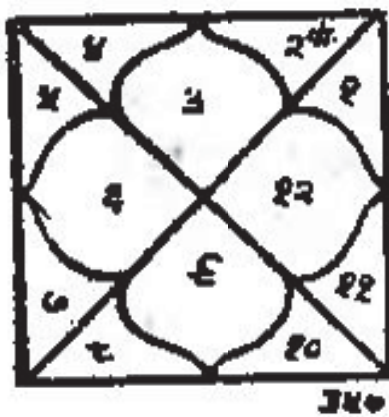
धारह्वे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा से जातक की धन का पर्याप्त लाभ होता है तथा कौटुम्बिक सुख भी विजया है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से पृथमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति विद्वान्, बुद्धिमान्, सन्ततिवान् धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : द्वादशभाव : चन्द्र



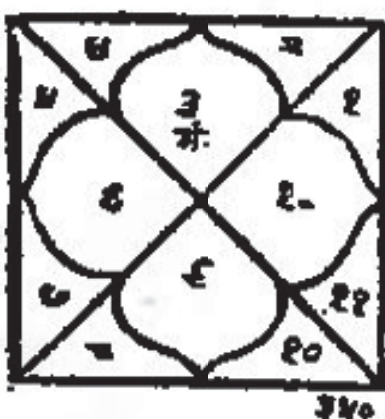
धारह्वे भाव में उच्चस्थ चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता रहता है। कुटुम्ब की शक्ति में कुछ कमी जाती है।

सातवीं नीचदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक को शत्रुपक्ष में स्वयं झुक कर अपना काम निकालना पड़ता है तथा रोग, झगड़े आदि के कारण धन में थोड़ी-बहुत अशान्ति भी बनी रहती है।

'मिथुन' लग्न में 'मंगल'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : प्रथमभाव : मंगल

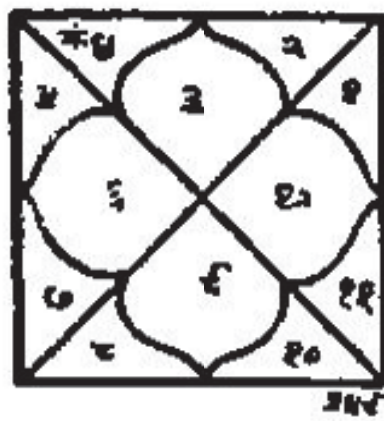


पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक श्रम द्वारा यथेष्ट धन कमाता है तथा शत्रुपक्ष में भी विजयी होता है। चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थभावि को देखने के कारण माता तथा घरेलू सुख का असन्तोषपूर्ण लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री की रोग तथा परेशानियाँ रहती हैं, परिश्रम द्वारा व्यवसाय से लाभ होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातस्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति कोषी तथा झगड़ालू होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलविशेष

मिथुनलग्न : द्वितीयभाव : मंगल

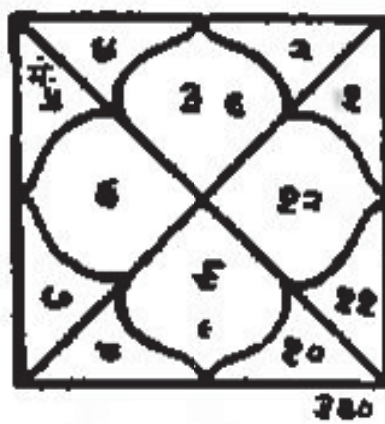


दूसरे भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब को हानि उठानी पड़ती है। शत्रुपक्ष भी नुकसान पहुँचाता है। छुए-सट्टे में भी हानि होती है। चौथी दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान पक्ष में कमी रहती है तथा विद्या-बुद्धि का लाभ भी गुप्त युक्तियों से होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म में रुचि नहीं होती तथा भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली से 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलविशेष

मिथुनलग्न : तृतीयभाव : मंगल

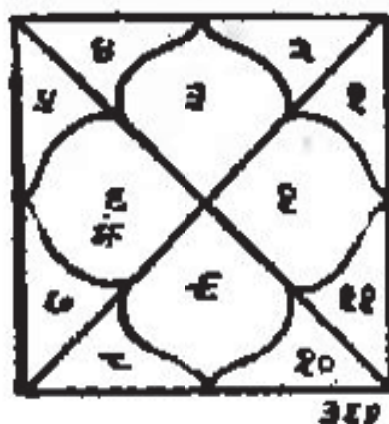


तीसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख कुछ परेशानों के साथ मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि वाले षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष पर विजय मिलती है तथा शत्रुओं से लाभ होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म का सामान्य लाभ होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से दसमभाव को देखने के कारण राज्य तथा पिता के पक्ष से यश, धन आदि का लाभ होता है तथा प्रभाव में वृद्धि होती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलविशेष

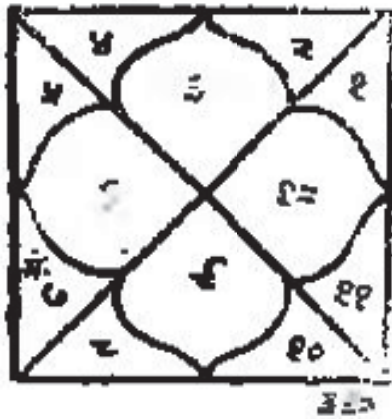
मिथुनलग्न : चतुर्थभाव : मंगल



चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता से सामान्य वैमनस्ययुक्त लाभ होता है तथा भूमि, शवन एवं घरेलू सुख भी कुछ कठिनाइयों के साथ ही मिलता है। चौथी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सामान्य परेशानियाँ रहती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से दसमभाव को देखने से पिता एवं राज्य द्वारा यश एवं लाभ मिलता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादशभाव की देखने से जातक की आमदनी अच्छी रहती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

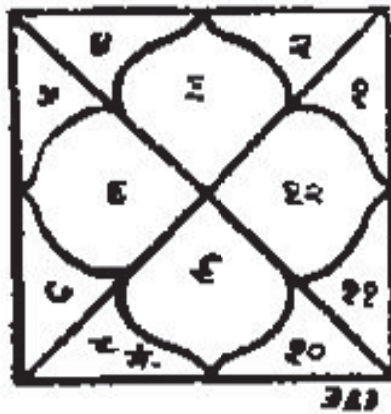
मिथुनलग्न : पंचमभाव : मंगल



पाँचवें भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को मन्तान-पक्ष द्वारा कुछ वैमनस्य के साम लाभ होता है तथा परिश्रम द्वारा विद्या-बुद्धि प्राप्त होती है। चौथी उच्चदृष्टि से आयु-वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले एकादशभाव को देखने से गुप्त धुक्तियों एवं परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ होता है। आठवीं दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

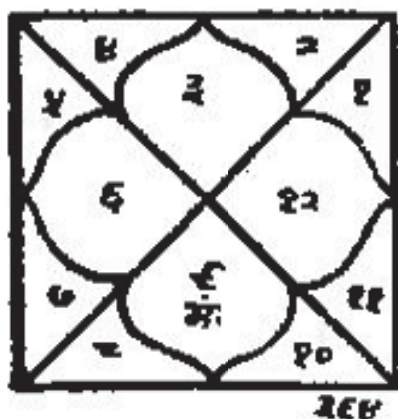
मिथुनलग्न : षष्ठभाव : मंगल



छठे भाव में स्वराशि-स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शत्रुपक्ष पर विशेष सफलता मिलती है और शत्रु, झगड़े-टटे तथा ग्रामा के द्वारा लाभ होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक शारीरिक परिश्रम खूब करता है तथा उसी से धन भी कमाता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

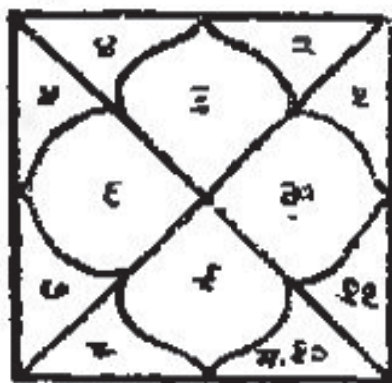
मिथुनलग्न : सप्तमभाव : मंगल



सातवें भाव में मित्र शुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को व्यावसायिक तथा स्त्री-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। चौथी मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ पिता तथा राज्यपक्ष से लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु रक्त-विकार आदि रोग भी हो सकते हैं। आठवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-संचय में कमी रहती है तथा कुटुम्ब के कारण बलेश भी मिलता है।

'मिथुन' लग्न की कुचली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलान्वेश

मिथुनलग्न : अष्टमभाव : मंगल

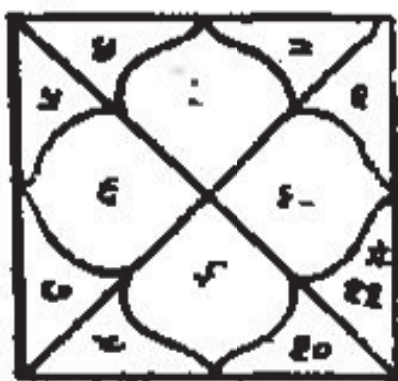


३६४

आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि में उन्वस्य मंगल के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा शत्रुपक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि वाले एकादश भाव को देखने से परिश्रम द्वारा लाभ होता है। सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक कुछ में कुछ कमी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'मिथुन' लग्न की कुचली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलान्वेश

मिथुनलग्न : नवमभाव : मंगल



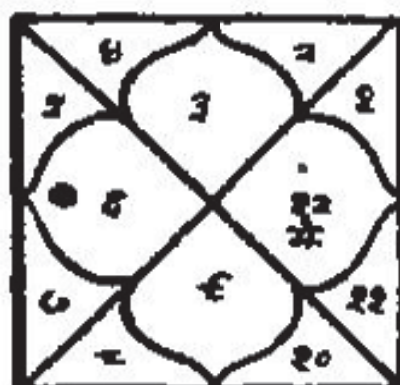
३६५

नवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव के जातक की भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म-पालन में भी विशेष रुचि नहीं होती। शत्रुपक्ष में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। चौथी दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण स्वर्ण की अधिकता तथा बाह्य स्थानों से लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से

माता, भूमि, भवन तथा धरेलू सुख भी कुछ कठिनाइयों के बाद पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं।

'मिथुन' लग्न की कुचली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलान्वेश

मिथुनलग्न : दशमभाव : मंगल



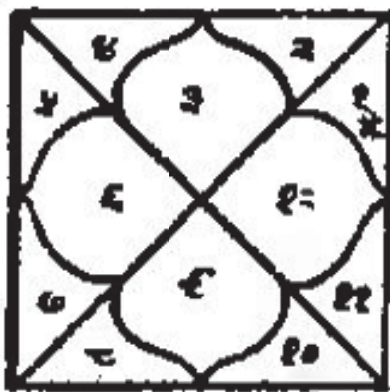
३६६

दसवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम द्वारा राज्य तथा पिता के क्षेत्र में यश और लाभ कमाता है तथा शत्रुपक्ष पर अपना विशेष प्रभाव बनाये रखता है। चौथी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि द्वारा चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा धरेलू सुख में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से सन्तान-पक्ष द्वारा वंशानुस्यूक्त लाभ होता है

तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है। इसकी आयदनी बहुत अच्छी रहती है।

‘मिथुन’ लग्न की कुम्हली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

मिथुनलग्न : एकादशभाव : मंगल



३६८

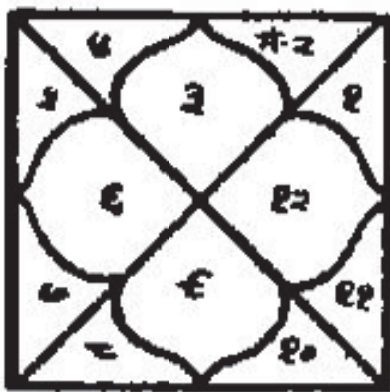
बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की धन का स्थायी लाभ होता है। चौथी नीचदृष्टि द्वारा द्वितीयभाव को देखने से धन का संवय नहीं होता तथा कौटुम्बिक मामलों में भी कष्ट होता है।

सातवीं दृष्टि से पंचमभाव की देखने से सन्तान-पक्ष द्वारा सुखपूर्ण लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। आठवीं दृष्टि से स्वराशि वाले षष्ठभाव को देखने

के कारण शत्रु-पक्ष पर जातक का प्रभाव बना रहता है तथा उनसे लाभ भी होता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुम्हली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

मिथुनलग्न : द्वादशभाव : मंगल



३६८

बारहवें भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। चौथी मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों से द्वारा भी कुछ परेशानियों के बाद लाभ होता है।

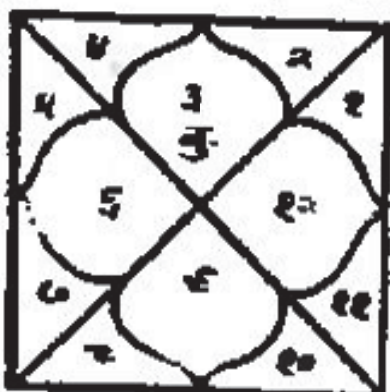
सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले षष्ठ-भाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष से कभी हानि

होती है और कभी लाभ होता है तथा माता का पक्ष कमजोर रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री से कुछ परेशानी रहती है तथा जननेन्द्रिय सम्बन्धी कोई रोग भी हो सकता है।

‘मिथुन’ लग्न में ‘बुध’

‘मिथुन’ लग्न की कुम्हली में ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

मिथुनलग्न : प्रथमभाव : बुध



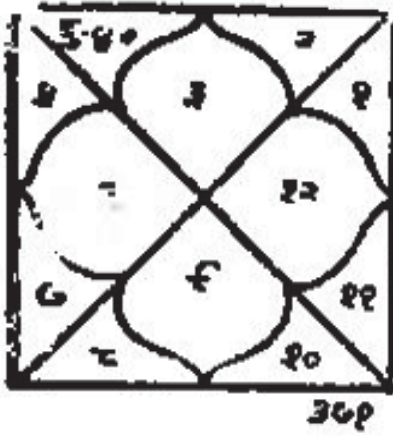
३७०

पहले भाव में स्वराशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। माता, भूमि, भवन तथा धरेलू सुख भी पर्याप्त परिमाण में उपलब्ध रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से विशेष सुख मिलता है तथा व्यावसायिक क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, शान्त, बुद्धिमान् तथा प्रत्येक क्षेत्र में सफलता पाने वाला होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : बुध

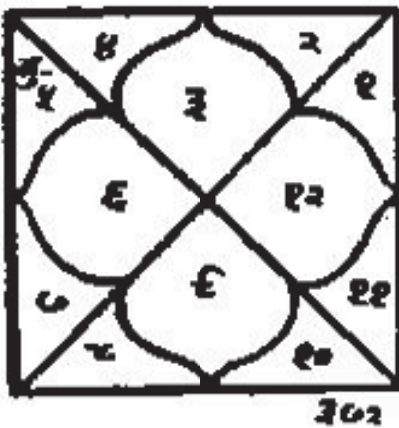


दूसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख तो प्राप्त होता है, परन्तु शारीरिक एवं माता के सुख में कमी रहती है। भूमि, भवन तथा सम्पत्ति का सुख अच्छा मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : तृतीयभाव : बुध

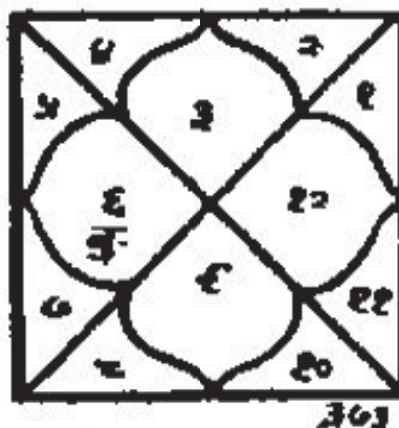


तीसरे भाव में मित्र सूर्य को राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का भी अच्छा सुख रहता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा भाग्य एवं धर्म की उन्नति करता है। ऐसा जातक स्वभावतः सज्जन, धैर्यवान् तथा वशस्वी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : चतुर्थभाव : बुध

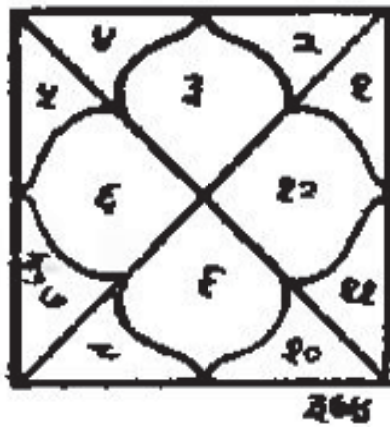


चौथे भाव में स्वराशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भासा, भूमि, भवन तथा सम्पत्ति का पर्याप्त सुख मिलता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं मनोविनोद के साधन भी अच्छे मिलते हैं।

सातवीं नीचदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमियाँ बनी रहती हैं तथा घरें नू सुखों में भी सापरवाही-सी रहती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : बुध

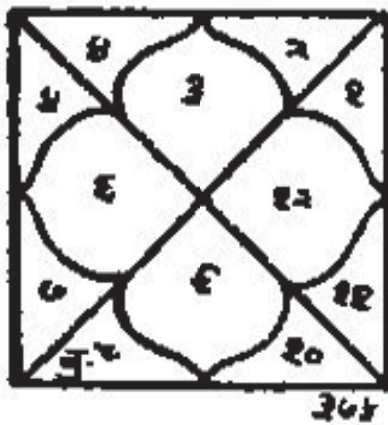


पाँचवें भाव में मित्र शुक्र को राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का श्रेष्ठ लाभ होता है और वह बड़ा गंभीर, चतुर तथा आत्मविश्वासी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकदश भाव को देखने के कारण बुद्धि-बल से पर्याप्त लाभ होता रहता है। साथ ही माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति शान्ति-प्रिय स्वभाव का होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : बुध



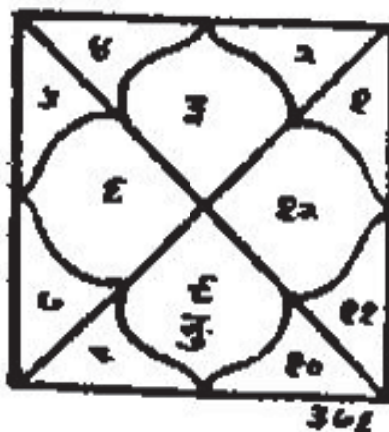
छठे भाव में मित्र भगल को राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी विवेक-शक्ति द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त करता है तथा परिश्रमी होता है। माता, भूमि, धरेल सुख तथा शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सुख मिलता है। परन्तु झगड़े-झंझटों

के कारण कुछ कष्ट भी उठाना पड़ता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : बुध

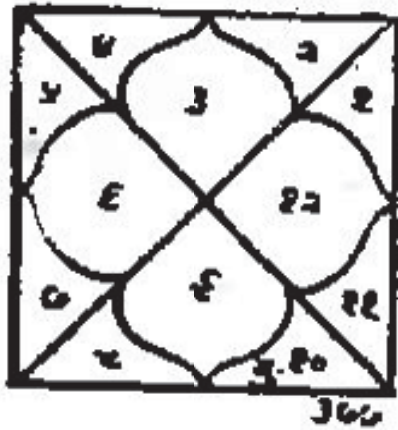


सातवें भाव में मित्र शुक्र को राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष, दैनिक जीवन एवं व्यवसाय में सफलता मिलती है। माता के पक्ष में कुछ कमी रहती है तथा भूमि, भवन का सुख अच्छा प्राप्त होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, चातुर्य, मृदु एवं यश की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति अत्यन्त स्वाभिमानी होता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : बुध



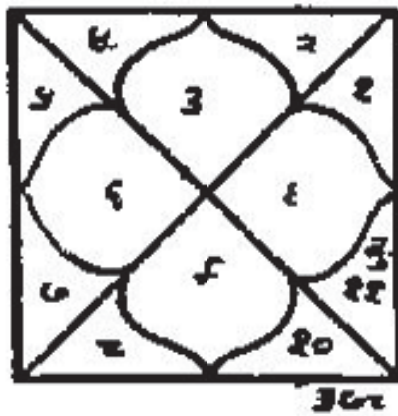
आठवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, पर माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की भी हानि होती है। ऐसे व्यक्ति को अपने जन्म-स्थान से हट कर परदेश में जाकर रहना पड़ता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने के कारण प्रयत्नपूर्वक धन एवं कुटुम्ब के

सुख का लाभ होता है, परन्तु शारीरिक सुख में कमी रहती है तथा परेशानियाँ भी उठानी पड़ती हैं।

‘मिथुन’ जन्म की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

मिथुन लग्न : नवमभाव : सुख



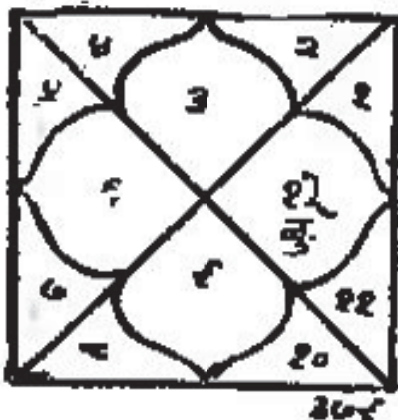
नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक परिश्रम तथा विवेक द्वारा धर्म एवं भाग्य की उन्नति करता है। उसे माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है।

सातवीं मित्र दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का अच्छा सुख भी मिलता है।

ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्वी, सन्तुष्ट तथा विवेकी होता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

मिथुन लग्न : दशमभाव : सुख



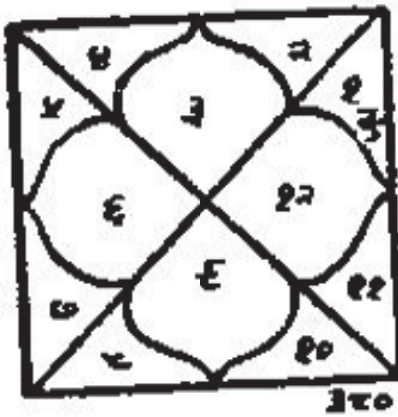
दसवें भाव में स्थित नीच के सुख के प्रभाव से जातक को अपनी उन्नति के लिए कठोर शारीरिक श्रम करना पड़ता है। पिता का अल्प-सुख मिलता है तथा राज्य के क्षेत्र में भी अधिक सफलता नहीं मिलती।

सातवीं उच्चदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक स्वास्थ्य और सुख के सातवीं में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति कभी

अपमानित और कभी सम्मानित होता रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : एकादशभाव : बुध



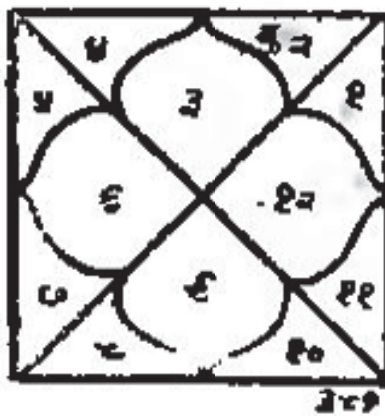
ग्यारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध से प्रभाव से जातक स्व-विवेक एवं शारीरिक परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ उठाता है। उसे माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा सन्तान-पक्ष से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, सुन्दर, मधुर-भाषी, धनी तथा विवेकी होता है।

'मिथुन' लग्न को कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

बारहवें भाव में मित्र शुक्र का राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का स्वर्ण अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। माता, भूमि तथा मकान के सुख में भी कमी रहती है। जातक की अपनी जन्म-भूमि से दूर रहने पर लाभ एवं सुख मिलता है।

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : बुध



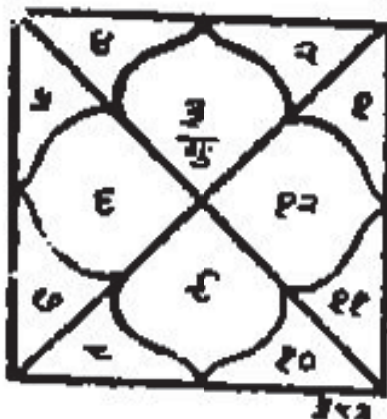
सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण मनु-पक्ष में विवेक एवं शांति द्वारा सफलता मिलती है। स्वर्ण के कारण भीतरी चिंताएँ रहते हुए भी वह अपने ऊपरी प्रभाव की बनाये रखता है।

'मिथुन' लग्न में 'गुरु'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

पहले भाव में मित्र बुध को राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को सुख, शारीरिक मीन्द्र्य, स्वाभिमान तथा मनोबल की प्राप्ति होती है। पिता तथा राज्य से भी लाभ होता है।

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : गुरु

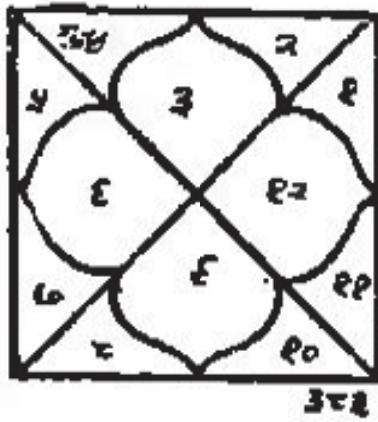


पाँचवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव की देखने के कारण विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री का सुख अच्छा रहता है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलान्वेश

दूसरे भाव में मित्र चन्द्रमा भी राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक के धन-कुटुम्ब को वृद्धि होती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव एवं विजय की प्राप्ति होती है।

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : गुरु

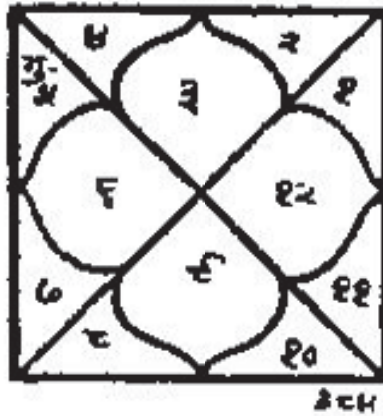


सातवीं नीचदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के लाभ में कमी रहती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य के द्वारा सहयोग तथा सफलताएँ मिलती हैं तथा व्यवसाय द्वारा धन की पर्याप्त वृद्धि होती है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलान्वेश

तीसरे भाव में सूर्य की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के पराक्रम एवं भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है।

मिथुन लग्न : तृतीयभाव : गुरु



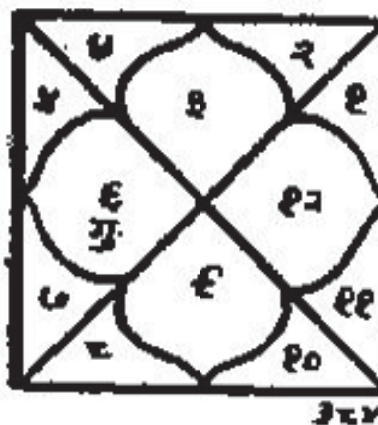
पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि के सप्तमभाव को देखने से श्रेष्ठ पत्नी द्वारा सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं दृष्टि से नवमभाव की देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है तथा धन-प्राप्ति के लिए परिश्रम अधिक करना पड़ता है, परन्तु नवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी अच्छी रहती है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलान्वेश

चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को

मिथुन लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

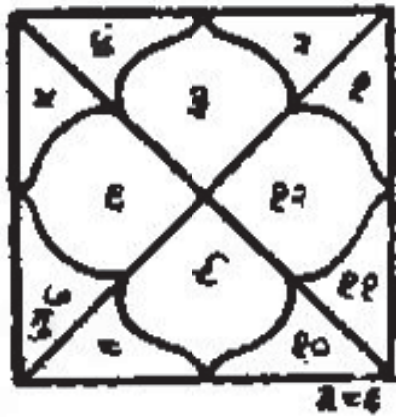


माता, भूमि तथा भवन आदि का सुख पर्याप्त मिलता है। पाँचवीं नीचदृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में अशांति तथा कुछ कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशमभाव की देखने से पिता तथा राज्य-पक्ष से सहयोग, यश एवं लाभ प्राप्त होता है नवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव की देखने से शत्रु अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ लाभ भी होता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

पाँचवें भाव में मनु शुक की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कमजोरी रहती है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण प्राप्योन्नति कुछ कठिनाइयों के साथ होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण जातक को श्रेष्ठ शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं स्वाभिमान की प्राप्ति होती है।

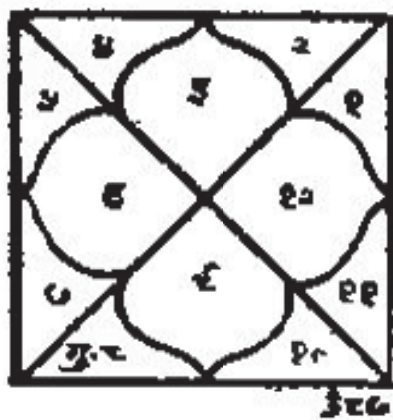
मिथुन लग्न : पंचमभाव : गुरु



‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘षष्ठभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

छठे भाव में मित्र पक्ष की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की मनु-पक्ष में विजय प्राप्त-होती है परन्तु स्त्री-पक्ष से कुछ मतभेद रहता है।

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : गुरु

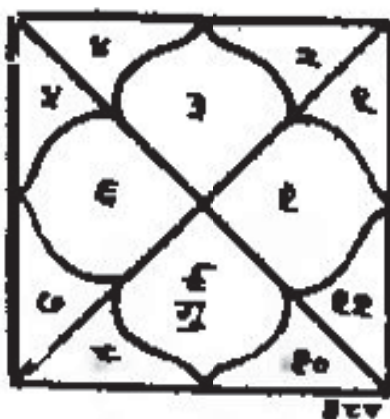


पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशमभाव की देखने से राज्य द्वारा सम्मान तथा उन्नति के अवसर मिलते हैं, परन्तु पिता से कुछ मतभेद रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। नवीं उच्च दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब से भी सहयोग मिलता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

सातवें भाव में स्वराशि-स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। पिता तथा राज्य के क्षेत्र से भी सहयोग तथा सम्मान मिलता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है। नवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव की देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहनों का सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति बनी, सुखी तथा संपन्न होता है।

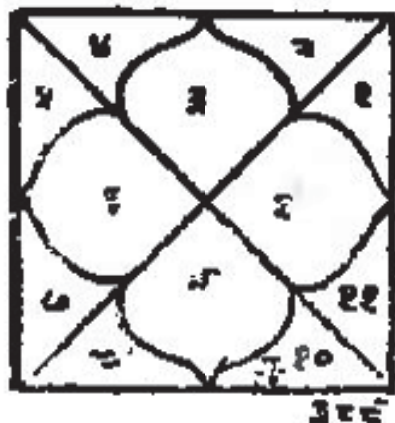
मिथुन लग्न : सप्तमभाव : गुरु



'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। पिता, राज्य, व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : गुरु

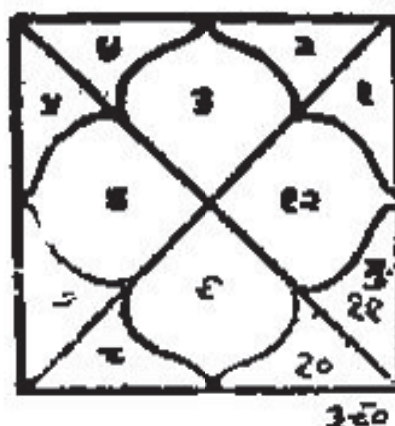


से भी कष्ट होता है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश-भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से कपटपूर्ण सम्बन्ध द्वारा काम चलता है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से परिश्रम के द्वारा धन की कुछ वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

नवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक कुछ

मिथुन लग्न : नवमभाव : गुरु

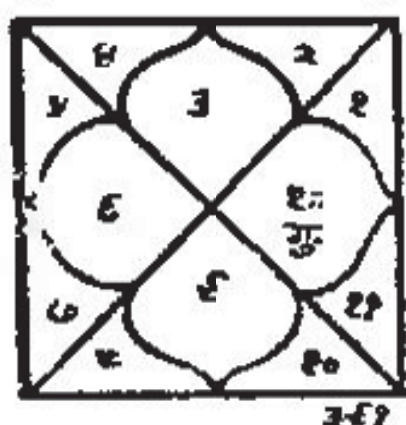


कठिनाइयों के साथ भाग्य तथा धर्म की उन्नति करता है। पिता, राज्य तथा स्त्री-पक्ष से असंतोष रहता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों का सुख बढ़ता है। नवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव की देखने से विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान-पक्ष से असन्तोष रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

दसवें भाव में स्वराशि स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की राज्य एवं पिता से

मिथुन लग्न : दशमभाव : गुरु

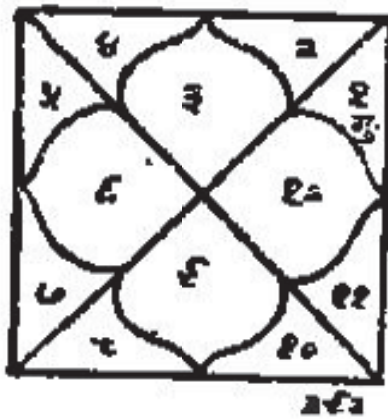


पूर्ण सहयोग, सुख तथा सम्मान मिलता है। व्यवसाय में भी सफलता मिलती है। पाँचवीं उच्चदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन का संवय की अच्छा होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन तथा सम्पत्ति का सुख भी खूब मिलता है। नवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ-भाव की देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा व्यक्ति हर प्रकार से सुखी रहता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

बारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक

मिथुन लग्न : एकादशभाव : गुरु



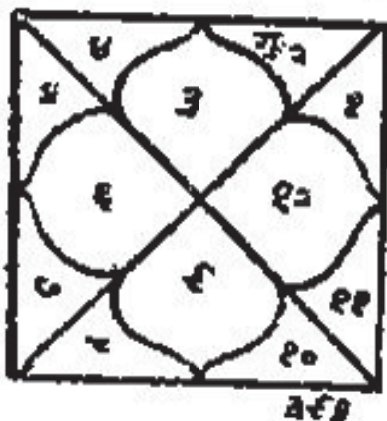
३६३

को श्रेष्ठ लाभ होता है तथा पिता, व्यवसाय एवं राज्य से भी सहयोग मिलता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि में तो वृद्धि होती है परन्तु सन्तान-पक्ष कमजोर रहता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि के सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष से पर्याप्त लाभ एवं सुख मिलता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

बारहवें भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : गुरु



३६३

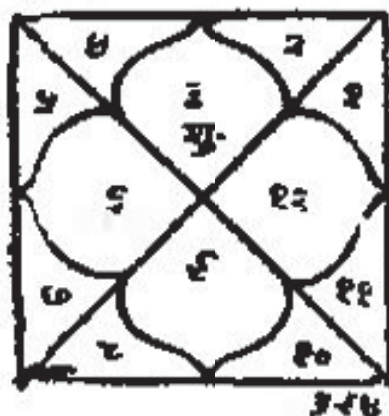
खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से यश तथा लाभ मिलता है। स्त्री तथा पिता के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसाय में भी हानि होती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से भ्राता, भूमि, भवन तथा धरेनू सुख की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से शत्रुपक्ष में सफलता मिलती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के विजय में संकटों का सामना करना पड़ता है।

‘मिथुन’ लग्न में ‘शुक्र’

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक शरीर

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : शुक्र



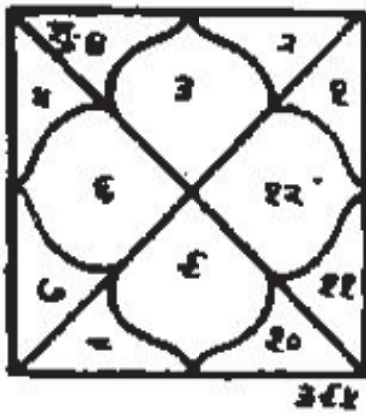
३६३

से दुर्बल परन्तु विद्या, बुद्धि एवं चातुर्य में प्रवीण होता है। वह खर्चीला तथा बाहरी स्थानों से लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री के साथ मतभेदपूर्ण आसक्ति बनी रहती है। दैनिक कार्यों तथा व्यवसाय में बड़ी युक्ति के साथ सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति बहुत विलासी होता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलान्वेश

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र



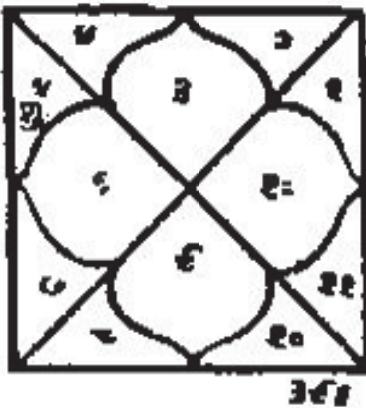
दूसरे भाव में मनु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक बुद्धि एवं चातुर्य द्वारा धन तथा प्रतिष्ठा तो कमाता है, परन्तु धन का संचय नहीं हो पाता। बाहरी स्थानों से संबंध अच्छा रहता है, परन्तु सन्तान-सुख में कुछ कमी रहती है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

ऐसी ग्रहस्थिति का व्यक्ति शानदार-जीवन बिताने का आदी होता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलान्वेश

मिथुन लग्न : तृतीयभाव : शुक्र



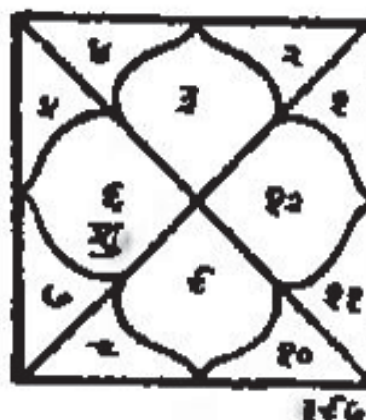
तीसरे भाव में मनु सूर्य की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है। विद्या तथा सन्तान-पुत्र में भी न्यूनता रहती है परन्तु बुद्धि-चातुर्य प्रबल होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक धर्म तथा भाग्य की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करता है। वह पुरुषार्थ द्वारा

अपना स्वर्ण चलाने तथा चातुर्य द्वारा काम निकालने में कुशल होता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलान्वेश

मिथुन लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

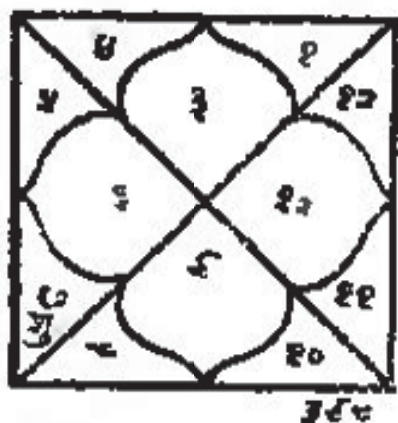


चौथे भाव में स्थित मीन के शुक्र के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। सन्तान का सुख भी कम मिलता है। अन्य सुखों में भी व्यवधान आता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता तथा राज्य के द्वारा सुख-सम्मान तथा सहयोग मिलता है और गुप्त चतुराई के जल पर मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : शुक्र

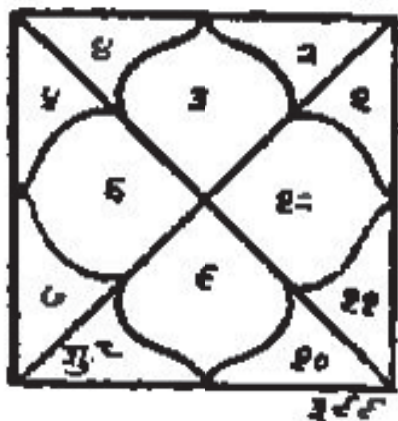


पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कुछ वृत्तिपूर्ण सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति चतुर होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से बुद्धि द्वारा लाभ अधिक होता है, परन्तु शुक्र के व्यय होने के कारण आमदनी से खर्च अधिक रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : शुक्र



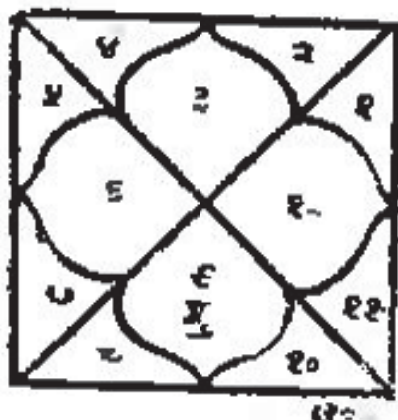
छठे भाव में सामान्य मित्र मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक सवृ-पक्ष में अपनी गुप्त चतुराई एवं खर्च करने की शक्ति से सफलता प्राप्त करता है। सन्तान-पक्ष तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादश भाव को देखने से खर्च आमदनी से अधिक बना

रहता है। ऐसा व्यक्ति झगड़े-टंटे एवं मुकद्दमेबाजी में अधिक फँसा रहता है और उसी में उसकी शक्तियाँ व्यय होती रहती हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : शुक्र

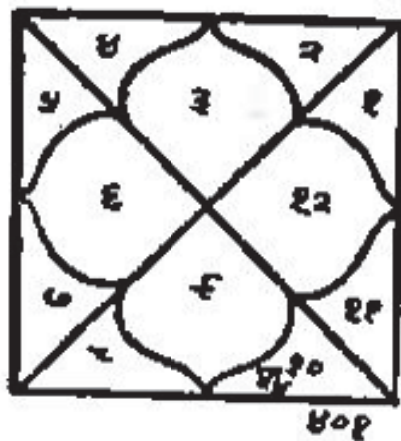


सातवें भाव में सामान्य मित्र गुरु की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की पत्नी बुद्धिमान् तथा चतुर होती है। परन्तु उसे स्त्री-पक्ष से कष्ट तथा चिन्ताएँ भी प्राप्त होती रहती हैं। दैनिक खर्च चलाने के लिए उसे बुद्धिमानी तथा बड़ी चतुराई से काम लेना पड़ता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर दुर्बल होता है, परन्तु सम्मान की वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति की विद्या, बुद्धि, सन्तान तथा बाहरी सम्बन्धों के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

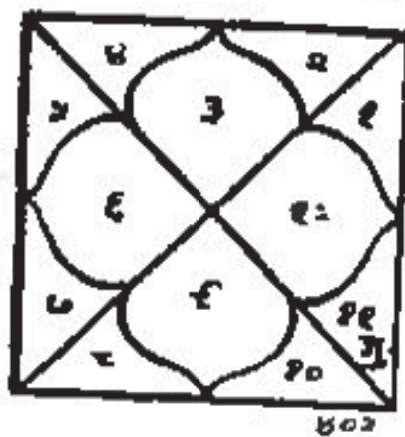


आठवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। वह कूटनीतिज्ञ तथा परिश्रमी होता है। उसे सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक की धन-वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करने पड़ते हैं, तथा शुक्र के व्ययेश होने के कारण खर्च अधिक बना रहता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

मिथुन लग्न : नवमभाव : शुक्र

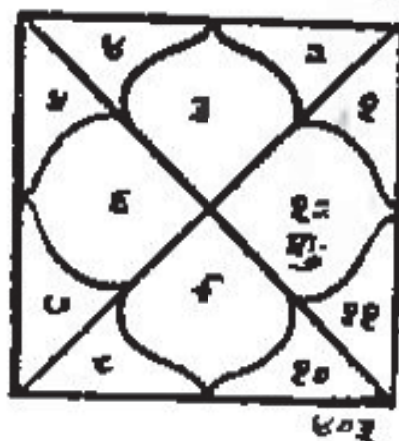


नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की कुछ कठिनाइयों के साथ उन्नति होती है। विद्या तथा सन्तान का सुख भी प्राप्त होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के साथ वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम में भी कुछ कमी आती है। ऐसा व्यक्ति भाग्य की पुरुषार्थ से बड़ा भानने वाला होता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

मिथुन लग्न : दशमभाव : शुक्र



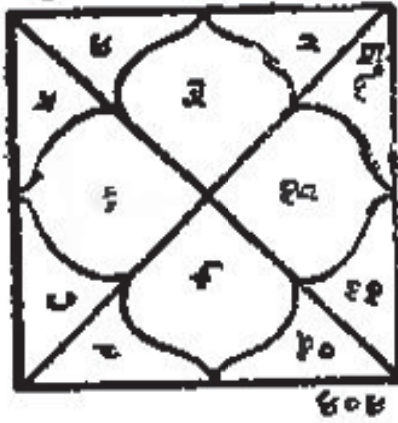
दसवें भाव में सामान्य मित्र शुरु की राशि पर स्थित व्ययेश उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक की पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बड़ी हानि उठानी पड़ती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। पिता, राज्य, विद्या तथा सन्तान की शक्ति भी प्राप्त होती है।

चौथी नीचदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी आती है। ऐसा व्यक्ति अपने अहकारी स्वभाव के

कारण बार-बार हानि उठाता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : एकादशभाव : शुक्र

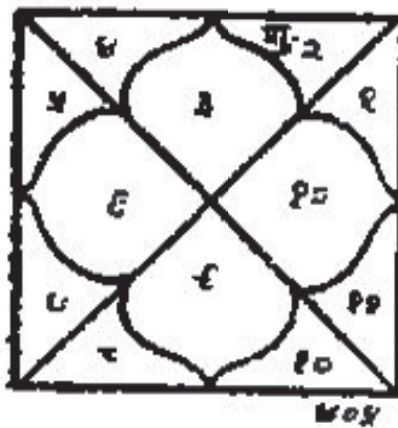


बारहवें भाव में सामान्य मित्र मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है परन्तु खर्च भी खूब होता रहता है। मस्तिष्क में चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के पंचमभाव की देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि में प्रवीणता प्राप्त होती है तथा सन्तान-पक्ष में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसे व्यक्ति के मस्तिष्क में चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : शुक्र



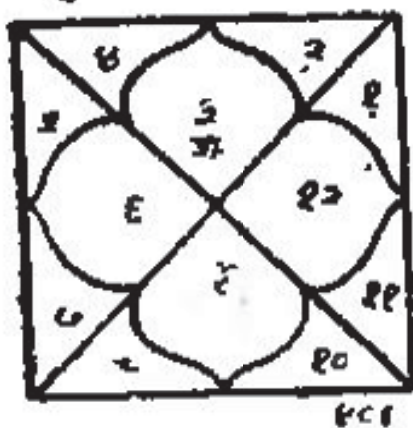
बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ परेशानियाँ रहती हैं।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से पष्ठभाव की देखने के कारण जातक शत्रु-पक्ष में चतुराई से प्रभाव स्थापित करके अपना काम निकालता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा चतुर होता है। साथ ही, उसके मस्तिष्क में चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं।

'मिथुन' लग्न में 'शनि'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : शनि



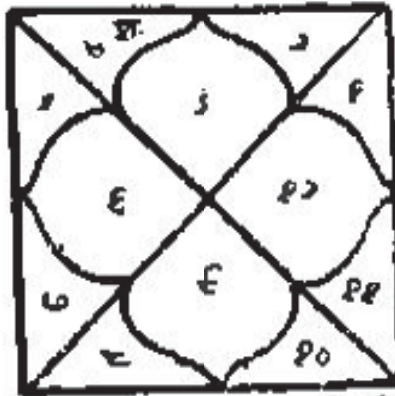
पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है, परन्तु आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है।

तीसरी शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने से भाई-बहिन के वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम में कमी आती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में असन्तोष रहता है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता से

वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : शनि

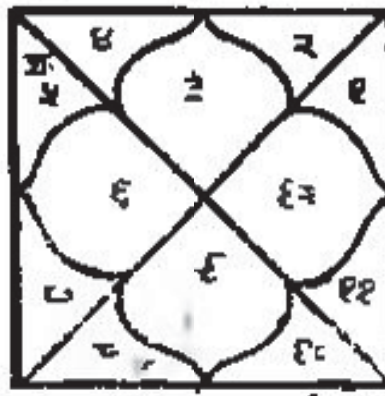


दूसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन-संबन्ध की शक्ति एवं कौटुम्बिक सुख में हानि होती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कष्टों के साथ प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि के अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दसवीं नीचदृष्टि से एकादशभाव की देखने से आयु के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा व्यक्ति समाज में भाग्यवान् समझा

जाता है और वह सज्जन रीते के साथ ही स्वार्थी भी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : तृतीयभाव : शनि

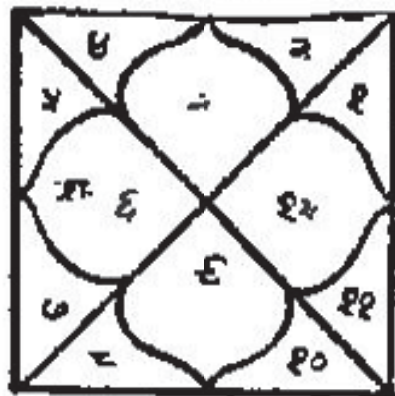


तीसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कुछ कमी आती है तथा भाई-बहिन से वैमनस्य रहता है। साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति बढ़ती है। तीसरी उच्चदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले नवमभाव की देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। दसवीं दृष्टि से द्वादशभाव की

देखने के कारण बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक बना रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : चतुर्थभाव : शनि

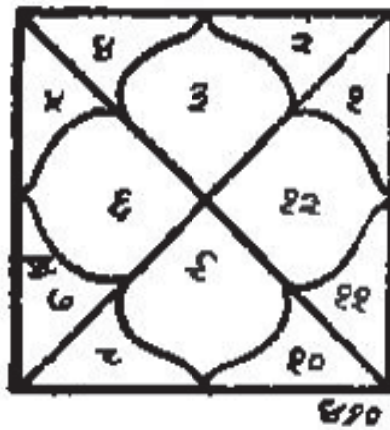


चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की कुछ कमी के साथ माता का सुख प्राप्त होता है तथा भूमि-भवन के सुख में भी कुछ कमी रहती है। आयु एवं पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा धर्म का पालन भी होता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शत्रु-पक्ष पर कडाई के साथ प्रभाव स्थापित होता है तथा शत्रुओं एवं झगड़ों से लाभ मिलता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य-क्षेत्र से असन्तोष तथा

वैमनस्य रहता है। दसवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है तथा लोग उसे भाग्यवान् भी समझते हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित शनि का फलादेश

मिथुन लग्न : चतुर्थभाव : शनि



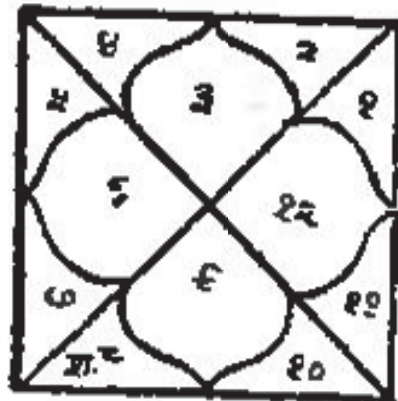
४१०

पाँचवें भाव में मित्र शुक की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा मन्त्रान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। भाग्य-वृद्धि भी होती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने में स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं नीचदृष्टि से पंद्रह-भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कमी आती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से कठिनाइयों के साथ धन-सम्बन्धी आवश्यकताएँ पूरी

होती हैं तथा कुटुम्ब में भी कम सुख प्राप्त होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : शनि



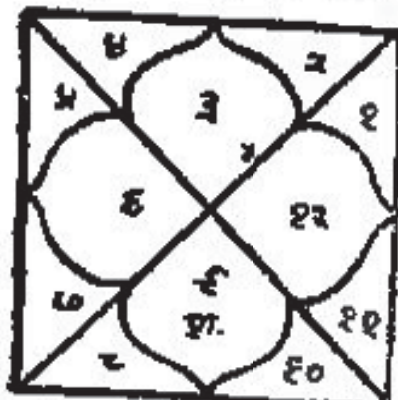
४११

छठे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की शत्रु तथा जग्गी के क्षेत्र में सफलता एवं विजय मिलती है। नौमरी दृष्टि में स्वराशि वाले अष्टमभाव को देखने में आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में लाभ होता है तथा ठाठ-बाट में बहुत खर्च होना है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने में पराक्रम में कमी आती है तथा भाई-बहिन के सुख में बाधा

पडती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी भी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : शनि



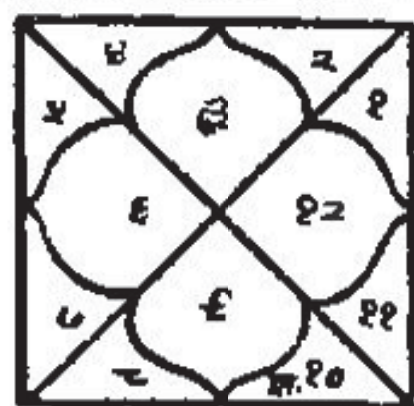
४१२

सातवें भाव में शत्रु शुक की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख-दुःख तथा हानि-लाभ दोनों की प्राप्ति होती रहती है। जननेन्द्रिय में कष्ट होना है। परन्तु आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि के नवमभाव को देखने से भाग्य की वृद्धि होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक प्रभाव में कुछ न्यूनता के साथ वृद्धि होती है। दसवीं मित्र-दृष्टि में चतुर्थभाव

को देखने में माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कठिनाइयों के साथ मिलता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय पाकर तरकी करता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : शनि

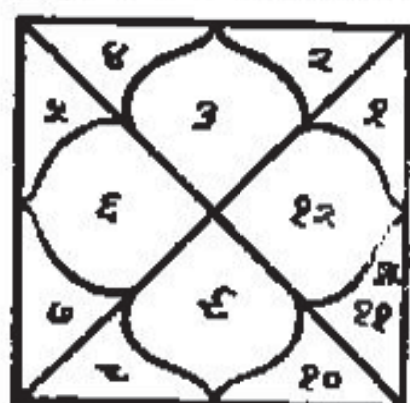


आठवें भाव में स्वरशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। भाग्य तथा सम्मान के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। धर्म का पालन भी ठीक से नहीं होता। तीसरी शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी रहती है। दसवीं उच्च दृष्टि से पंचमभाव की देखने से कुछ कठिनाइयों के

साथ सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है। ऐसा जातक अपनी वाणी की शक्ति द्वारा भाग्योन्नति करता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

मिथुन लग्न : नवमभाव : शनि

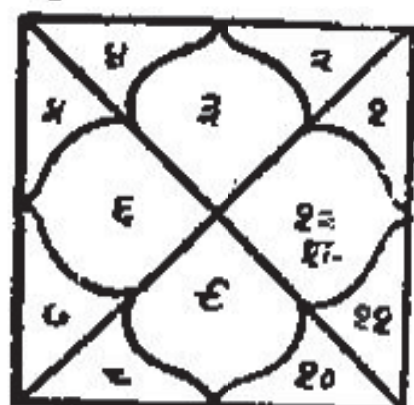


नवें भाव में स्वरशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक कुछ कमियों के लाभ भाग्यवान बना रहता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। धर्म-पालन में रुचि रहती है तथा यश भी मिलता है। तीसरी नीच-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शत्रुपक्ष से होने वाली परेशानियों पर

विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति बड़े ठाठ का जीवन व्यतीत करता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

मिथुन लग्न : दशमभाव : शनि

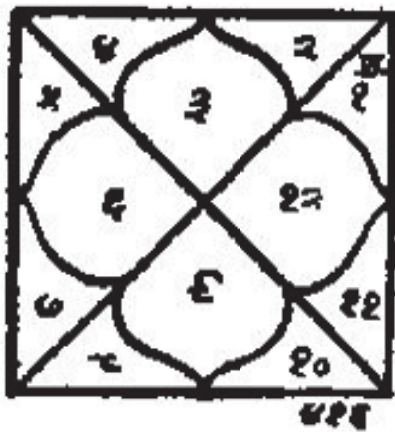


दसवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कमी रहती है, परन्तु राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। तीसरी मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से श्रेष्ठ लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से भ्राता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है। दसवीं दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष

में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा जातक संघर्षपूर्ण जीवन बिताता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

मिथुन लग्न : एकादशभाव : शनि

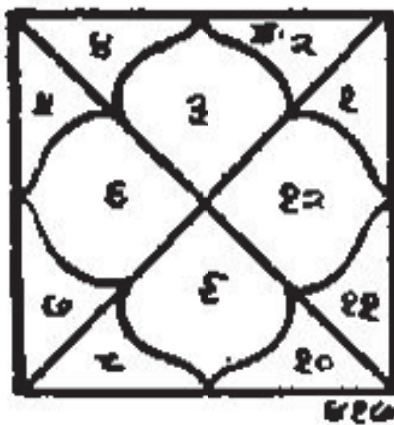


बारहवें भाव में शनि मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी के मार्ग में परेशानियां आती हैं। भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में की कृटियां रहती हैं। यह धन-प्राप्ति के लिए अनुचित मार्ग भी अपनाता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शरीर को कुछ कष्ट भी रहता है तथा जातक भाग्यशाली भी बनता है। सातवीं उच्च दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति होती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि वाले

अष्टमभाव की देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। नीच का शनि जातक के जीवन को अनेक संकटों तथा छतरों में डालता रहता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित शनि का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : शनि



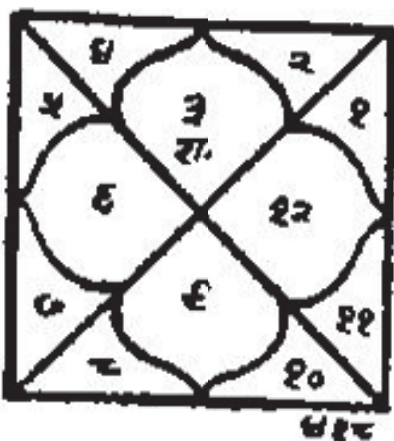
बारहवें भाव में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब-सुख के पक्ष में कमी बनी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष पर कठिनाइयों से बाद विजय मिलती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि के नवम भाव में देखने से भाग्य की वृद्धि होती है तथा जातक धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति यश-अपयश

तथा सुख-दुःख दोनों ही प्राप्त करता है, परन्तु भाग्यशाली समझा जाता है।

‘मिथुन’ लग्न में ‘राहु’

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

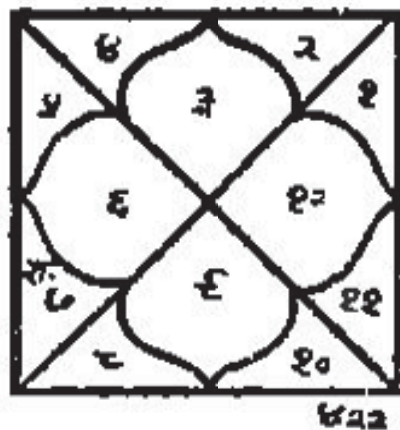
मिथुन लग्न : प्रथमभाव : राहु



पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक प्रभावशाली, लम्बे शरीर वाला, विवेकी, स्वार्थी, गुप्त युक्तियों का ज्ञाता तथा बड़ी हिम्मत वाला होता है। यह कष्टसाध्य कर्मों तथा गुप्त युक्तियों के आश्रय से अपनी उन्नति करता है तथा धन एवं सम्मान पाता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : राहु

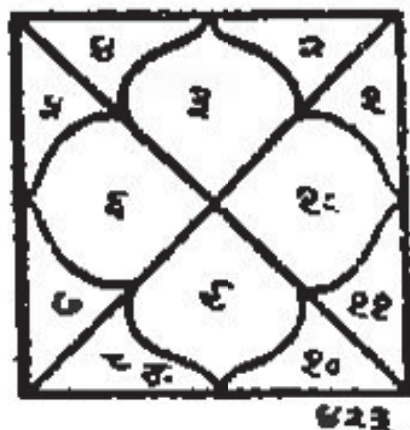


पाँचवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव में जातक को अनेक कठिनाइयों के बाद विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कष्ट ही बना रहता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों का ज्ञाता-बुद्धिमान, असत्यवादी, प्रभावोत्पादक तथा अनेक प्रकार की चिन्ताओं से ग्रस्त होता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘षष्ठभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

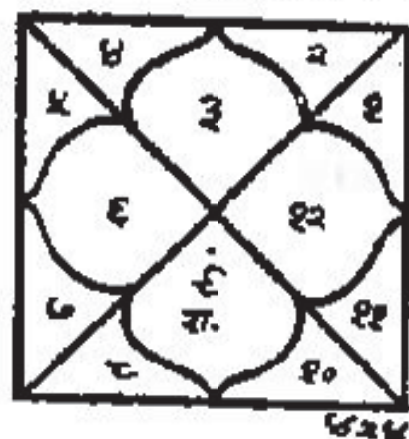
मिथुन लग्न : षष्ठभाव : राहु



छठे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रु पर अपना विशेष प्रभाव बनाये रखता है तथा उन पर विजय पाता है। ऐसा व्यक्ति अपनी कमजोरियों को प्रकट नहीं होने देता तथा बड़ा साहसी, धैर्यवान, चतुर, पराक्रमी तथा गुप्त युक्तियों का जानकार होता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली में ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : राहु

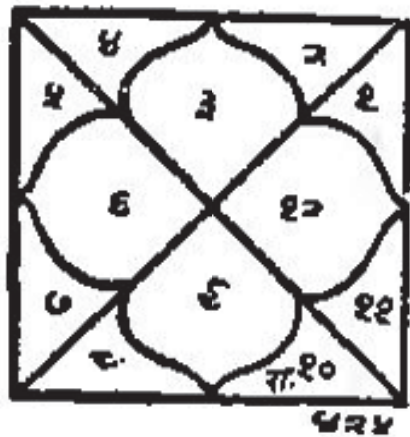


सातवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की स्त्री को बहुत कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

ऐसे व्यक्ति की सूत्रेन्द्रिय में भी कोई विकार होता है। यह गुप्त युक्तियों तथा असत्य-भाषण आदि के अनुचित तरीकों से भी अपना स्वार्थ-साधन करने से नहीं चूकता

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलावेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : राहु

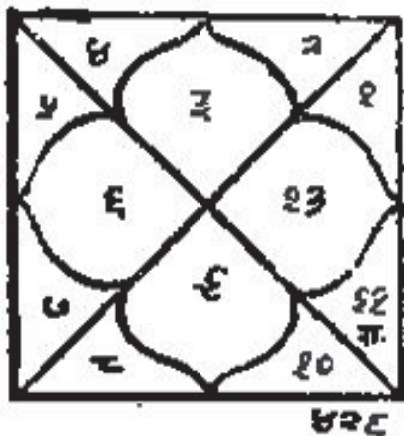


आठवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की पुरातत्त्व एवं आयु के विषय में अनेक प्रकार के संकटों का सामना करना पड़ता है। उसके पेट के निम्न भाग में कोई विकार भी होता है।

ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर सफलता पाने के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा अपनी कठिनाइयों के विषय में किसी की पता नहीं चलने देता।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलावेश

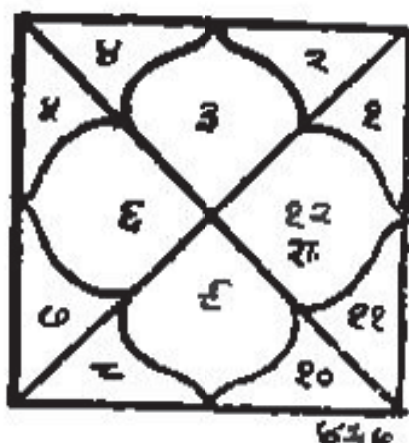
मिथुन लग्न : नवमभाव : राहु



नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं। वह अपने परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर भाग्य की वृद्धि तो करता है, परन्तु पूर्ण सुख-सम्मान प्राप्त नहीं कर पाता। उसका धर्म-पालन भी ढोंग-जैसा ही होता है। कहीं बहुत बाद में उसे थोड़ी-सी सफलता मिल पाती है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलावेश

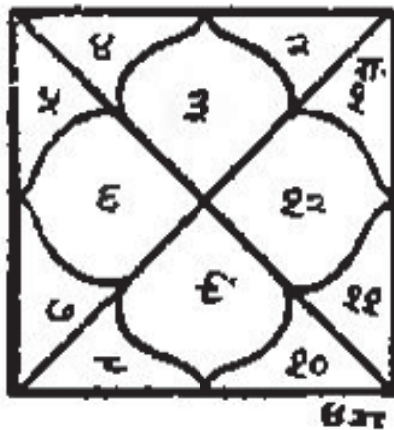
मिथुन लग्न : दशमभाव : राहु



दसवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा अत्यन्त कठिन परिश्रम के बाद ही थोड़ी-बहुत सफलता मिल पाती है। ऐसे व्यक्ति पर बार-बार संकट आते रहते हैं, अन्त में थोड़ी-सी सफलता भी मिलती है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलावेश

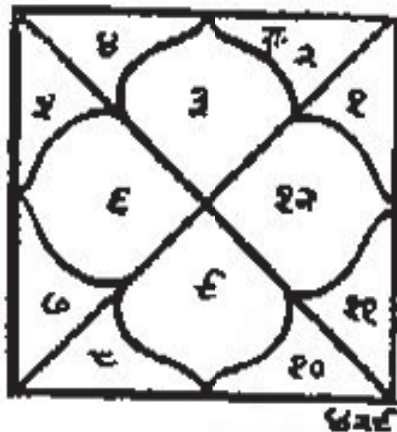
मिथुन लग्न : एकादशभाव : राहु



ग्यारहवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर आमदनी की वृद्धि करता है तथा कठिन परिश्रम द्वारा पर्याप्त धन भी उपाजित करता है। कभी-कभी उसे घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है परन्तु अन्त में विशेष सफलता भी मिलती है। ऐसा व्यक्ति थोड़े लाभ से सन्तुष्ट रहकर भी विशेष लाभ के लिए नित नई योजनाएँ बनाता रहता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलावेश

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : राहु



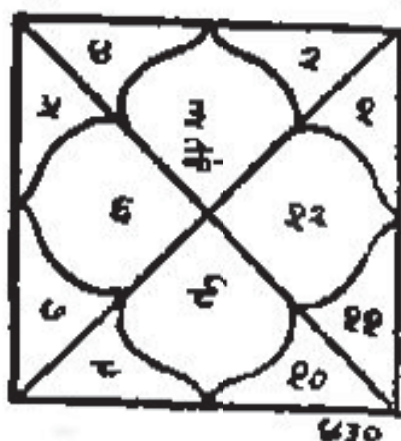
बारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है और इसी कारण उसे कभी-कभी बड़ी कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है।

गुप्त युक्तियों, परिश्रम तथा चातुर्य के गल पर वह अपना खर्च चलाना है तथा बाहरी लोगों की दृष्टि में वह प्रभावशाली बना रहता है।

‘मिथुन’ लग्न में ‘केतु’

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलावेश

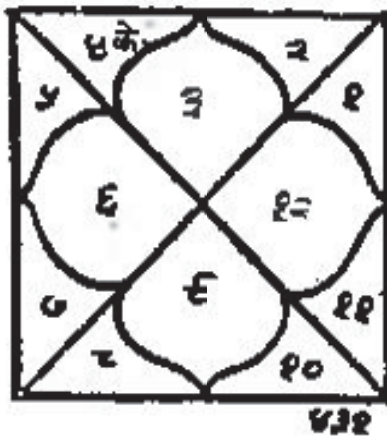
मिथुन लग्न : प्रथमभाव : केतु



पहले भाव में मित बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक में शारीरिक सौंदर्य में कमी रहती है। वह गुप्त चिन्ताओं, रोग, चोट आदि का शिकार बनता रहता है। गुप्त युक्तियों तथा शारीरिक परिश्रम के गल पर वह अपने स्वार्थों की पूर्ति करता है। विवेकी होने पर भी उसमें स्वाभिमान कम होता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

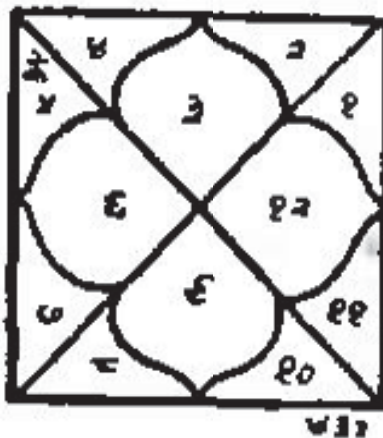
मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : केतु



दूसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक धन तथा कुटुम्ब के बारे में चिन्ता-ग्रस्त बना रहता है। धन-संचय न हो पाने से कभी-कभी अत्यधिक कष्ट पाता है तथा कौटुम्बिक कारणों से मानसिक बलेश का शिकार भी होता है। वह धैर्य, साहस एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर ही अपनी कठिनाइयों पर थोड़ी-बहुत विषय प्राप्त कर पाता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

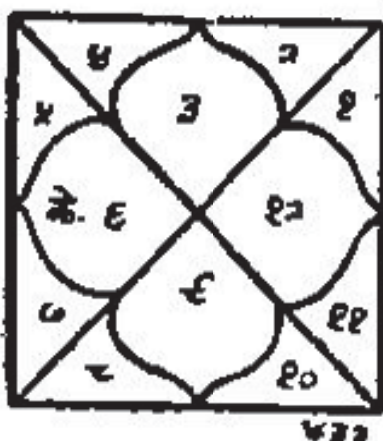
मिथुन लग्न : तृतीय भाव : केतु



तीसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आ जाती है। वह अपने पराक्रम-विषयक कारणों से ही परेशानी उठाता है। ऐसा जातक बड़ा दम्भी, हिम्मती, हठी, बहादुर तथा साहसी होता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

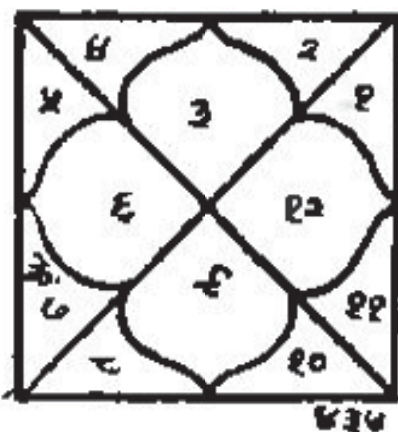
मिथुन लग्न : चतुर्थभाव : केतु



चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक धरेलू सुखों की पाने के लिए बड़ी चतुराई का आश्रय लेकर सफल होता है। भूमि तथा भवन का सुख भी कुछ कमी के साथ मिलता है। अपने गुप्त साहस एवं धैर्य के बल पर अन्त में उसे सुख-प्राप्ति में सफलता भी मिलती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : केतु

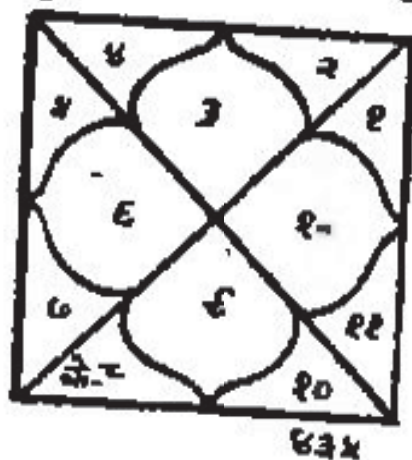


पाँचवें भाव में मित शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा मन्त्रान्तर में भी कठिनाइयों के साथ ही सामान्य सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति अपने गुप्त धैर्य की शक्ति, चातुर्य तथा हिम्मत के बल पर ही विद्या के तथा अन्य क्षेत्रों में सफलताएँ प्राप्त करता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : केतु

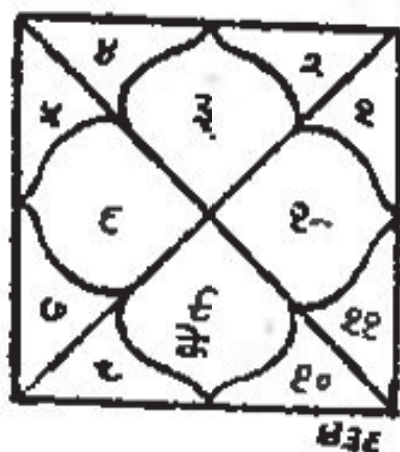


छठे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपनी गुप्त युक्तियों द्वारा शत्रुओं का दमन करने में समर्थ होता है तथा मुकदमे आदि में सफलताएँ प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी आन्तरिक कमजोरी की छिपाने में कुशल होता है तथा बड़ी हिम्मत से काम लेकर लोगों की आश्चर्य में डाल देता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

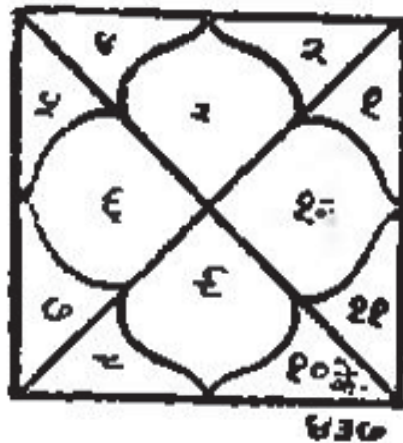
मिथुन लग्न : सप्तमभाव : केतु



सातवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता प्राप्त होती है। उसके जीवन में इन्द्रिय-भोगों की अधिकता रहती है। ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर अत्यधिक उन्नति भी कर लेता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

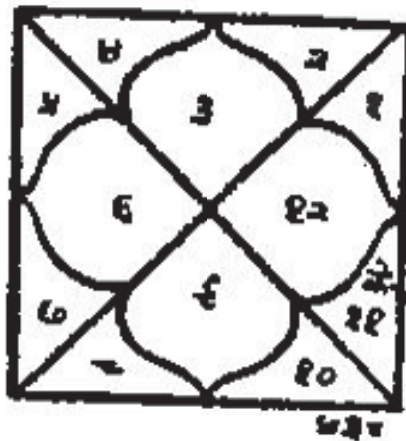
मिथुन लग्न : अष्टमभाव : केतु



अठवें भाव में मित शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की पुरातत्त्व की हानि होती है तथा आयु के सम्बन्ध में भी अनेक बार संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी हिम्मत तथा बहादुरी के बल पर संकट के समय भी धैर्य को नहीं खोता। उसे पेट की कोई बीमारी भी हो सकती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

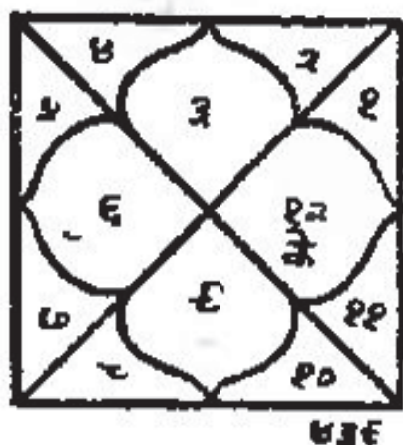
मिथुन लग्न : नवमभाव : केतु



नवें भाव में मित शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ बाधाएँ आती हैं, परन्तु परिश्रम द्वारा थोड़ी-बहुत सफलता भी मिलती है। ऐसा व्यक्ति धर्म का पूर्ण पालन नहीं कर पाता। वह अपनी गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर सभी क्षेत्रों में न्यूनधिक सफलताएँ प्राप्त करता रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

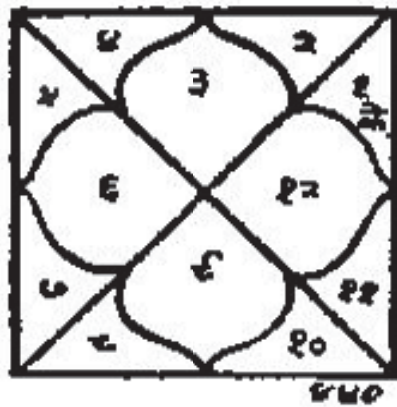
मिथुन लग्न : दशमभाव : केतु



दसवें भाव में अपने शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मान-प्रतिष्ठा की भी कभी-कभी बड़ी हानि उठानी पड़ती है। गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बाद ही उसे सामान्य सफलता मिल पाती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

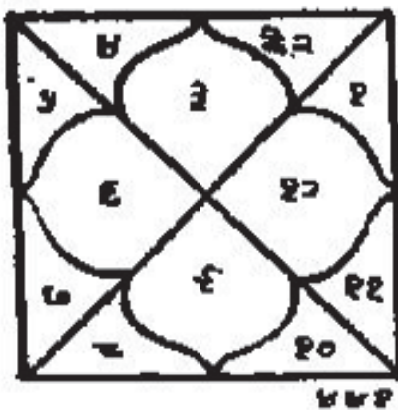
मिथुन लग्न : एकादशभाव : केतु



ग्यारहवें भाव में शनि मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की आमदनी के क्षेत्र में कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। अपने धैर्य, साहस तथा परिश्रम से ही उसे अन्त में कठिनाइयों पर विजय तथा आमदनी के क्षेत्र में थोड़ी-बहुत सफलता मिलती है।

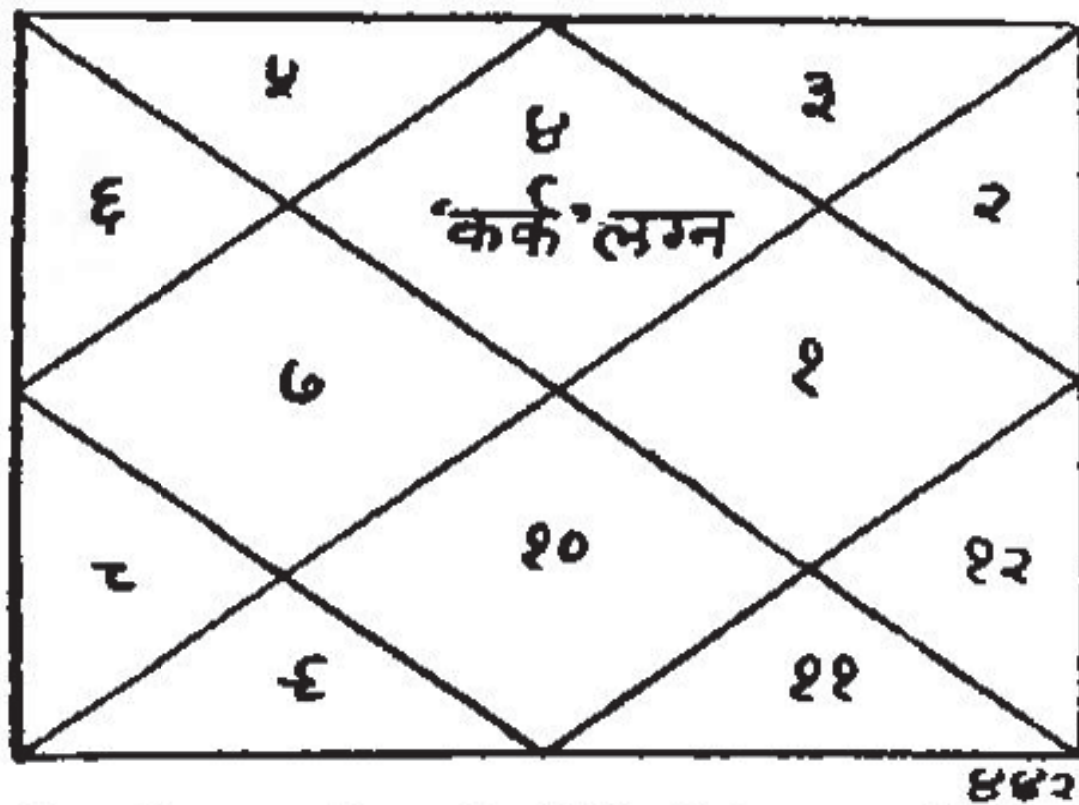
'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : केतु



द्वादहवें भाव में मित्र शुक की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे कभी-कभी भारी संकटों का सामना करना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी उसे कुछ परेशानी बनी रहती है। परन्तु ऐसा जातक अपनी हिम्मत, गुप्त युक्ति, परिश्रम तथा चतुराई के गल पर येन-केन-प्रकारेण अपना खर्च चलाता रहता है।

‘कर्क’ लग्न



[‘कर्क’ लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

‘कर्क’ लग्न का फलादेश

‘कर्क’ लग्न में उत्पन्न जातक का शरीर शौर-वर्ण तथा शक्तिशाली होता है। वह पित्त प्रकृति वाला, बुद्धिमान्, धर्मात्मा, उदार, विनम्र, धनी, जलक्रीड़ा-प्रेमी, पवित्र, क्षमाशील तथा मिष्टान्न-भोजी होता है; परन्तु इसके साथ ही वह व्यसनी, अत्यन्त डीठ, क्रुदिल-स्वभाव, मित्त-श्रोही तथा कभी-कभी विपरीत-बुद्धि का परिचय देने वाला भी होता है।

इस लग्न वाला व्यक्ति अपने शत्रुओं से पीड़ित रहता है। उसके कन्या-सन्तानें अधिक होती हैं तथा उसे अपना जन्म-स्थान छोड़कर परदेश में निवास करना पड़ता है।

इस लग्न वाले जातक का आयु १६-१७ वर्ष की आयु में ही ही जाता है।

'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न ढालों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४३ से ५५० के बीच देखना चाहिए ।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए ।



'कर्क' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४३ से ४५४ के बीच देखना चाहिए ।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में सूर्य—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ४४३
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ४४४
- (ग) 'मिथुन' राशि पर ही तो संख्या ४४५
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ४४६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ४४७
- (च) 'कन्या' राशि पर ही तो संख्या ४४८
- (छ) 'तुला' राशि पर ही तो संख्या ४४९
- (ज) 'द्विचक' राशि पर हो तो संख्या ४५०
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ४५१
- (झ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४५२
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर ही तो संख्या ४५३
- (ठ) 'मीन' राशि पर ही तो संख्या ४५४

'कर्क' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४५५ से ४६६ के बीच देखना चाहिए ।

२—'कर्क' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

‘चन्द्रमा’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—
जिस दिन ‘चन्द्रमा’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर ही तो संख्या ४५५
- (ख) ‘वृष’ राशि पर ही तो संख्या ४५६
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर ही तो संख्या ४५७
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर ही तो संख्या ४५८
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर ही तो संख्या ४५९
- (च) ‘कन्या’ राशि पर ही तो संख्या ४६०
- (छ) ‘तुला’ राशि पर ही तो संख्या ४६१
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर ही तो संख्या ४६२
- (झ) ‘धनु’ राशि पर ही तो संख्या ४६३
- (ञ) ‘मकर’ राशि पर ही तो संख्या ४६४
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर ही तो संख्या ४६५
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर ही तो संख्या ४६६

‘कर्क’ लग्न में ‘भंगल’ का फलादेश

१—‘कर्क’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘भङ्गल’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४६७ से ४७८ के बीच देखना चाहिए ।

२—‘कर्क’ लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘भङ्गल’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में ‘भङ्गल’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर स्थित ही तो संख्या ४६७
- (ख) ‘वृष’ राशि पर स्थित ही तो संख्या ४६८
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर स्थित ही तो संख्या ४६९
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर स्थित ही तो संख्या ४७०
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर स्थित ही तो संख्या ४७१
- (च) ‘कन्या’ राशि पर स्थित ही तो संख्या ४७२
- (छ) ‘तुला’ राशि पर स्थित ही तो संख्या ४७३
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर स्थित ही तो संख्या ४७४
- (झ) ‘धनु’ राशि पर स्थित ही तो संख्या ४७५
- (ञ) ‘मकर’ राशि पर स्थित ही तो संख्या ४७६
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर स्थित ही तो संख्या ४७७
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर स्थित ही तो संख्या ४७८

‘कर्क’ लग्न में ‘बुध’ का फलादेश

१—‘कर्क’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘बुध’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४७६ से ४६० के बीच देखना चाहिए।

२—‘कर्क’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘बुध’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में ‘बुध’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७६
- (ख) ‘वृष’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८०
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८१
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८२
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८३
- (च) ‘कन्या’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८४
- (छ) ‘तुला’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८५
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८६
- (झ) ‘मनु’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८७
- (ञ) ‘मकर’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८८
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८९
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९०

‘कर्क’ लग्न में ‘गुरु’ का फलादेश

१—‘कर्क’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘गुरु’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४९१ से ५०२ के बीच देखना चाहिए।

२—‘कर्क’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘गुरु’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में ‘गुरु’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९१
- (ख) ‘वृष’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९२
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९३
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९४
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९५
- (च) ‘कन्या’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९६

- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४६७
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४६८
- (झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४६९
- (ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५००
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०१
- (ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०२

'कर्क' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५०३ से ५१४ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

- (क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०३
- (ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०४
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०५
- (घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०७
- (च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०८
- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०९
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१०
- (झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५११
- (ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१२
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१३
- (ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१४

'कर्क' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५१५ से ५२६ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

- (क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१५
- (ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१६
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१७
- (घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१८
- (ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१९
- (च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२०
- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२१
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२२
- (झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२३
- (ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२४
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२५
- (ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२६

'कर्क' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५२७ से ५३८ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

- (क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२७
- (ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२८
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२९
- (घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३०
- (ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३१
- (च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३२
- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३३
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३४
- (झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३५
- (ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३६
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३७
- (ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३८

‘कर्क’ लग्न में ‘केतु’ का फलादेश

१—‘कर्क’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘केतु’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५३६ से ५५० के बीच देखना चाहिए ।

२—‘कर्क’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘केतु’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में ‘केतु’—

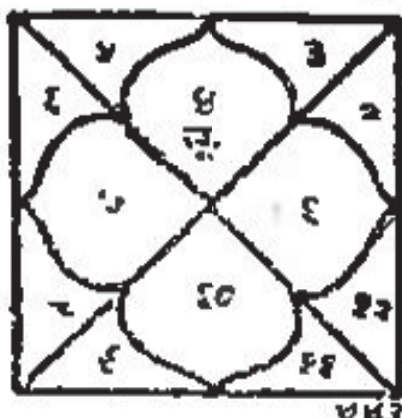
- (क) ‘मेष’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३६
- (ख) ‘वृष’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४०
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४१
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४२
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४३
- (च) ‘कन्या’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४४
- (छ) ‘तुला’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४५
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४६
- (झ) ‘धनु’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४७
- (ञ) ‘मकर’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४८
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४९
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ५५०



‘कर्क’ लग्न में ‘सूर्य’

‘कर्क’ लग्न को कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

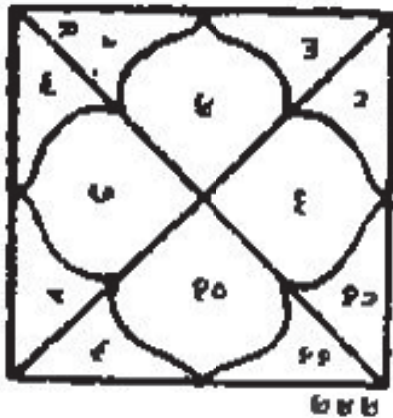


प्रथमभाव में जिस चन्द्रमा को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य, तेज तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। उसे धन तथा कुटुम्ब की शक्ति भी प्राप्त होती है।

सातवीं शतदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ साथ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

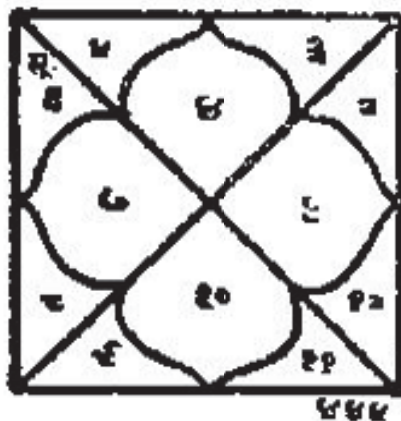


दूसरे भाव में इवराशि-स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धन, कुटुम्ब, यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु में कमी आती है तथा पुरातत्त्व एवं दैनिक चर्या में यो सामान्य कठिनाइयों का शिकार होना पड़ता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

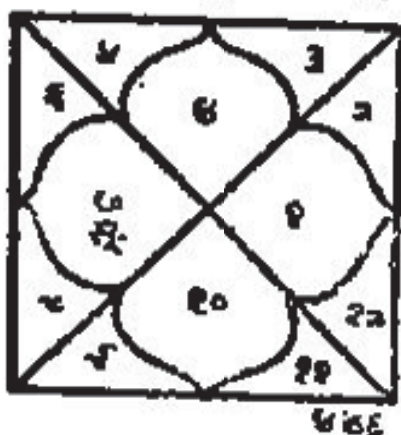
कर्क लग्न : तृतीयभाव : सूर्य



तीसरे भाव में मित्र बुध को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख कुछ लुटियों के माय प्राप्त होता है। पराक्रम के द्वारा धन-वृद्धि यो होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक पराक्रम द्वारा भाग्य की वृद्धि तथा वर्ष का पालन करता है। उसका प्रभाव एवं सम्मान यो बढ़ता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

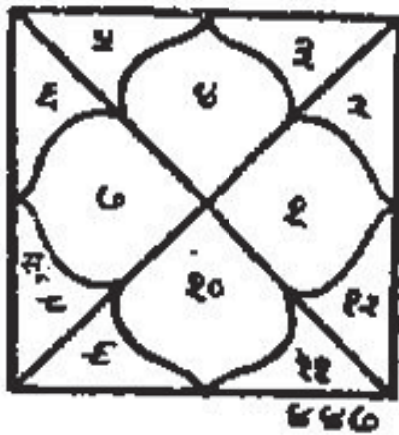


चौथे भाव में शत्रु शुक को राशिस्थ बीच के सूर्य के प्रभाव से जातक के माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी कम मिलता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, यश तथा धन की प्राप्ति होती है।

'कर्क' लग्न को कृष्णतो के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : सूर्य

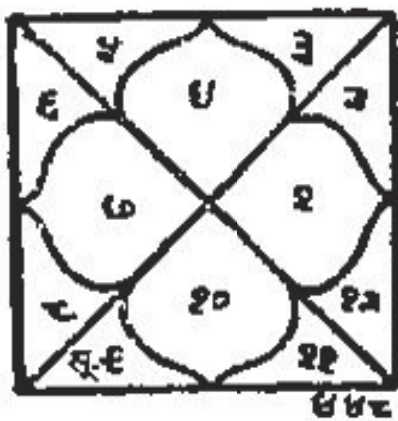


पाँचवें भाव में मित्र भंगल को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के सन्तान-सुख में बाधा आती है, परन्तु एक सन्तान अत्यन्त प्रभावशालिनी होती है। विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है तथा धन की वृद्धि की होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। ऐसा जातक स्पष्ट वक्ता तथा उग्र स्वभाव का होता है।

'कर्क' लग्न की कृष्णतो के 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : सूर्य



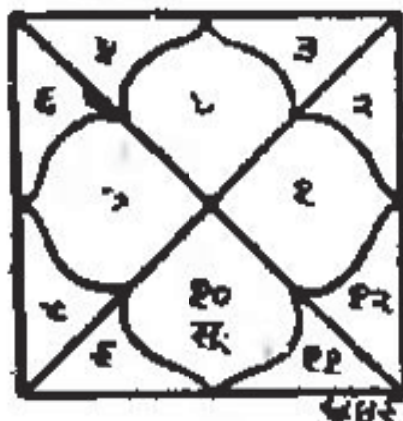
छठें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अत्यन्त प्रभाव रखता है, परन्तु धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा स्वर्ण अधिक रहता है। ऐसा व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा के आगे धन की चिन्ता नहीं करता तथा झगड़े एवं परिश्रम के

कामों से प्रभाव की वृद्धि करता है।

'कर्क' लग्न को कृष्णतो के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : सूर्य



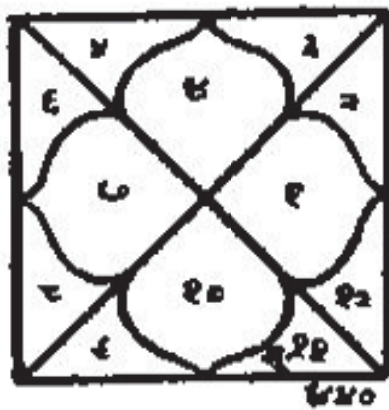
सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष से कष्ट होता है। स्त्री से वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय में भी परेशानियाँ आती रहती हैं। भूतेन्द्रिय में विकार तथा पारिवारिक कठिनाइयाँ की रहती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक को प्रतिष्ठा मिलती है तथा

सार्वभौमिक प्रभाव भी बना रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

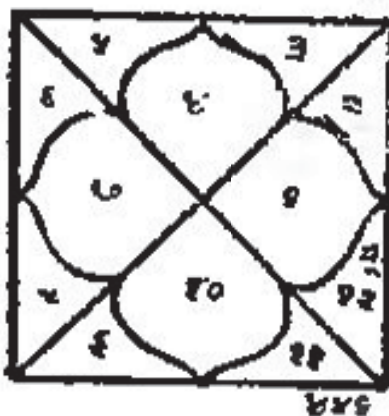


सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की आयु पर कभी-कभी संकट आते रहते हैं तथा पुरातत्त्व के लाभ में भी कमी आती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के द्वितीयभाव के देखने से घन तथा कूटुम्ब के सुख में कुछ कमी रहती है तथा पेट में भी कोई रोग हो सकता है। ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन धनवानों जैसा होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : सूर्य

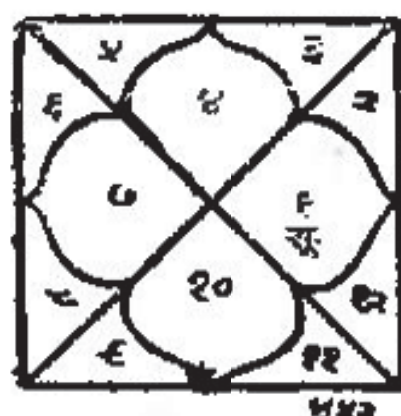


नवें भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का भाग्य प्रबल होता है। वह धर्म का पालन यो करता है तथा मान-प्रतिष्ठा यो पाता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति पराक्रमी, सुखी, स्वार्थी तथा परमार्थी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : सूर्य

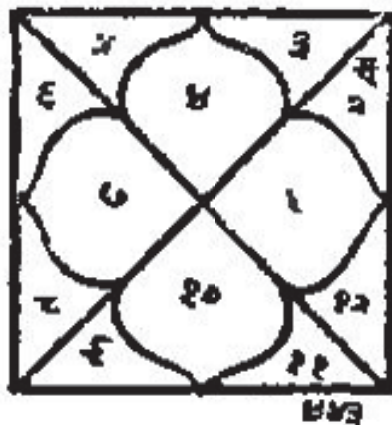


दसवें भाव में स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, प्रतिष्ठा तथा लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के साथ ही धरेलू सुख में भी कुछ कमियाँ बनी रहती हैं।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : सूर्य

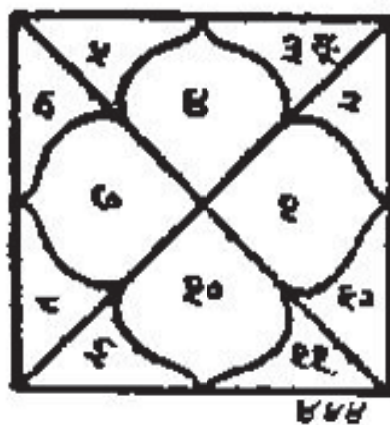


ग्यारहवें भाव में शत्रु शुक की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को धन का विशेष लाभ होता है, परन्तु कौटुम्बिक सुख में कमी रहती है।

सातवीं भिन्नदृष्टि से पंचमभाव की देखने के कारण विद्या-बुद्धि में प्रवीणता तथा सन्तान-पक्ष से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति ऐश्वर्यशाली जीवन बिताता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : सूर्य



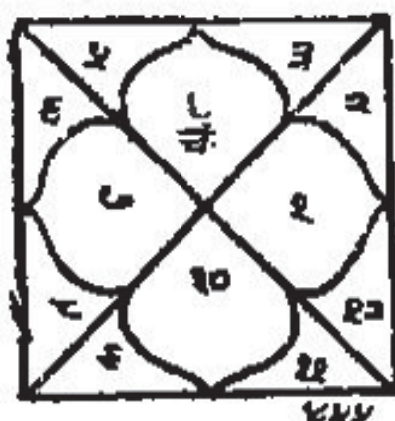
बारहवें भाव में भिन्न बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से धन का खेष्ट लाभ होता है, परन्तु खर्च की अधिकता रहती है। वह रईसी ढंग का जीवन बिताता है। धन तथा कौटुम्बिक सुख में कमी बनी रहती है।

सातवीं भिन्नदृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है।

'कर्क' लग्न में 'चन्द्रमा'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

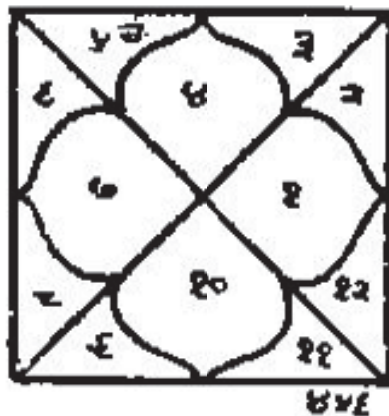


पहले भाव में स्वराशि में स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सौन्दर्य, स्वास्थ्य, अधिक शक्ति, यश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति उच्च कोटि का विचारक तथा मुनी होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष में असन्तोषपूर्ण सुख प्राप्त होता है, परन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में बड़ी सफलता मिलती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र



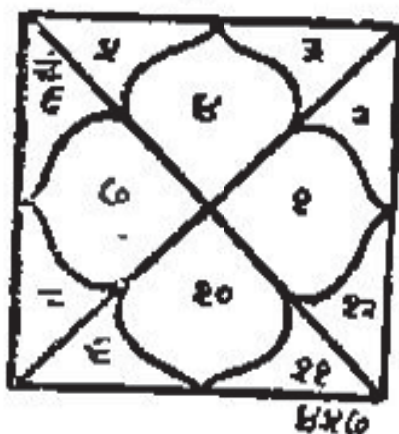
दूसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ धन तथा कौटुम्बिक सुख पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम लाभ को देखने से वायु के विषय में परेशानियाँ आती हैं तथा पुरातत्त्व का लाभ कम होता है। ऐसा व्यक्ति

ज्ञान-शौकत का जीवन बिताने वाला, प्रतिष्ठित या भाग्यशाली होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

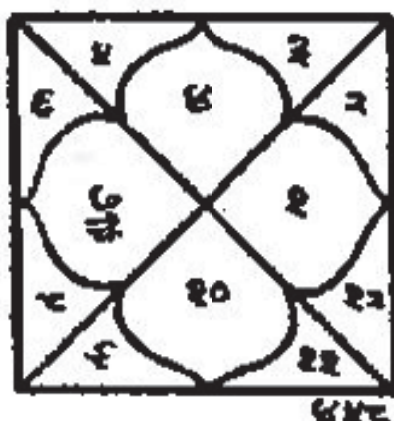


तीसरे भाव में जिस सुख को राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में अत्यन्त वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र दृष्टि से नवमभाव को देखने से वर्ष तथा भाग्य की भी पर्याप्त उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति धार्मिक, दानी, उदार, ईश्वर-भक्त, धनी, उत्साही, पराक्रमी तथा पुरुषार्थी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

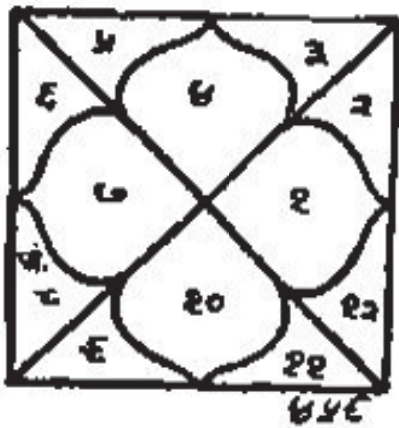


चौथे भाव में सामान्य-मित्र शुक्र की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि भवन आदि का पर्याप्त सुख उपलब्ध होता है। उसका शरीर सुन्दर तथा मन कोमल होता है।

सातवीं मित्र दृष्टि से दसमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता, सहयोग एवं यज्ञ को प्राप्ति होती है। ऐसा जातक हर प्रकार से सम्पन्न एवं सुखी रहता है।

'कर्क' लग्न की दृष्टियों के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

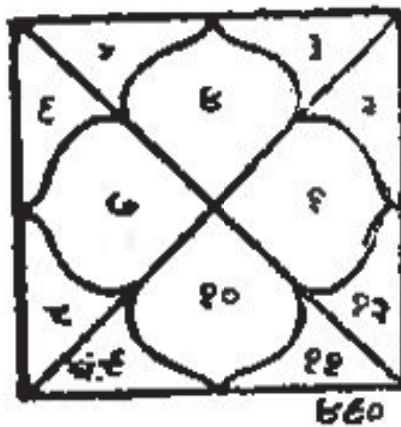


पाँचवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में कठिनाई से सफलता मिलती है। मन तथा शरीर भी दुर्बल रहता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से एकादशभाव को देखने से गुप्त मानसिक एवं शारीरिक शक्तियों के बल पर आमदनी अच्छी बनी रहती है, परन्तु कुछ अशान्ति का अनुभव भी होता है।

'कर्क' लग्न की दृष्टियों के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

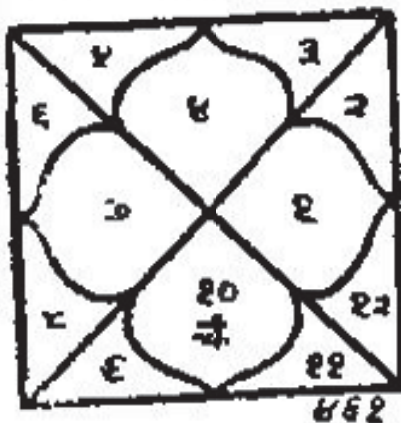


छठे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में दुर्बलता रहती है और विनम्र बनकर काम निकालना पड़ता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने के कारण बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से यश, सम्मान तथा धन प्राप्त होता है एवं खर्च की अधिकता रहती है। ऐसा व्यक्ति गौरवशाली तथा आत्मबली होता है।

'कर्क' लग्न की दृष्टियों के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

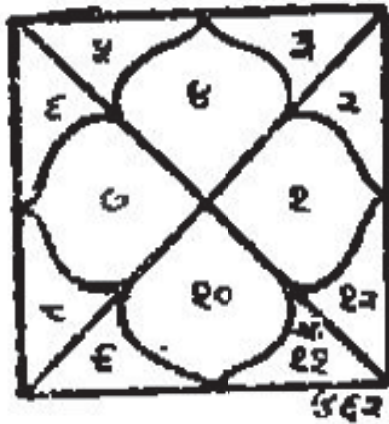


सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष में कुछ असन्तोष के बाद सफलता मिलती है तथा व्यवसाय पक्ष में भी कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा व्यक्ति भोगादि में अधिक रुचि रखता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के प्रथमभाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, मनोबल तथा आत्मिक बल की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, विलासी, सुखी तथा सुन्दर होता है।

कर्क लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

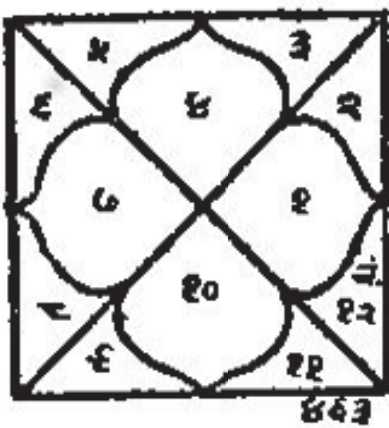


आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा पुरातत्व का लाभ असन्तोषजनक रहता है, परन्तु आयु की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने के कारण जातक अपने शारीरिक श्रम द्वारा धन-जन की वृद्धि करने में समर्थ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : चन्द्र



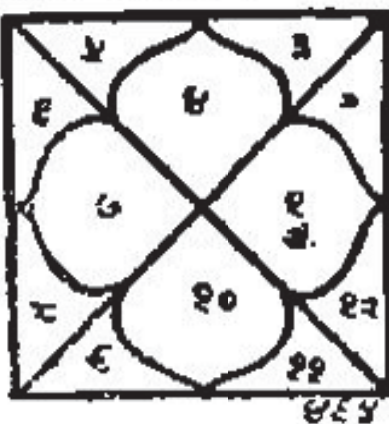
नवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को मन तथा शरीर की अच्छी शक्ति प्राप्त होती है, जिसके कारण वह अपने भाग्य की खूब उन्नति करता है तथा धर्म का पालन भी करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली, धर्मात्मा,

सतोगुणी, ईश्वर-भक्त, यशस्वी तथा सज्जन होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : चन्द्र

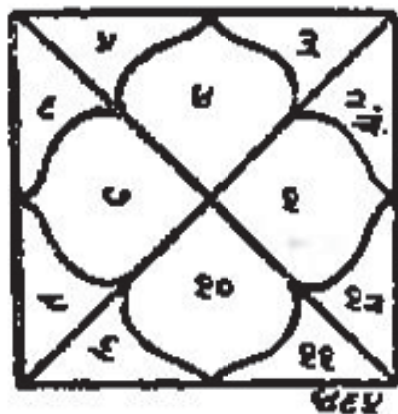


दसवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय पक्ष से प्रभाव, यश तथा लाभ प्राप्त होता है और वह किसी उच्च पद को प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर तथा शक्तिशाली होता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव की देखने के कारण जातक की भूमि, भवन आदि का सुख भी मिलता है।

‘कर्क’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : चन्द्र

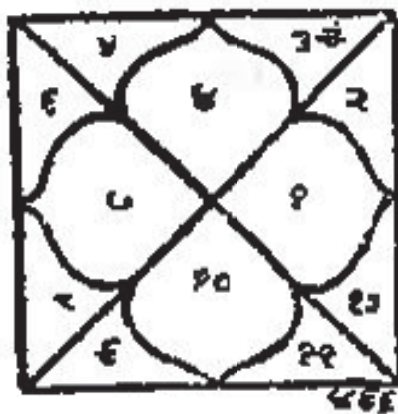


ग्यारहवें भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव के जातक की शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों एवं सौन्दर्य में वृद्धि होती है तथा आभूषण अच्छी रहती है।

सातवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने लाभ के लिए कटु शब्दों का प्रयोग करता पाया जाता है।

‘कर्क’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : चन्द्र



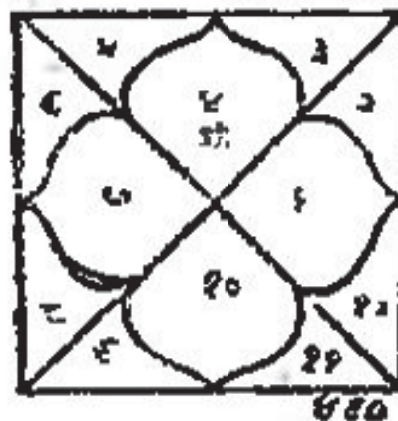
बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को बाहरी सम्पर्क से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शत्रु-पक्ष में अपने शान्त स्वभाव के द्वारा प्रभाव-स्थापित करता है, परन्तु मन में कुछ अस्वान्ति भी बनी रहती है। ऐसे व्यक्ति का शरीर दुबला-पतला होता है।

‘कर्क’ लग्न में मंगल

‘कर्क’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : मंगल



पहले भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा पिता, राज्य, सन्तान एवं विद्या का पक्ष भी दुर्बल रहता है।

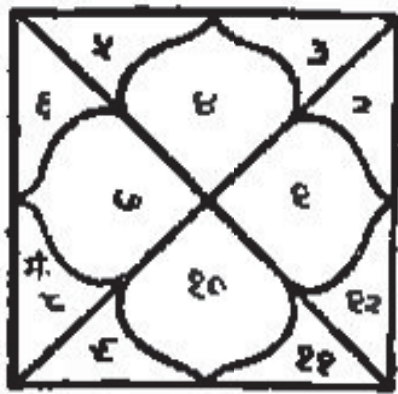
चौथी मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि, भवन का सुख मिलता है। सातवीं उच्च दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री-पक्ष में असन्तोष-पूर्ण वृद्धि होती है तथा व्यवसाय में कठिनाइयों के

साथ सफलता मिलती है।

आठवीं शत्रु-दृष्टि के अष्टम भाव की देखने से पुरातत्त्व तथा दैनिक जीवन में कमी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : मंगल



६७१

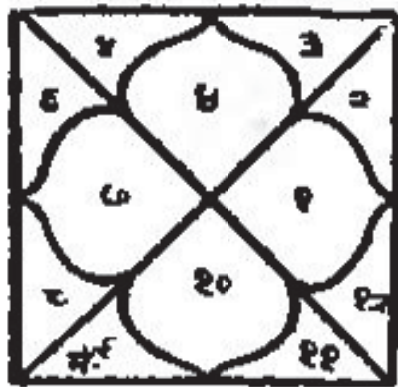
पाँचवें भाव में स्वराशित्य मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का यथेष्ट लाभ होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से कुछ असन्तोष के साथ पुरातत्त्व एवं आयु का लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादश भाव की देखने से लाभ-प्राप्ति के लिए दिमागी परिश्रम अधिक करना पड़ता है तथा आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से

यश-धन की प्राप्ति होती रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : मंगल



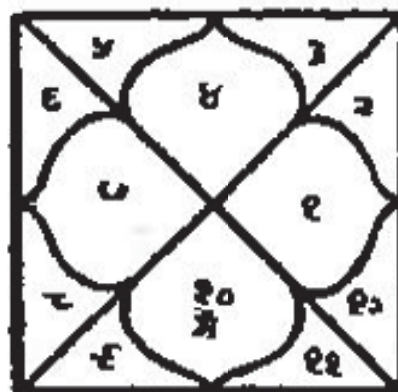
४७२

छठे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की शत्रु पक्ष में विजय मिलती है तथा विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का भी यथेष्ट लाभ होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से नवमभाव की देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। आठवीं नीच-दृष्टि से प्रथम भाव की देखने से शारीरिक सुख, सौन्दर्य, स्वास्थ्य तथा शान्ति में कुछ कमी बनी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : मंगल



४७३

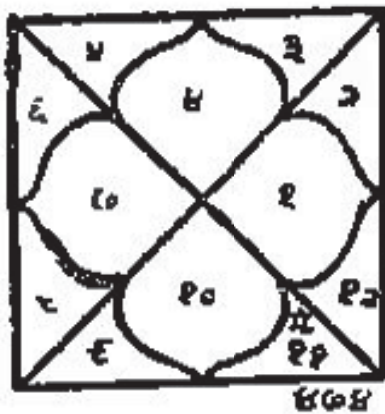
सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक की अनेक सुन्दर स्त्रियों का लाभ होता है परन्तु उनसे कुछ मतभेद भी रहता है। व्यवसाय में विशेष सफलता मिलती है तथा विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का पक्ष की वृद्धि रहता है।

चौथी दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव की देखने से पिता तथा राज्य से सुख, लाभ एवं सम्मान

मिलता है। सातवीं नीच दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कमी रहती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन-संचय खूब होता है तथा वाणी भी प्रभावशालिनी होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : मंगल



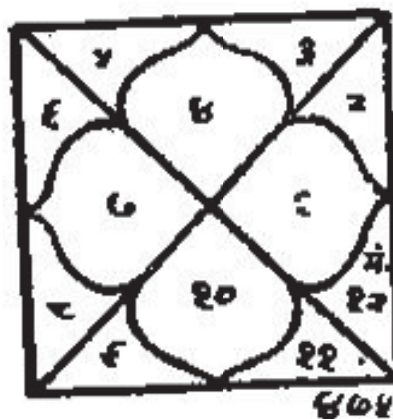
आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है, परन्तु विद्या, बुद्धि, सन्तान, पिता तथा राज्य पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है।

चौथी शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से परिश्रम द्वारा लाभ होता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कौटुम्बिक सुख में वृद्धि होती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव

को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : मंगल



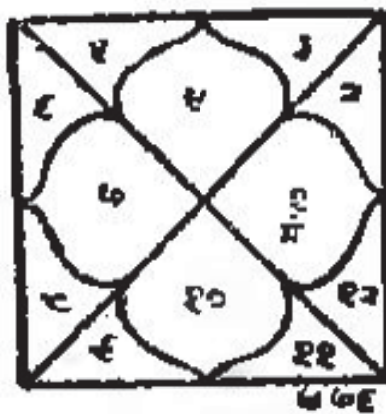
नवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति होती है तथा विद्या, बुद्धि, सन्तान, पिता, राज्य एवं व्यवसाय पक्ष का सुख की मिलता है।

चौथी मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : मंगल

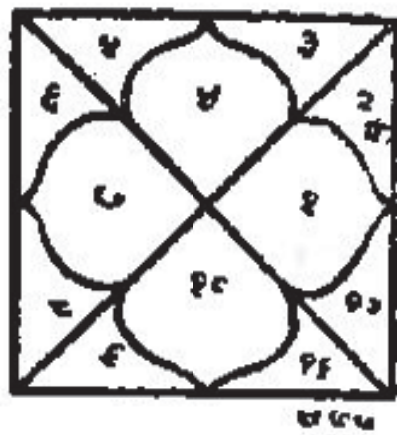


दसवें भाव में स्थित स्वलेखी मंगल के प्रभाव से जातक की राज्य, पिता एवं व्यवसाय पक्ष से सुख, यश तथा धन का लाभ होता है। चौथी नीच-दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से सार्विक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ असन्तोषजनक रहता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि के पंचमभाव की देखने के सन्तान, विद्या एवं बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा कोई उच्च पद भी प्राप्त होता है।

‘कर्क’ लग्न की कृष्णली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘मंगल’ का कलावेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : मंगल



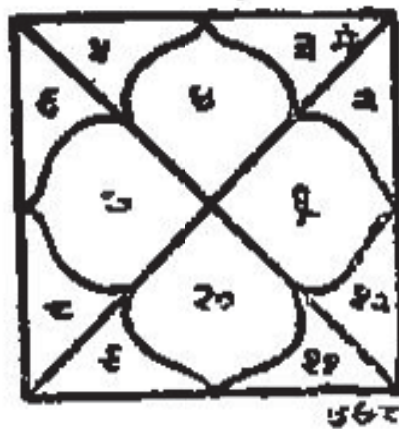
ग्यारहवें भाव में अपने सामान्य मित्र कुछ की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव के जातक को कठिन परिश्रम द्वारा पर्याप्त धन लाभ होता है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। चौथी मित्रदृष्टि के द्वितीय-भाव को देखने से भी धन तथा कुटुम्ब के सुख का लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के पंचमभाव की देखने के कारण विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का लाभ होता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति बनी, सुखी तथा शत्रुजयी होता है।

‘कर्क’ लग्न की कृष्णली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘मंगल’ का कलावेश

बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। पिता, राज्य, संतान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कमी का अनुभव होता है।

कर्क लग्न : द्वादशभाव : मंगल



चौथी मित्रदृष्टि से तृतीयभाव की देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

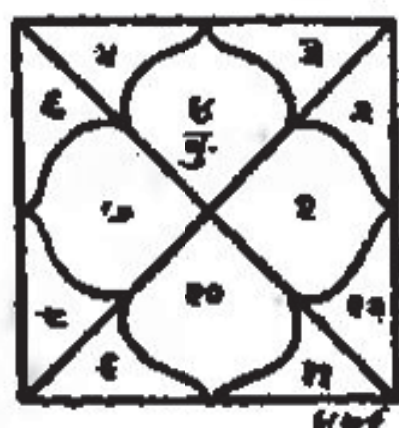
सातवीं मित्र दृष्टि के षष्ठभाव की देखने से शत्रु-पक्ष में विजय मिलती है। आठवीं उच्च-दृष्टि के सप्तमभाव को देखने के स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। परन्तु

बुद्धिभ्रम तथा मस्तिष्क में परेशानी की स्थिति भी बनी रहती है।

‘कर्क’ लग्न में ‘बुध’

‘कर्क’ लग्न की कृष्णली के ‘प्रथम भाव’ स्थित ‘बुध’ का कलावेश

कर्क लग्न : प्रथम भाव : बुध

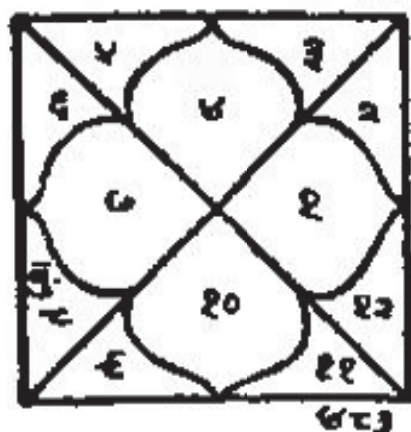


पहले भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल रहता है तथा भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। बाहरी संबंधों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से सामान्य कृतियों के साथ स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : बुध

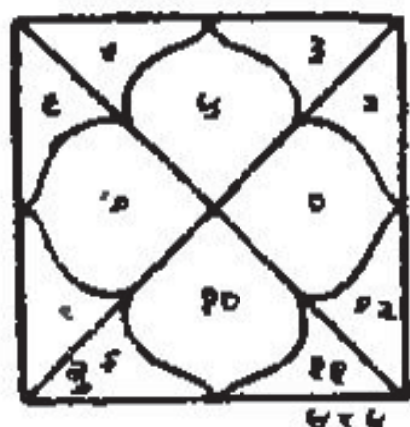


पाँचवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में दृष्टिपूर्ण सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान तथा हिम्मती होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से बुद्धि-बल द्वारा लाभ होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सुख प्राप्त होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : बुध



छठे भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में नम्रता एवं शांति के आश्रय से सफलता प्राप्त करता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादशभाव की देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से सामान्य सम्बन्ध बना रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : बुध

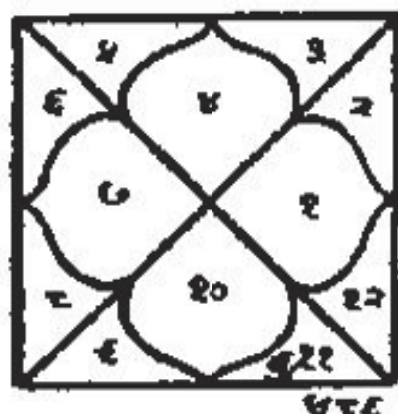


सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की स्त्री का सुख मिलता है तथा व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव की देखने के कारण जातक के शरीर में शक्ति तथा दुर्बलता का सामंजस्य रहता है। ऐसा व्यक्ति अधिक खर्चीला होता है तथा बाहरी सम्बन्धों एवं परिश्रम के बल पर उन्नति भी करता है।

‘कर्क’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : बुध

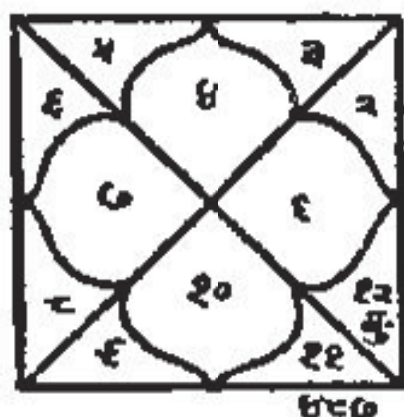


आठवें भाव में शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व का कुछ कमियों के साथ लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी आती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से खर्च चलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन का लाभ होता है, परन्तु सुख के व्यय होने के कारण खर्च अधिक बना रहता है।

‘कर्क’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : गुरु

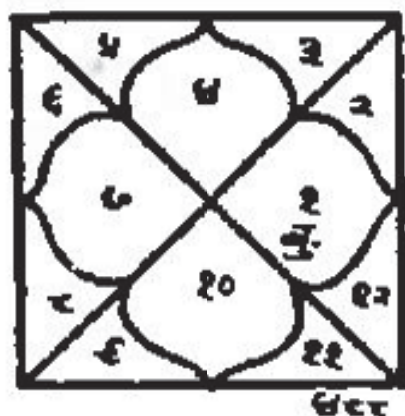


नवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की धर्म तथा भाग्योन्नति के क्षेत्र में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सामान्य लाभ होता है। खर्च अधिक रहता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से तृतीयभाव की देखने के कारण पुरुषार्थ की वृद्धि होती है, परन्तु भाग्योन्नति में बाधाएँ की आती रहती हैं।

‘कर्क’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : बुध

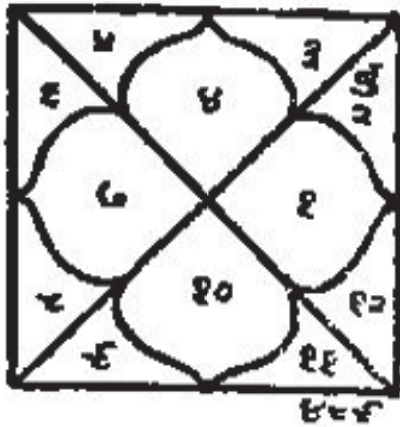


दसवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव के जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलताएँ मिलती हैं, परन्तु भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि के चतुर्थभाव की देखने के कारण माता, भूमि एवं भवन आदि का सामान्य लाभ होता है तथा परिक्रम द्वारा खर्च चलता है।

‘कर्क’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : बुध

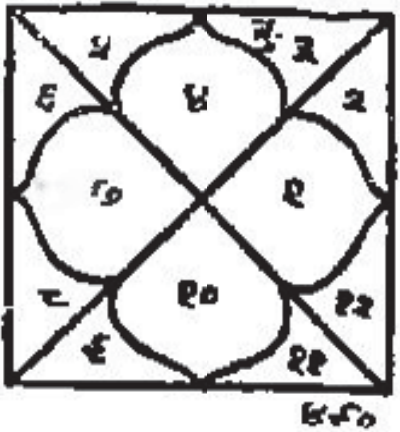


बारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक बना रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव की देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में लुटिपूर्ण लाभ होता है, परन्तु जातक अपनी बुद्धि, विवेक-शक्ति तथा वाणी के बल पर लाभ कमाता है।

‘कर्क’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : बुध



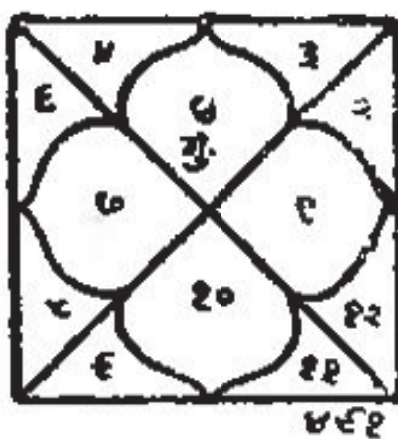
बारहवें भाव में स्वराशित्थ बुध के प्रभाव के जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव की देखने के कारण शान्त स्वभाव, पुरुषार्थ एवं ध्यय की शक्ति से शत्रुपक्ष में सामान्य सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति धन खर्च करने के बल पर ही अनेक कठिनाइयों पर नियन्त्रण स्थापित कर पाता है।

‘कर्क’ लग्न में ‘गुरु’

‘कर्क’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथम भाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : गुरु

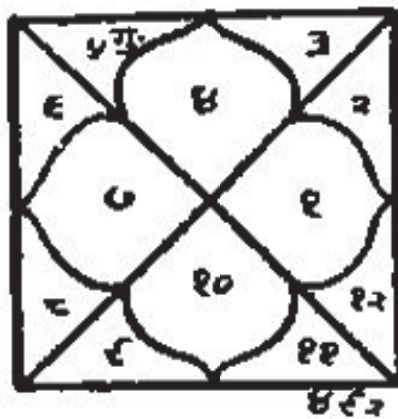


पहले भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक की शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव की देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि का पूर्ण सुख मिलता है।

सातवीं नीच दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री पक्ष तथा दैनिक खर्च में कठिनाइयाँ बनी रहती हैं। नवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव की देखने से भाग्य की शक्ति प्रबल रहती है तथा धर्म का लाभ भी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : गुरु



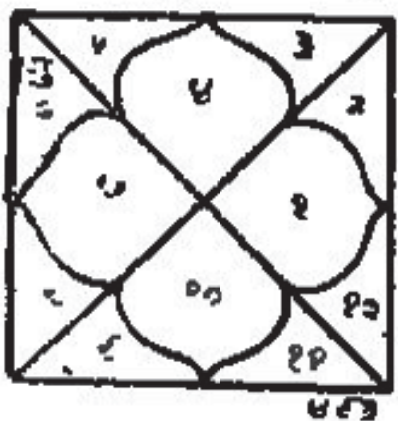
दूसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि के षष्ठभाव को देखने से धन की शक्ति द्वारा शत्रु पक्ष पर विजय मिलती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता

तथा व्यवसाय के क्षेत्र में यश, धन, सहयोग तथा सफलता का लाभ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : गुरु



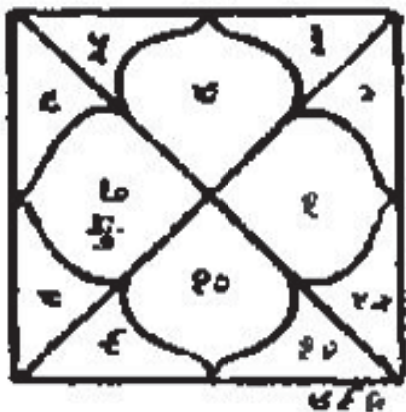
तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख मिलता है। पाँचवीं नीच दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि तथा क्लेश का शिकार बनना पड़ता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। नवीं

शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता रहता है। ऐसा व्यक्ति धर्मात्मा, धनी, हिम्मती तथा शत्रुजयी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

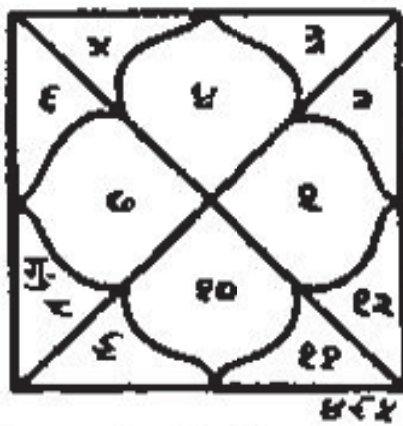


चौथे भाव में शत्रु शुक की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के क्षेत्र में सुटिपूर्ण लाभ होता है। शत्रु पक्ष में शान्ति से सफलता मिलती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है।

सातवीं मित्र दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। नवीं मित्र दृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण बाहरी संबंधों से लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : गुरु

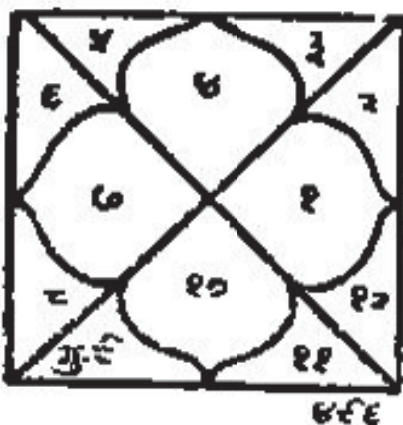


पाँचवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से बुद्धि तथा सन्तान के सहयोग से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रु दृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। नवीं मित्र दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य, आत्मबल तथा यश की वृद्धि होती है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक को प्रत्येक क्षेत्र में कुछ परेशानियों के बाद ही सफलता मिलती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : गुरु

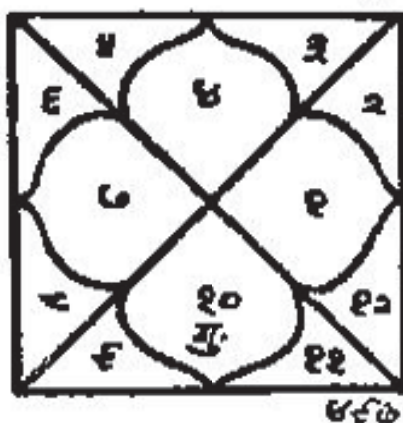


छठे भाव में स्वराशि स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर अत्यधिक प्रभाव स्थापित करता है तथा यशस्वी होता है। परन्तु भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। ५१ ३५०

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने के कारण बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : गुरु

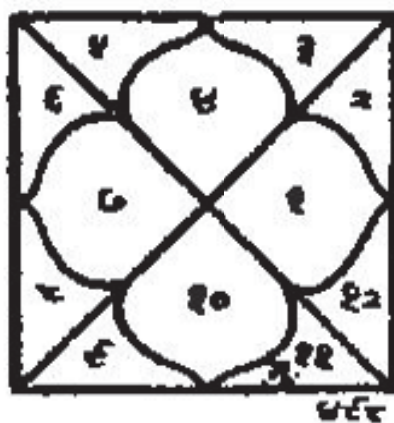


सातवें भाव में शत्रु शनि को राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं तथा शत्रु पक्ष से व्यवसाय को हानि पहुँचती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से परिश्रम द्वारा लाभ होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम बढ़ता है तथा भार्य-बहिन का सुख भी मिलता है।

'कर्क' लग्न की कुम्हली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : गुरु

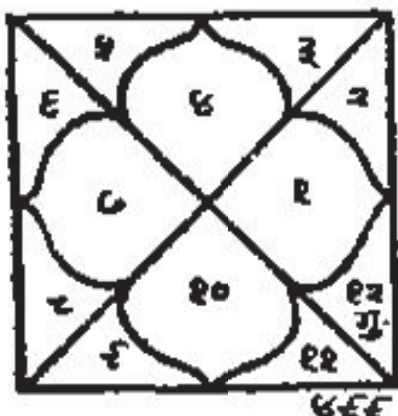


आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्व का दृष्टिपूर्ण लाभ होता है, परन्तु शत्रु पक्ष से अशान्ति मिलती है तथा भाग्य पक्ष दुर्बल रहता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के बुध में कुछ कमी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुम्हली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : गुरु

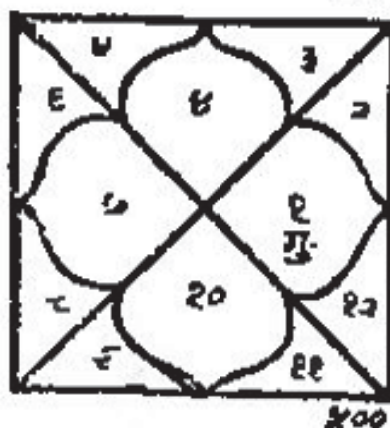


नवें भाव में स्वराशि-स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। पाँचवीं उच्च दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-वृद्धि एवं सन्तान के पक्ष में भी विशेष सफलता मिलती है।

'कर्क' लग्न की कुम्हली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : गुरु



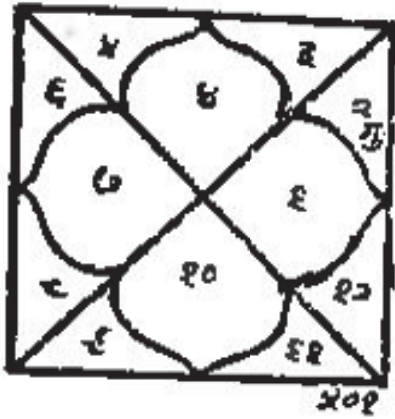
दसवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सफलता, सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब की वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से कुछ असन्तोष के साथ माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में

षष्ठभाव की देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रम तथा अगुओं के द्वारा उन्नति करता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : गुरु



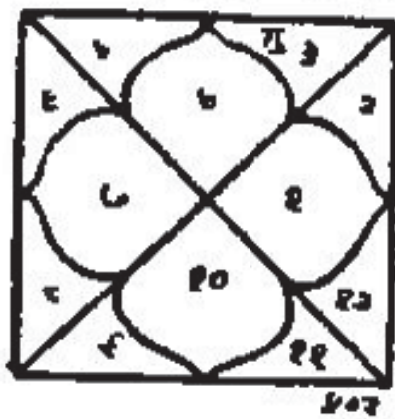
बारहवें भाव में शत्रु शुक को राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा लाभ कमाता है तथा उसे शत्रु पक्ष से भी लाभ होता है। पाँचवी मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहनों का सुख सामान्य कमी के लाभ मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, वृद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। नवीं नीच दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा

व्यवसाय के क्षेत्र में असन्तोष एवं हानि का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति धनी अवश्य होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : गुरु



बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी रहती है। पाँचवीं शत्रु दृष्टि के चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख बड़े परिश्रम द्वारा मिलता है।

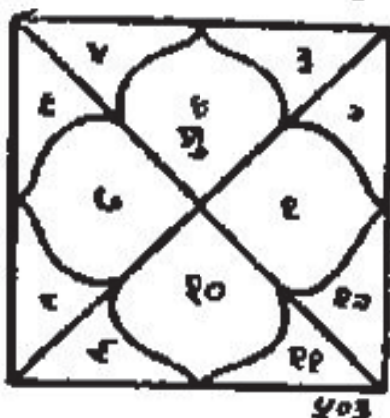
सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठ भाव को देखने से शत्रुपक्ष में सफलता मिलती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से

अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

'कर्क' लग्न में 'शुक'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : शुक

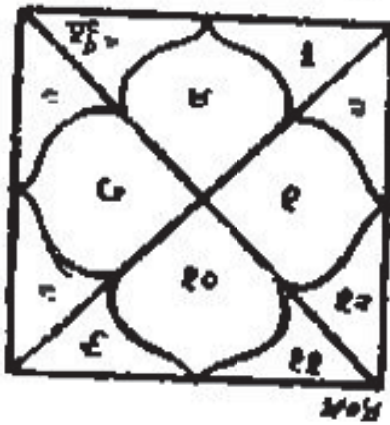


पहले भाव में शत्रु चन्द्रमा को राशि पर स्थित शुक के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, सुख तथा चातुर्य का लाभ होता है। माता तथा भूमि का बुध भी मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता है तथा भोगादि में खूब रुचि धनी रहती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, विलासी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

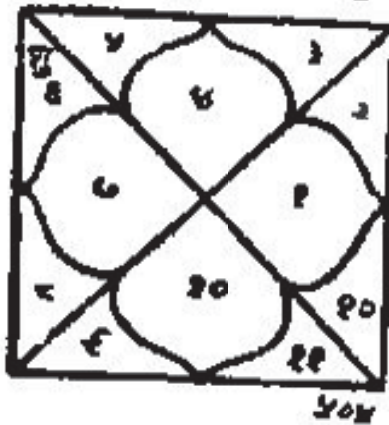


दूसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित सुख के प्रभाव से जातक को धन-कुटुम्ब का सामान्य असन्तोष के लाभ सुख प्राप्त होता है तथा भूमि एवं भवन का सुख भी मिलता है। माता के सुख में कुछ कमी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। ऐसा जातक धनी तथा सुखी जीवन बिताता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : शुक्र

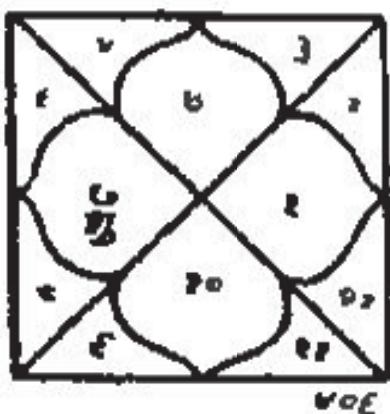


तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के भार्य-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। माता के सुख में भी कमी का अनुभव होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से नवमभाव की देखने से भाग्य की श्रेष्ठ वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी भीतरी कमजोरियों को छिपाकर प्रकट में हिम्मती बना रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

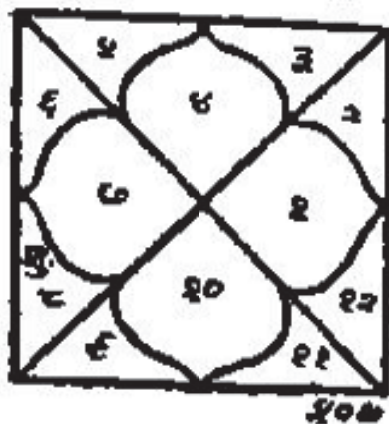


चौथे भाव में स्वराशि-स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है। आयु में वृद्धि होने से वह धनी भी बनता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता, सुख, यश एवं धन की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा चतुर, प्रतिष्ठित तथा धनी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : शुक्र

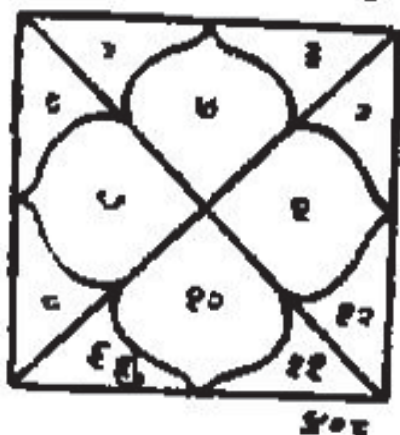


पाँचवें भाव में सामान्य मित मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का अथेष्ट लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी भी अच्छी रहती है तथा धन का लाभ खूब होता है।

ऐसे व्यक्ति को माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

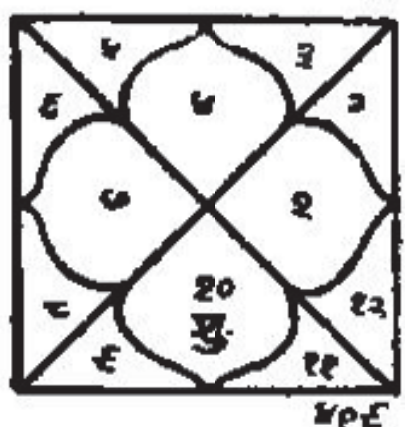


छठे भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में विजय मिलती है, परन्तु माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी तथा अशान्ति भी रहती है। लाभ के मार्ग में भी परतन्त्रता का योग बनता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी सम्बन्धों से सुख तथा लाभ मिलता है तथा खर्च अधिक रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : शुक्र

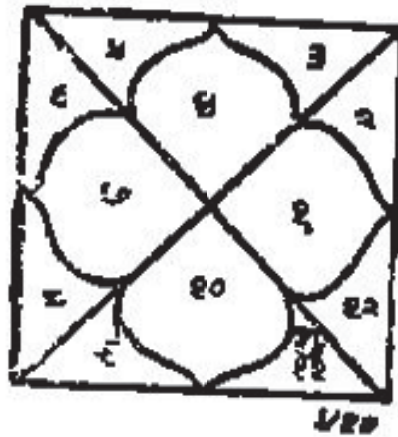


सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री, व्यवसाय तथा दैनिक आय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, चातुर्य एवं सुख की प्राप्ति भी होती है।

कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलवाचन

कर्क लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

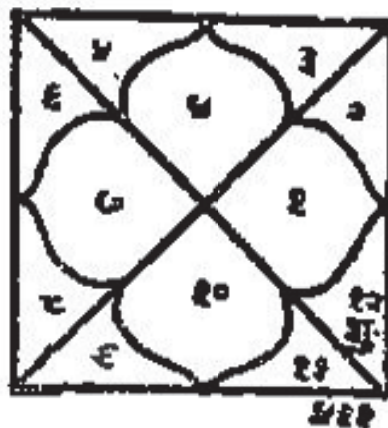


अठवें भाव में मित्त शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा परदेश में रहकर उन्नति करता है। धरेलु सुख में कुछ कमी भी रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-संशय नहीं ही पाता तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी रहती है।

कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलवाचन

कर्क लग्न : नवमभाव : शुक्र

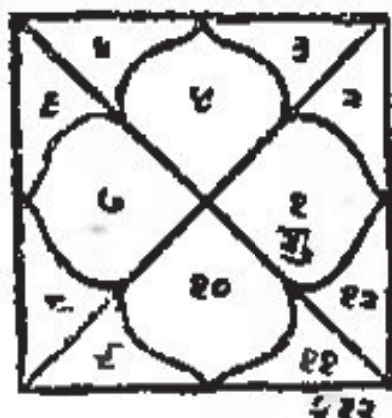


नवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित उच्च शुक्र के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य को विशेष वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का उत्तम सुख भी मिलता है।

सातवीं दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिम के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवादी, धनी सुखी तथा सौभाग्यशाली होता है।

कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलवाचन

कर्क लग्न : दशमभाव : शुक्र

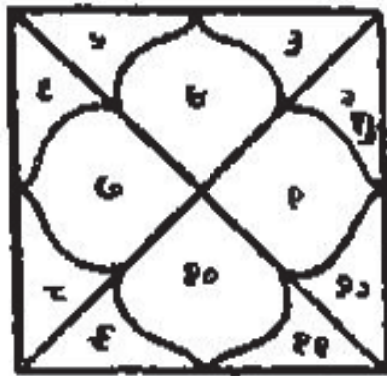


दसवें भाव में सामान्य मित्त भंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सफलताएँ मिलती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्रभूत मात्रा में उपलब्ध होता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, गंभीर, चतुर, बुद्धिमान, भुंगार-प्रिय, प्रेमी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलभाव

'कर्क' लग्न : एकादशभाव : सुख

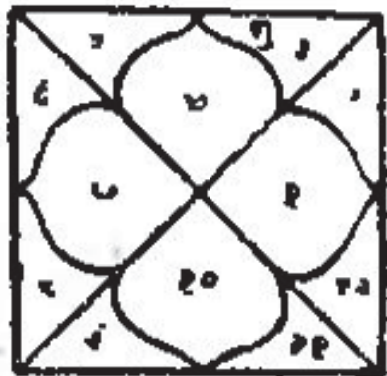


बारहवें भाव में स्वर्क्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को आमदनी अच्छी रहती है तथा माता, भूमि, भवन आदि का सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में भी पूर्ण सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति योग्य, चतुर, धनी, सुखी तथा श्रेष्ठवाणी बोलनेवाला होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलभाव

'कर्क' लग्न : द्वादशभाव : शुक्र



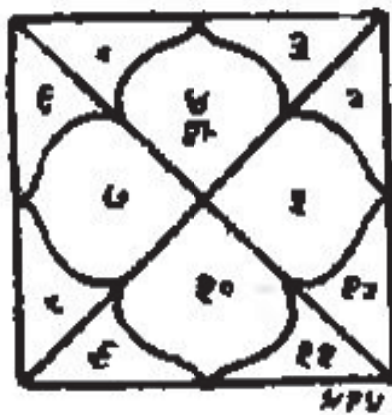
बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख एवं लाभ उठाता है तथा उसका खर्च अधिक रहता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है तथा मातृभूमि से अलग भी रहना पड़ता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष में चातुर्य एवं खर्च से काम निकालने में सफलता मिलती है।

'कर्क' लग्न में 'शनि'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलभाव

'कर्क' लग्न : प्रथमभाव : शनि

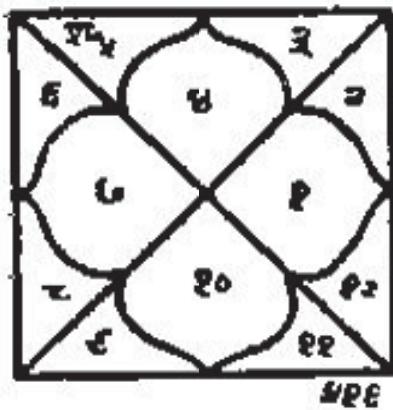


पहले भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है तथा शरीर में रोग भी रहता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने से भाई-बहिन का क्लृप्तपूर्ण सुख मिलता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वर्क्षेत्र में सप्तमभाव की देखने से व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा स्त्री का सुख होने पर भी उससे कुछ परेशानी रहती है। दसवीं नीच-दृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता तथा राज्य के क्षेत्र में सफलता एवं सम्मान का सामान्य लाभ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : शनि



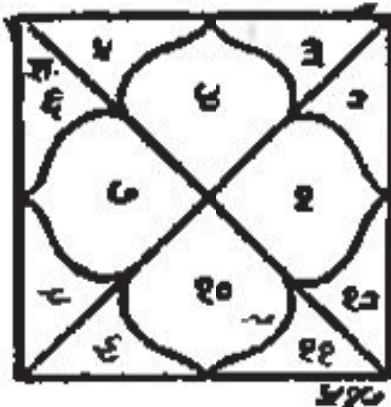
दूसरे भाव में शनि सूर्य की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के क्षेत्र में हानि पहुँचती है। तीसरी उच्च दृष्टि से चतुर्थ भाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु-वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दसवीं मित्त-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से

परिश्रम द्वारा धन का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन तो बिताता है, परन्तु धन तथा पारिवारिक सुख में कमी ही बनी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : शनि



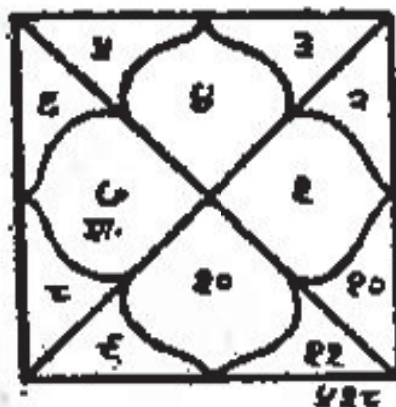
तीसरे भाव में मित्त बुध को राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों द्वारा परेशानी भी मिलती है। तीसरी शनि-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान से कष्ट मिलता है तथा विद्या-वृद्धि को कमी रहती है।

सातवीं शनि-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य में रुकावटें आती हैं तथा धर्म में अरुचि रहती

है। बारहवीं मित्त-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक रहता है। ऐसा व्यक्ति कुछ क्रोधी स्वभाव का होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : शनि



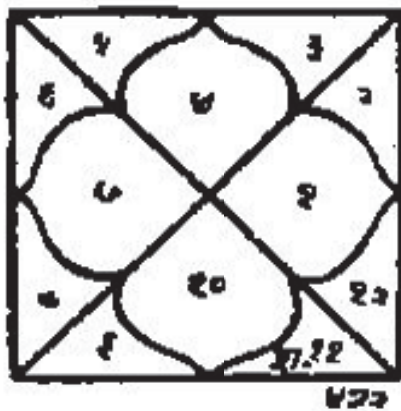
चौथे भाव में मित्त शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से माता के सुख में कुछ कमी आती है, परन्तु भूमि, भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। तीसरी शनि-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में प्रभाव रहता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। दसवीं शनि-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने

से शरीर में वास्तव्य तथा रोग रहता है तथा धरेलू सुख में भी कुछ कमी आती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : शनि



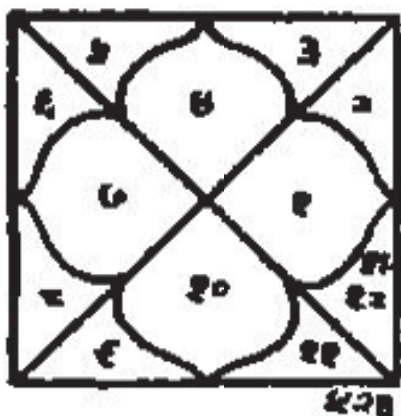
आठवें भाव में स्वराशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु बढ़ती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ बनी रहती हैं। बाहरी स्थान के संबंध से शक्ति भी मिलती है।

तीसरी नीच-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानी रहती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन-संचय तथा कुटुम्ब-सुख में कमी आती है। दसवीं

शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का अनुभव होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : शनि

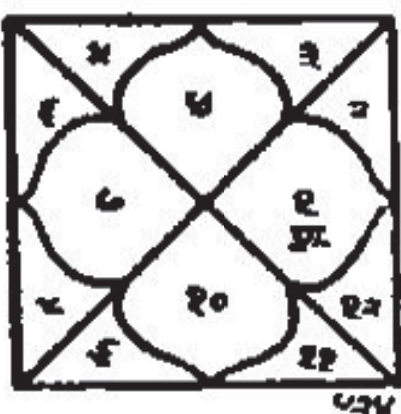


नवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धर्म-पालन तथा भाग्योन्नति के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी बढ़ती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी

रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के बाद शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : शनि



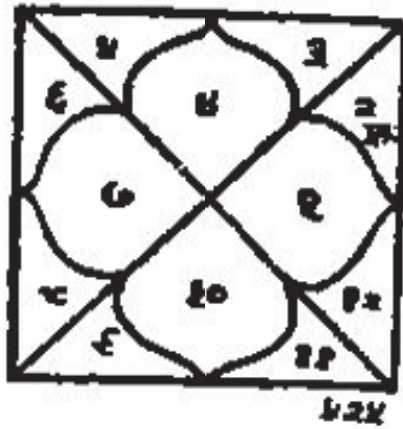
दसवें भाव में शत्रु मंगल को राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती रहती हैं। पुरातत्त्व तथा आयु की हानि भी होती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन आदि का सुख मिलता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से

स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादश भाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : शनि



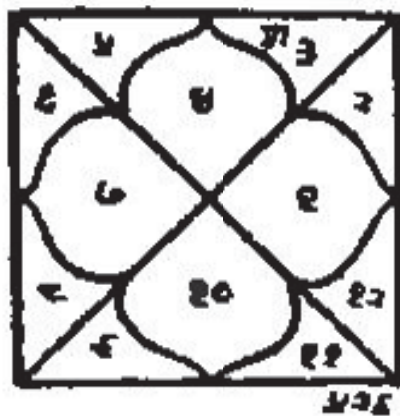
ग्यारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। स्त्री तथा व्यवसाय पक्ष में भी लाभ होता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कष्ट

रहता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु बढ़ती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। ऐसा जातक कम पढ़ा-लिखा होने पर भी अपने चातुर्य एवं परिश्रम द्वारा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादश भाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : शनि



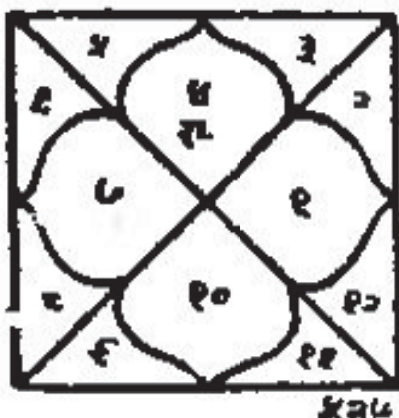
बारहवें भाव में मित्र बुध को राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। स्त्री, व्यवसाय, आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में हानि होती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वितीय-भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के पक्ष में भी धीरे चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु उत्पात करते रहते हैं, परन्तु उन पर प्रभाव भी बना रहता है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म-पालन में कमी रहती है तथा भाग्य की शक्ति भी क्षीण हो जाती है। परन्तु इन सब कठिनाइयों के बावजूद जातक शान्तदार जीवन व्यतीत करता है।

'कर्क' लग्न में 'राहु'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथम भाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

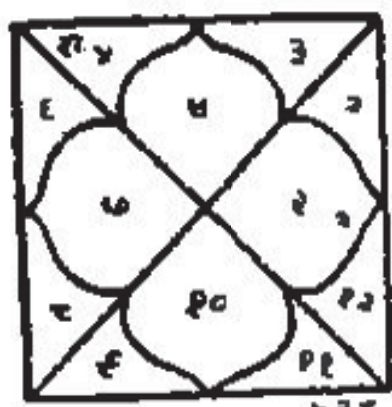
कर्क लग्न : प्रथमभाव : राहु



पहले भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा हृदय चिन्तित बना रहता है। कभी-कभी मृत्युतुल्य कष्टों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु वह गुप्त मुक्तियों के बल पर अपने सम्मान को बचाये रखता है तथा उन्नति के लिए कठिन परिश्रम भी करता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

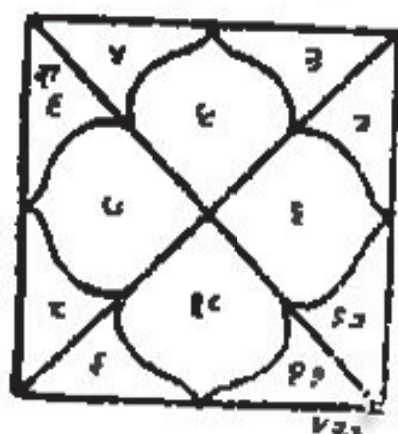
कर्क लग्न : द्वितीयभाव : राहु



दूसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब के सुख की हानि होती है। वह गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर धन की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है और कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी प्राप्त करता है। उसे अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए सदैव चिन्तित बने रहना पड़ना है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी तथा हिम्मती होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : राहु

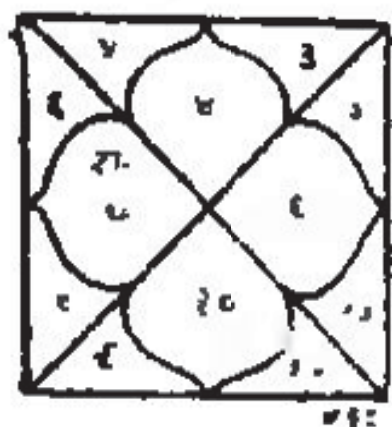


तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ भाई-बहिन का सुख भी मिलता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए कठिन परिश्रम, गुप्त युक्तियों तथा पुरुषार्थ का सहारा लेता है। भीतरी रूप से कमजोर होने पर भी ऊपर से बड़ा हिम्मती दिखाई देता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

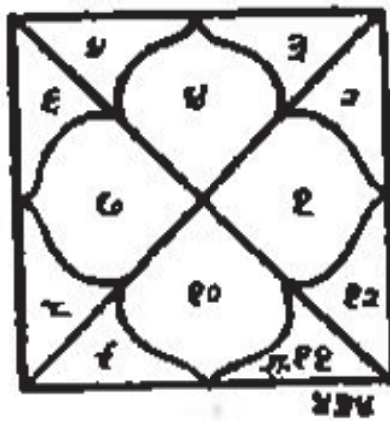
कर्क लग्न : चतुर्थभाव : राहु



चौथे भाव में मित्र सुख की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ कमी प्राप्त होती है तथा भूमि और भवन का सुख भी अल्प मात्रा में प्राप्त होता है। उसे देश छोड़ कर पग्देश में भी रहना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति कभी-कभी असफलताओं का भी विशेष शिकार बनता है।

‘कर्क’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

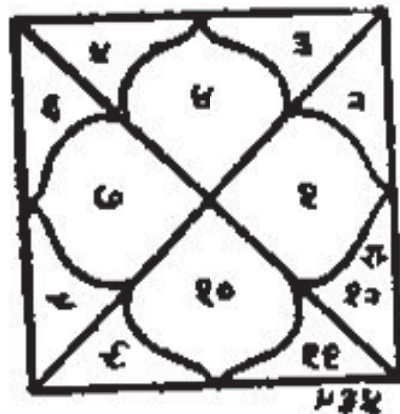
कर्क लग्न : अष्टमभाव : राहु



सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आयु के बारे में कभी-कभी चिन्ताजनक स्थितियों का मुकाबला करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि की होती है। वह उदर-विकार से ग्रस्त रहता है। जीवन-निर्वाह के लिए छोटे अनेक गुप्त युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है।

‘कर्क’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : राहु

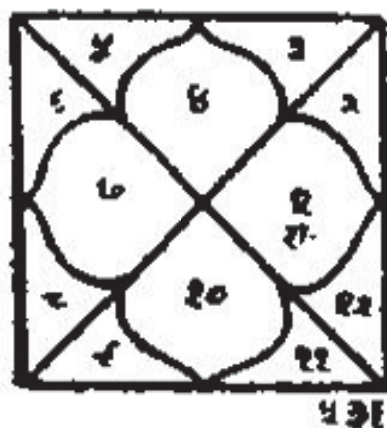


नवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कठिनाई आती है तथा धर्म का की यथावत् पालन नहीं हो पाता।

उसे कभी-कभी बड़े संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु गुप्त युक्तियों तथा परिश्रम के बल पर कुछ सफलता की प्राप्त करता है।

‘कर्क’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

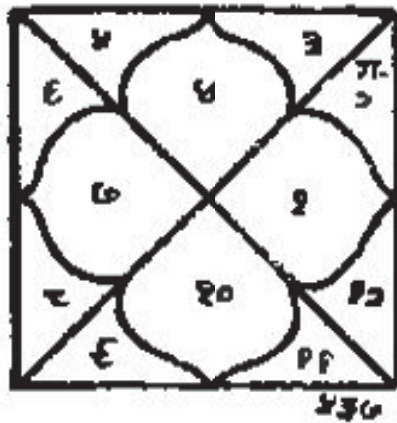
कर्क लग्न : दशमभाव : राहु



दसवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पित्त, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। अनेक कष्टों की भोगने तथा अनेक बार निराश होने के बाद वह अपने परिश्रम, धैर्य तथा बहादुरी से थोड़ी बहुत उन्नति करता तथा प्रतिष्ठा की बधाता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

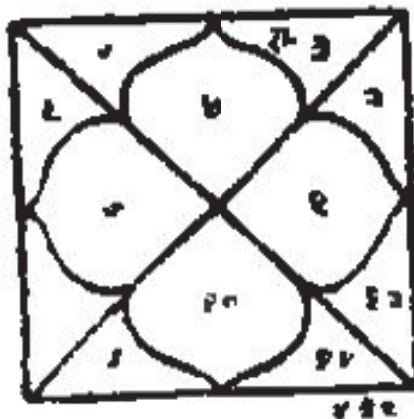
कर्क लग्न : एकादशभाव : राहु



ग्यारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को बड़ी शत्रुताई के साथ यथेष्ट धन का लाभ होता है, परन्तु कभी-कभी सामान्य कठिनाइयाँ भी उठानी पड़ती हैं तथा संकटों का सामना करना पड़ता है। कभी कभी आकस्मिक रूप से की धन-लाभ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : राहु



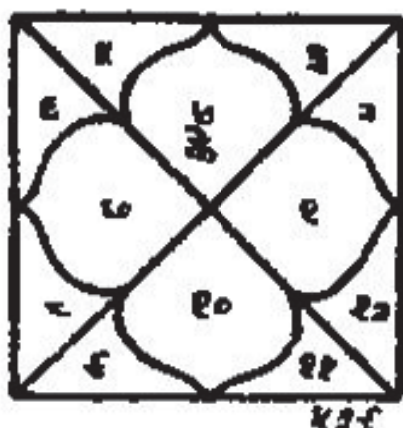
बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि में स्थित राहु के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के संबंध से गुप्त मुक्तियों के बल पर लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। वह परदेश में विशेष सम्मान एवं ख्याति प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी कमजोरियों की प्रकट नहीं करता तथा बड़ी शत्रुताई तथा बुद्धिमानी से उन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है।

'कर्क' लग्न में 'केतु'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

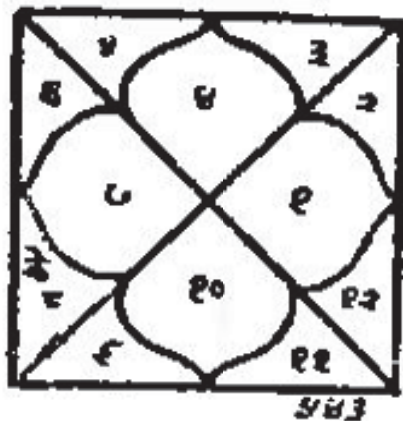
कर्क लग्न : प्रथमभाव : केतु



पहले भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शरीर पर किसी गहरी छोट अथवा भाव का निशान बनता है। शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कभी आती है। चेवक की बीमारी हो सकती है तथा कभी-कभी मृत्युतुल्य कष्ट भी भोगना पड़ता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

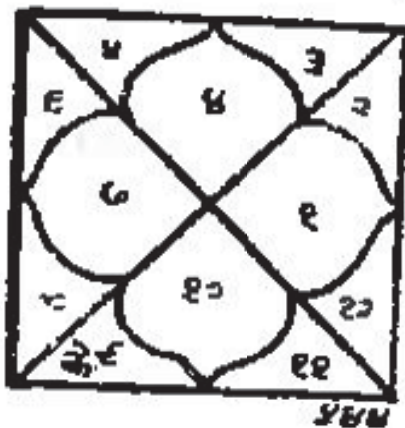
कर्क लग्न : पंचमभाव : केतु



पाँचवें भाव में शत्रु मंगल को राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्याध्ययन में भी कठिनाइयाँ आती हैं। परन्तु ऐसा व्यक्ति चतुर, चालाक तथा बातूनी होने के कारण अपनी अयोग्यता को छिपाकर दूसरों पर प्रभाव डालने में सफल हो जाता है। वह सन्तोषी तथा शीलयुक्त भी नहीं होता।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

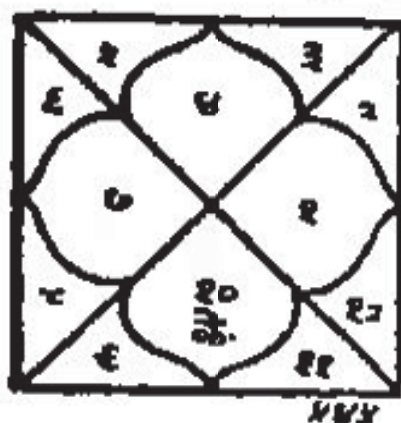
कर्क लग्न : षष्ठभाव : केतु



छठे भाव में शत्रु गुरु को राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की शत्रु पक्ष में बड़ी सफलताएँ मिलती हैं। वह कठिन स्थितियों में भी अपने धैर्य तथा साहस को नहीं छोड़ता। ऐसा व्यक्ति स्वस्थ शरीर का, साहसी तथा परिश्रमी होता है, परन्तु उसमें दया, शील, सौजन्य आदि सद्गुण नहीं होते।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

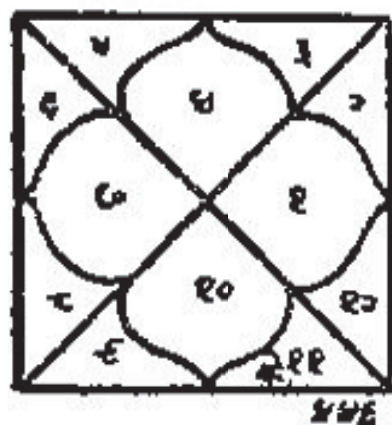
कर्क लग्न : सप्तमभाव : केतु



सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों तथा हानियों का सामना करना पड़ता है। शूत्रेन्द्रिय में विकार होता है। विषयेच्छा अधिक रहती है। वह भोगी, जिद्दी, हठी तथा कठिन परिश्रमी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

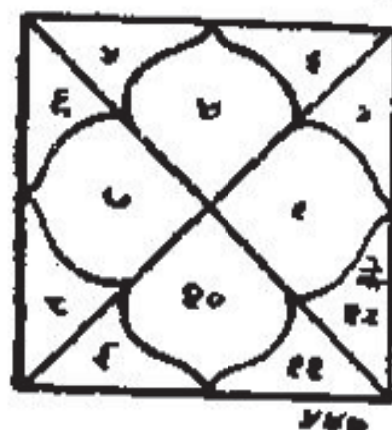
कर्क लग्न : अष्टमभाव : केतु



आठवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आयु-पक्ष में अनेक बार मृत्यु-सुल्य कष्ट होते हैं तथा पुरातत्त्व की हानि भी होती है। पेट शिकार-ग्रस्त रहता है। धन का संकट तथा गुप्त चिन्ताएं रहती हैं। ऐसा व्यक्ति गुप्त रूप से अपनी उन्नति तथा सुख के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : केतु

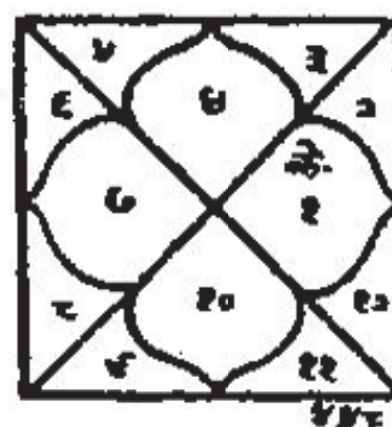


नवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी भाग्योन्नति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कभी-कभी बड़े संकटों तथा विफलताओं का शिकार भी होना पड़ता है।

वह गुप्त रूप से अपनी उन्नति के लिए प्रयत्न करता है, परन्तु भाग्योन्नति बड़ी धीमी गति से हो होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

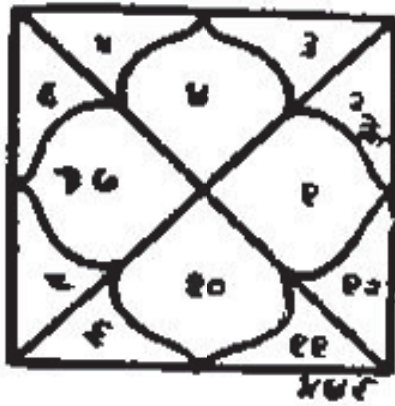
कर्क लग्न : दशमभाव : केतु



दसवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। यश तथा प्रतिष्ठा को घक्का भी लगता है परन्तु वह अपनी गुप्त युक्ति एवं परिश्रम द्वारा पुनः प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : केतु

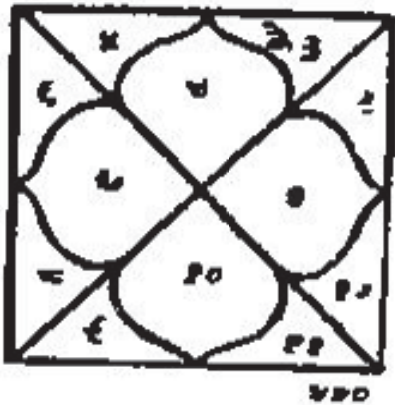


ब्यारहवें भाव में मित्त शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक आर्थिक लाभ पाने के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा परिश्रम, चतुराई एवं गुप्त युक्तियों के बल पर लाभ में वृद्धि भी करता है।

ऐसे ब्यक्ति को बारम्बार संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह कभी हिम्मत नहीं हारता तथा परिश्रम से भी नहीं चुराता।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : केतु



बारहवें भाव में मित्त बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को खर्च के बारे में बहुत परेशानी उठानी पड़ती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी कष्ट ही मिलता है।

ऐसा जातक गुप्त युक्तियों से काम लेनेवाला, परिश्रमी तथा भीतर-ही-भीतर दुःखी रहने वाला होता है।

'कर्क' लग्न समाप्त

जहाँ बालसी की पाया जाता है, परन्तु समय पढ़ने पर यह अपना कमाल प्रदर्शित कर दिखाता है।

'सिंह' लग्न वालों के अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश बाले दो गई उदाहरण कुण्डली संख्या ५५२ से ६५६ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।



'सिंह' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१. 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५५२ से ५६३ के बीच देखना चाहिए।

२. 'सिंह' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ५५२
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ५५३
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ५५४
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ५५५
- (च) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ५५६
- (ङ) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ५५७
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ५५८
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ५५९
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ५६०
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ५६१
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ५६२
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ५६३

'सिंह' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१. 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५६४ से ५७५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'सिंह' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ५६४
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ५६५
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ५६६
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ५६७
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ५६८
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ५६९
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ५७०
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ५७१
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ५७२
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ५७३
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ५७४
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ५७५

'सिंह' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१. 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५७६ से ५८७ के बीच देखना चाहिए।

२. 'सिंह' लग्नवालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ५७६
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ५७७
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ५७८
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ५७९
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ५८०
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ५८१
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ५८२
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ५८३
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ५८४
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ५८५
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ५८६
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ५८७

‘सिंह’ लग्न में ‘बुध’ का फलादेश

१. ‘सिंह’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘बुध’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५८८ से ५९९ के बीच देखना चाहिए।

२. ‘सिंह’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘बुध’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में ‘बुध’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ५८८
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ५८९
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ५९०
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ५९१
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ५९२
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ५९३
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ५९४
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या ५९५
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या ५९६
- (ञ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या ५९७
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ५९८
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर हो तो संख्या ५९९

‘सिंह’ लग्न में ‘गुरु’ का फलादेश

१. ‘सिंह’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘गुरु’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६०० से ६११ के बीच देखना चाहिए।

२. ‘सिंह’ लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘गुरु’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में ‘गुरु’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ६००
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ६०१
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ६०२
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ६०३

- (इ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६०४
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६०५
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६०६
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६०७
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६०८
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६०९
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६१०
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६११

'सिंह' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१. 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न षालों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६१२ से ६२३ के बीच देखना चाहिए ।

'सिंह' लग्नवालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

पिस महीने में 'शुक्र'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६१२
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६१३
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६१४
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६१५
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६१६
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६१७
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६१८
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६१९
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६२०
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६२१
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६२२
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६२३

'सिंह' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'सिंह' लग्नवालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२४ से ६३५ के बीच देखना चाहिए ।

२. 'सिंह' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६२४
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६२५
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६२६
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६२७
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६२८
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६२९
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६३०
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६३१
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६३२
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६३३
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६३४
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६३५

'सिंह' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१ 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३६ से ६४७ के बीच देखना चाहिए।

२. 'सिंह' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६३६
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६३७
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६३८
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६३९
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६४०
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६४१
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६४२
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६४३
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६४४
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६४५
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६४६
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६४७

'सिंह' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४८ से ६५६ के बीच देखना चाहिए।

२. 'सिंह' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६४८
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६४९
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६५०
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६५१
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६५२
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६५३
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६५४
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६५५
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६५६
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६५७
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६५८
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६५९

'सिंह' लग्न में 'सूर्य'

'सिंह' लग्न को कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित सूर्य का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

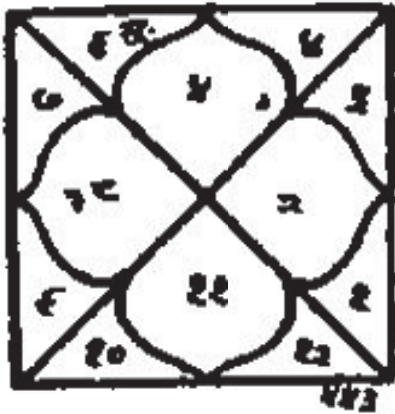


यहसे भाव में स्वराशि-स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शारीरिक शक्ति, आत्मबल तथा सौन्दर्य का लाभ प्राप्त करता है। यह बड़ा हिम्मती तथा समेकक का होता है।

सातवीं शत-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से जातक को स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा असन्तोष बना रहता है।

'सिंह' लग्न की कुम्बली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

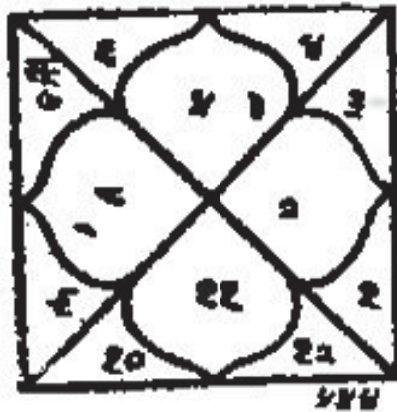


दूसरे भाव में मिल बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब के सुख में वृद्धि होती है, परन्तु उसी के कारण कुछ परतंत्रता का अनुभव भी होता है।

सातवीं मित्त-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातन्त्र का लाभ होता है तथा जातक समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति समझा जाता है।

'सिंह' लग्न की कुम्बली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

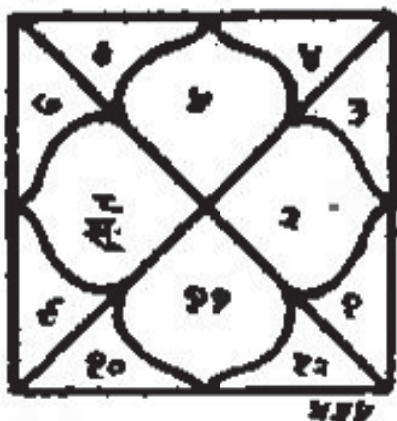


तीसरे भाव में मङ्ग शुक्र की तुला राशि पर स्थित बीच से सूर्य के प्रभाव से जातकों का आई-बहिनों से वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम में कुछ कमी आती है। फिर भी वह जातक बड़ा हिम्मतवादी होता है।

सातवीं मित्तदृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है तथा वह धर्म में भी आस्था रखता है।

'सिंह' लग्न की कुम्बली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

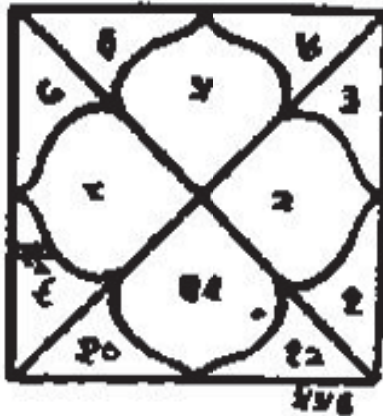


चौथे भाव में मिल मंगल की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन आदि का सुख प्राप्त होता है तथा शरीर सुखी रहता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण जातक का पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक प्रयत्न करने पर ही सफलता मिलती है।

'सिंह' लग्न को कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : पंचमभाव : सूर्य

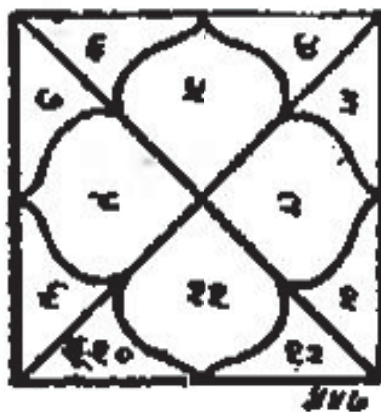


पाँचवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को विद्या, वृद्धि तथा संतान के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है। यह आत्मज्ञानी तथा उग्र मस्तिष्क वाला होता है।

सातवीं मित्तदृष्टि से एकादशभाव को देखने से वृद्धि-बल द्वारा पर्याप्त आमदनी होती है। ऐसा व्यक्ति अहंकारी भी होता है।

'सिंह' लग्न को कुण्डली से 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

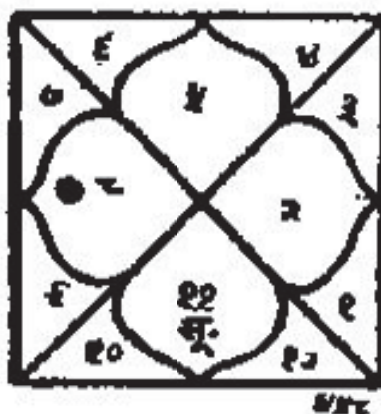


छठे भाव में शत्रु शनि को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है तथा कठिनाइयों से घबराना नहीं है। शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा रोग एवं परतंत्रता के योग भी बनते हैं।

सातवीं मित्तदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थान के संबंध से भी लाभ होता है।

'सिंह' लग्न को कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

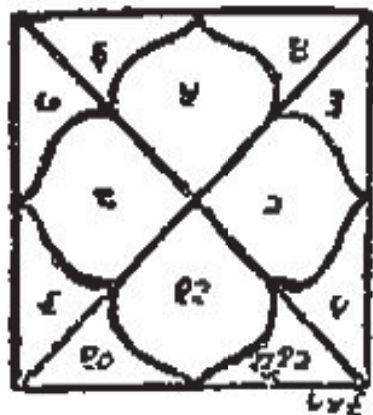


सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का स्त्री-पक्ष से वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है।

सातवीं दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति एवं स्वाभिमान में वृद्धि होती है और वह अपने यत्न का विस्तार भी करता है।

'सिंह' लग्न को कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलवशा

सिंह लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

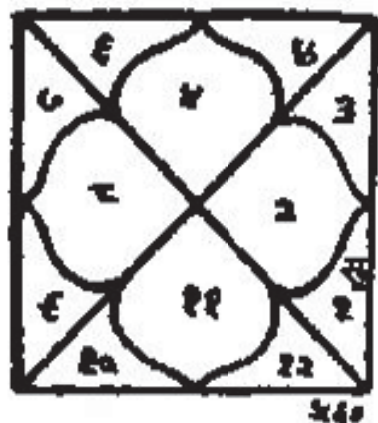


आठवें भाव में मित्तगुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के साथ वायु एवं पुरातस्व का लाभ होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है।

सातवीं दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कठिन परिश्रम द्वारा धन एवं कौटुम्बिक सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति क्रोधा स्वभाव का होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलवशा

सिंह लग्न : नवमभाव : सूर्य

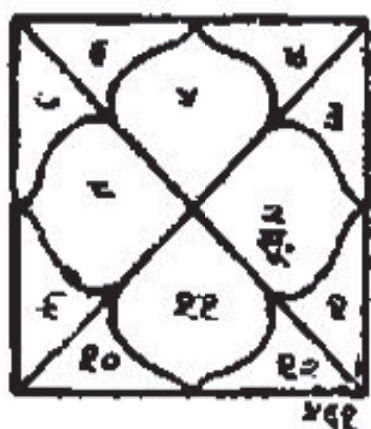


नवें भाव में मित्त मंगल को राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक की भाग्य-शक्ति प्रबल होती है तथा वर्ष में भी अभिरुचि बनी रहती है।

सातवीं वीच दृष्टि से तृतीयभाव की देखने से जातक को भाई-बहिनों से असन्तोष रहता है तथा पराक्रम के बारे में ऐसा व्यक्ति लापरवाह रहता है। स्थूल शरीर वाला भाग्यवान तथा ईश्वर-भक्त होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलवशा

सिंह लग्न : दशमभाव : सूर्य

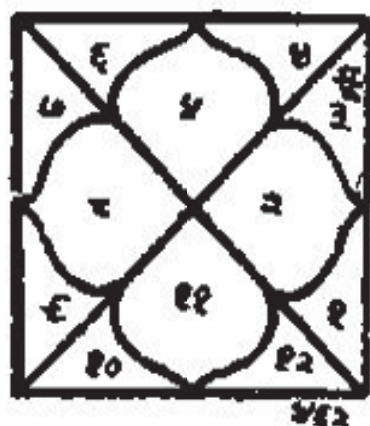


दसवें भाव में शतु शुक्र की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का पिता से वैमनस्य रहता है, परन्तु राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति एवं मान-प्रतिष्ठा का लाभ होता है।

सातवीं मित्त-दृष्टि से चतुर्थभाव की देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन का विशेष सुख भी मिलता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

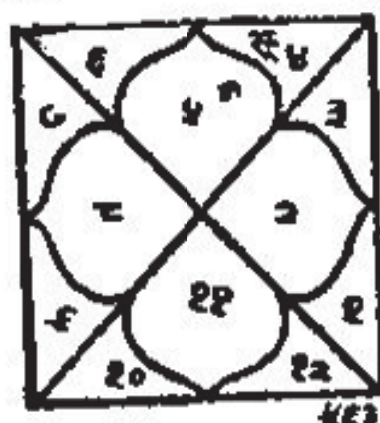
सिंह लग्न : एकादशभाव : सूर्य



बारहवें भाव में मित बुध की राशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है तथा शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है। सातवीं मित-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का सुख भी दृष्टेय मिलता है। ऐसे व्यक्ति की भाणी में कुछ उपता रहती है और वह स्वार्थी भी होता है -

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित सूर्य का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : सूर्य



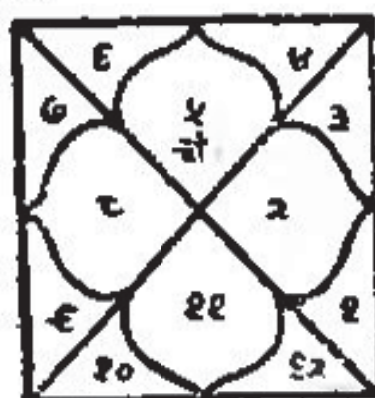
बारहवें भाव में मित चन्द्रमा की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल बना रहता है। बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से लाभ होता है तथा कर्ष पर प्रभाव बना रहना है। जातक भ्रमण का शौकीन भी होता है।

सातवीं मित-दृष्टि से षष्ठभाव की देखने से मनुष्य पर प्रभाव बना रहता है तथा अनेक कठिनाइयों के बावजूद शत्रुओं पर विजय पाता है।

'सिंह' लग्न में 'चन्द्रमा'

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

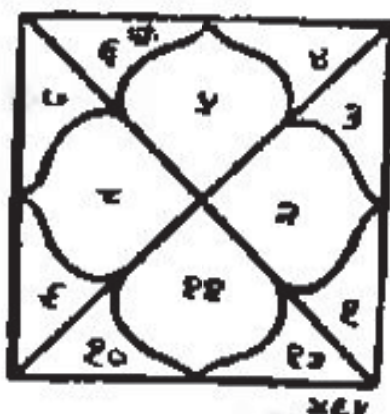


पहले भाव में मित सूर्य की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शरीर से दुर्बल, भ्रमण-प्रिय तथा कुछ चिन्तित बना रहने वाला होता है।

सातवीं मित-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय से क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों तथा हानि का सामना पड़ता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

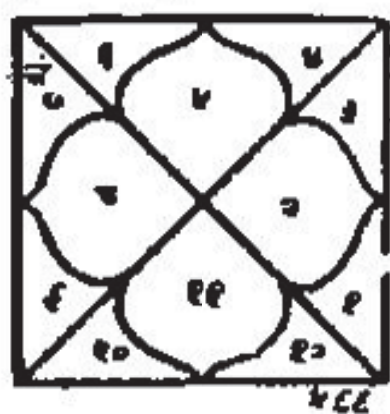


दूसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की धन की अल्प हानि होती है। उसका रहन-सहन ठाठदार होता है। कुटुम्ब से भी कुछ असन्तोष रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ तथा सुख मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु-वृद्धि होती है तथा पुरातस्व का भी कुछ कमी के साथ लाभ होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

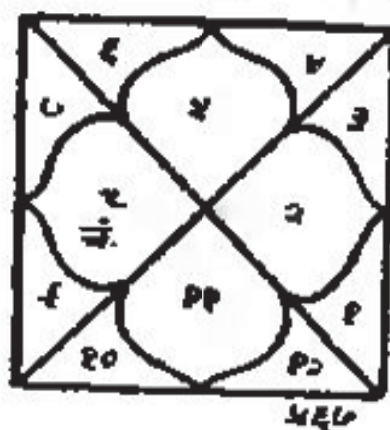


तीसरे भाव में सामान्य मित्र शुक की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव की देखने से भाग्य एवं धर्म को उन्नति होती है तथा खर्च आराम से चलता रहता है। अन्य लोगों की दृष्टि में ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी समझा जाता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

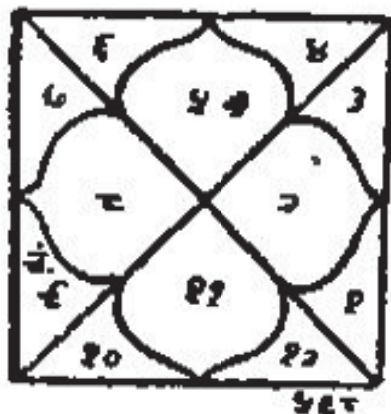


चौथे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा धवन आदि का सुख कुछ कष्ट के साथ अल्प परिमाण में मिलता है तथा घरेलू खर्चों से परेशानी धनी रहती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सुख तथा सफलता की प्राप्ति होती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

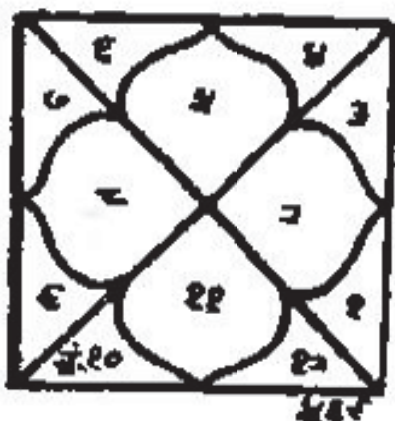


पाँचवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में बाधाएँ रहती हैं। खर्च को चिन्ता से मस्तिष्क परेशान भी रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से जातक बुद्धि-बल से धामदनी के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है, परन्तु उसे कुछ असन्तोष भी बना रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

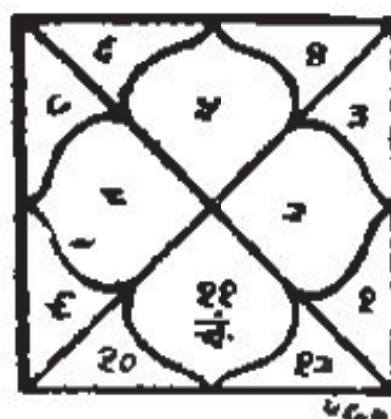


छठे भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष द्वारा उत्पन्न झगड़ों तथा रोग आदि में खर्च अधिक करना पड़ता है, जिससे मन दुःखी बना रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादशभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा आय कम रहते हुए भी अधिक खर्च होता है। वह खर्च से द्वारा ही शत्रु-पक्ष में सफलता भी पाता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

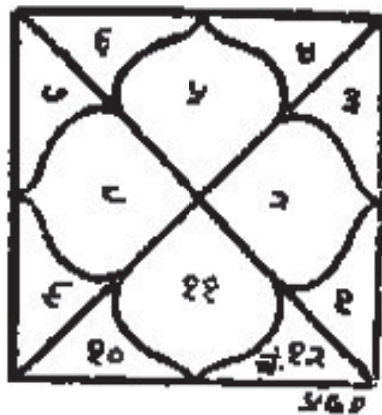


सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है तथा धरेलू खर्च चलाने में कठिनाई आती है। बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर दुर्बल तथा रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलारेण

सिंह लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

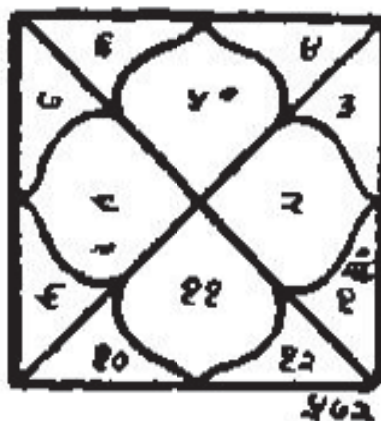


आठवें भाव में मित गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्व के क्षेत्र में हानि तथा चिन्ता के अवसर उपस्थित होते हैं। पेट में विकार रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

सातवीं मितदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन की भी कुछ हानि होती है तथा कौटुम्बिक सुख भी अल्प परिमाण में प्राप्त होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली से 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलारेण

सिंह लग्न : नवमभाव : चन्द्र

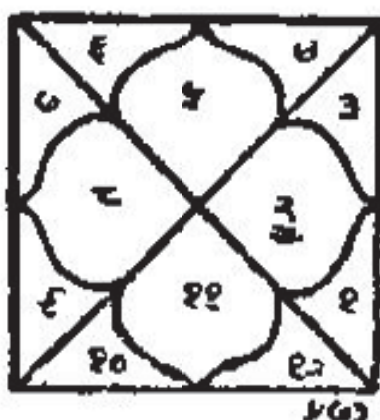


नवें भाव में मित मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य की वृद्धि होती है, परन्तु धर्म-पालन में कमी रहती है।

सातवीं सम-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में भी कुछ कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति मानसिक दुर्बलता का शिकार भी होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलारेण

सिंह लग्न : दशमभाव : चन्द्र

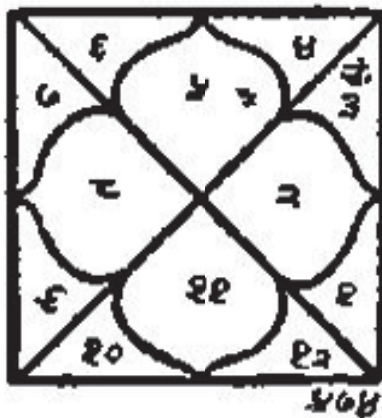


दसवें भाव में सामान्य मित शुक्र की राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक पैतृक सम्पत्ति का अधिक व्यय करता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुटिपूर्ण सफलताएँ प्राप्त करता है।

सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से ज़ाता, भूमि तथा ध्वन के बुध में कमी आती है तथा खर्च की अधिकता से मन अशान्त बना रहता है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : चन्द्र

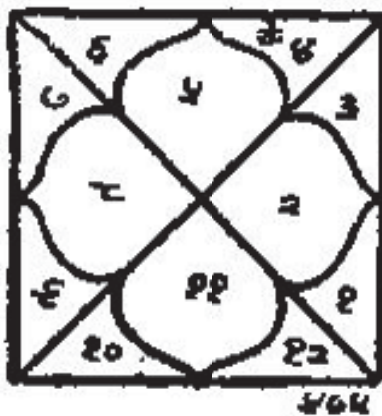


ग्यारहवें भाव में मित बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु खर्च भी अधिक बना रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में भी कुछ कमी रहती है। बाहरी तौर पर ऐसा जातक घनी समझा जाता है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : चन्द्र



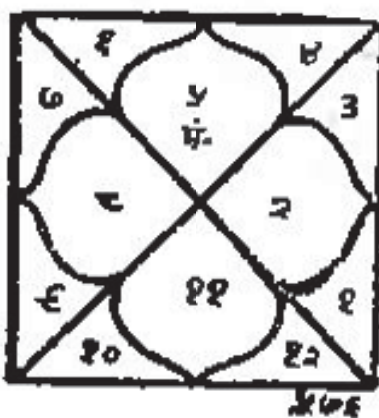
बारहवें भाव में स्वराशि में स्थित व्ययेस चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से यश, सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव की देखने के कारण जातक अपने मनोबल तथा खर्च के बल पर शत्रु-पक्ष पर विजय पाता तथा प्रभाव स्थापित करता है, परन्तु अगड़े-मुकद्दमे आदि में खर्च बहुत होता है।

‘सिंह’ लग्न में ‘मंगल’

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

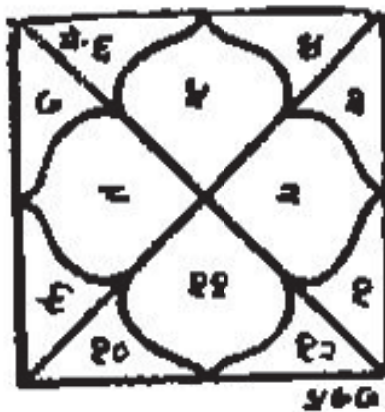
सिंह लग्न : प्रथमभाव : मंगल



पहले भाव में मित सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। वह भाग्यवान्, धर्मात्मा तथा ईश्वर-भक्त भी होता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि के चतुर्थभाव को देखने के कारण भाता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ आती हैं। आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ प्राप्त होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

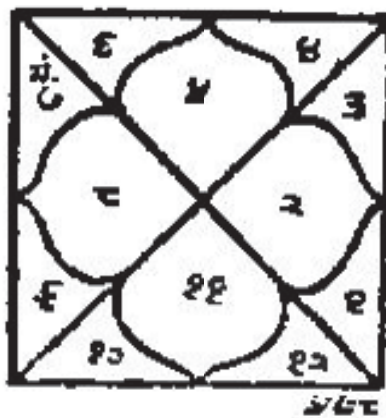
सिंह लग्न : द्वितीयभाव : मंगल



दूसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। परन्तु पाता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। चौथी मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व को वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि के नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की भी वृद्धि होती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्न : तृतीयभाव : मंगल

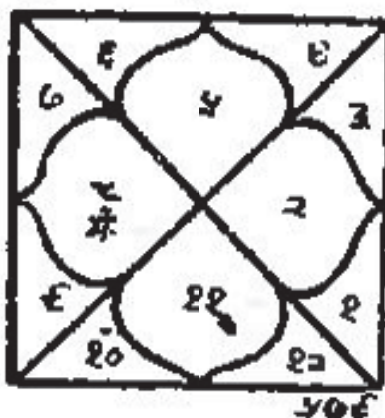


तीसरे भाव से शत्रु शुक्र को राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। चौथी उच्चदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य को उन्नति होती है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सहयोग, सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली से 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

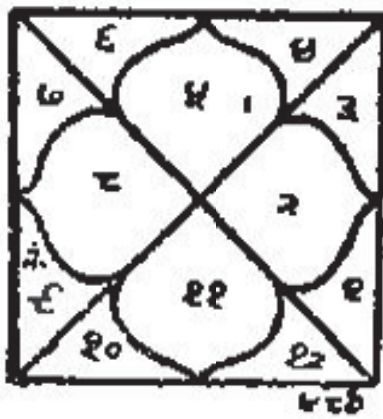
सिंह लग्न : चतुर्थभाव : मंगल



चौथे भाव में स्वराशि स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भूमि, भवन एवं माता का सुख प्राप्त होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता तथा लाभ के क्षेत्र में सहयोग एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी को खूब वृद्धि होती रहती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलान्देश

सिंह लग्न : पंचमभाव : मंगल

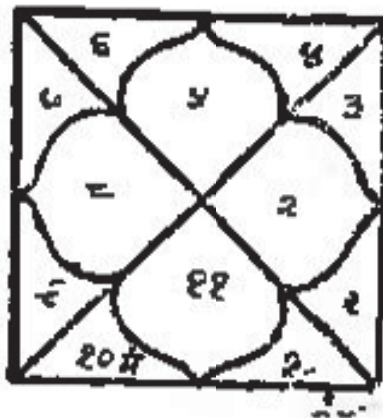


पांचवें भाव में मित्र गुरु को राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान का लाभ होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातस्व का लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव से देखने से आमदनी खूब रहती है। आठवीं नीच-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी सम्बन्ध भी निर्बल रहते हैं।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलान्देश

सिंह लग्न : षष्ठभाव : मंगल

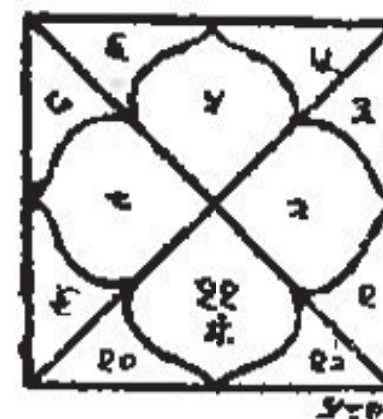


छठे भाव में शत्रु शनि को राशि पर स्थित उच्च मंगल के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है तथा भाग्य को शक्ति से सुख प्राप्त होता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म को उन्नति होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी सम्बन्ध कम-और रहते हैं। आठवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक प्रभाव, सौन्दर्य एवं सुख को वृद्धि होती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलान्देश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : मंगल



सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के साथ स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। चौथी शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से कुछ मतभेद रहता है परन्तु पिता, राज्य तथा व्यवसाय द्वारा लाभ एवं सफलता को प्राप्ति भी होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं सौभाग्य का लाभ होता है।

आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव की देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्न : अष्टमभाव : मंगल

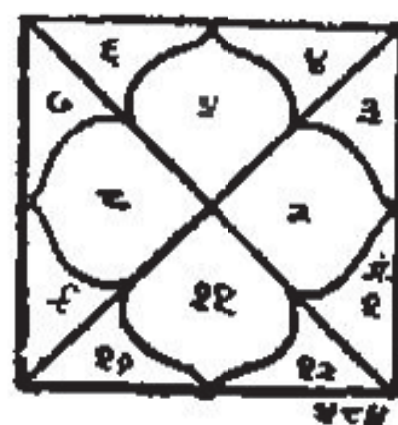


आठवें भाव में मित्त गुरु को राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व को शक्ति का लाभ होता है। परन्तु भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कमी रहती है। चौथी मित्र-दृष्टि से एकादश-भाव को देखने से आमदनी खूब होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीया भाव को देखने से कौटुम्बिक सुख तथा मन का लाभ भी होता है।

आठवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। आठवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से जातक सुखी जीवन बिताता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्न : नवमभाव : मंगल

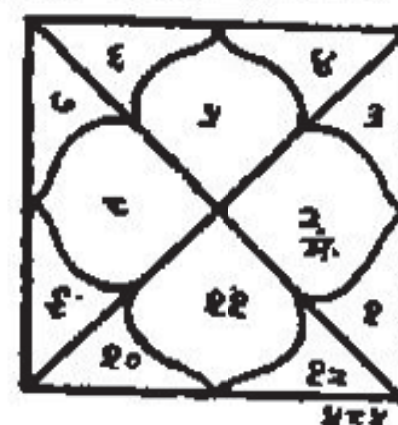


नवें भाव में स्वराशि-स्थित मंगल के प्रभाव से जातक से भाग्य तथा धर्म को उन्नति होती है। चौथी नीच दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च की अधिकता से कष्ट प्राप्त होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी परेशानी होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन का सुख असन्तोषजनक रहता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा धन का दृष्ट सुख प्राप्त होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्न : दशमभाव : मंगल

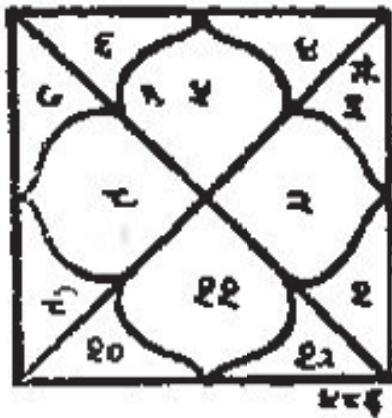


दसवें भाव में शत्रु शुक्र को राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति, सफलता एवं सम्मान के योग प्राप्त होते हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव तथा सौभाग्य में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा धन का आदि का सुख मिलता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान एवं विद्या-वृद्धि के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : मंगल



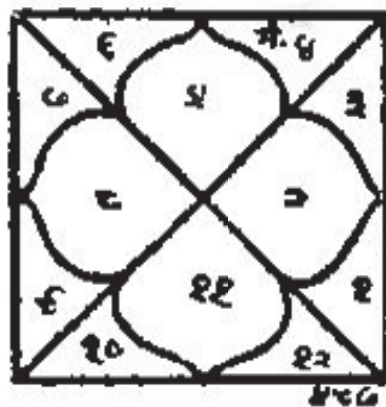
बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आय में वृद्धि होती है तथा भाता, भूमि, भवन आदि का सुख भी मिलता है। चौथी मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, वृद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आठवीं उच्चदृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शत्रु तथा रोमों पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा

प्रभावशाली, धनी तथा शत्रुजयी होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : मंगल



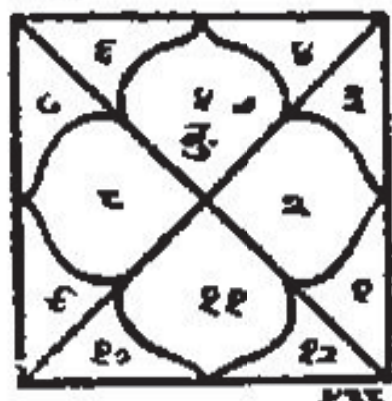
बारहवें भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को खर्च के बारे में कठिनाई उठानी पड़ती है तथा बाहरी सम्बन्धों से कष्ट मिलता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में भी हानि पहुँचती है। चौथी शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं उच्चदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुओं पर विजय मिलती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है।

'सिंह' लग्न में 'बुध'

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : बुध

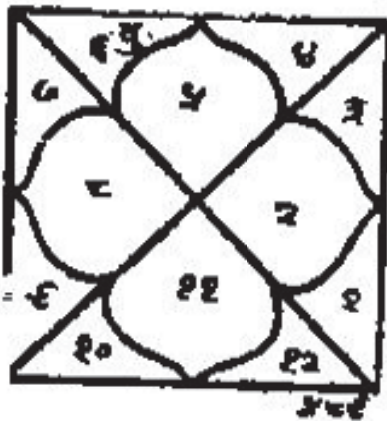


पहले भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति विवेकी, दानी, भोगी तथा धनी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से व्यवसाय तथा स्त्री के पक्ष में भी उन्नति, सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव : बुध

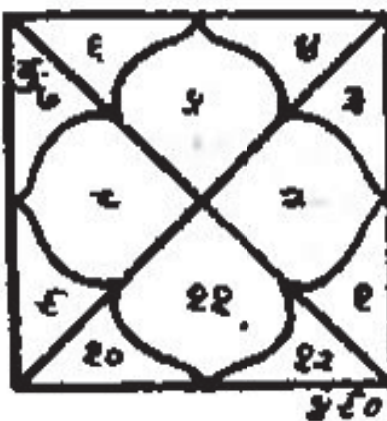


दूसरे भाव में स्वराशि स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख को वृद्धि होती है। भाई-बहिनों का यथेष्ट सुख भी मिलता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के बारे में अनेक संकटों तथा चिन्ताओं का शिकार बनना पड़ता है। पेट को बीमारी रहती है तथा दैनिक जीवन भी असन्तोषजनक बना रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली से 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : तृतीयभाव : बुध



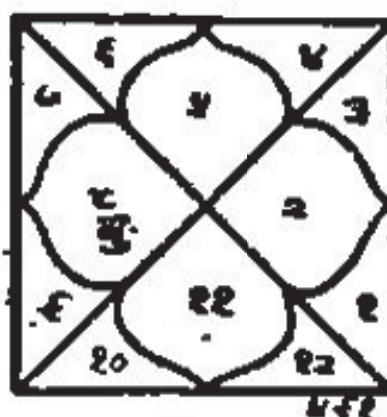
तीसरे भाव में मित्र शुक्र को राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य को उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता है।

ऐसा व्यक्ति धनी, धर्मात्मा, पराक्रमी, यशस्वी तथा सुखी होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : चतुर्थभाव : बुध

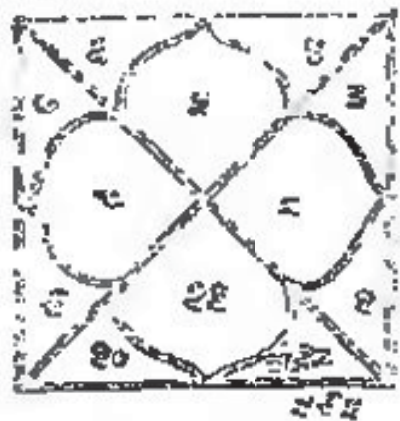


चौथे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है तथा धन का संचय होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, व्यवसाय तथा पिता के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा लाभ मिलता है।

सिंह लग्न की कुम्हली के अष्टमभाव स्थित बुध का फलदेय

सिंह लग्न : अष्टमभाव : बुध

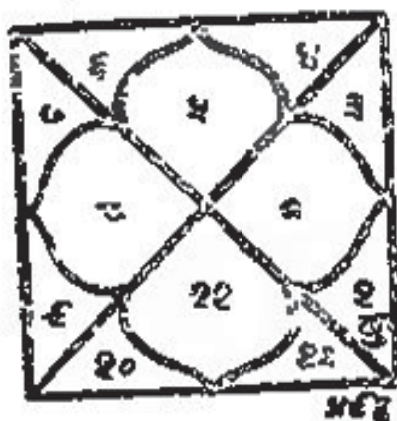


आठवें भाग में मिन बुध की राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक की आयु-पक्ष में संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि भी होती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन की कमी रहते हुए भी दैनिक खर्च-ई. पूति होती है तथा कौटुम्बिक सुख चिन्तनीय रहता है।

सिंह लग्न की कुम्हली के नवमभाव स्थित बुध का फलदेय

सिंह लग्न : नवमभाव : बुध

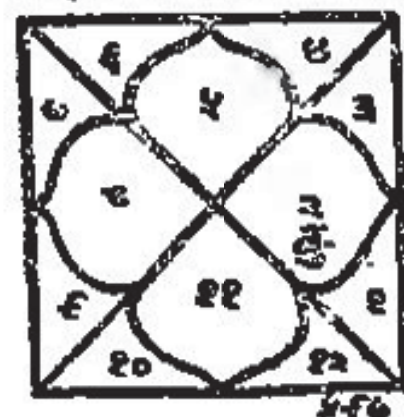


नवें भाग में मिन मंगल भी राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। वह धनी, सुखी, ईमानदार, उदार, सज्जन तथा ईश्वर-भक्त होता है।

सातवीं मिन-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। ऐसा जातक बड़ा यशस्वी होता है तथा निरन्तर उन्नति करता रहता है।

सिंह लग्न की कुम्हली के दशमभाव स्थित बुध का फलदेय

सिंह लग्न : दशमभाव : बुध

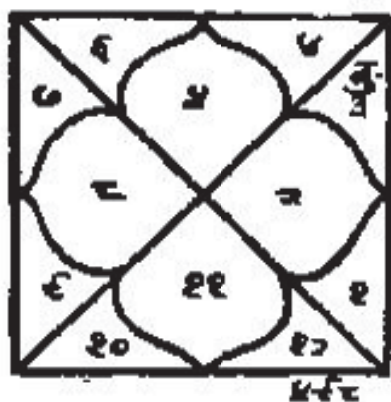


दसवें भाग में मिन शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभावसे जातक की पिता, राज्या व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलताएँ मिलती हैं तथा धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

सातवीं मिन-दृष्टि में चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि तथा भूकान आदि का सुख भी मिलता है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : बुध

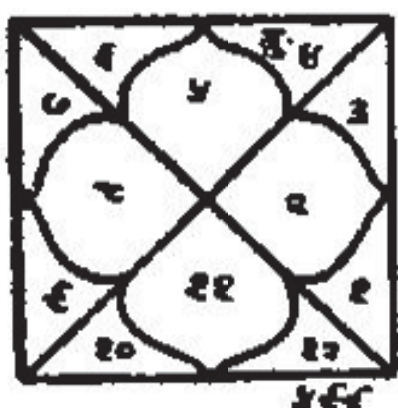


ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित गुरु से प्रभाव से जातक को यथेष्ट लाभ होता है तथा धन, यश एवं सुख को वृद्धि होती रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्वी, विद्वान् तथा सन्ततिवान् होता है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : गुरु



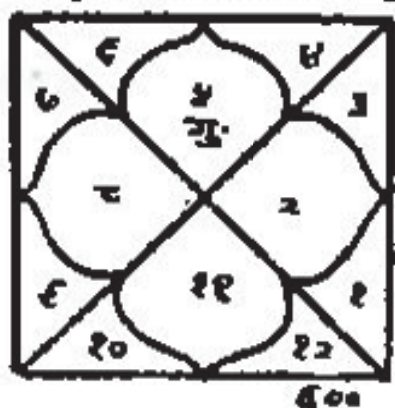
बारहवें भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शत्रु-पक्ष में धन तथा विवेक द्वारा सफलता प्राप्त होती है, परन्तु झगड़े-टंटों के कारण उसे हानि भी उठानी पड़ती है।

‘सिंह’ लग्न में ‘गुरु’

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली से ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : गुरु



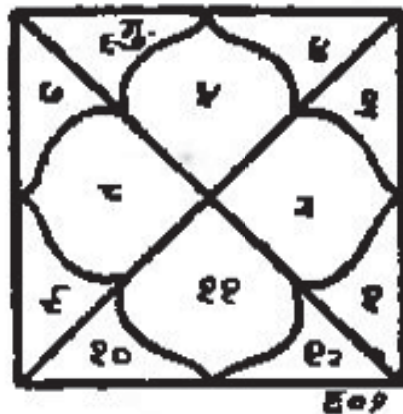
पहले भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित गुरु से प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव तथा दीर्घायु की प्राप्ति होती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव की देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है। नवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव की देखने से भाग्य तथा

धर्म की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव : गुरु



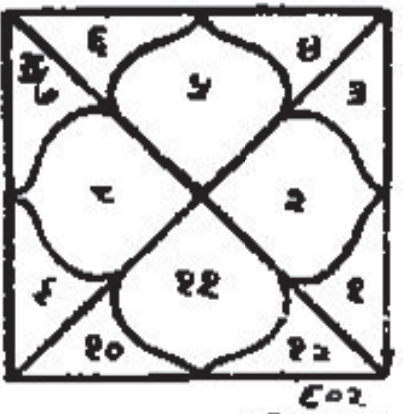
दूसरे भाव में मित्त बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन तथा कौटुम्बिक सुख की प्राप्ति होती है, परन्तु सन्तान के पक्ष से कुछ कष्ट मिलता है। पाँचवीं नीच-दृष्टि से षष्ठभाब को देखने से शत्रु-पक्ष तथा जनसाल में हानि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातस्व को बुद्धि होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से मतभेद

रहता है तथा व्यवसाय एवं राजकीय क्षेत्र में असन्तोष बना रहता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

सिंह लग्न : तृतीयभाव : गुरु



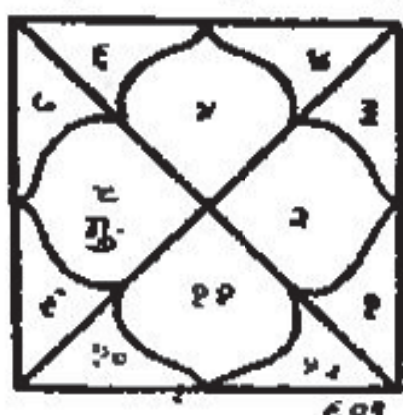
तीसरे भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का भाई-बहिनों से मतभेद रहता है, परन्तु पराक्रम की बुद्धि होती है। सन्तान का सुख कुछ कठिनाई से मिलता है तथा आयु का लाभ होता है।

पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं मित्त-दृष्टि से नवमभाव की देखने से बुद्धि बल से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। नवीं मित्त-दृष्टि से

एकादशभाव को देखने से लाभ खूब होता है। ऐसा जातक प्रत्येक क्षेत्र में साहसी होता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

सिंह लग्न : चतुर्थभाव : गुरु



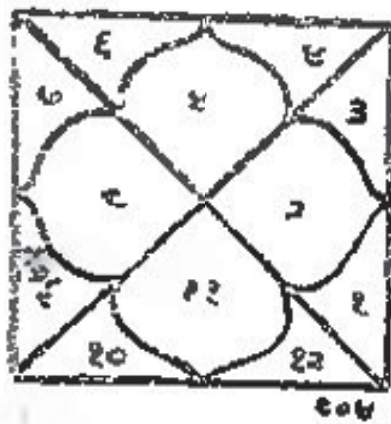
चौथे भाव में मित्त मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है, परन्तु विद्या एवं सन्तान के पक्ष में लाभ होता है।

पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि के अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातस्व का लाभ होता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय से पूर्ण लाभ नहीं होता।

नवीं उच्च दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ एवं सुख मिलता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'चंद्रमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : चंद्रमभाव : गुरु



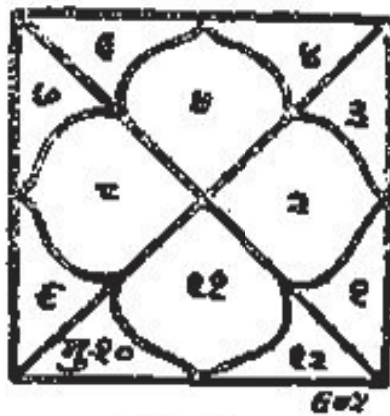
पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित बृह के प्रभाव से जातक की विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में सफलता मिलती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। साथ ही पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से आमदनी अच्छी रहती है। नवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने में शारीरिक सुख, मनोबल, यश, सुख

तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है, परन्तु गुरु के अष्टमेश होने के कारण सुख-दुःख दोनों का अनुभव होता रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली से 'षष्ठमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : षष्ठमभाव : गुरु



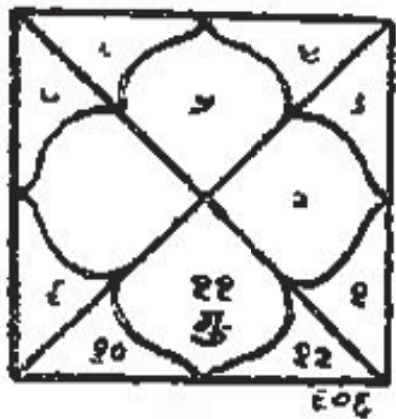
छठे भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष से चिन्ता रहती है। विद्या तथा सन्तान का पक्ष भी दुर्बल रहता है। पुरातत्त्व की हानि होती है तथा दैनिक जीवन के सुख में भी कमी आती है।

पाँचवीं दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है। सातवीं उच्च दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी

सम्बन्धों से श्रेष्ठ लाभ होता है तथा व्यय अधिक रहता है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब की सामान्य वृद्धि होती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : गुरु



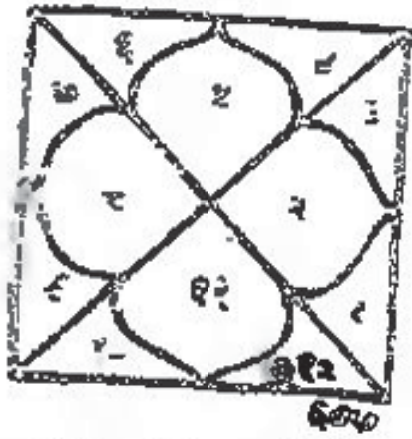
सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का स्त्री से वैमनस्य रहता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का अनुभव होता है। विद्या तथा सन्तान के पक्ष में सामान्य सफलता मिलती है। आयु भी वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ मिलता है।

पाँचवीं दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आर्थिक लाभ अच्छा रहता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती

है। नवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की कुछ वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से वैमनस्य रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : अष्टमभाव : गुरु

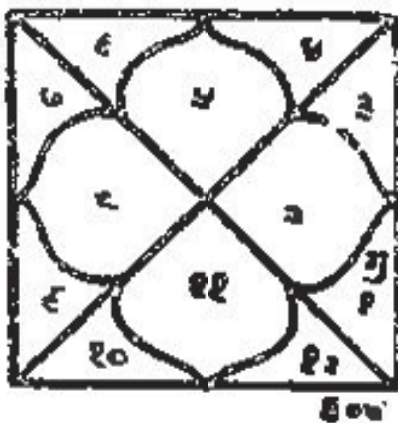


आठवें भाग में स्वराशि-स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व में वृद्धि होती है, परन्तु सन्तान के पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या, बुद्धि में भी कुछ कमी रहती है।

पाँचवीं उच्च दृष्टि से द्वारकभण्ड को देखने से धन अधिक रहता है तथा बाहरी स्वार्थों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। सातवीं मित्र दृष्टि द्वितीयभाव की देखने से जातक धन-बुद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा कुटुम्ब का सामान्य

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : नवमभाव : गुरु



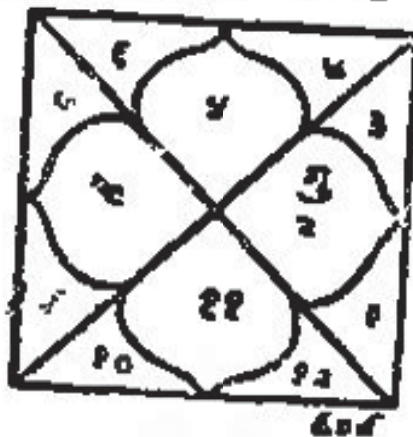
सुख मिलता है। नवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमियों के साथ सफलता मिलती है।

नवें भाग में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। पुरातत्त्व के क्षेत्र में सफलता मिलती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक प्रभाव, सुख एवं मनोबल को प्राप्तिहोती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहनों से असन्तोष रहता है, परन्तु पराक्रम बढ़ता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है, परन्तु गुरु के अष्टमेश होने के कारण हर क्षेत्र में कुछ कमी का अनुभव भी अवश्य होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : दशमभाव : गुरु



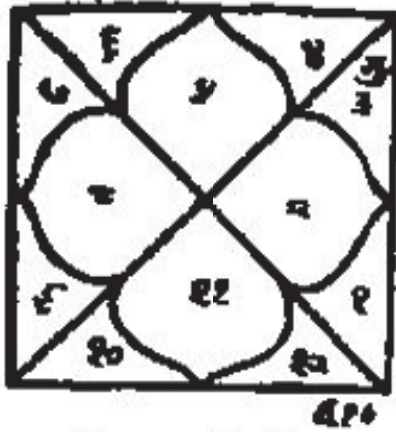
दसवें भाग में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता-पक्ष में हानि तथा राज्य के पक्ष में सम्मान मिलता है। विद्या, बुद्धि, सन्तान तथा पुरातत्त्व को शक्ति का लाभ होता है।

नौवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख मिलता है। धनी नीच-दृष्टि से षष्ठभाव से देखने से शत्रु-पक्ष से परेशानी होती

है तथा झगड़े-झंझटों के कारण चिताएँ घेरे रहती हैं।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : गुरु



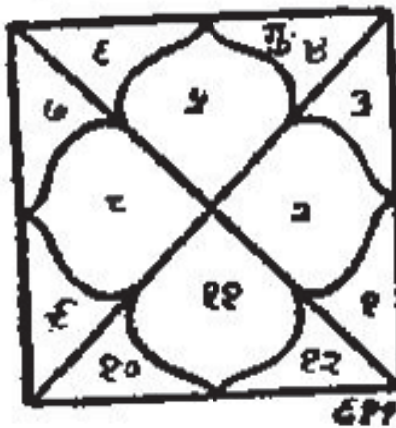
बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयदनी बढ़ती है। वायु तथा पुरातत्त्व की भी वृद्धि होती है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव की देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से मतभेद रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव की देखने से सन्तान, विद्या एवं बुद्धि का लाभ मिलता

है। नवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ आती रहती हैं।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : गुरु



बारहवें भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि में स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से लाभ मिलता है। विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में कृतिपूर्ण सफलता मिलती है।

नौववीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि, भवन आदि का सुख प्राप्त होता है। सातवीं नीच-दृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शत्रु-पक्ष से परेशानी घनी रहती है। नवीं दृष्टि से

स्वराशि में अष्टमभाव की देखने से आयु की विशेष शक्ति मिलती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

‘सिंह’ लग्न में ‘शुक्र’

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली से ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

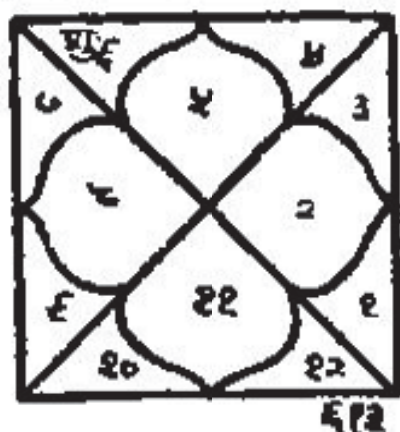


पहले भाव में शत्रु पूर्ण की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की शारीरिक सौन्दर्य, शृंगार, यश तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है। भाई-बहिन एवं पिता से मतभेद रहते हुए भी सुख मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के पक्ष में सफलता मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में लाभ होता है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली से ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

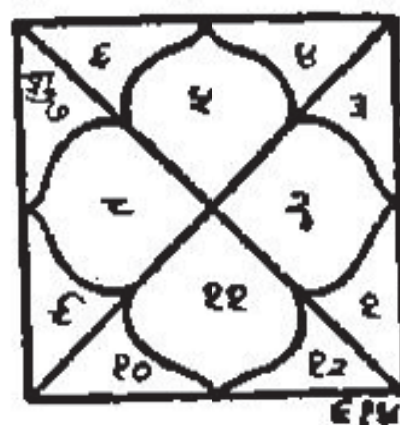


दूसरे भाव में मित बुध की राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को धन तथा कौटुम्बिक सुखअल्प मात्रा में प्राप्त होता है। पिता, व्यवसाय, राज्य तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी कमी धनी रहती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से जातक को वायु में वृद्धि होती है तथा पुरातस्व का लाभ होता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति ऐश्वर्य-कालियों जैसा जीवन व्यतीत करता है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

सिंह लग्न : तृतीयभाव : शुक्र

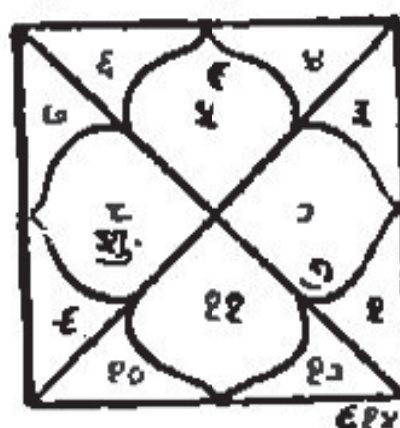


तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का शुक्र मिलता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय द्वारा भी लाभ प्राप्त होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा भाग्य तथा धर्म की वृद्धि करता है। वह बड़ा चतुर, योग्य तथा परिश्रमी भी होता है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

सिंह लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

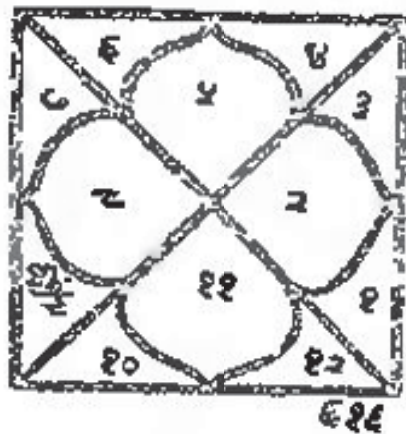


चौथे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का माता के साथ सामान्य मतभेद रहता है, परन्तु भूमि एवं भवन का लाभ प्राप्त होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, सफलता तथा यश की प्राप्ति होती है। भाई-बहिन का सुख भी ब्येष्ट मिलता है तथा रहन-सहन भी रईसों-जैसा होता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

सिंह लग्न : पंचमभाव : शुक्र



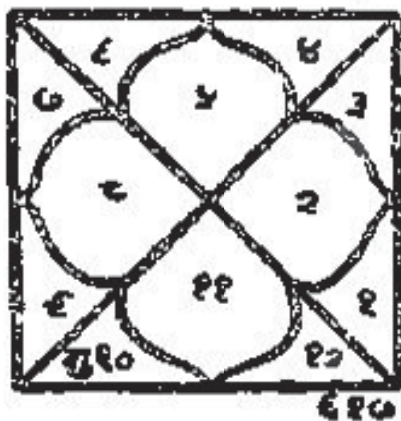
पंचवें भाव में शत्रुशुक्र की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। भाई-बहिन एवं पिता का सुख भी प्राप्त होता है। वह अपनी योग्यता एवं चतुर्य के बल पर सर्वत्र सम्मानित भी होता है।

सातवीं मिलदृष्टि से एकादशभाव को देखने से परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ होता है तथा राज्य-पक्ष में भी सम्मान, सुख एवं लाभ मिलता है। ऐसा

व्यक्ति राजनीतिक, सुधी, धनी, यशस्वी तथा चतुर होता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘षष्ठभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

सिंह लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

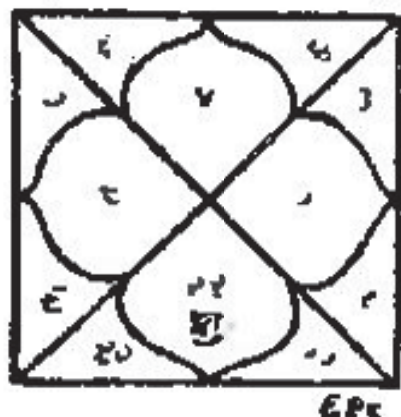


छठे भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक बड़ा चतुर, प्रभावशाली तथा शत्रुओं पर विजय पाने वाला होता है। पिता के साथ सामान्य मतभेद रहता है, परन्तु राज्य-पक्ष में उन्नति एवं सफलता मिलती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से सुख और लाभ को प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों के बल पर सफलताएँ प्राप्त करता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : शुक्र



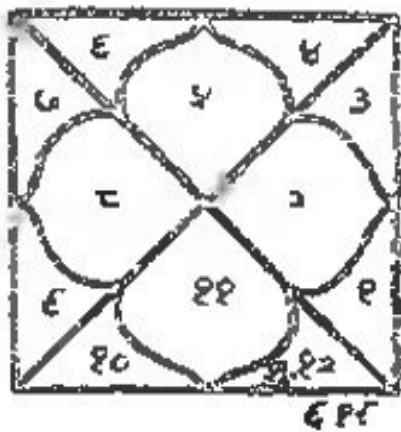
सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है तथा भाई-बहिन एवं पिता का सुख भी मिलता है। वह कुशलतापूर्वक गृहस्थी का संचालन करता है तथा यश प्राप्त करता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक को शारीरिक शक्ति, प्रभाव, मनोबल तथा

हिम्मत बूढ़ि होती है। ऐसा व्यक्ति बहादुर तथा हुकूमत करने वाला होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

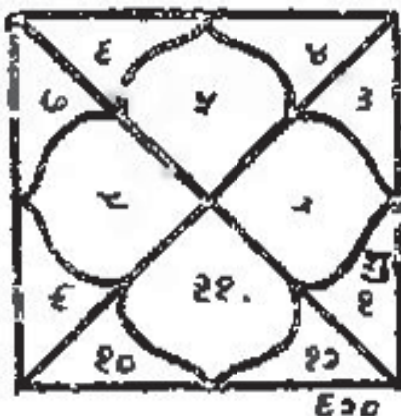


आठवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरा-तत्त्व का लाभ होता है तथा भाई-बहिन एवं पिता से सुख में कुछ वृद्धिपूर्ण सफलता मिलती है। दैनिक जीवन में वह बड़ा प्रभावशाली रहता है। राज्य-पक्ष में भी सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने के कारण धन के संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी बनी रहती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : नवमभाव : शुक्र



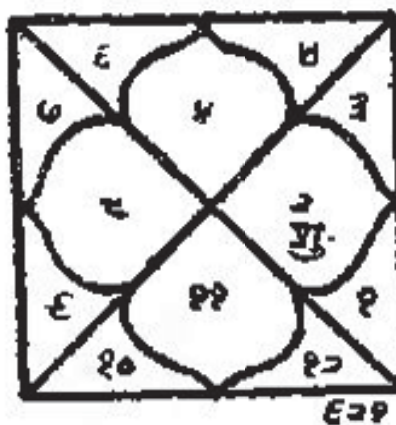
नवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के तृतीयभाव की देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति सुधी, धनी, परिश्रमी, यशस्वी, चतुर तथा हिम्मत वाला होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : दशमभाव : शुक्र

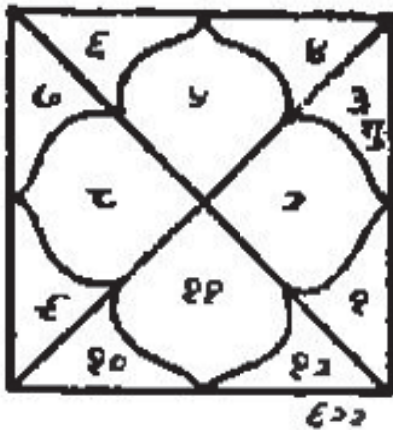


दसवें भाव में स्वराशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलताएँ मिलती हैं तथा यश, सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है। भाई-बहिनों का सुख भी पर्याप्त रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, मकान तथा भूमि का अच्छा सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति चतुर, प्रभावशाली, परिश्रमी तथा भाग्यवान् होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : शुक्र



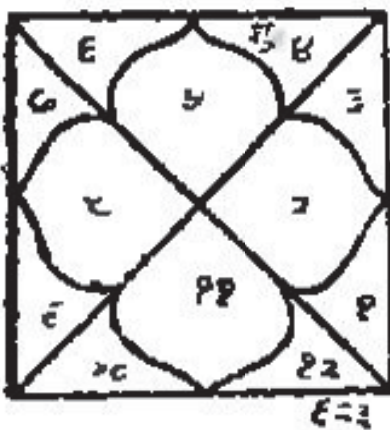
ग्यारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी में खूब वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन एवं पिता का श्रेष्ठ सुख भी मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का भी विशेष लाभ होता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी वाणी द्वारा सबको प्रभावित करने वाला, सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : शुक्र



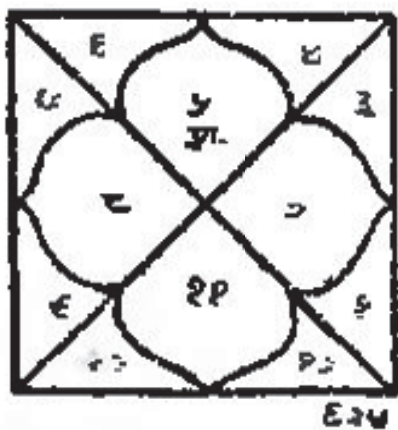
बारहवें भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थान के सम्बन्ध से लाभ होता है। पिता तथा भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव की देखने के कारण जातक शत्रु-पक्ष में चातुर्य द्वारा प्रभावशाली बना रहता है तथा अपनी हिम्मत से सभी झगड़ों में विजय प्राप्त करता है।

'सिंह' लग्न में 'शनि'

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : शनि

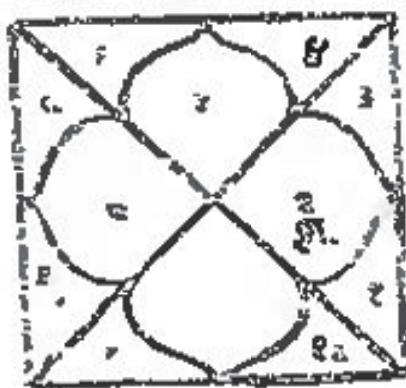


पहले भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की शारीरिक कष्ट, रोगादि होते हैं, परन्तु शत्रु-पक्ष पर कुछ प्रभाव बना रहता है। तीसरी उच्च-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के सप्तमभाव की देखने से कुछ कठिन-इयों के साथ स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के लाभ, यश तथा सुख प्राप्त होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलविशेष

सिंह लग्न : पंचमभाव : शनि

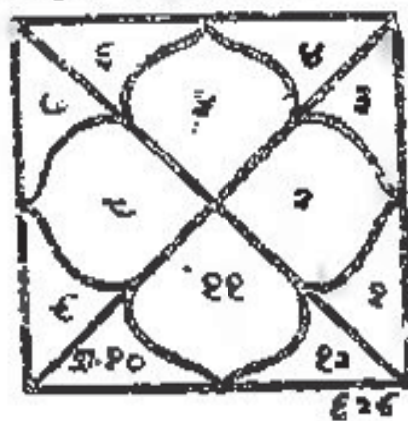


सातवें भाव में शनि बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को विद्या, वृद्धि एवं सत्ता के पक्ष में कुछ परेशानी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यदमाय में सुख मिलता है। स्त्री बुद्धिमती होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से धन में वृद्धि होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन की वृद्धि होता है तथा सामान्य कौटुम्बिक सुख भी मिलता है। ऐसा जातक बड़ा विपयी होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलविशेष

सिंह लग्न षष्ठभाव : शनि

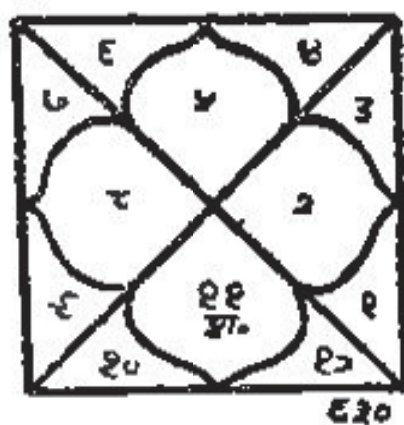


छठे भाव में स्वराशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभावी रहता है तथा ननसाल से भी शक्ति प्राप्त करता है। दैनिक खर्च के संचालन में तथा स्त्री-पक्ष से कुछ असन्तोष रहता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है, परन्तु आयु के विषय में कुछ अशान्ति रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक होता है, जिससे परेशानी रहती है। दसवीं उच्चदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति हिम्मत से कठिनाइयों पर विजय पाता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलविशेष

सिंह लग्न : सप्तमभाव : शनि

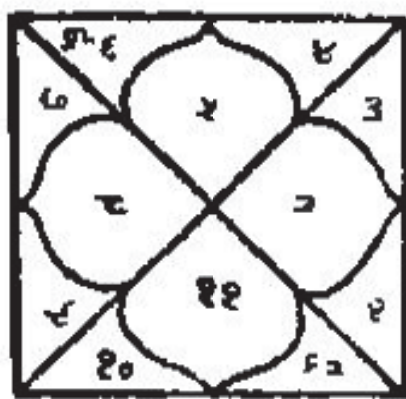


सातवें भाव में स्वराशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष तथा दैनिक व्यवसाय में कठिनाइयाँ बनी रहती हैं। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। तीसरी नीचदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की कुछ हानि होती है तथा यश में कमी आती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं मानसिक शक्ति का हानि होता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में भी कमी आ आती है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव : शनि



६२४

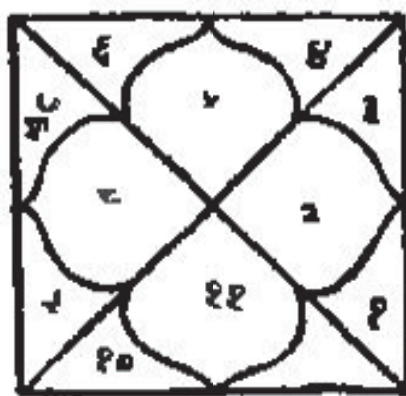
दूसरे भाव में मित्र दूस की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के क्षेत्र में हानि-लाभ दोनों की प्राप्ति होती है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बाधाएँ आती हैं। तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के विषय में असन्तोष रहता है। दसवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से

आमदनी में वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन सुख-दुःखपूर्ण बना रहता है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

सिंहलग्न : तृतीयभाव : शनि



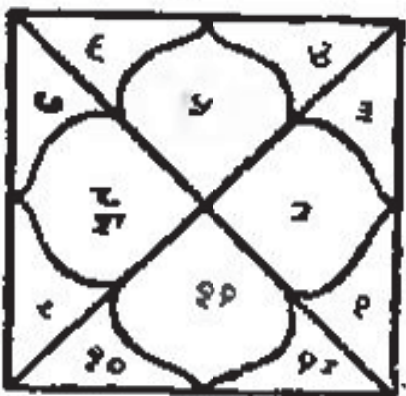
६२६

तीसरे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के प्रभाव तथा पराक्रम में बहुत वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा स्त्री-धर्म पर विशेष प्रभाव घना रहता है। दैनिक आमदनी भी अच्छी रहती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ रहती हैं।

सातवीं नीचदृष्टि से नवम भाव की देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी आती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से धर्म अधिक रहता है, जिसके कारण परेशानी भी रहती है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

सिंहलग्न : चतुर्थभाव : शनि



६२७

चौथे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में वृद्धिपूर्ण सफलता मिलती है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी असन्तोष रहता है।

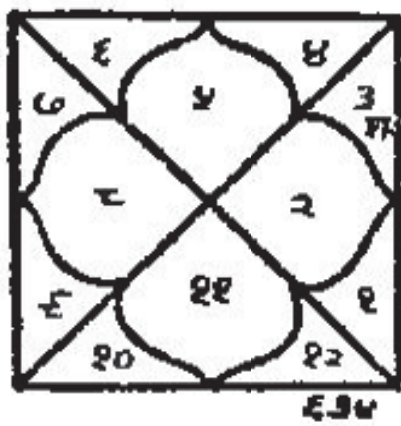
तीसरी दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव की देखने से शत्रु पक्ष पर प्रभाव रहता है, परन्तु कुछ कठिनाइयों के साथ शत्रुओं पर विजय मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता,

राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। दसवीं दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शरीर में रोग रहता है तथा सौन्दर्य में कुछ कमी आती है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : शनि

ब्याह्रवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित



शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है। शत्रु-पक्ष से भी विशेष लाभ होता है। कुछ परेशानियों के साथ स्त्री का सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी अच्छी सफलता मिलती है।

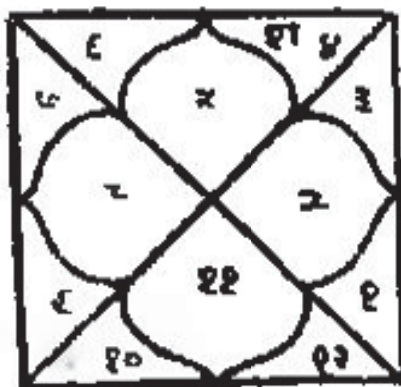
तीसरी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा रोग का शिकार बनना पड़ता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव की देखने से सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती

है। दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से पुरातत्त्व में कमी आती है तथा आयु के विषय में भी चिन्ताएँ बढ़ आती हैं।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : शनि

बारहवें भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर



स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी संबंधों से कुछ लाभ होता है। शत्रुपक्ष से परेशानी भी मिलती है।

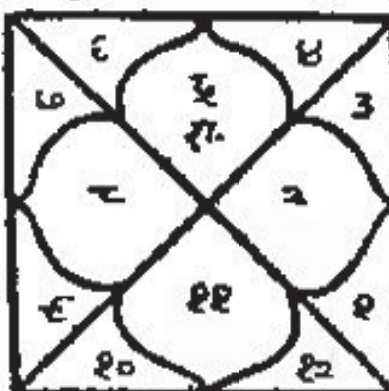
तीसरी मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन-जन को वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव की देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। दसवीं नीच-दृष्टि से नवमभाव की देखने से भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म की भी हानि होती है। ऐसा व्यक्ति स्त्री-पक्ष तथा व्यवसाय से कष्ट पाने वाला, अपयशी तथा रोगी होता है।

‘सिंह’ लग्न में ‘राहु’

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

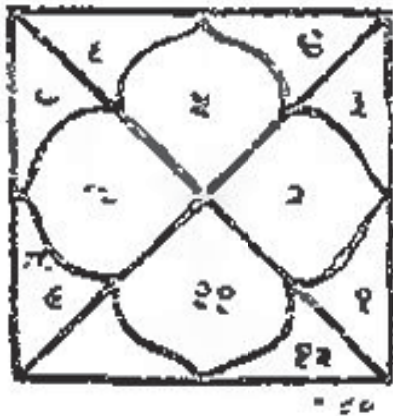
सिंह लग्न : प्रथमभाव : राहु



पहले भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा सुख में कमी आती है तथा कभी-कभी घोर कष्टों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों तथा साहस के सहारे आगे बढ़ता है तथा भीतरी चिन्ताओं से चिन्तित भी बना रहता है।

'सिंह' लग्न की कृष्णली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

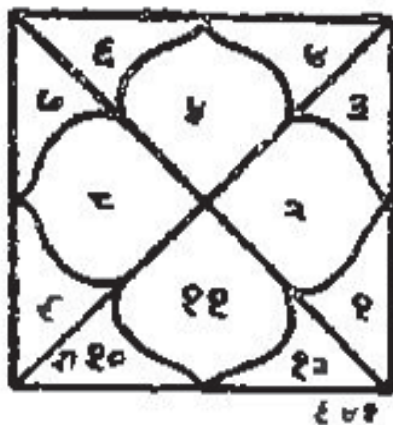
सिंह लग्न : चतुर्थभाव : राहु



चौथे भाव में शत्रु बुद्ध को राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या की कमी रहती है। वह बुद्धि-बल से अपनी अयोग्यता को छिपाने का प्रयत्न करता है। परन्तु उसकी वाणी में विनम्रता, शिष्टता एवं सत्य का अभाव रहता है। वह गुप्त व्यक्तियों से स्वार्थ-सिद्धि करता है।

'सिंह' लग्न की कृष्णली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

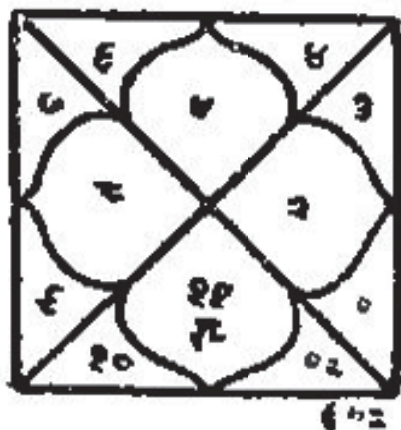
सिंह लग्न : षष्ठभाव : राहु



छठे भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक व्यक्ति-बल से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे शत्रुओं द्वारा अधिक परेशान भी किया जाता है। वह बड़ा हिम्मती, बहादुर, धैर्यवान् तथा साहसी होता है। झगड़े के समय वह अपनी बहादुरी का प्रदर्शन करता है। उसे अपनी ननसाल के पक्ष से हानि भी उठानी पड़ती है।

'सिंह' लग्न की कृष्णली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

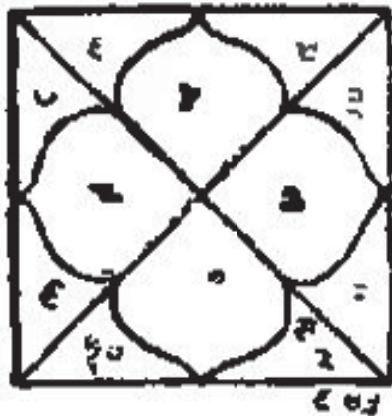
सिंह लग्न : सप्तमभाव : राहु



सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी ओर परेशानियाँ खाती रहती हैं, परन्तु वह बड़ी हिम्मत तथा धैर्य के साथ उनका मुकाबला करता है। कभी-कभी संकटों से बहुत घिर जाता है, किन्तु गुप्त व्यक्तियों द्वारा उन्हें पार कर जाता है।

सिंह लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

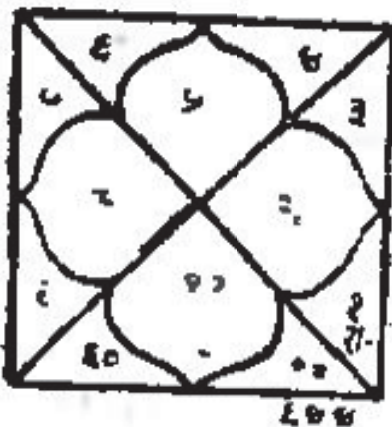
सिंह लग्न : अष्टमभाव : राहु



आठवें भाव में मरु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की अपने जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है। उसके पेट के निम्न भाग में विकार रहता है तथा उसे चिन्ताएँ एवं परेशानियाँ घेरे रहती हैं। उसे पुरातस्व की हानि भी उठानी पड़ती है।

सिंह लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

सिंह लग्न : नवमभाव : राहु

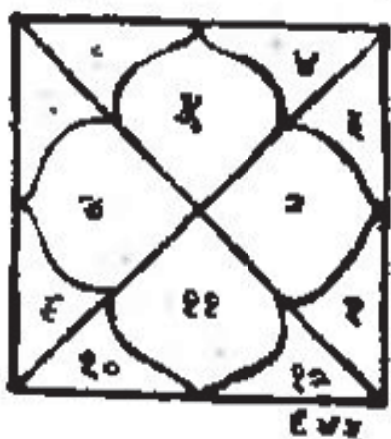


नवें भाव में मरु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भ्राम्योन्नति में अनेक बार रुकावटें आती हैं तथा परेशानियाँ उठ खड़ी होती हैं। उसे धर्म-पालन में अरुचि रहती है।

ऐसा व्यक्ति अपने भाग्य की वृद्धि के लिए अनेक प्रकार की युक्तियों का सहारा लेता है तथा धैर्यवान्, हिम्मती एवं साहसी होने के कारण परेशानियों की हटाने में कुछ सफल भी हो जाता है।

सिंह लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

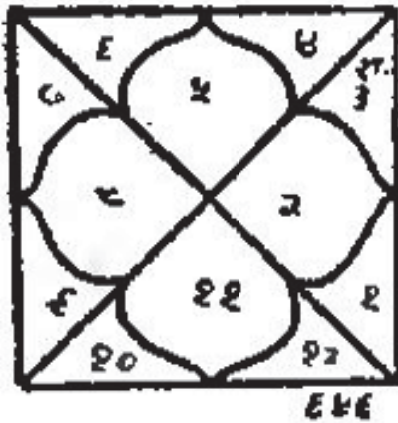
सिंह लग्न : दशमभाव : राहु



दसवें भाव में अपने मित्त शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की पिता के सुख में कमी रहती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परन्तु गुप्त युक्तियों के बल पर वह अनेक कठिनाइयों की पार कर जाता है तथा कुछ उन्नति भी प्राप्त कर लेता है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

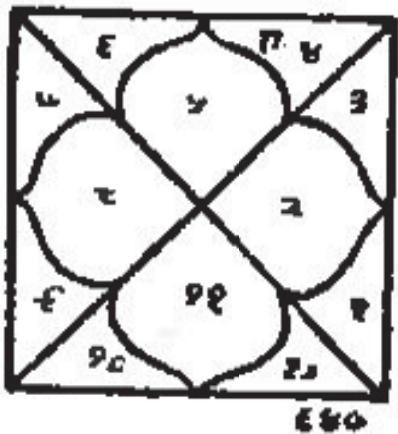
सिंह लग्न : एकादशभाव : राहु



ग्यारहवें भाव में मित्त बुध की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव के जातक की आयदनी में बहुत वृद्धि होती है तथा कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी होता है। वह अपने धर्म, साहस, परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर लाभ की बढ़ाता रहता है, परन्तु कभी-कभी उसे हानि भी उठानी पड़ती है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : राहु



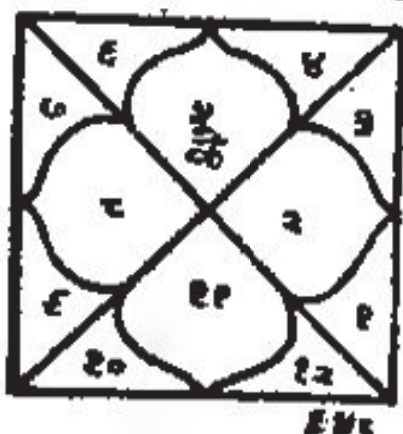
बारहवें भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने के लिए हर समय चिन्तित रहना पड़ता है तथा कभी-कभी घोर कष्टों का सामना भी करना पड़ता है।

उसे बाहरी सम्बन्धों से भी हानि पहुँचती है। परन्तु गुप्त युक्तियों, परिश्रम तथा साहस के बल पर वह थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त कर लेता है।

‘सिंह’ लग्न में ‘केतु’ का फलादेश

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : केतु

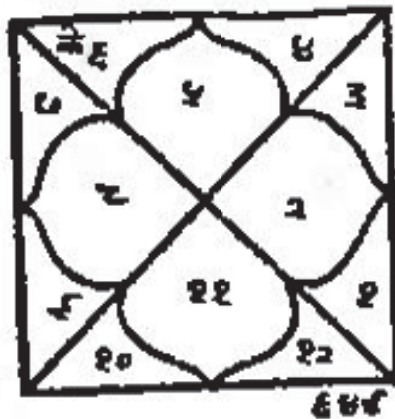


पहले भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कमी खाती है तथा कभी बाहरी चोट भी लगती है, जिसका शरीर पर स्थायी चिह्न धन जाता है।

ऐसा व्यक्ति भीतर के काफी चिन्तित रहता है तथा सुख पाने के लिए कठिन परिश्रम करता है।

‘सिंह’ लग्न की कृण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

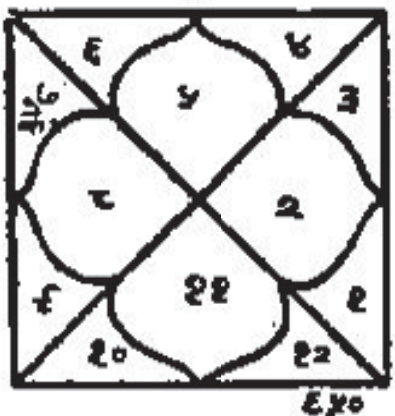
सिंह लग्न: द्वितीयभाव: केतु



दूसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की धन-संचय में कमी रहती है, जिसके कारण उसे अनेक कठिनाइयों तथा बिन्ताओं का सामना करना पड़ता है। वह धन-वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों के आश्रय से प्रतिष्ठा की बढ़ाने का प्रयत्न भी करता है। उसे पूर्ण कौटुम्बिक सुख भी प्राप्त नहीं होता है।

‘सिंह’ लग्न की कृण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

सिंह लग्न: तृतीयभाव: केतु

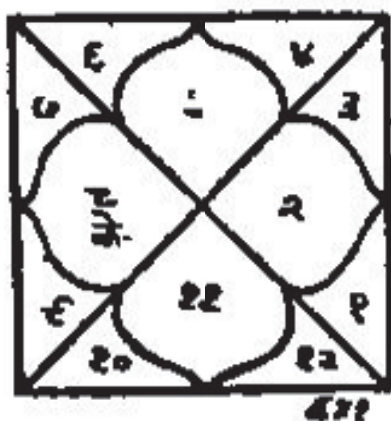


तीसरे भाव में मित्र शुक की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाई-बहिनों से कष्ट प्राप्त होता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति निडर, साहसी, पराक्रमी, परिश्रमी, चतुर तथा क्षमिशाली होता है, साथ ही हठी तथा लापरवाह भी रहता है। वह प्रत्येक कार्य की अपने बाहुबल से ही पूरा करता है।

‘सिंह’ लग्न की कृण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

सिंह लग्न: चतुर्थभाव: केतु

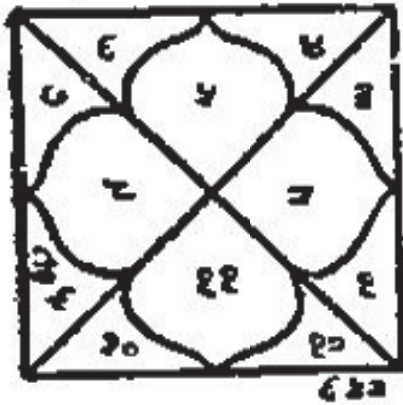


चौथे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की माता के सुख में कमी आती है। घरेलू सुख में अशान्ति रहती है तथा भूमि-भवन का सुख भी नहीं मिलता। उसे परदेश में जाकर रहना पड़ता है।

ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रमी तथा गुप्त युक्तियों का प्रयोग करने वाला होता है, फिर भी प्रायः परेशान ही बना रहता है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

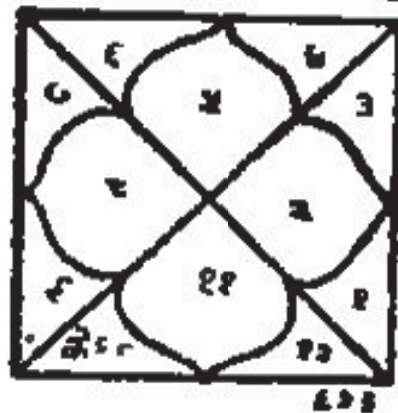
सिंह लग्न : पंचमभाव : केतु



पाँचवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक की सन्तान-धन से शक्ति मिलती है, परन्तु कभी-कभी कष्ट भी उठाने पड़ते हैं। विद्या-शुद्धि के क्षेत्र में परिश्रम करने पर भी अधिक सफलता नहीं मिलती। ऐसा व्यक्ति स्वयं की बुद्धिमान् भी समझता है, परन्तु उसकी वाणी में प्रभाव नहीं होता।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘षष्ठभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

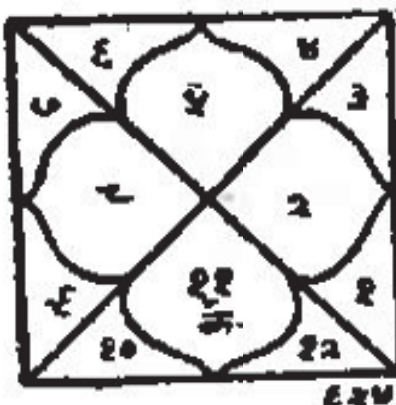
सिंह लग्न : षष्ठभाव : केतु



छठे भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम द्वारा शत्रु पर विजय प्राप्त करता है। वह बड़ा हिम्मती तथा धैर्यवान् होता है। गुप्त युक्तियों तथा आन्तरिक साहस के बल पर वह निरन्तर आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है तथा मुसीबतों आगे पर भी घबराना नहीं है। उसे अपने नन्साल पक्ष से हानि भी उठानी पड़ती है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

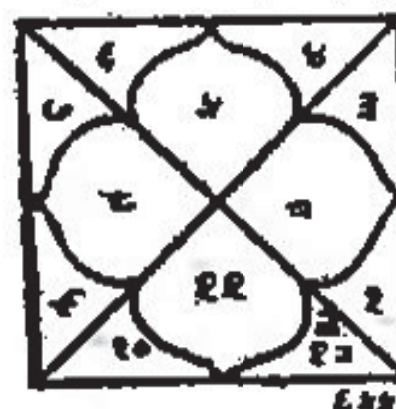
सिंह लग्न : सप्तमभाव : केतु



सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की स्त्री-सुख तथा व्यवसाय-पक्ष में कमी का सामना करना होता है। वह अपने साहस, धैर्य तथा गुप्त युक्तियों के बल पर गृहस्थी की चलाता है। कभी-कभी बड़ी मुसीबतों में भी फँसता है, परन्तु धैर्य तथा साहस की नहीं छोड़ता और अन्त में सफलता पाकर ही रहता है। उसकी सूक्ष्मेन्द्रिय में विकार होने की संभावना भी रहती है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

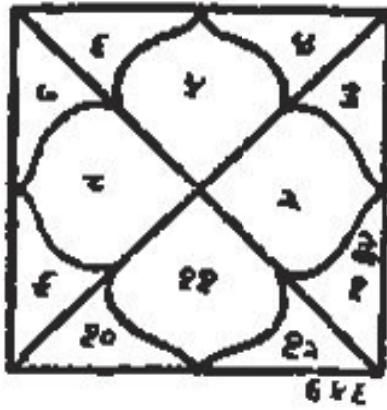
सिंह लग्न : अष्टमभाव : केतु



आठवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को जीवन में अनेक बार भृत्य-सुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि भी उठानी पड़ती है। वह सदैव चिन्तित रहता है, फिर भी धैर्य और साहस की नहीं छोड़ता। और परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर वह कठिनाइयों पर विजय पाता है। उसके पेट के निम्न भाग में कुछ विकार भी रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

सिंह लग्न : नवमभाव : केतु

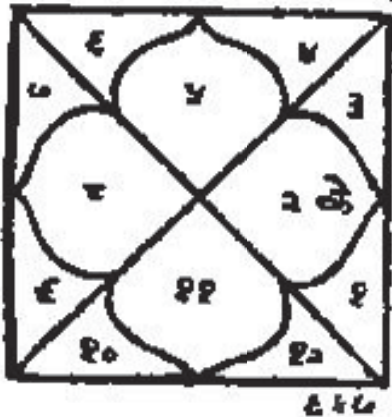


नवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बाधाएँ आती हैं तथा धर्म के पक्ष में भी कमजोरी रहती है।

वह कठिन परिश्रम करने पर भी यशस्वी नहीं बन पाता तथा कभी-कभी गोर संकटों में पड़ जाता है। भाग्यहीन होने पर भी वह अपने परिश्रम, धैर्य, साहस तथा गुप्त युक्तियों के बल पर कुछ सफलता एवं शक्ति प्राप्त कर लेता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

सिंह लग्न : दशमभाव : केतु

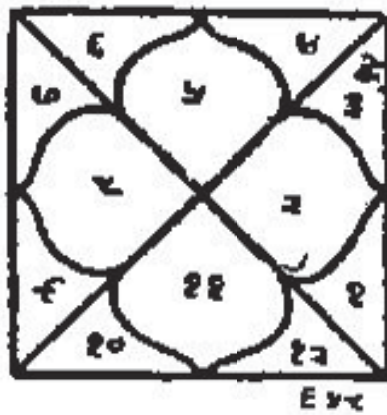


दसवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की पिता से कुछ कष्ट मिलता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए गोर परिश्रम करना पड़ता है।

वह अपने धैर्य, साहस, चातुर्य, बुद्धि-बल तथा परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ता है और तरक्की भी करता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

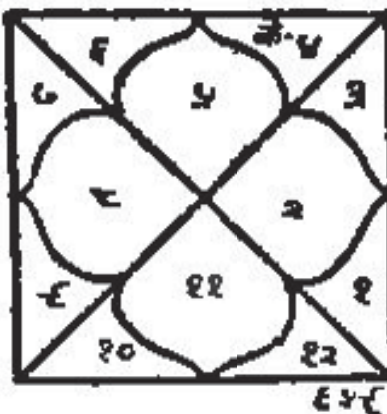
सिंह लग्न : एकादशभाव : केतु



ग्यारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की धन की कमी का दुःख विशेष रूप से अनुभव होता है तथा वह अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए गोर परिश्रम तथा संघर्ष करता है। वह लाभ उठाने के लिए उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता तथा गुप्त युक्तियों एवं धैर्य के बल पर कठिनाइयों की पार कर लेता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : केतु



बारहवें भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपने स्वर्ष की बड़ी कठिनाई से चला पाता है। उसे मानसिक विन्ताएँ तथा परेशानियाँ घेरे रहती हैं। वह अनेक बार संकटों तथा हानियों का सामना करता है, परन्तु अपने गुप्त धैर्य, युक्ताबल, परिश्रम तथा साहस के बल पर उन कठिनाइयों पर विजय पाता हुआ अपने काम को जैसे-जैसे चलाता रहता है।

‘कन्या’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६१ से ७६८ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।



‘कन्या’ लग्न में ‘सूर्य’ का फलादेश

१—‘कन्या’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘सूर्य’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६१ से ६७२ के बीच देखना चाहिए।

२—‘कन्या’ लग्न वालों की अपनी गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘सूर्य’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में ‘सूर्य’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ६६१
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ६६२
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ६६३
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ६६४
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ६६५
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ६६६
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ६६७
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या ६६८
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या ६६९
- (ञ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या ६७०
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ६७१
- (ठ) ‘मौन’ राशि पर हो तो संख्या ६७२

‘कन्या’ लग्न में ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

१—‘कन्या’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘चन्द्रमा’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६७३ से ६८४ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६७३
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६७४
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६७५
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६७६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६७७
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६७८
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६७९
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६८०
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६८१
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६८२
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६८३
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६८४

'कन्या' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८५ से ६९६ के बीच देखना चाहिए ।

२—'कन्या' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६८५
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६८६
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६८७
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६८८
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६८९
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६९०
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६९१
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६९२
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६९३
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६९४
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६९५
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६९६

‘कन्या’ लग्न में ‘बुध’ का फलादेश

१—‘कन्या’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘बुध’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६९७ से ७०८ के बीच देखना चाहिए।

२—‘कन्या’ लग्न वालों की शोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘बुध’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में ‘बुध’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ६९७
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ६९८
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ६९९
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ७००
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ७०१
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ७०२
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ७०३
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या ७०४
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या ७०५
- (ञ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या ७०६
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ७०७
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर हो तो संख्या ७०८

‘कन्या’ लग्न में ‘गुरु’ का फलादेश

१—‘कन्या’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘गुरु’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७०९ से ७२० के बीच देखना चाहिए।

२—‘कन्या’ लग्न वालों की शोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘गुरु’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में ‘गुरु’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ७०९
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ७१०
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ७११

- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७१२
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७१३
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७१४
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७१५
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७१६
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७१७
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७१८
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७१९
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७२०

'कन्या' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७२१ से ७३२ के बीच देखना चाहिए ।

२—'कन्या' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७२१
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७२२
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७२३
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७२४
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७२५
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७२६
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७२७
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७२८
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७२९
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७३०
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७३१
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७३२

'कन्या' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७३३ से ७४४ के बीच देखना चाहिए ।

२—'कन्या' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७३३
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७३४
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७३५
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७३६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७३७
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७३८
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७३९
- (ज) 'बृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७४०
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७४१
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७४२
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७४३
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७४४

'कन्या' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७४५ से ७५६ के बीच देखना चाहिए ।

२—'कन्या' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७४५
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७४६
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७४७
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७४८
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७४९
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७५०
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७५१
- (ज) 'बृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७५२
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७५३
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७५४
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७५५
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७५६

‘कन्या’ लग्न में ‘केतु’ का फलादेश

१—‘कन्या’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘केतु’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७५७ से ७६८ के बीच देखना चाहिए ।

२—‘कन्या’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘केतु’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

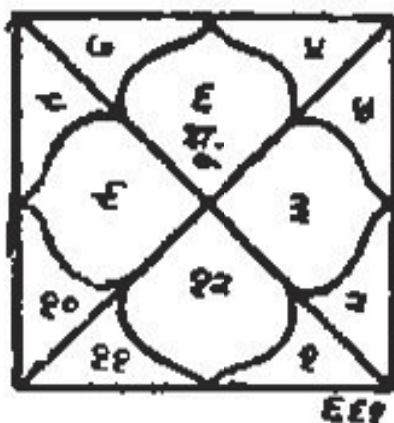
जिस वर्ष में ‘केतु’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ७५७
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ७५८
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ७५९
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ७६०
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ७६१
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ७६२
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ७६३
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या ७६४
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या ७६५
- (ञ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या ७६६
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ७६७
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर हो तो संख्या ७६८

‘कन्या’ लग्न में ‘सूर्य’

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

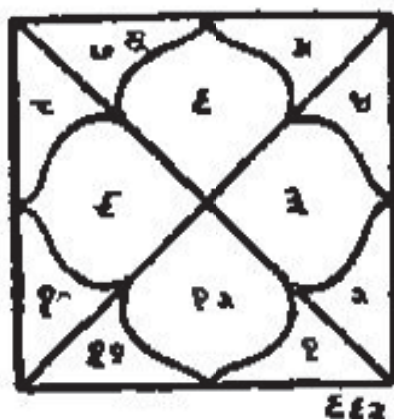


पहले भाव में जिस बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक दुर्बल शरीर वाला, खूब खर्च करने वाला तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त करने वाला होता है । परन्तु कभी-कभी खर्च के कारण उसे परेशानी उठानी पड़ती है ।

सातवीं मित्त्रदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ हानि का सामना भी करना पड़ता है तथा असन्तोष भी बना रहता है ।

'कन्या' लग्न की कुम्बली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

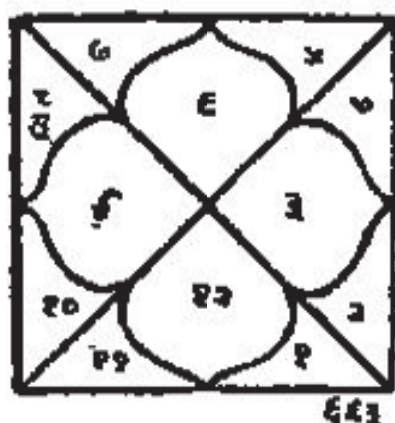


दूसरे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित बीच के सूर्य के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब की हानि होती है। बाहरी स्थानों से आर्थिक लाभ कम होता है, तथा खर्च के कारण परेशानी भी होती है।

सातवीं दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की पुरातस्थ तथा आयु का लाभ प्राप्त होता है।

'कन्या' लग्न की कुम्बली में 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

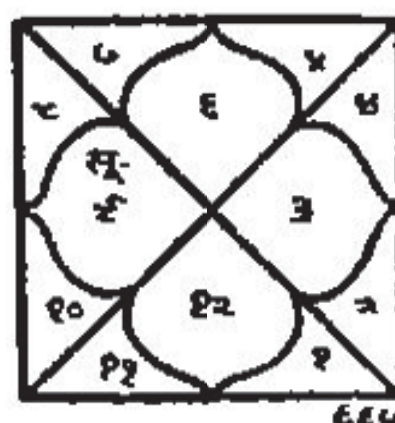


तीसरे भाव में जिस 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ न्यूनता आती है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ द्वारा जीवन में सफलताएँ प्राप्त करता है तथा अत्यन्त हिम्मती और प्रभावशाली होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन सामान्य ढंग से व्यतीत होता है।

'कन्या' लग्न की कुम्बली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

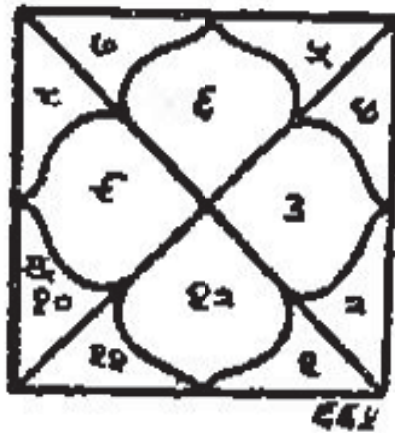


चौथे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। उसे बाहरी स्थानों से सुख तथा खर्च के लिए धन प्राप्त होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय-पक्ष से भी कुछ असन्तोष रहता है।

'कन्या' लग्न की कुम्हली में 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : सूर्य

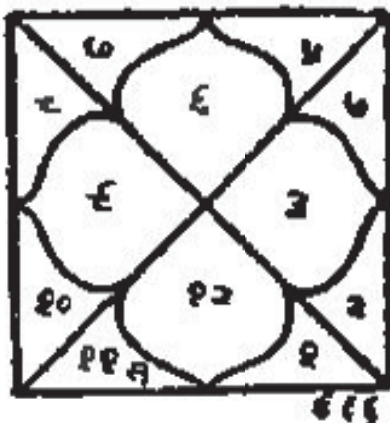


पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की विद्या, वृद्धि तथा सन्तान में कमी रहती है तथा खर्च चलाने के लिए विभाग में परेशानी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव का देखने के कारण सामान्य लाभ होता रहता है। ऐसा व्यक्ति चक्करदार बातें करने वाला तथा चंचल होता है।

'कन्या' लग्न की कुम्हली में 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

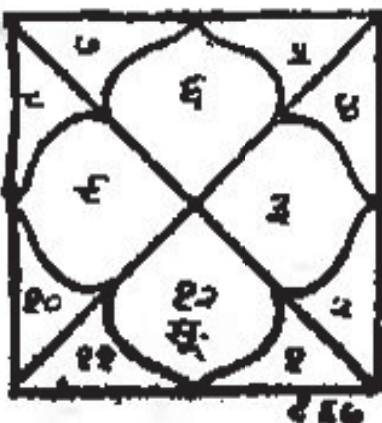


छठे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक शत्रुओं से परेशान रहता है तथा अधिक खर्च करके ही उन पर प्रभाव स्थापित कर पाता है। वह परिश्रम द्वारा अपना खर्च चलाता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सामान्य लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादशभाव की देखने के कारण खर्च अधिक बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुम्हली में 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

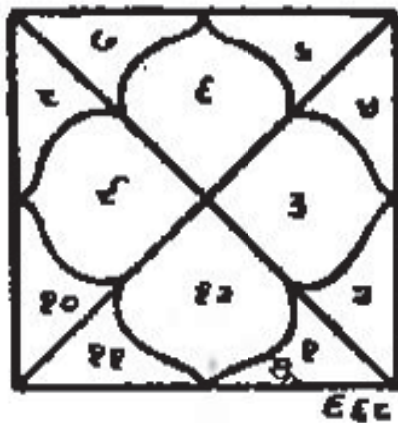


सातवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है। बाहरी स्थानों से लाभ के अतिरिक्त हानि भी होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव की देखने के जातक का शरीर दुर्बल होता है तथा वह स्वभाव से चंचल, कोधी एवं धन की ओर से चिन्तित बना रहने वाला होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

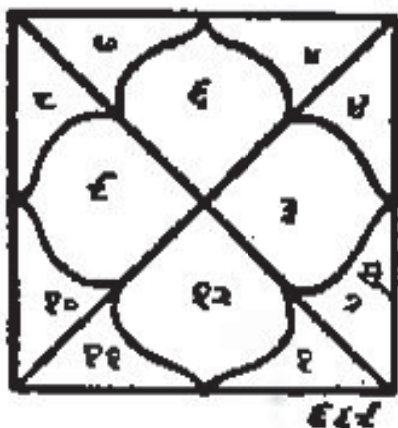


आठवें भाव में मिला 'मंगल' की राशि पर स्थित उच्च 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातस्व में कुछ कठिनाइयों के साथ वृद्धि होती है। खर्च की अधिकता एवं बाहरी संबंधों से लाभ होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन की हानि होती है एवं कौटुम्बिक सुख में कमी आती है। ऐसी गृह-स्थिति का जातक धन के विषय में बहुत चिन्तित बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : सूर्य

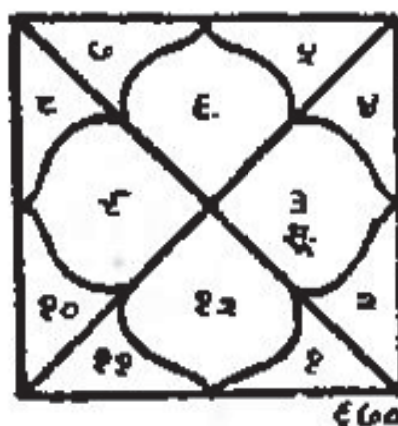


नवें भाव में मिला 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी रहती है। ऐसे लोग प्रायः नास्तिक होते हैं। उन्हें बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है तथा पराक्रम की भी अधिक वृद्धि नहीं होती।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : सूर्य

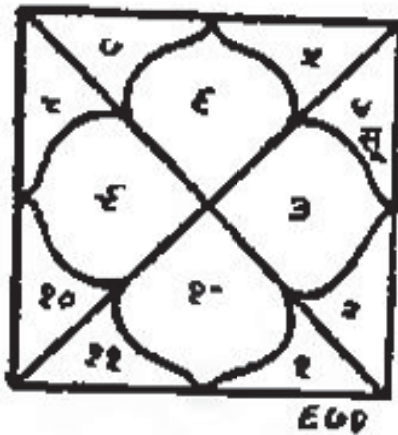


दसवें भाव में मिला 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में भी कुछ कमी बनी रहती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : सूर्य

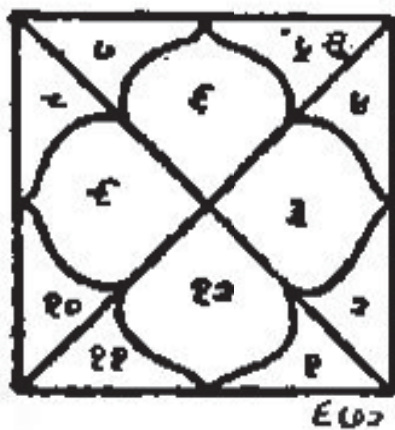


ग्यारहवें भाव में मिल 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की पर्याप्त आमदनी होते हुए भी खर्च चलाने की चिन्ता बनी रहती है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से लाभ, सुख तथा सम्मान मिलता है।

सातवीं मनुदृष्टि से पंचमभाव की देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का क्षेत्र भी कमजोर रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : सूर्य



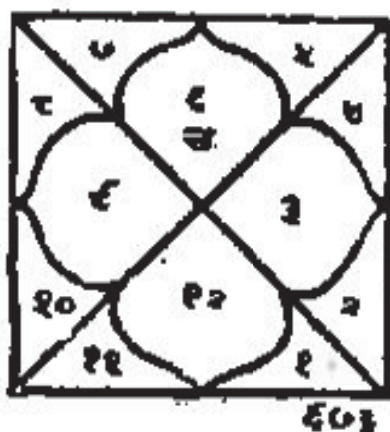
बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित सूर्य के प्रभाव जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ एवं सम्मान भी मिलता है।

सातवीं मनुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण मनुष्य एवं रोग आदि से काफी परेशानी होती है तथा खर्च भी अधिक होता है। फिर भी जातक अपना साहस बनाये रख कर मनुष्य पर प्रभाव स्थापित कर लेता है।

'कन्या' लग्न में 'चन्द्रमा'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलावेश

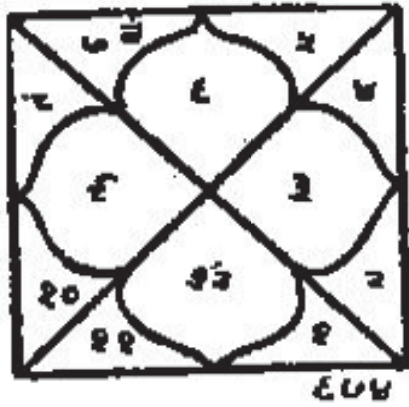
कन्या लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र



पहले भाव में मिल बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की शारीरिक सौन्दर्य, प्रसन्नता एवं मनोबल का लाभ होता है। वह परिक्षम द्वारा धन तथा यज्ञ कमाता है और प्रभावशाली बनता है।

सातवीं मनुदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से सुन्दरी स्त्री मिलती है तथा स्त्री-पक्ष एवं व्यवसाय से ध्येष्ट लाभ होता है।

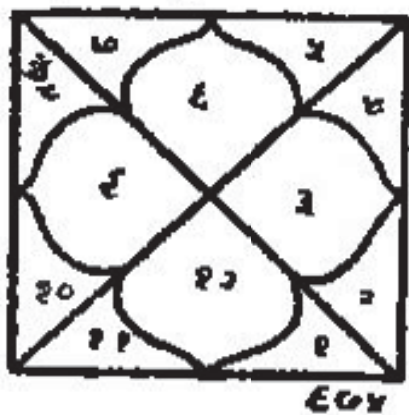
द्वितीय भाव में 'चन्द्रमा' का फलावेश
न्या लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र



दूसरे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के धन-कुटुम्ब में वृद्धि होती है तथा धन का संचय भी होता है।

सातवीं भिन्न-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से पुरातत्त्व एवं आयु में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, सम्पन्न तथा यशस्वी जीवन बिताता है।

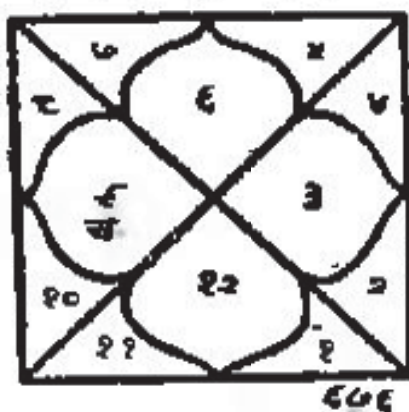
द्वितीय भाव में 'चन्द्रमा' का फलावेश
न्या लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र



तीसरे भाव में भिन्न 'मंगल' की राशि पर नीच के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, धनोपार्जन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

सातवीं उच्च दृष्टि से नवमभाव को देखने से परिक्षम द्वारा आभ्योन्नति होती है तथा धर्म-पालन में भी रुचि बनी रहती है।

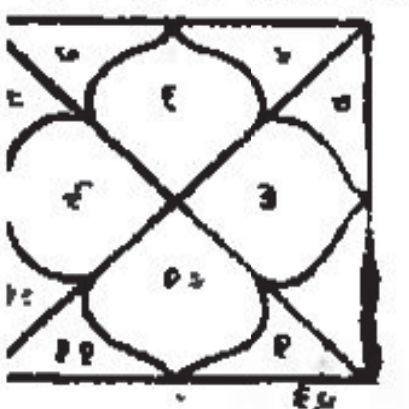
द्वितीय भाव में 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलावेश
न्या लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र



चौथे भाव में भिन्न 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन आदि का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है और सर्वव्यसन्न बना रहता है।

सातवीं भिन्नदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी यश, सम्मान, सफलता, उन्नति एवं प्रभाव की वृद्धि होती है।

द्वितीय भाव में 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलावेश
न्या लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

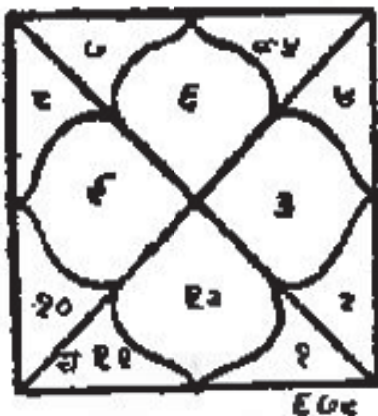


पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की सन्तान तथा विद्या-बुद्धि पक्ष की वृद्धि होती है तथा उसी के द्वारा धन-लाभ भी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादशभाव को देखने से आमदनी में भी वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी जीवन बिताता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

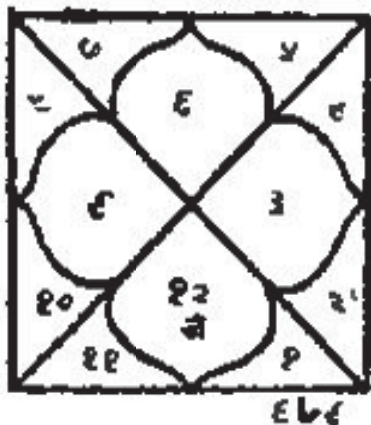


छठे भाव में शत्रु 'शानि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष द्वारा मानसिक अशान्ति बनी रहती है, परन्तु वह अपनी विनम्रता द्वारा शत्रु-पक्ष पर सफलता पाता है और उससे लाभ भी उठता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी मिलता रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

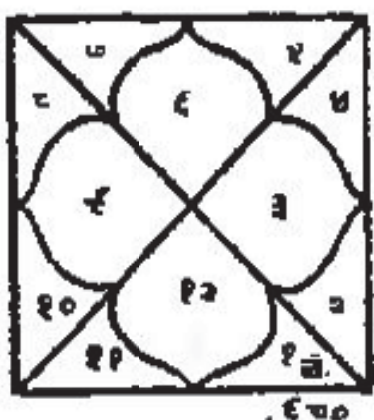


सातवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को सुन्दर पत्नी मिलती है, भोगादि के श्रेष्ठ साधन प्राप्त होते हैं तथा व्यवसाय में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, शक्ति एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक सुन्दर, स्वस्थ, सुखी तथा सम्पन्न होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

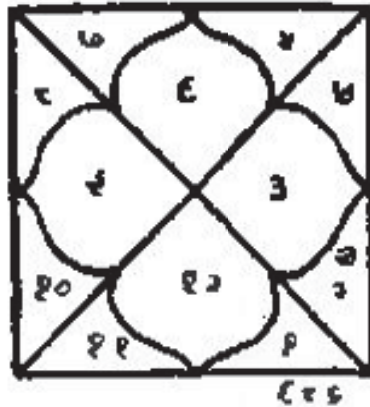


आठवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की दीर्घायु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। भाव के सातवीं में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : चन्द्र

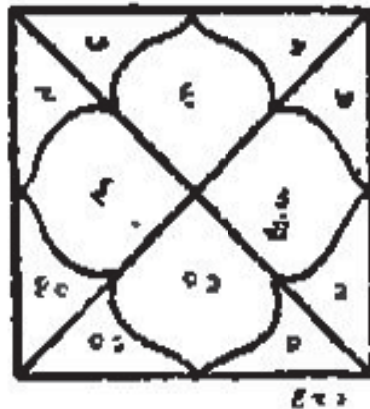


नवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को धन का बड़े-बड़े लाभ होता है तथा आकस्मिक देवी सहायताएँ भी मिलती रहती हैं।

सातवीं नीच-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने में भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी आती है तथा पराक्रम की भी अधिक वृद्धि नहीं हो पाती।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : चन्द्र

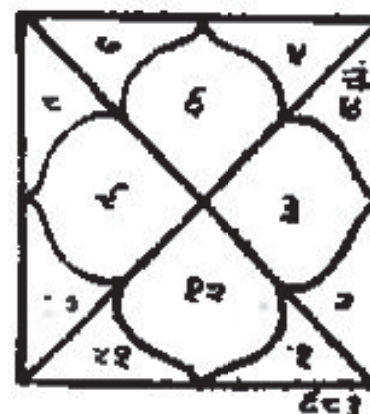


दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' से प्रभाव से जातक को राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष से पूर्ण लाभ तथा सम्मान मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से भूमि, भवन तथा माता का सुख भी पर्याप्त मिलता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : चन्द्र

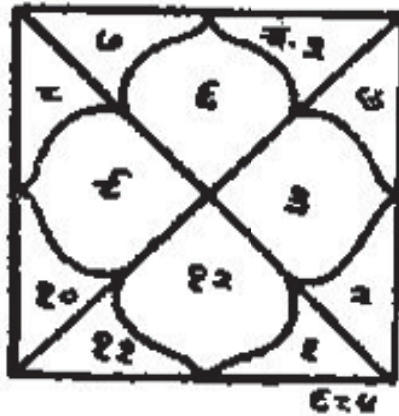


ग्यारहवें भाव में स्वराशित्वित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है और वह अपने मनोबल द्वारा पर्याप्त धन कमाता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से विद्या में कमी रहती है तथा सन्तानों से वैमनस्य रहता है, परन्तु वह अपनी बतुराई द्वारा अन्य लोगों में उन्नति करता रहता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : चन्द्र



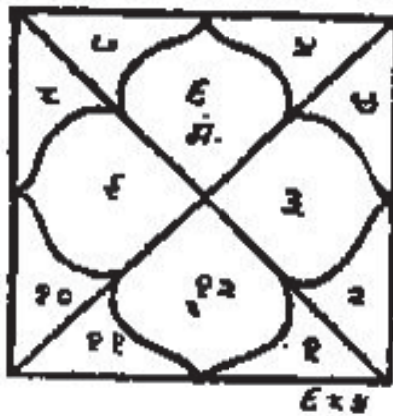
द्वादहवें भाव में मित्र ‘सूर्य’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से पर्याप्त लाभ भी होता है। खर्च के कारण कभी-कभी मन में चिन्ताएँ घनी रहती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में धन के खर्च एवं विनम्रता से सफलता मिलती है। बीमारी तथा अन्य झगड़ों में भी खर्च होता है।

‘कन्या’ लग्न में मंगल

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : मंगल

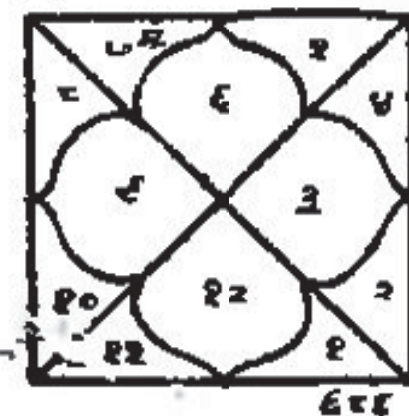


पहले भाव में मित्र ‘बुध’ की राशि पर स्थित अष्टमेश ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। चौथी मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी आती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। आठवीं दृष्टि से स्वराशि के

अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन संघर्षपूर्ण रहता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : मंगल



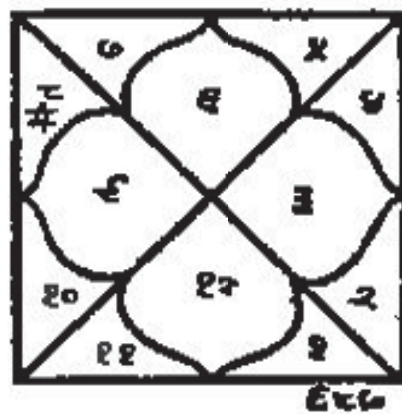
दूसरे भाव में शत्रु शुक की राशि पर स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक के भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है। परन्तु धन का लाभ होता है। चौथी उरुव दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में प्रयत्न करने से लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। नवीं

शत्रु-दृष्टि से देखने से धर्म-पालन तथा आभ्योन्तति में कुछ कमियाँ बनी रहती हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : मंगल



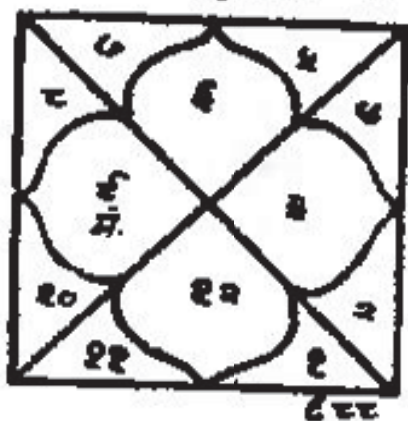
तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित व्ययेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो 'वृद्धि' होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है।

चौथी शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव के देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवम-भाव को देखने से भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में कठिनाइयाँ आती हैं। आठवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक

परिश्रम करने पर भी थोड़ी सफलता मिलती है तथा पिता का सुख भी कम ही रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : मंगल



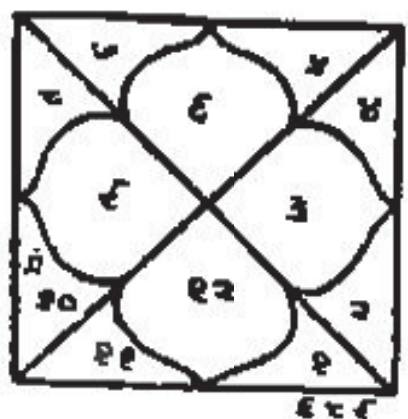
चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ होता है।

चौथी मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

आठवीं नीच-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से लाभ के मार्ग में रुकावटें आती हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : मंगल



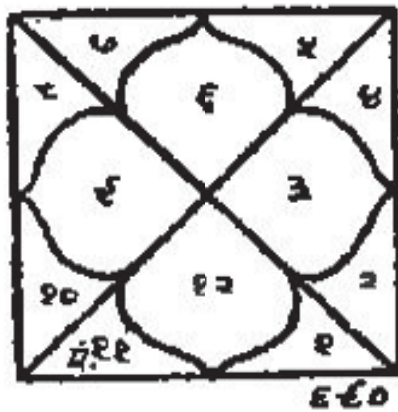
पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान-पक्ष की शक्ति तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। नौथी दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरा-तत्त्व की शक्ति बढ़ती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आयु के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक

रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा प्रभाव बढ़ता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : मंगल

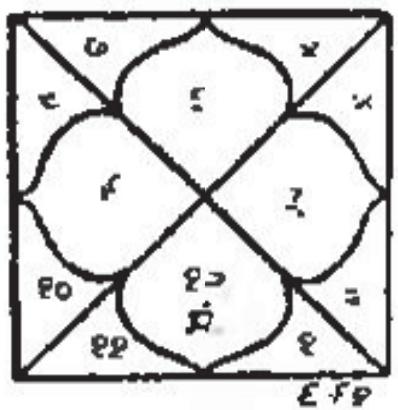


छठे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर विजय पाता है। यह परिश्रमी तथा पुरुषार्थी होता है, परन्तु भाई-बहिनों में कुछ विरोध रहता है। आयु तथा पुरातत्त्व का अच्छा लाभ होता है।

चौथी शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कमजोरी रहती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक स्वास्थ्य में कमी तथा रक्त-विकार आदि रोग रहते हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : मंगल

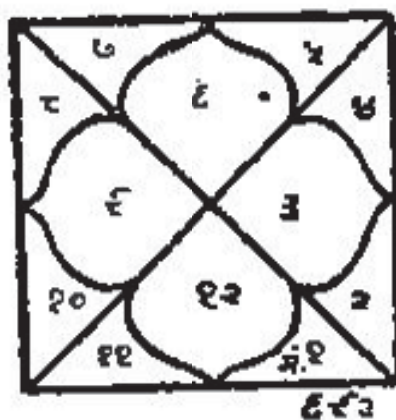


सातवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कष्ट मिलता है तथा आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिनों के मुख में न्यूनाधिकता बनी रहती है।

चौथी मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम-भाव को देखने से शरीर में कुछ परेशानियाँ रहती हैं। आठवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय-भाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी बनी रहती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : मंगल



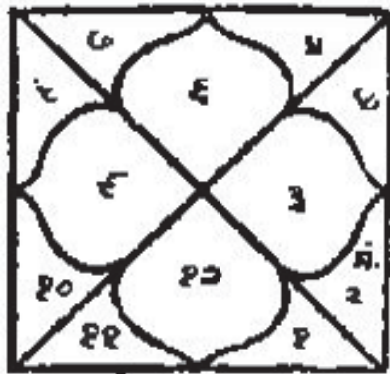
आठवें भाव में स्वराशि में स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। चौथी नीच दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ असंतोष रहता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि के तृतीयभाक को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में

वृद्धि होती है तथा गुप्त हिम्मत बढ़ती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलावेश

कन्या लग्न : नवमभाव : मंगल



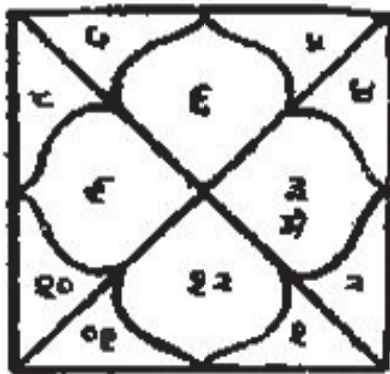
नवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित व्यष्टमेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कुछ कमी आती है तथा आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। चौथी मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा कुछ

कठिनाइयों के साथ भाई-बहिनों का सुख मिलता है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से कुछ कमी के साथ माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है। सामान्यतः जीवन शानदार बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलावेश

कन्या लग्न : दशमभाव : मंगल



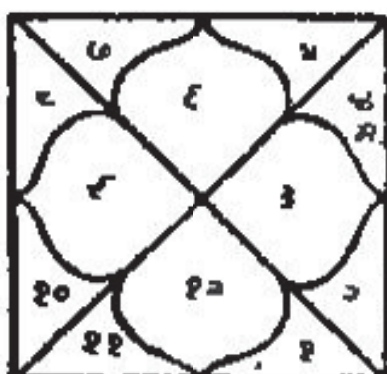
दसवें भाव में शत्रु 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है।

चौथी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर विकार-ग्रस्त रहता है, अब कि हिम्मत बड़ी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने

से माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। आठवीं उच्चदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि की पर्याप्त वृद्धि होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलावेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : मंगल

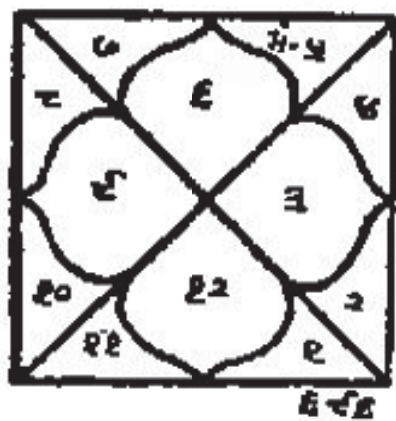


ग्यारहवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को लाभके क्षेत्र में कुछ कठिनाई आती है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संशय तथा कौटुम्बिक सुख में कमी आती है। सातवीं उच्चदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या एवं बुद्धि की उन्नति होती है तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

आठवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा जातक बड़ा हिम्मती, बहुत बोलने वाला तथा बहादुर होता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : मंगल



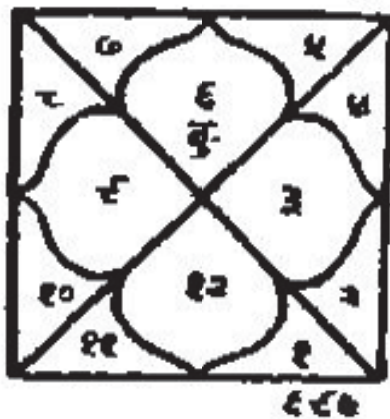
बारहवें भाव में मित्र ‘सूर्य’ की राशि पर स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से कुछ शक्ति भी मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं। चौथी दृष्टि से स्वराशि वाले तृतीयभाव को देखने से पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में सामान्य वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद प्रभाव स्थापित ही पाता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री पक्ष में कुछ कठिनाई रहती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम तथा कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है।

‘कन्या’ लग्न में ‘बुध’

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : बुध

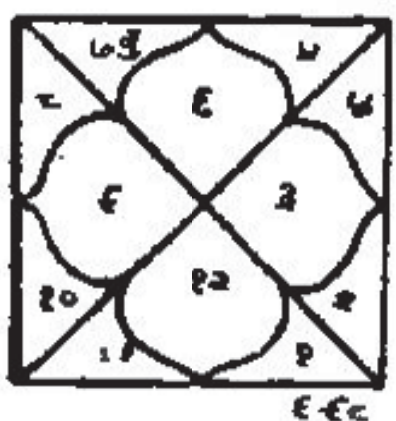


पहले भाव में स्वराशि-स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक के शरीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है। राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक आय के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अत्यधिक स्वाभिमानी होता है, इस कारण व्यवसाय में अधिक उन्नति नहीं कर पाता।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : बुध



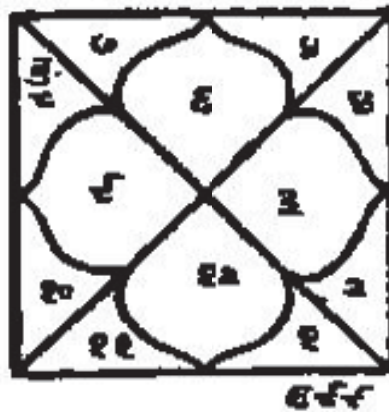
दूसरे भाव में मित्र ‘शुक’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख में वृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है।

ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन ऐश्वर्यशाली होता है। वह बनी तथा सुखी भी रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : बुध



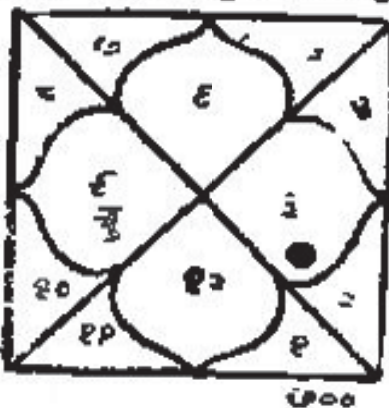
तौसरं भाव में मित्र 'मंगल' को राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा धार्मिक-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। राज्य, व्यवसाय तथा पिता के पक्ष में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्तदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा धान्य की उन्नति होती है।

ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, धर्मन्मा, यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : बुध

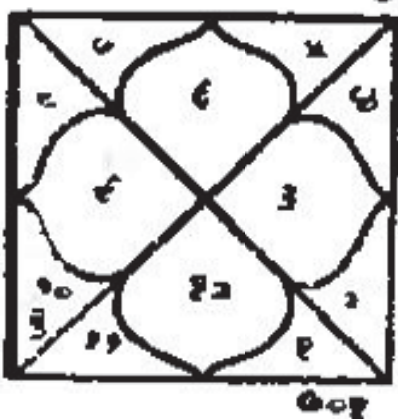


चौथे भाव में मित्त 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। शारीरिक सौन्दर्य तथा सुख में भी वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादशभाव की देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सब प्रकार की सफलताएँ प्राप्त होती हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : बुध



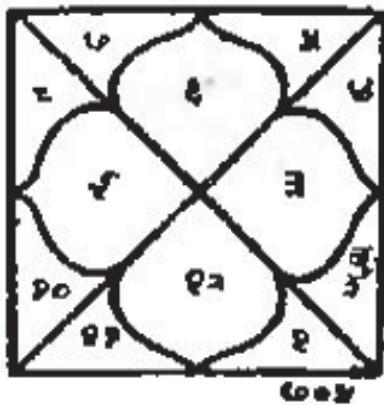
पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि एवं मन्तान का पर्याप्त सुख मिलता है और उच्च पद की प्राप्ति होती है।

सातवीं सप्तदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ वृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

ऐसा व्यक्ति सुन्दर, सुखी, धनी तथा स्वाभिमानी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : बुध

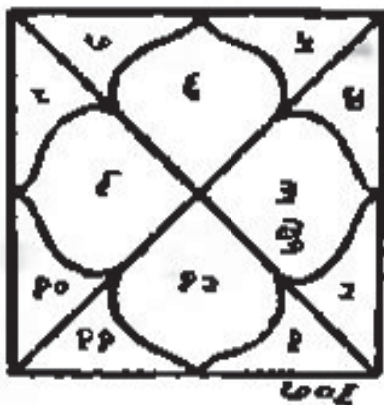


नवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है तथा राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

मातृवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सज्जन, सुखी, यशस्वी तथा धनी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : बुध

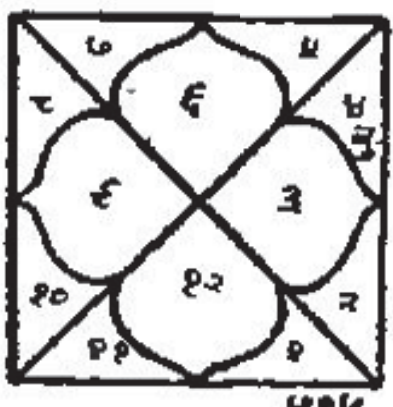


दसवें भाव में स्वश्रेणी 'बुध' के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर, यशस्वी, स्वाभिमानी तथा सुखी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि, भवन आदि का सुख भी पर्याप्त उपलब्ध होता है। घरेलू जीवन सुख, शान्ति तथा ऐश्वर्य से पूर्ण रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : बुध

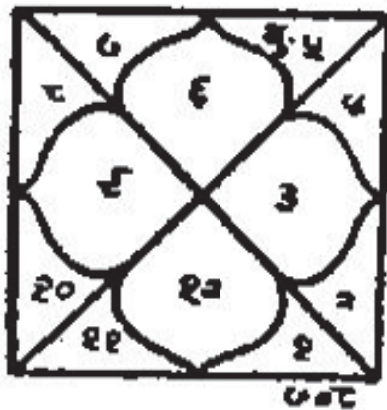


ग्यारहवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ प्राप्त होती हैं। शारीरिक सौन्दर्य, मनोबल एवं सुख में भी वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव की देखने से जातक को विद्या, वृद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में भी विशेष उन्नति प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, विद्वान् तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : बुध



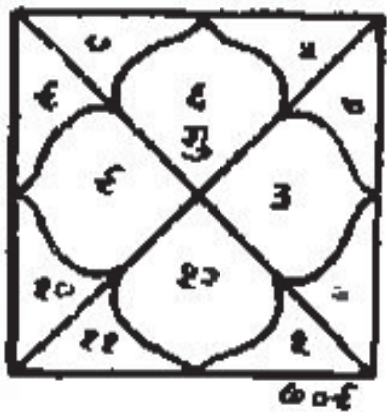
बारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। परन्तु पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में असन्तोष रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शत्रु-पक्ष पर सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति दूरदर्शी, विवेकी तथा बुद्धिमान् होता है।

'कन्या' लग्न में 'गुरु'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

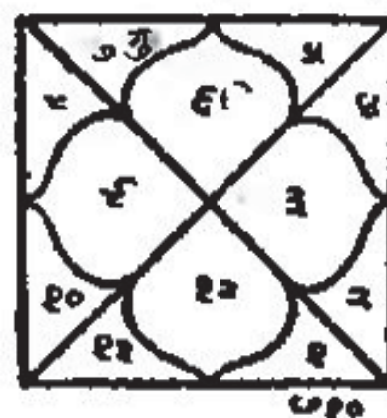
कन्या लग्न : प्रथमभाव : बुध



पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। पाँचवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती रहती हैं। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख मिलता है। नवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति एवं धर्म के क्षेत्र में बाधाएँ आती रहती हैं। परन्तु ऐसा व्यक्ति सज्जन तथा धनी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : बुध

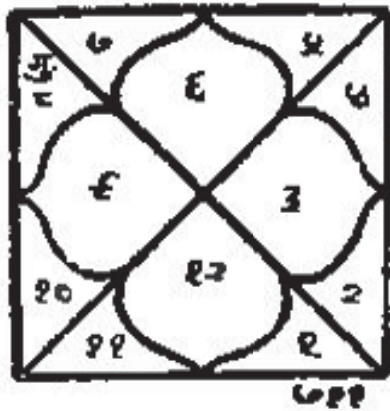


दूसरे भाव में सामान्य शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की धन, कुटुम्ब का सुख मिलता है, परन्तु माता एवं स्त्री के सुख में कुछ बाधाएँ आती हैं जबकि व्यवसाय-पक्ष की उन्नति होती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : गुरु

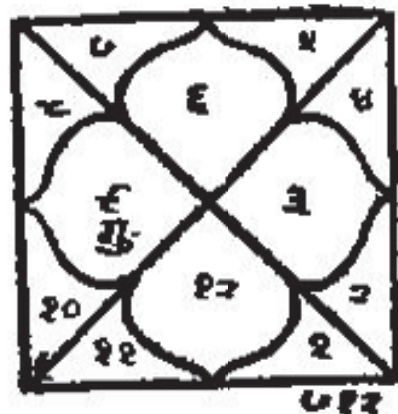


तीसरे भाव में मित्त 'भंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा आई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है और माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी सफलताएँ मिलती हैं। स्त्री सुन्दर मिलती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव की देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ रुकावटों के साथ उन्नति होती है। नवीं उच्च-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है। ऐसा जातक धनी तथा सुखी रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली से 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

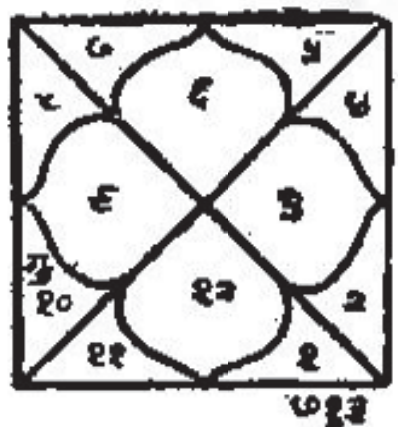


चौथे भाव में स्वक्षेत्री 'गुरु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का विशेष सुख मिलता है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

पाँचवीं मित्त-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं मित्त-दृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती रहती हैं। नवीं मित्त-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में लाभ मिलता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'संचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : संचमभाव : गुरु

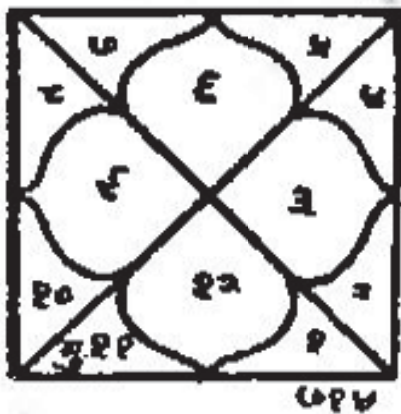


पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर मीथ के गुरु के प्रभाव से जातक की सन्तान पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि में कमी रहती है। मातु-पक्ष भी कमजोर रहता है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से नवम-भाव की देखने से भाग्य एवं धर्म की सामान्य वृद्धि होती है। सातवीं उच्च-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से आमदनी में वृद्धि होती है तथा नवीं मित्त-दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक, शक्ति, सम्मान, प्रभाव एवं कार्य-कुशलता में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी

तथा सामान्य धनी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : गुरु

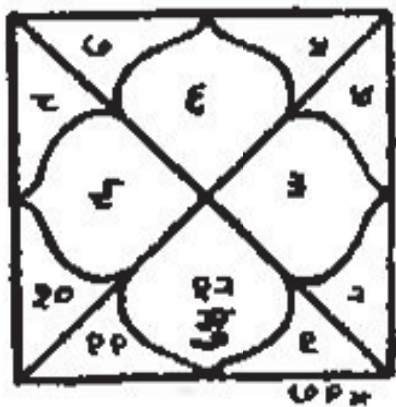


छठे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में नफ़रता से काम निकालता है। माता, भूमि एवं भवन के सुख में भी कमी रहती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ सफलताओं, सुख तथा यश की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। नवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है तथा धन-संचय के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : गुरु



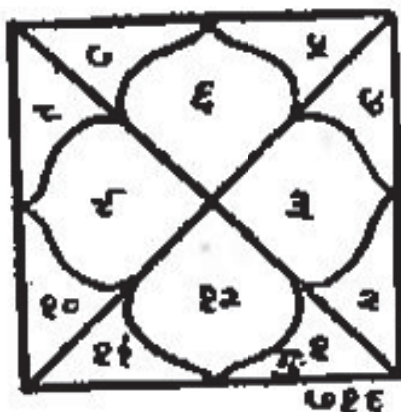
सातवें भाव में स्वश्रेणी 'गुरु' के प्रभाव से जातक को स्त्री एवं व्यवसाय-पक्ष में पर्याप्त लाभ मिलता है। माता, भूमि तथा मकान का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। पाँचवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव की देखने से आमदनी में बहुत वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक-सुख, मान एवं सौन्दर्य की प्राप्ति होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहनों के सुख एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति

सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : गुरु



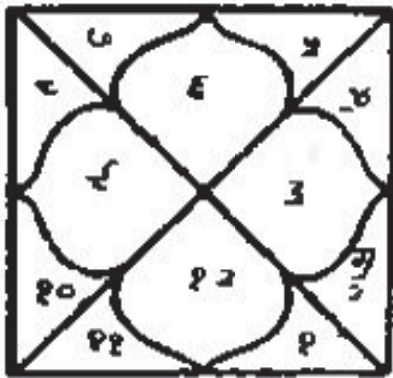
आठवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के सुख में कुछ कमी आती है।

पाँचवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी आती है। नवीं दृष्टि से

स्वराशि में चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ परेशानियों के साथ मिलता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : गुरु

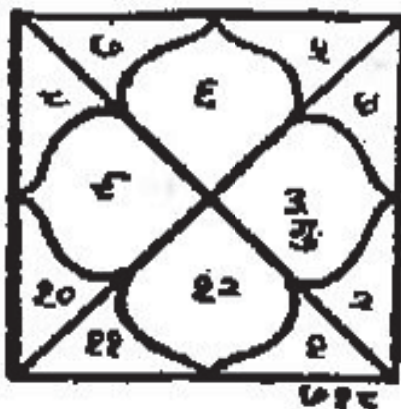


नवें भाव में शत्रु 'शुक' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कमी रहती है, परन्तु माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से सुख-सम्मान की वृद्धि होती है तथा भोगेच्छा प्रबल रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। नवीं नीच-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कमजोरी आती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : गुरु



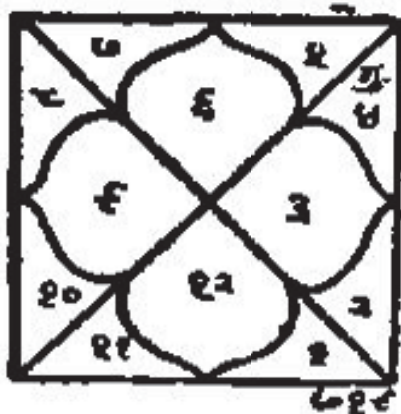
दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय से लाभ होता है। स्त्री सुन्दर तथा प्रभावशाली मिलती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन, कुटुम्ब का सामान्य लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि अपनी राशि में चतुर्थभाव को देखसे वे माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है।

नवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष में शान्ति-नीति से विजय मिलती है तथा उससे लाभ भी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : गुरु



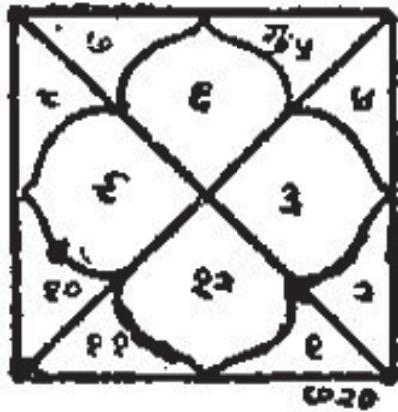
ग्यारहवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आमदनी बढ़ती है तथा माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख भी मिलता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम एवं भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से परेशानी रहती है तथा विद्या-वृद्धि में कमी आती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव की देखने से सुन्दर तथा योग्य पत्नी मिलती है। भोगादि का

श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में भी उन्नति होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : गुरु



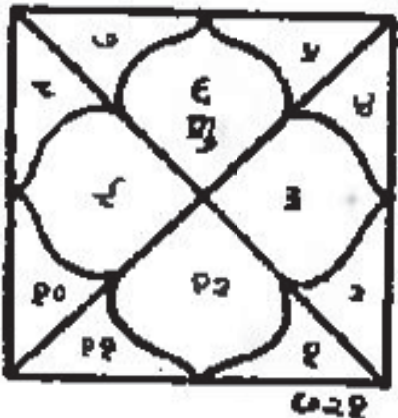
बारहवें भाव में मित 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ भी मिलता है। स्त्री के सुख में कमी आती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव की देखने से शत्रु पक्ष में नज़रता से काम निकालना पड़ता है। नवीं मितदृष्टि से अष्टम भाव की देखने से आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है। ऐसा जातक सामान्यतः सुखी जीवन बिताता है।

'कन्या' लग्न में 'शुक्र'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

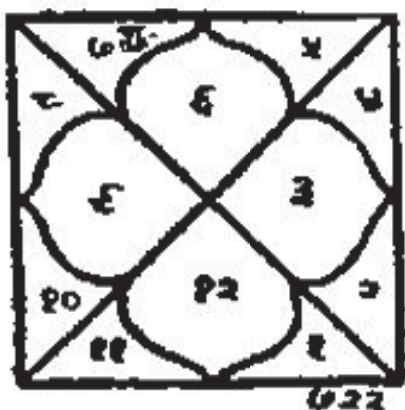


पहले भाव में मित 'बुध' की राशि पर स्थित मीथ के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी रहती है और वह अधर्म-पूर्वक भी धन कमाने का प्रयत्न करता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तम भाव की देखने से स्त्री सुन्दर तथा भाग्यवान् मिलती है तथा व्यवसाय एवं भोगादि में भी पर्याप्त सफलता प्राप्त होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

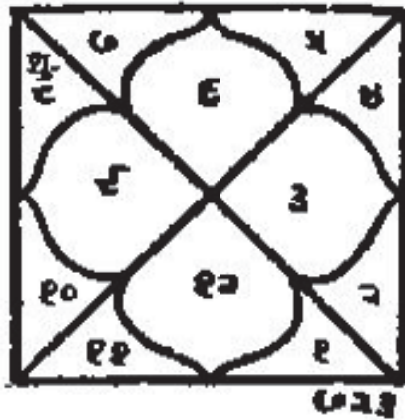


दूसरे भाव में स्वराशि स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। वह भाग्यवान्, यशस्वी तथा धर्माला भी होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव की देखने से जातक की आयु तथा पुरातत्व का भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति चतुर, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलवादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : शुक्र

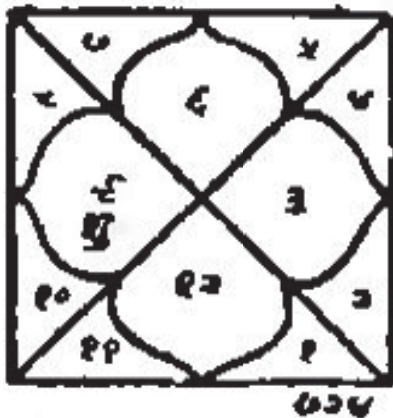


तीसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की भाई-बहिन का अच्छा सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। कौटुम्बिक सुख की भी यह बढ़ाता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले नवमभाव की देखने से भाग्य तथा धर्म में बहुत वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बहुत सुखी, धनी, धर्मात्मा तथा भाग्यशाली होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलवादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

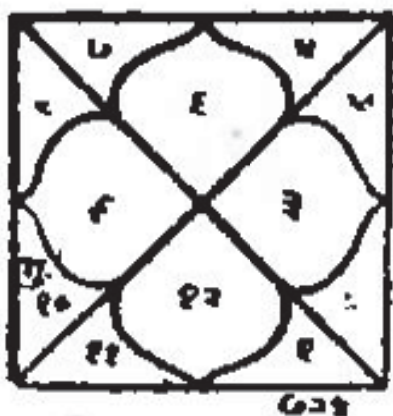


चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा धन एवं कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

सातवीं मितदृष्टि से दशमभाव की देखने से राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धर्म का पालन भी करता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलवादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : शुक्र

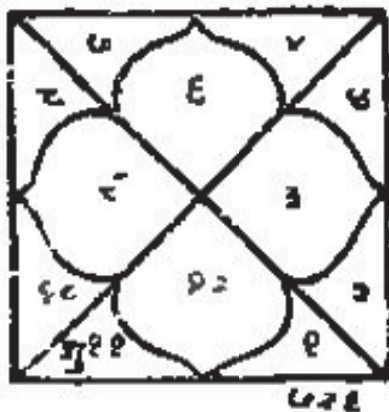


पाँचवें भाव में मित 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से श्रेष्ठ लाभ होता है तथा विद्या-वृद्धि की वृद्धि से साथ धन, धर्म तथा भाग्य की वृद्धि भी होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से जातक अपनी बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर आमदनी की बढ़ाता है तथा निरन्तर उन्नति करता रहता है।

'कन्या' लग्न की कुंडली में 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलान्वेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

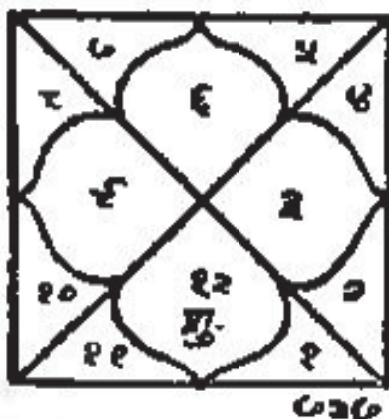


छठे भाव में मित्त 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के भाग्य, धन तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी आती है तथा धर्म में भी अरुचि रहती है, फिर भी वह अपनी चतुराई द्वारा भाग्य तथा धन की वृद्धि करता है तथा परिश्रम द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलताएं पाता है। उसे झगड़े-मुकद्दमों से भी लाभ होता है।

सातवीं सप्तदृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्चे अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलान्वेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : शुक्र

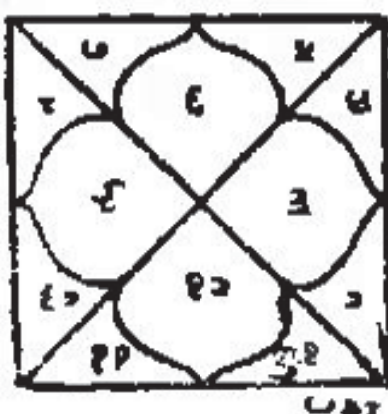


सातवें भाव में सामान्य शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की सुन्दर स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएं मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति भोगी, धर्मार्त्मा, सुखी तथा भाग्यवान् होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है। ऐसा व्यक्ति धन-वृद्धि के लिए शारीरिक सुखों की चिन्ता नहीं करता।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलान्वेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

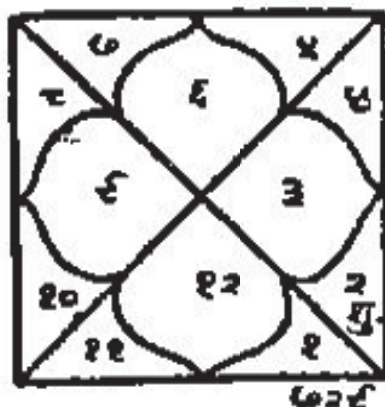


आठवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का भाग्य कमजोर रहता है तथा धन-संचय में भी कठिनाइयाँ आती हैं। धर्म का समुचित पालन भी नहीं हो पाता। पर आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं नीच दृष्टि से स्वराशि वाले द्वितीय भाव की देखने से जातक गुप्त चातुर्य एवं कठोर परिश्रम द्वारा धन-संचय करता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : शुक्र

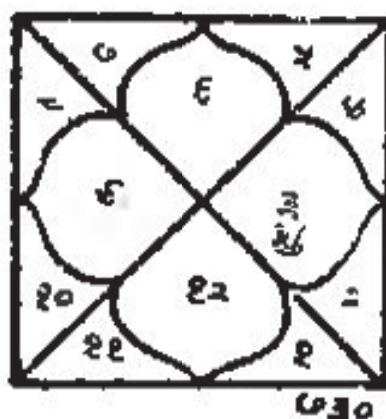


नवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक बड़ा भाग्यशाली तथा धर्मात्मा होता है। उसके धन, सम्मान तथा यश में भी वृद्धि होती है।

सातवीं सामान्य मित्तदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहनों की शक्ति तथा पुरुषार्थ में वृद्धि होती है। साथ ही धन एवं कुटुम्ब का पूर्ण सुख भी मिलता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव :

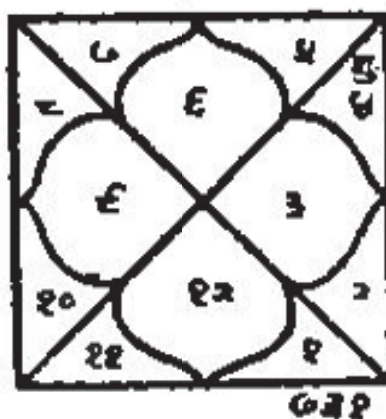


दसवें भाव में मित्त 'बुध' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा 'व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सुख, सम्मान तथा सफलताएँ प्राप्त होती हैं। वह अपने अच्छे कर्मों से धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि करता है।

सातवीं सामान्य मित्तदृष्टि [से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन आदि का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : शुक्र



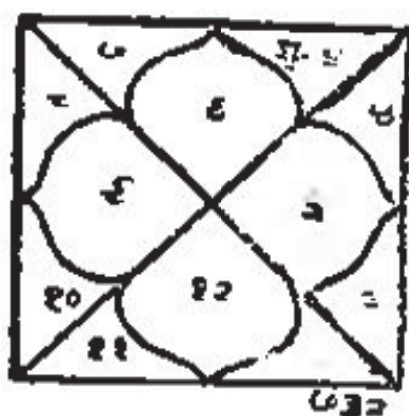
बारहवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की आभदनी अच्छी रहती है। वह धनी, कुटुम्बवाला, धर्मात्मा, भाग्यशाली तथा न्यायी होता है।

सातवीं मित्तदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या-बुद्धि की उन्नति होती है तथा सन्तान-पक्ष में सुख मिलता है।

ऐसा व्यक्ति प्रभावयुक्त बानी का जनी, चतुर, निपुण, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में द्वादशभाव स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : शुक्र



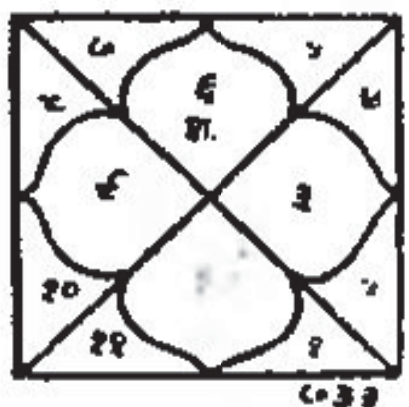
बारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, बाहरी सम्बन्धों से हानि होती है, धन-सचय नहीं हो पाता तथा भाग्योन्नति में व्यवधान पड़ता है। कौटुम्बिक सुख में भी कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पण्डभाव को देखने से शत्रु-पक्ष एवं झगड़े-मुकद्दमों में सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

'कन्या लग्न में 'शनि'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : शनि

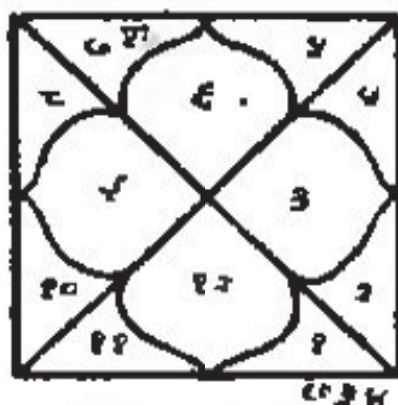


पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक का शरीर रोगी रहता है। विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का सुख प्राप्त होता है, परन्तु सन्तान से वैमनस्य रहता है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव की देखने से भाई-बहनों के सुख में कुछ कमी रहती है। सातवाँ शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव का देखने से स्त्री से कुछ वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक मेहनत करनी पड़ती

है। दसवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता की ओर में सामान्य परेशानी रहती है तथा राज्य एवं व्यापार के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : शनि



दूसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक विद्या-बुद्धि का सुख प्राप्त करता है तथा सन्तान से वैमनस्य रहता है।

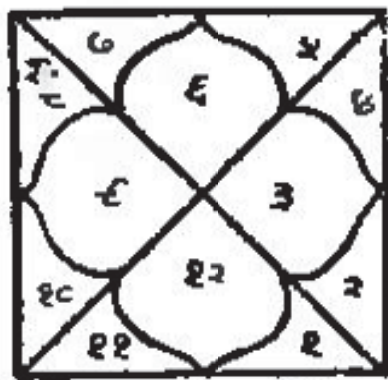
तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से सत्ता श्रमि तथा भवन के सुख में कमी आती है। सातवीं मित्र दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व को कुछ हानि होती है।

दसवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता

मिलती है। ऐसा व्यक्ति प्रत्येक क्षेत्र में संघर्षशील रहता है तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : शनि



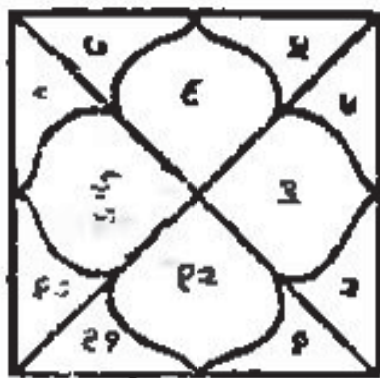
७३५

तीसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों से परेशानी रहती है, पर शत्रुपक्ष पर विजय मिलती है और पराक्रम की वृद्धि होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि के पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि का लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष में सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं मित्तदृष्टि से नवमभाव को देखने से परिश्रम द्वारा भाग्योन्नति होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च में कठिनाई का अनुभव होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से असन्तोष रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : शनि



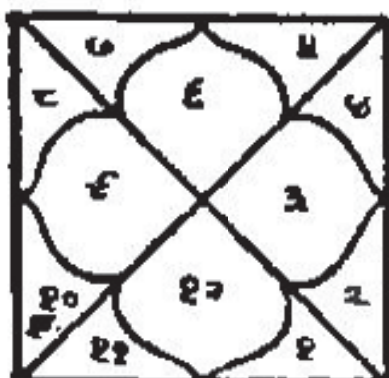
७३६

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है तथा सन्तान के पक्ष से भी परेशानी रहती है, परन्तु विद्या-बुद्धि का लाभ होता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा झगड़ों से सुख-दुःख दोनों ही मिलते हैं।

सातवीं मित्तदृष्टि से दशमभाव को देखने से श्रमिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है। दसवीं मित्तदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से परिश्रम एवं प्रभाव की वृद्धि होती है, परन्तु शरीर कुछ अस्वस्थ बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : शनि



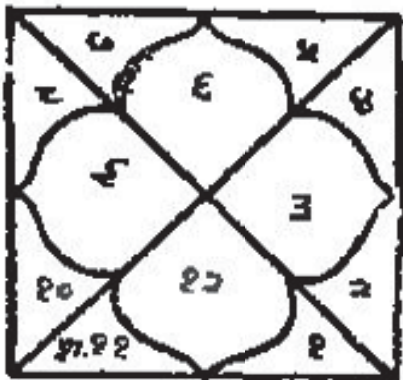
७३७

पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का लाभ होता है, परन्तु सन्तान से कुछ परेशानी भी होती है। शत्रु-पक्ष में उसे गुप्त युक्तियों से विजय मिलती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से परिश्रम द्वारा लाभ होता है। दसवीं उच्च दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति संघर्षपूर्ण सुखी-सम्पन्न जीवन बिताता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : शनि



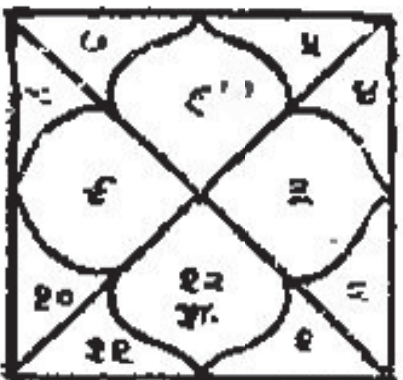
७३८

छठे भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपने बुद्धि-बल से सफलता पाता है, परन्तु विद्या एवं सन्तान के पक्ष में सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं। तीसरी नीच दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु पर अनेक बार संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व की हानि होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च की परेशानी रहती है, तथा बाहरी सम्बन्ध भी सुखद नहीं रहते। दसवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव की देखने से भाई-बहिनों द्वारा कष्ट मिलता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : शनि



७३९

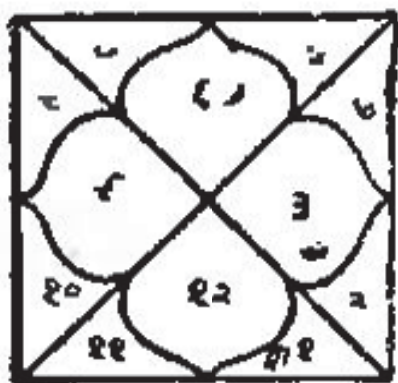
सातवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं तथा शुक्लेन्द्रिय में विकार भी होता है। सन्तान के पक्ष से भी परेशानी रहती है, परन्तु शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से नवम भाव की देखने से जातक बुद्धि-बल द्वारा भाग्योन्नति करता हुआ धर्म का पालन भी करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव से देखने से शरीर में रोग रहता है, परन्तु प्रभाव की वृद्धि होती है।

दसवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी आती है। ऐसा जातक अपने जन्म-स्थान में परेशानी का अनुभव करता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : शनि



७४०

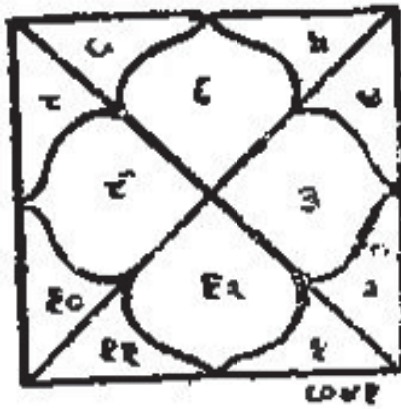
आठवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आयु पर अनेक बार संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व की हानि होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि के दशमभाव को देखने से पिता तथा राज्य-पक्ष में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, किन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में बुद्धि-बल से सामान्य सफलता मिलती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है। दसवीं दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से

कष्ट होता है। विद्या कम रहती है परन्तु चातुर्य अधिक होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : शनि



नवें भाव में स्थित 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक बुद्धि-बल से भाग्योन्नति करता तथा स्वधर्म का सामान्य परिपालन करता है। संतान तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है।

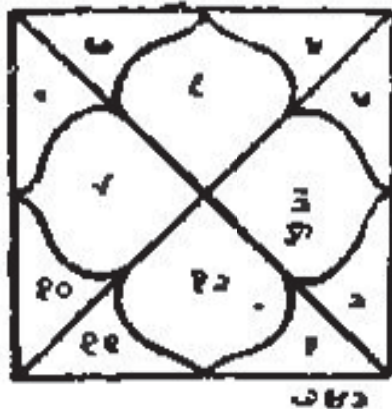
सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहनों से कुछ वैमनस्य रहता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि के षष्ठ-

भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में विजय मिलती है तथा जगड़ों से साय होता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा चतुर, नीतिज्ञ, प्रभावशाली तथा हिम्मती होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : शनि



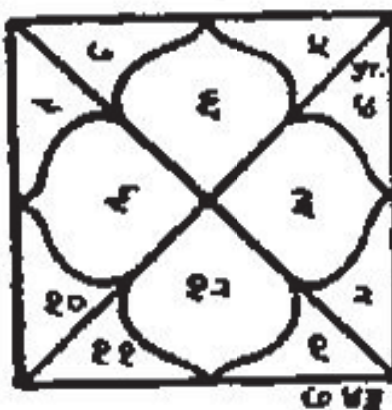
दसवें भाव में स्थित 'बुध' की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की पिता-पक्ष से परेशानी रहती है, परन्तु राज्य-पक्ष से सम्मान एवं व्यवसाय-पक्ष से लाभ होता है। विद्या तथा सन्तान का भी सुख मिलता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च के मामले में असन्तोष रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी सुखदायी नहीं रहता।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता एवं भूमि के सुख में कुछ कमी रहती है। दसवीं

शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कमी आती है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कठिन परिश्रम से ही सफलता मिलती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : शनि

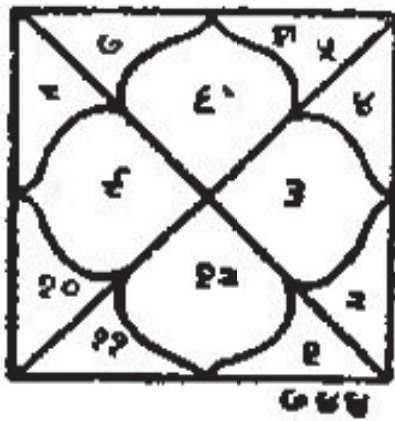


ग्यारहवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी में खूब वृद्धि होती है तथा शत्रु-पक्ष से भी साय होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में रोग रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव की देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि की शक्ति प्राप्त होती है। दसवीं नीच-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से पुरातत्त्व की हानि होती है तथा आयु पर भी अनेक संकट आते हैं।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वादशभाव’ में स्थित ‘शनि’ का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : शनि



बारहवें भाव में शनि ‘सूर्य’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से परेशानी रहती है। तीसरी उच्च-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि विशेष प्रयत्न करने से होती है।

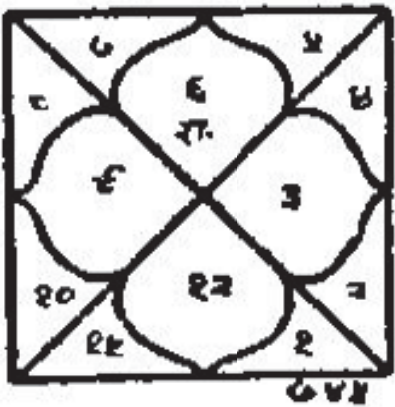
सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव की देखने से शनि-पक्ष पर प्रभाव रहता है, परन्तु रोगादि से कुछ कष्ट होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से बुद्धि-योग द्वारा भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म

में रुचि भी रहती है। ऐसा व्यक्ति ज्ञान-शौकत में खूब खर्च करता है।

‘कन्या’ लग्न में ‘राहु’

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

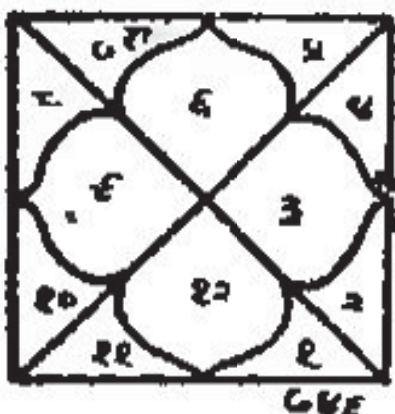
कन्या लग्न : प्रथमभाव : राहु



पहले भाव में मित्र ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक शारीरिक दृष्टि से शक्ति-शाली, दुर्ग मनोबल वाला तथा स्वाभिमानी होता है, परन्तु कभी-कभी उसे शारीरिक कष्ट भी उठाने पड़ते हैं। वह गहरी सूझ-बूझ वाला तथा कठोर परिश्रमी होता है। मानसिक रूप से चिन्तित रहते हुए भी बड़े धैर्य से काम लेकर उन्नति करता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

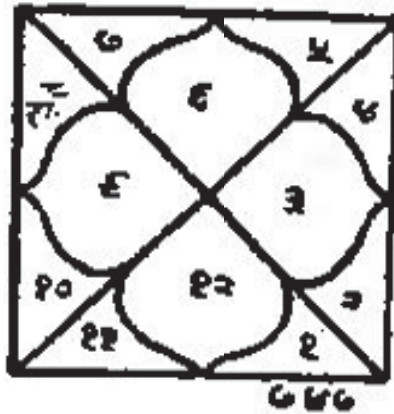
कन्या लग्न : द्वितीयभाव : राहु



दूसरे भाव में मित्र ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक धन-कुटुम्ब की ओर से परेशान रहता है। वह शुप्त प्रयत्न तथा कठिन परिश्रम द्वारा कुछ धन-संचय भी करता है तथा सकट रूप में धनवान् भी समझा जाता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक लाभ तथा हानि—दोनों ही होते हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : राहु

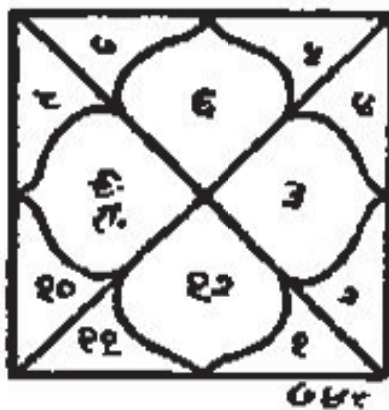


तीसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहनों से परेशानी मिलती है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों एवं हिम्मत के बल पर सफलता प्राप्त करता है तथा स्वार्थ-सिद्धि के लिए भले-बुरे का विचार नहीं करता।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

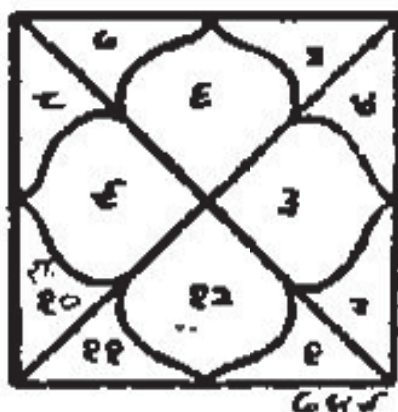
कन्या लग्न : चतुर्थभाव : राहु



चौथे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को माता का अच्छा सुख मिलता है, परन्तु भूमि, भवन एवं घरेलू सुख में कमी रहती है। घरेलू कारणों से कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। परदेश में रहने का योग भी उपस्थित होता है। जन्म-भूमि में उसे दुःख मिलता है, परन्तु बाहरी स्थाव में सुख प्राप्त होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : राहु

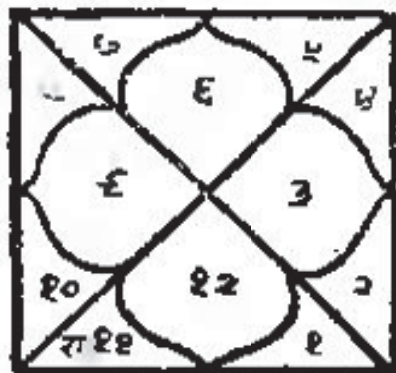


पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं।

ऐसा व्यक्ति विद्वान् न होने पर भी बातें करने में बड़ा चतुर होता है तथा अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए सत्यासत्य का विचार भी नहीं करता। कमी-कमी उसे चिन्ताएँ भी परेशान करती रहती हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : राहु



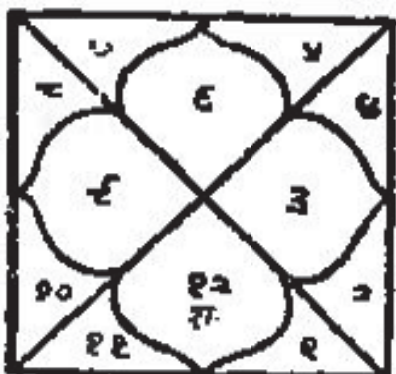
७४६

छठे भाव में मित्त 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभावशाली रहता है तथा झगड़ों एवं संकटों के समय हिम्मत तथा धैर्य से काम लेकर, अपनी कमजोरी को प्रकट नहीं होने देता।

वह कठिन संकटों के समय भी विचलित नहीं होता और उन पर अपनी गुप्त युक्तियों द्वारा नियन्त्रण पा लेता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : राहु



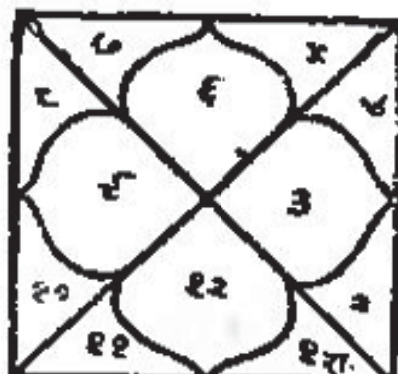
७४७

सातवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। उसको मुत्तेन्द्रिय में विकार भी हो सकता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर ही अपना काम चलाता रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : राहु



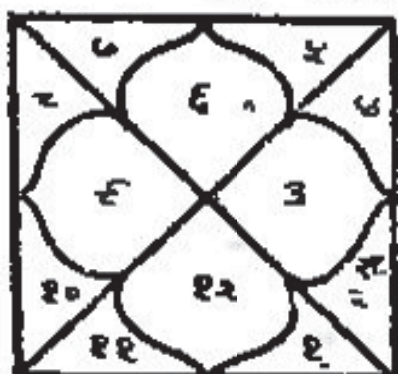
७४८

आठवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को जीवन में अनेक बार खतरों का सामना करना पड़ता है तथा मृत्यु-तुल्य कष्ट भी भोगने पड़ते हैं। उसके पेट में भी विकार रहता है।

गुप्त युक्तियों, धैर्य तथा साहस के बल पर वह आगे बढ़ता है। उसे चिन्ताएँ तथा परेशानियाँ हमेशा घेरे रहती हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : राहु



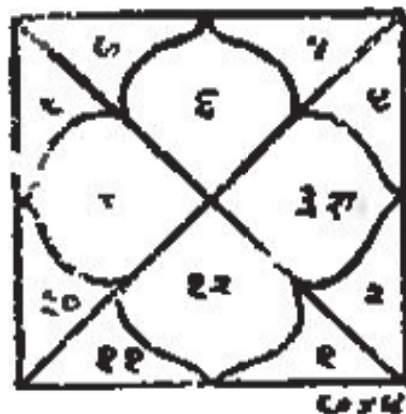
७४९

नवें भाव में मित्त 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक अपनी भाग्योन्नति के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा धर्म का उचित मालन नहीं कर पाता।

कभी-कभी उसे भाग्य के विषय में घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य तथा साहस के बल पर ही थोड़ी बहुत उन्नति कर पाता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘दशमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

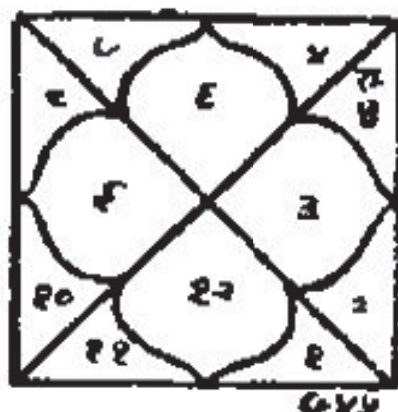
कन्या लग्न : दशमभाव : राहु



दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित उच्च 'राहु' के प्रभाव से जातक अपने पिता के साथ संघर्ष करता हुआ उन्नति करता है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे गुप्त युक्ति एवं चातुर्य के बल पर ही सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। कभी-कभी सकट भी आते हैं, परन्तु फिर स्थिति ठीक ही आती है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘एकादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

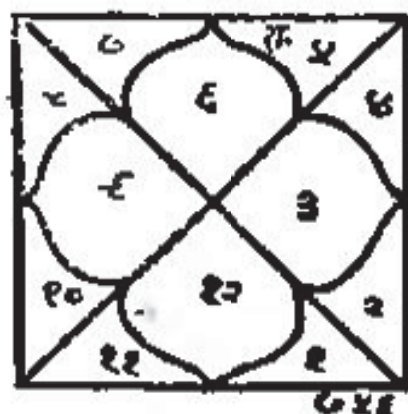
कन्या लग्न : एकादशभाव : राहु



ब्यारहवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है, परन्तु कठिनाइयों का सामना भी बहुत करना पड़ता है। उसे कभी बहुत लाभ तो कभी बहुत घाटा होता है। वह अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य, साहस तथा परिश्रम के सहारे लाभ उठाता है, परन्तु कभी-कभी धोखा भी खा जाता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : राहु



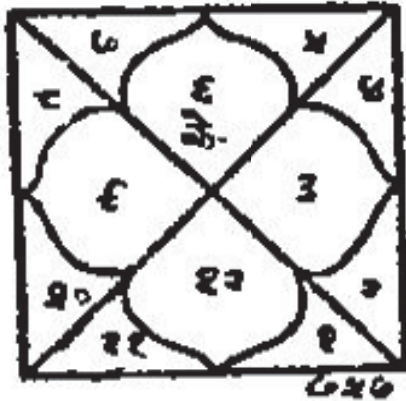
बारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को खर्च-सम्बन्धी कठिनाइयाँ बहुत रहती हैं तथा बाहरी सम्पर्कों से भी कष्ट होता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों, धैर्य, साहस तथा परिश्रम के सहारे अपना खर्च चलाता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक धन-लाभ भी हो जाता है।

'कन्या' लग्न में 'केतु'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलारोश

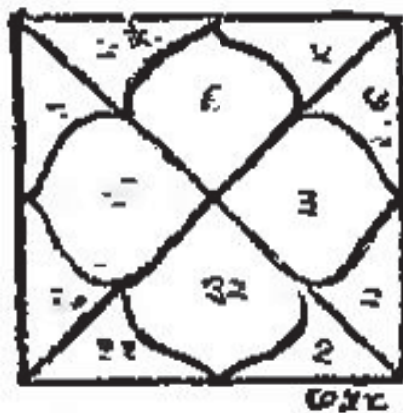
कन्या लग्न : प्रथमभाव : केतु



पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को शारीरिक कष्ट एवं चिन्ताओं का सामना करना पड़ता है। शरीर पर कोई गहरी छोट लगने अथवा रोग होने का योग भी बनता है। शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों वाला, हिम्मती, धैर्यवान् तथा अक्खड़ स्वभाव का होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलारोश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : केतु

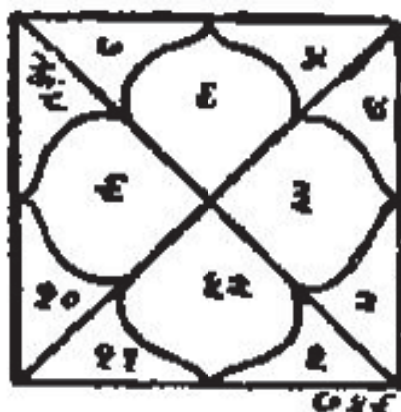


दूसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख में कमी आती है। कभी-कभी आकस्मिक उन-हानि भी होती है तो कमी-कमी आकस्मिक रूप से धन-लाभ भी हो जाता है।

ऐसा व्यक्ति धन की वृद्धि के लिए अथक परिश्रम करता है, तथा हर समय परेशान बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलारोश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : केतु

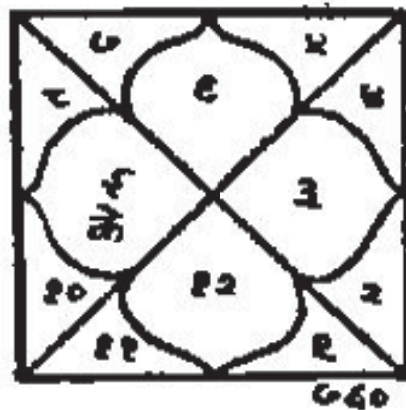


तीसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहनों से परेशानी मिलती है।

ऐसा व्यक्ति सकट के समय भी हिम्मत नहीं हारता तथा अपने ही बाहु-बल का भरोसा रखता है। वह कठिन परिश्रमी भी होता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलविशेष

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : केतु

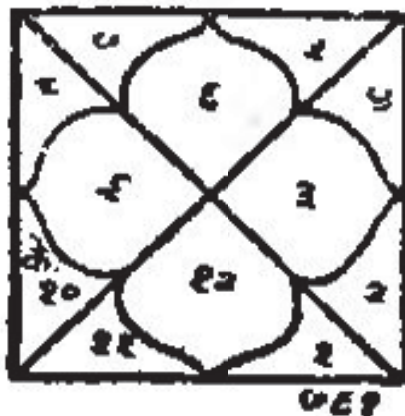


चौथे भाव में शत्रु ‘गुरु’ की राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। घरेलू जीवन ठाठदार होता है। इसके लिए उसे विशेष परिश्रम भी करना पड़ता है।

कभी-कभी घरेलू सुख में संकट भी आता है और कभी सुख में वृद्धि भी हो जाती है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘पंचमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलविशेष

कन्या लग्न : पंचमभाव : केतु

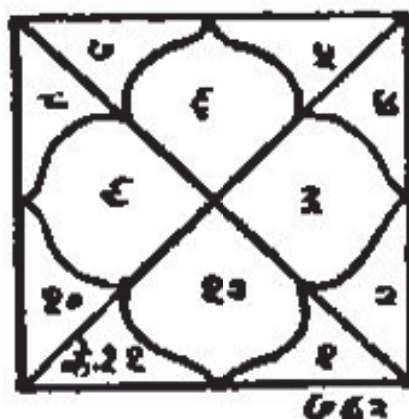


पाँचवें भाव में मित्र ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से चिन्ता रहती है तथा विद्या-प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी विद्या-वृद्धि में कभी को स्वयं अनुभव करता है, परन्तु फिर भी स्वयं को बड़ा समझदार तथा योग्य प्रदर्शित करता है। वह वातपीत में बड़ा तेज होता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘षष्ठभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलविशेष

कन्या लग्न : षष्ठभाव : केतु

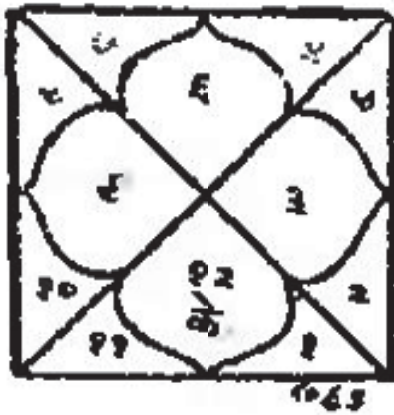


छठे भाव में मित्र ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है। उसे ननसाल-पक्ष से परेशानी उठानी पड़ती है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा धैर्यवान्, गुप्त युक्तियों वाला, बहादुर, निर्भय तथा अक्खड़ स्वभाव का होता है और इन्हीं विशेषताओं के कारण अपना काम बना लेने में सफलता भी प्राप्त करता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

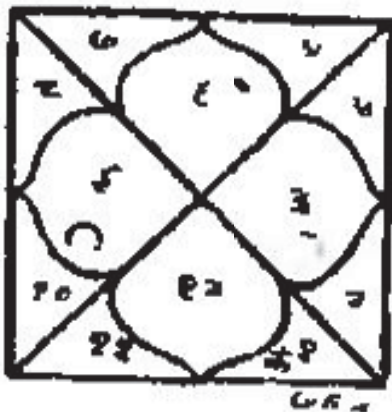
कन्यालग्न : सप्तमभाव : केतु



सातवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयाँ जाती हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्ति, धैर्य तथा साहस के बल पर उनके निराकरण का प्रयत्न करता है। उसका गृहस्थ-जीवन बड़ी कठिनाइयों से सफल बनता है। उसकी भ्रूवेन्द्रिय में विकार होने की संभावना भी रहती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्यालग्न : अष्टमभाव : केतु

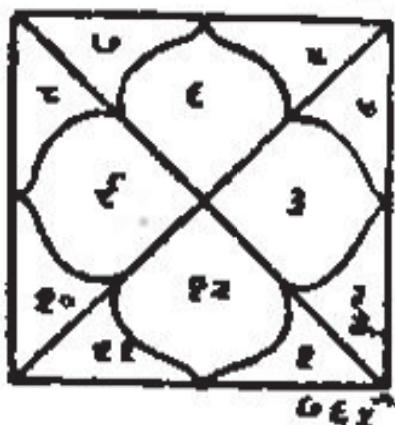


आठवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के जीवन में अनेक बार प्राणान्तक कष्ट उपस्थित होता है तथा पुरातस्व की हानि भी होती है। उसके पेट में भी विकार रहता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी, क्रोधी, धैर्यवान्, हिम्मत तथा तेजी से काम करने वाला होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्यालग्न : नवमभाव : केतु

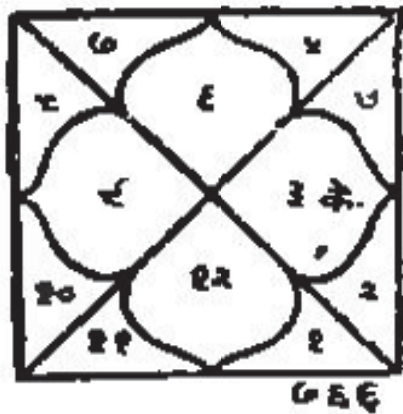


नवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की धर्म-क्षेत्र में कमी रहती है तथा भाग्योन्नति में भी बड़े संकट आते हैं।

ऐसा व्यक्ति अपने चातुर्य, गुप्त युक्तियों, बुद्धि तथा साहस के बल पर संकटों से अपनी रक्षा करता है तथा कभी-कभी विशेष चिन्तनीय स्थितियों में होकर भी गुजरता है।

'कन्या' लग्न की कुंडली में 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

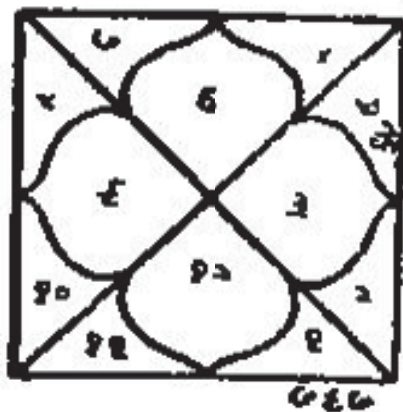
कन्या लग्न : दशमभाव : केतु



दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को पितर के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक प्रभाव स्थापित नहीं होता। उसे भाव-हानि, धन-हानि आदि का शिकार बनना पड़ता है। वह झगड़े-झगड़ तथा परेशानियों में अक्सर फंसा रहता है।

'कन्या' लग्न की कुंडली में 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

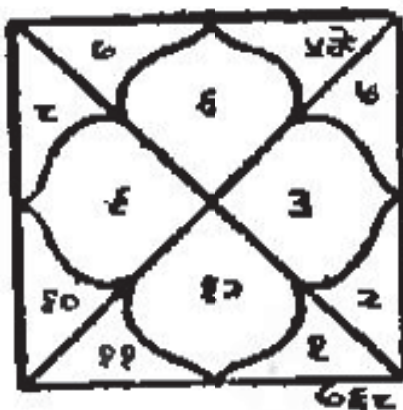
कन्या लग्न : एकादशभाव : केतु



ग्यारहवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आमदनी के साधनों में वृद्धि होती है, परन्तु उसे मानसिक-परेशानियाँ भी बहुत रहती हैं। कभी-कभी उसे संकट एवं हानि का सामना करना पड़ता है तो कभी-कभी आकस्मिक लाभ भी होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा धैर्यवान् तथा परिश्रमी होता है।

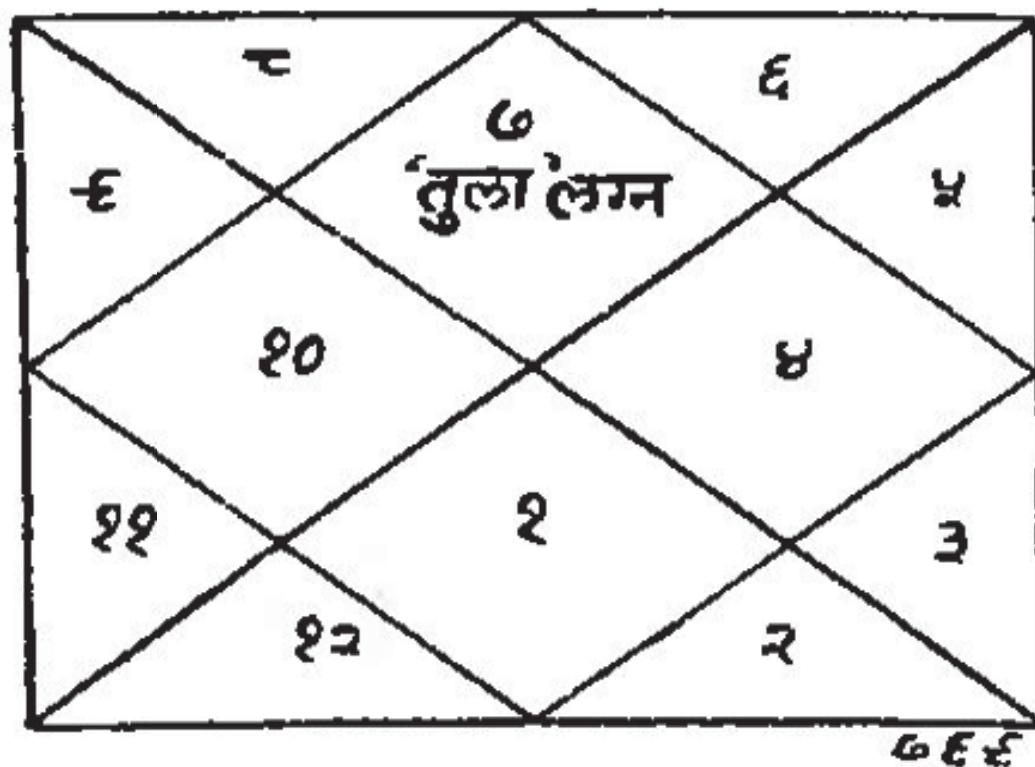
'कन्या' लग्न की कुंडली में 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : केतु



बारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को खर्च के कारण अनेक चिन्ताओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध भी कष्टकारक सिद्ध होते हैं। वह कभी-कभी संकटों का शिकार भी बनता है, परन्तु अपने धैर्य एवं गुप्त धुक्तियों के बल पर जैसे-तैसे छुटकारा भी पा लेता है।

‘तुला’ लग्न



[‘तुला’ लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भागों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

‘तुला’ लग्न का फलादेश

‘तुला’ लग्न में जन्म लेने वाला जातक गौर वर्ण, क्षिप्रिल शरीर तथा मोटी नाक वाला होता है। वह कफ प्रकृति वाला एवं वीर्यविकारयुक्त भी होता है।

ऐसा व्यक्ति गुणी, धनी, यशस्वी, परोपकारी, प्रियवादी, सत्यवादी, सतोगुणी, तीर्थ-प्रेमी, निर्लोभ, व्यवसाय-कुशल, ज्योतिषी, भ्रमणशील तथा अपने कुल का भूषण होता है। वह राज्य द्वारा सम्मानित, देव-पूजन में चित्त लगानेवाला तथा पर-स्त्रियों से प्रेम रखने वाला भी होता है।

‘तुला’ लग्न में जन्म लेने वाले जातक की अपनी आरंभिक अवस्था में दुःख शोचना पड़ता है, मध्यमावस्था में वह सुख प्राप्त करता है तथा अन्तिमावस्था सामान्य स्थिति में बीतती है।

‘तुला’ लग्न के जातक का आयुदय ३१ अथवा ३२ वर्ष की आयु में होता है।

‘तुला’ लग्न वालों की अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७० से ८७७ के बीच देखना चाहिए।

शुद्ध-कुण्डली से ग्रहों का फलादेश किन्तु उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

‘तुला’ लग्न में ‘सूर्य’ का फलादेश

१—‘तुला’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘सूर्य’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७० से ७८१ के बीच देखना चाहिए।

२—‘तुला’ लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘सूर्य’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

चित्त महीने में ‘सूर्य’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ७७०
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ७७१
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ७७२
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ७७३
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ७७४
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ७७५
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ७७६
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या ७७७
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या ७७८
- (ञ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या ७७९
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ७८०
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर हो तो संख्या ७८१

‘तुला’ लग्न में ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

१—‘तुला’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘चन्द्रमा’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७८२ के ७९३ के बीच देखना चाहिए।

२—‘तुला’ लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित ‘चन्द्रमा’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

बिस दिन ‘चन्द्रमा’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ७८२
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ७८३
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ७८४
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ७८५
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ७८६
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ७८७

- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७८८
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७८९
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७९०
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७९१
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७९२
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७९३

'तुला' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश संख्या उदाहरण-कुण्डली ७९४ से ८०५ के बीच देवना चाहिए।

२—'तुला' लग्न भागों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देवना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७९४
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७९५
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७९६
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७९७
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७९८
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७९९
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८००
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८०१
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८०२
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८०३
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८०४
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८०५

'तुला' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८०६ से ८१७ के बीच देवना चाहिए।

२—'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली से विभिन्न भागों में स्थित 'मंगल'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बृष'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८०६
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८०७
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८०८
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८०९
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८१०
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८११
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८१२
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८१३
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८१४
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८१५
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८१६
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८१७

'तुला' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'बृष' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८१८ से ८२६ के बीच देखना चाहिए ।

२—'तुला' लग्न वालों की शीघर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'बृष'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८१८
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८१९
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८२०
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८२१
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८२२
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८२३
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८२४
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८२५
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८२६
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८२७
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८२८
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८२९

थस

‘तुला’ लग्न में ‘शुक्र’ का फलादेश

१—‘तुला’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘शुक्र’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८३० से ८४१ के बीच देखना चाहिए।

२—‘तुला’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘शुक्र’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

चित्त महीने में ‘शुक्र’—

- (क) ‘शेष’ राशि पर हो तो संख्या ८३०
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ८३१
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ८३२
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ८३३
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ८३४
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ८३५
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ८३६
- (झ) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या ८३७
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या ८३८
- (झ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या ८३९
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ८४०
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर हो तो संख्या ८४१

‘तुला’ लग्न में ‘शनि’ का फलादेश

१. ‘तुला’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘शनि’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८४२ से ८५३ के बीच देखना चाहिए।

२. ‘तुला’ लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘शनि’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए।

जिस वर्ष में ‘शनि’—

- (क) ‘शेष’ राशि पर हो तो संख्या ८४२
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ८४३
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ८४४
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ८४५
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ८४६
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ८४७

- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८४८
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८४९
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८५०
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८५१
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८५२
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८५३

'तुला' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१. 'तुला' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८५४ से ८६५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८५४
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८५५
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८५६
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८५७
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८५८
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८५९
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८६०
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८६१
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८६२
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८६३
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८६४
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८६५

'वृष' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'तुला' लग्न वालों को अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८६६ से ८७७ के बीच देखना चाहिए।

२. 'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'केतु'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण कुण्डलिनों में देखना चाहिए—

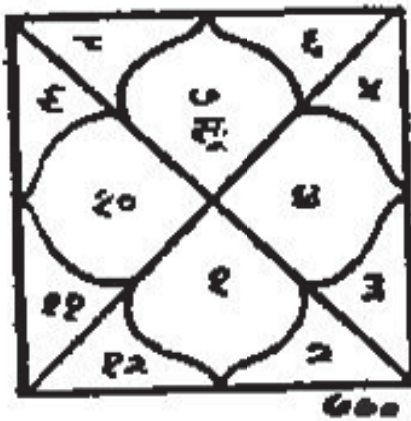
बिस वर्ष में 'केतु'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८६६
- (ख) 'जुव' राशि पर हो तो संख्या ८३७
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८६८
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८६६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८७०
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८७१
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८७२
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८७३
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८७४
- (झ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८७५
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८७६
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८७७

'तुला' लग्न में 'सूर्य'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

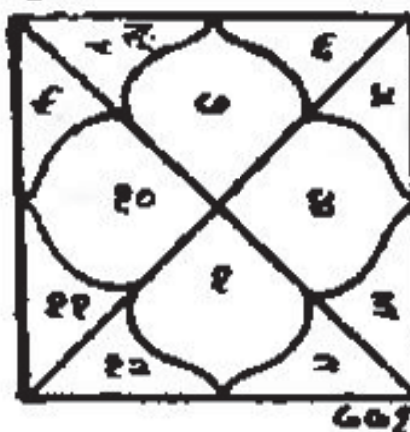
तुलालग्न : प्रथमभाव : सूर्य



शरीर-स्थान में अपने शत्रु शुक की राशि पर स्थित बौध के शनि के प्रभाव से जातक की शरीर में सदा दुर्बलता तथा सौन्दर्य की कमी का अनुभव होता है। यह किसी की मुलामी करने में हानि समझता है। पराक्रम की भी कमी रहती है। सातवीं उच्च दृष्टि से मित्र मंगल की राशि में सप्तम भाव की देखने से स्त्री पक्ष से लाभ होता है। सुन्दर स्त्री मिलती है। भोग-शक्ति तथा व्यवसाय पक्ष की उन्नति होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुलालग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

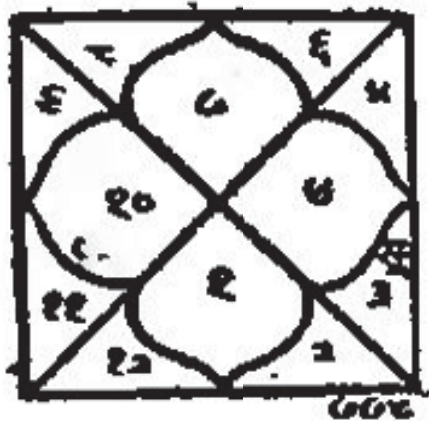


दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है और वह धनी तथा प्रभावशाली भी होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव की देखने से पुरातत्त्व तथा आयु के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है।

'सुला' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलवेश

सुला लग्न : नवमभाव : सूर्य

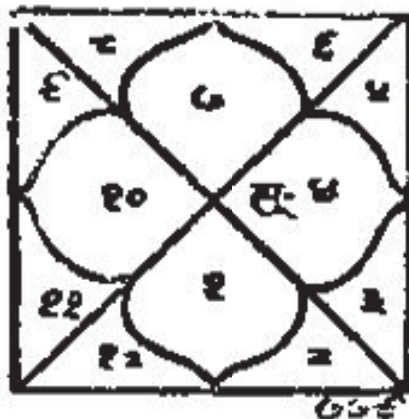


नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' से प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती रहती है। उसे धन तथा सुख पर्याप्त मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

'सुला' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलवेश

सुला लग्न : दशमभाव : सूर्य

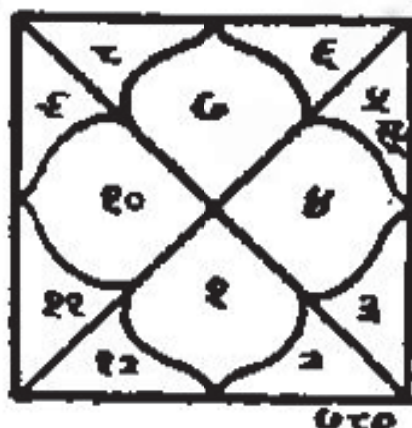


दसवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' से प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय से क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। आमदनी में खूब वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव की देखने से माता, भूमि एवं भवन से सुख में कुछ कमी बनी रहती है।

'सुला' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलवेश

सुला लग्न : एकादशभाव : सूर्य

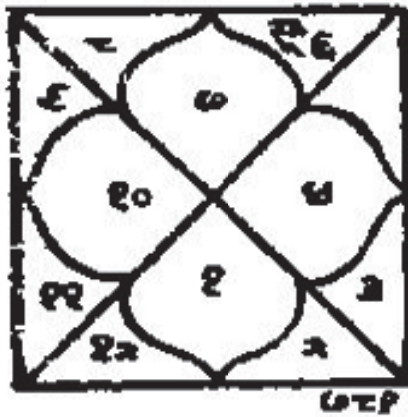


ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आमदनी में बहुत वृद्धि होती रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव की देखने से सन्तान के पक्ष से कुछ असन्तोष रहता है तथा विद्याध्ययन में भी कमी रहती है। ऐसे व्यक्ति की वाणी में तेजी पाई आती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : द्वादशभाव : सूर्य



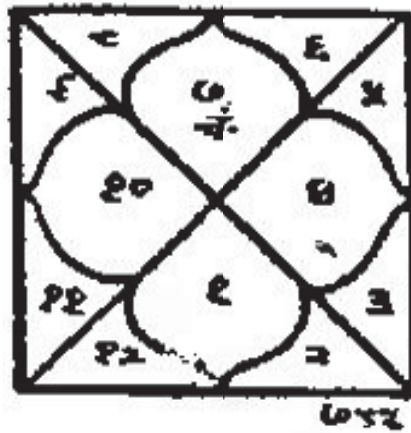
बारहवें भाव में मित 'बृध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' से प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सुख, सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष से मित्रता स्थापित होती है, झगड़ों से लाभ होता है तथा प्रभाव की वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न में 'चन्द्रमा'

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

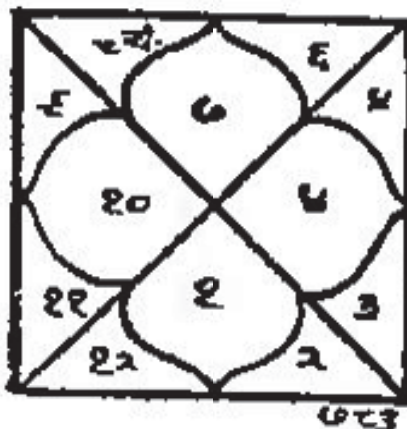


पहले भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व की प्राप्ति होती है। उसे राजनीति के क्षेत्र में सम्मान मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से सुन्दर स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय से क्षेत्र में भी लाभ होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

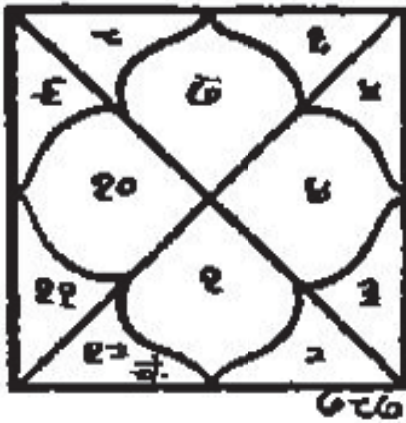


दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित मीन के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी का सामना करना पड़ता है। धन-संचय के लिए गुप्त युक्तियों का सहारा भी लेना पड़ता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से अष्टम भाव की देखने से वायु एवं पुरातत्व का लाभ होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाब' स्थित 'चन्द्रमा' का फलवेरा

तुला लग्न : षष्ठभाब : चन्द्र

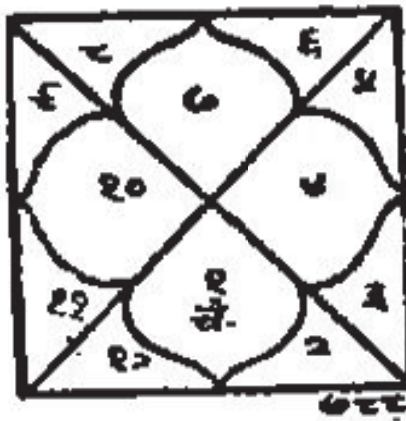


छठे भाव में मित 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' से प्रभाव से जातक को अपनी चतुराई, मनोबल तथा शान्त स्वभाव के कारण शत्रु-पक्ष पर सफलता मिलती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ रुकावटें आती हैं।

सातवीं मितदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्व अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ भी होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाब' स्थित 'चन्द्रमा' का फलवेरा

तुला लग्न : सप्तमभाब : चन्द्र

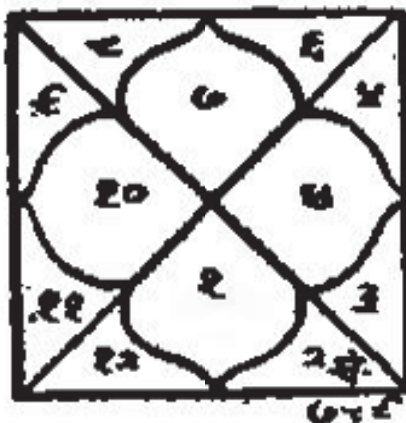


सातवें भाव में मित 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को व्यवसाय-पक्ष में अत्यधिक सफलता मिलती है तथा स्त्री द्वारा उन्नति एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष से भी यश तथा लाभ मिलता है।

सातवीं मितदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, प्रभाव तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाब' स्थित 'चन्द्रमा' का फलवेरा

तुला लग्न : अष्टमभाब : चन्द्र

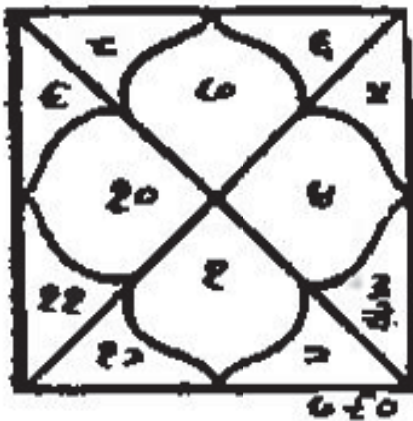


आठवें भाव में सामान्य मित 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'चन्द्रमा' से प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन आनन्दमय रहता है, परन्तु पिता-पक्ष से हानि, राज्य-पक्ष से सामान्य सम्मान तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख भी कमजोर रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : चन्द्र

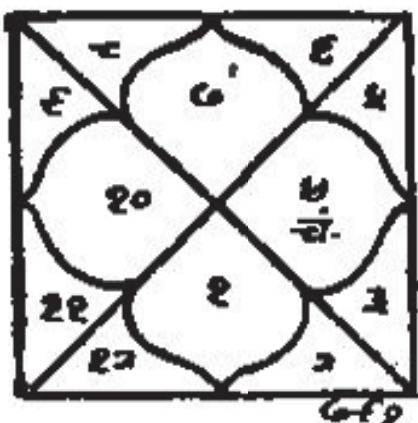


नवें भाव में मित्त 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय-पक्ष से भी यश, सहयोग तथा सम्मान का लाभ होता है।

सातवीं मित्तदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : चन्द्र

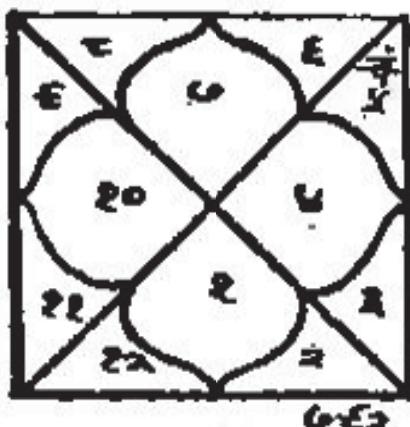


दसवें भाव में स्वराशि-स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को विद्या, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में शक्ति, सहयोग, सम्मान, यश तथा धन का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति स्वाभिमानी तथा समाज में प्रतिष्ठित होता है।

सातवीं शतृदृष्टि से चतुर्थ भाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुला लग्न : एकादशभाव : चन्द्र

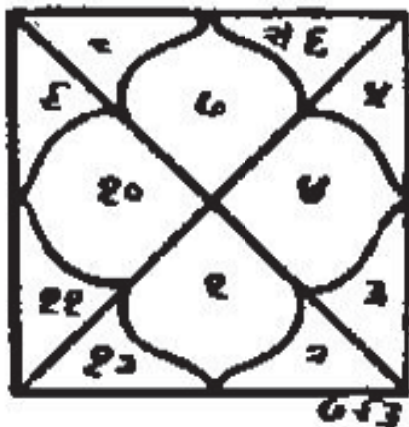


ग्यारहवें भाव में मित्त 'शुक्र' की राशि में स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को लाभ के अवसर निरन्तर मिलते रहते हैं। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में भी सफलता, सम्मान तथा यश आदि की यथेष्ट प्राप्ति होती है।

सातवीं शतृदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान से पक्ष से सामान्य असंतोष रहता है, परन्तु विद्या-बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति होशियार, चालाक तथा स्वार्थी होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

तुलालग्न : द्वादशभाव : चन्द्र



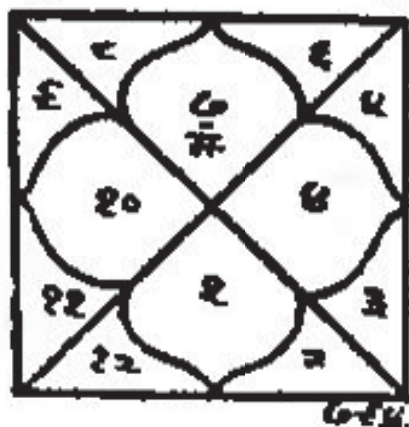
बारहवें भाव में मित 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' से प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं उन्नति भी होती है। पिता, व्यवसाय तथा राज्य-पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है। प्रतिष्ठा-मान में भी कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में शक्ति एवं चातुर्य द्वारा सफलता प्राप्त होती है।

'तुला' लग्न में मंगल

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुलालग्न : प्रथमभाव : मंगल

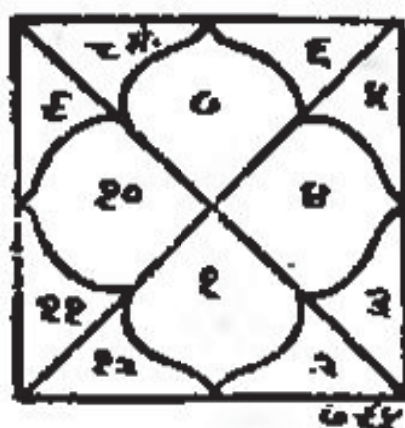


पहले भाव में सामान्य मित 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की शारीरिक सुख तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। धन तथा कूटुम्ब का सुख भी मिलता है।

चौथी उच्च दृष्टि से शत्रुभाष की देखने से माता, भूमि तथा धन का विशेष सुख मिलता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव की देखने से स्त्री का सुख मिलता है तथा व्यवसाय में उन्नति होती है। आठवीं सामान्य मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातस्व की वृद्धि होती है, परन्तु उदर-विकार रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित मंगल का फलादेश

तुलालग्न : द्वितीयभाव : मंगल

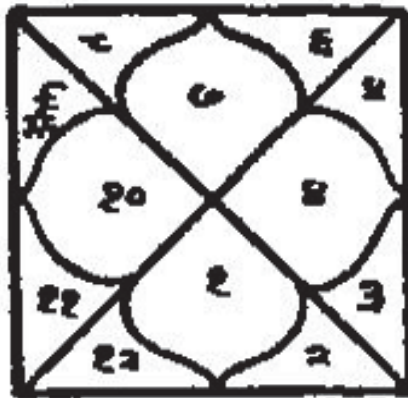


दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को धन तथा कूटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सम्मान तथा विद्या-बुद्धि का लाभ कुछ कठिनाइयों के साथ होता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातस्व की शक्ति प्राप्त होती है। आठवीं मित्रदृष्टि के नवम भाव को देखने से आयु तथा धर्म की वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुलालाग्न : तृतीयभाव : मंगल



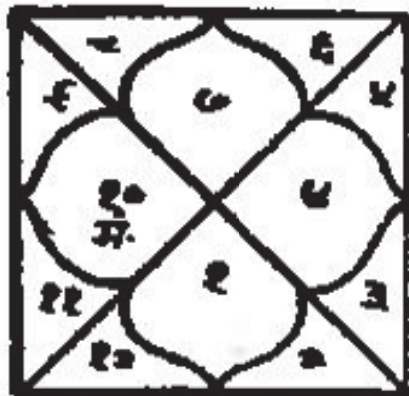
क्षेत्र में कुछ रुकावटें आती हैं।

तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से भार्गव-वहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। धन-लाभ भी खूब होता है तथा स्त्री-पक्ष में भी सफलता मिलती है। चौथी मित्र-दृष्टि से षष्ठभाब को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म तथा भाग्य को उन्नति होती है। आठवीं नीचदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुलालाग्न : चतुर्थभाव : मंगल



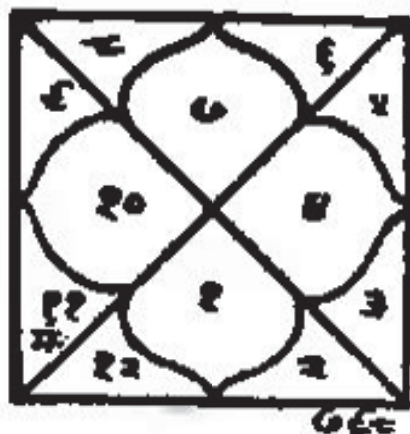
खूब अच्छी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा भुखी होता है।

चौथे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन का विशेष सुख मिलता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय से भी सुख मिलता है।

सातवीं नीचदृष्टि से मित्रराशि में दशमभाव की देखने से पिता से सुख में कमी आती है तथा राज्य एवं व्यवसाय से क्षेत्र की उन्नति में रुकावटें आती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुलालाग्न : पंचमभाव : मंगल



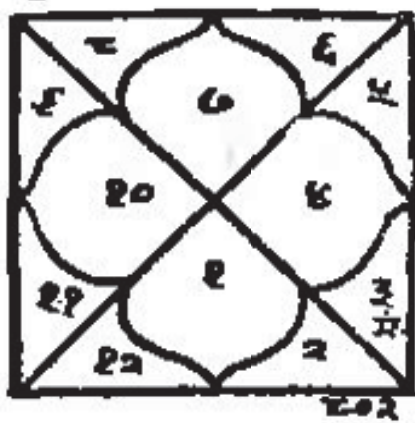
से आमदनी खूब होती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से सर्व अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। कुटुम्ब तथा स्त्री से कुछ वैमनस्य रहता है। बुद्धि-बल से व्यवसाय में सफलता मिलती है। चौथी शत्रु-दृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से आयु के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुछ कठिनाइयों से साथ पुरातत्व का लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव की देखने

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : मंगल



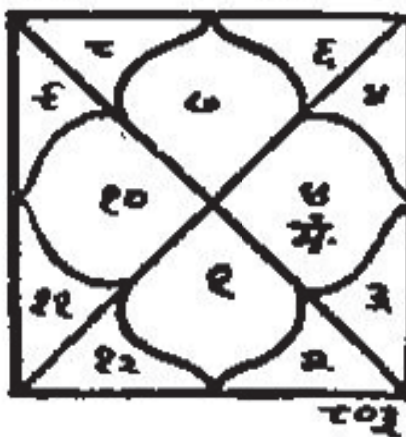
नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति खूब होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। स्त्री भाग्यशालिनी मिलती है, फलतः विवाहोपरान्त विशेष लाभ होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी

वृद्धि होती है। आठवीं उच्च-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : मंगल



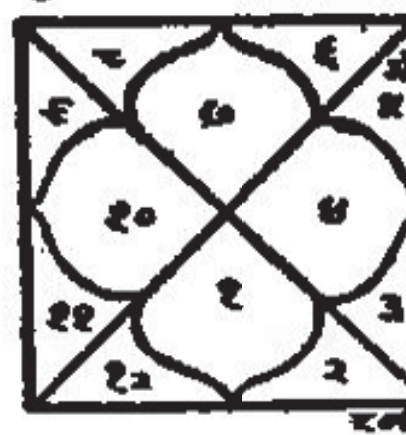
दसवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं तथा स्त्री एवं कुटुम्ब के सुख में भी कमी रहती है।

चौथी मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर दुर्बल रहता है, परन्तु सम्मान को प्राप्ति होती है। सातवीं उच्च दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से

वैमनस्य रहता है तथा विद्या-बुद्धि में कुछ कमी बनी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुला लग्न : एकादशभाव : मंगल



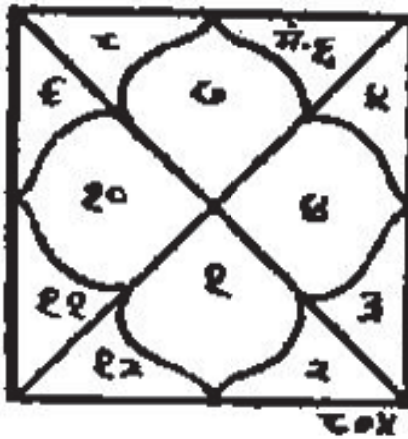
ग्यारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से धन का पर्याप्त लाभ होता है। स्त्री-पक्ष से भी सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख भी पर्याप्त मिलता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान से असन्तोष तथा विद्या-बुद्धि में कमी रहती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने

से स्त्री-पक्ष में भी कुछ कमी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में लाभ होता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

तुला लग्न : द्वादशभाव : मंगल



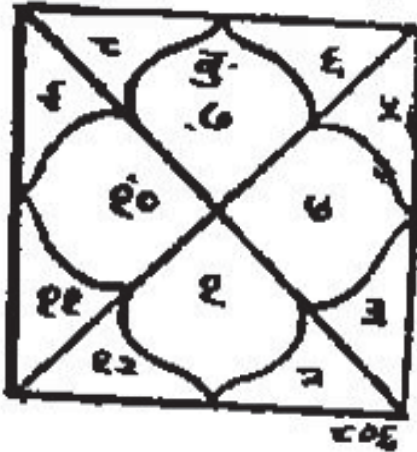
बारहवें भाव में मित्त ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। धन, कुटुम्ब, स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में हानि एवं असन्तोष के अवसर उपस्थित होते हैं। चौथी मित्त-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्त-दृष्टि से षष्ठ-भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त होती है।

आठवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से बाहरी स्यानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में लाभ होता है तथा स्त्री-पक्ष में कुछ कमी रहती है।

‘तुला’ लग्न में ‘बुध’

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

तुला लग्न : प्रथमभाव : बुध

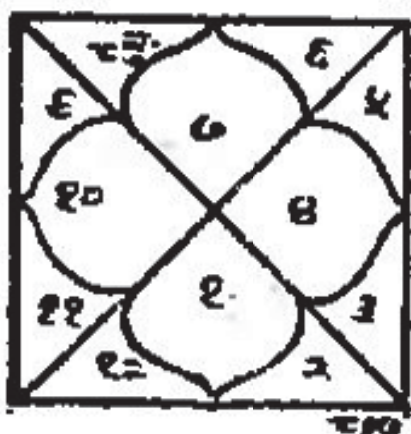


पहले भाव में मित्त ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल होता है तथा वह बाहरी स्यानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता और खूब खर्च करता है। भाग्य में कमी होते हुए भी शीघ्रवान् समझा जाता है तथा धर्म का पालन भी करता है।

सातवीं मित्त-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

तुला लग्न : द्वितीयभाव : बुध

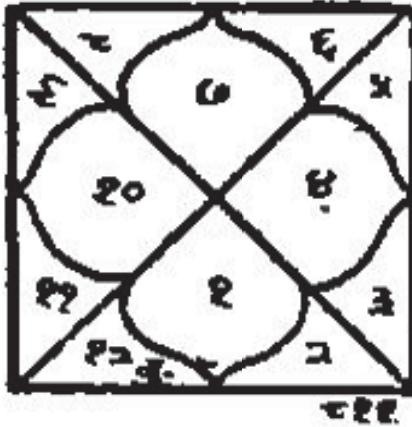


दूसरे भाव में मित्त ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ कमी रहती है। धन खूब खर्च करता है तथा स्वार्थ के लिए ही धर्म का पालन भी करता है।

सातवीं मित्तदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्व का यथेष्ट लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति सामान्यतः धनी माना जाता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाब' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुलालग्नः षष्ठभाबः बुध

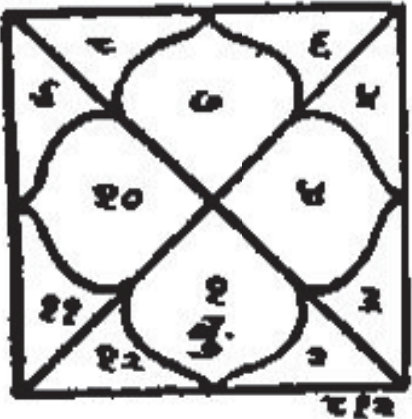


छठे भाव में मित 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'बुध' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं तथा खर्च भी कठिनाई से चलता है। धर्म एवं भाग्य के क्षेत्र में भी कमजोरी रहती है परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च की अधिकता बनी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाब' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुलालग्नः सप्तमभाबः बुध

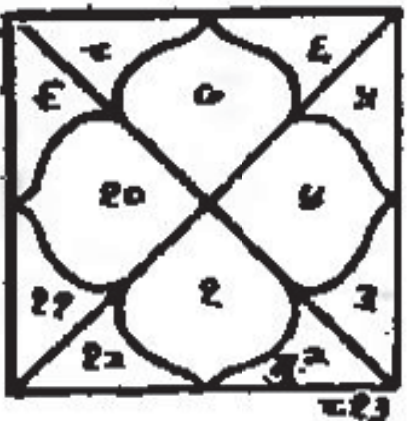


सातवें भाव में मित 'बुध' की राशि पर स्थित व्ययेश 'बुध' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। गृहस्थी का खर्च अच्छे तरह चलता है तथा धर्म का पालन भी होता है। बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है।

सातवीं मितदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से सारौरिक सुख तथा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान् समझा जाता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाब' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुलालग्नः अष्टमभाबः बुध

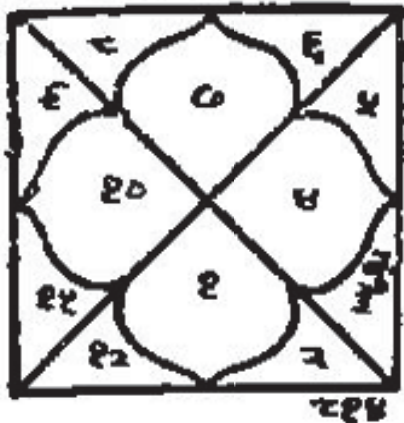


आठवें भाव में मित 'बुध' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है परन्तु भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमजोरी रहती है। बाहरी संबंधों से कठिनाइयों के साथ लाभ होता है तथा खर्च चलाने में भी परेशानियाँ आती हैं।

सातवीं मितदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कठिनाइयों के साथ धन की वृद्धि होती है, परन्तु यह कम ही मिलता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : बुध

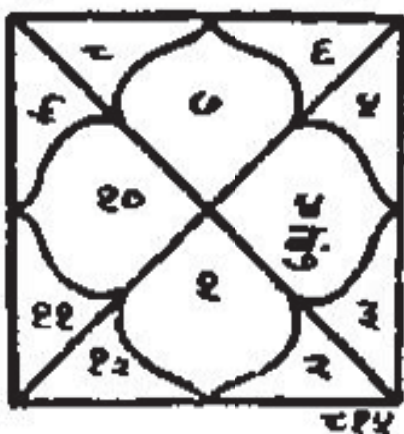


नवें भाव में स्वराशि-स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव की देखने से भाई-बहिनों का तुल मिलता है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : दशमभाव : बुध

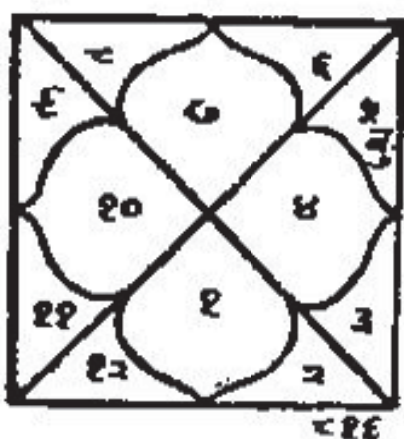


दसवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति करने के लिए कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। धर्म का पालन भी कम ही होता है। भाग्योन्नति भी कम होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से जाता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है जिसके कारण वह धनी समझा जाता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : एकादशभाव : बुध

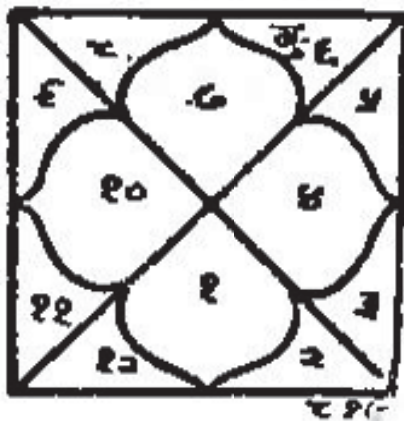


ग्यारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी यथेष्ट रहती है। वह धर्मत्मा तथा भाग्यवान् होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलताएँ मिलनी हैं। ऐसा व्यक्ति अपनी बुद्धि तथा वाणी के बल पर विशेष उन्नति करता है। परन्तु बुध के व्ययेश होने के कारण हर क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलालोक

तुला लग्न : द्वादशभाव : बुध



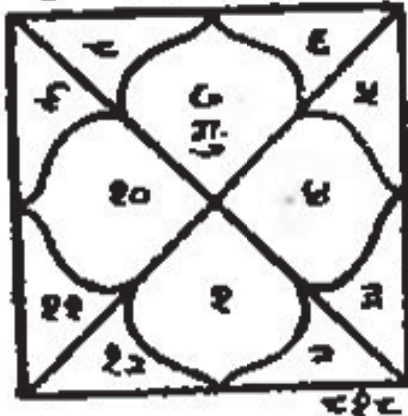
बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित उच्च के 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाइयों के साथ भाव तथा सुख की प्राप्ति होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में कुछ परेशानियाँ आती हैं तथा कुछ अनुचित उपायों के सहारे शत्रु-पक्ष में काम निकालना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी होता है।

'तुला' लग्न में 'गुरु'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलालोक

तुला लग्न : प्रथमभाव : गुरु

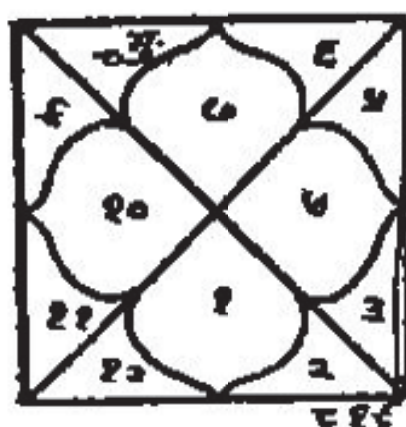


पहले भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव, पुरुषार्थ तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहनों के सुख में कुछ कमी आती है। शत्रु-पक्ष में हिम्मत के बल पर प्रभाव स्थापित होता है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से वैमनस्य रहता है, परन्तु विद्या-वृद्धि का लाभ होता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के

क्षेत्र में लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलालोक

तुला लग्न : द्वितीयभाव : गुरु



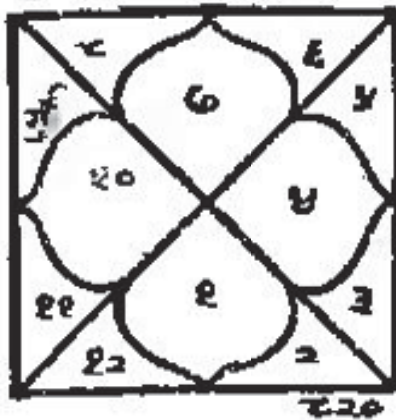
दूसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ द्वारा धन की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहनों के सुख में कमी रहती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से जातक अपने धन के बल से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

नवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में यश, युद्ध सम्मान तथा लग्न लाभ प्राप्त होते हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलवैश

तुला लग्न : तृतीयभाव : गुरु



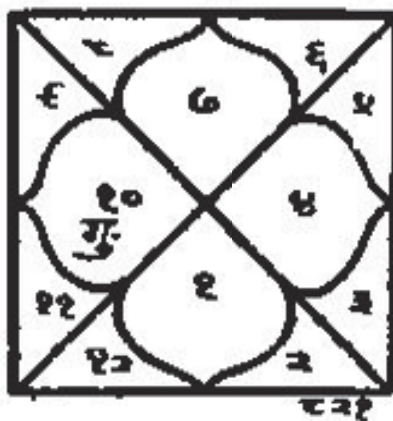
तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में सामान्य कमी आती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव की देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में खूब

सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, धर्मात्मा तथा भाग्यशाली होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली से 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलवैश

तुला लग्न : चतुर्थभाव : गुरु



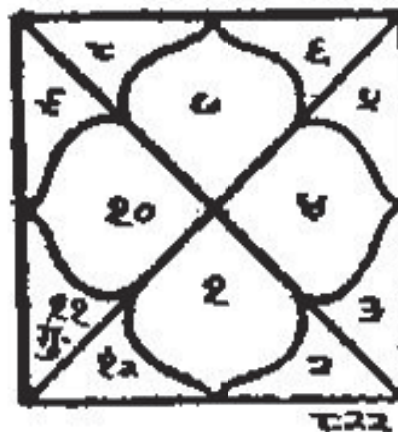
चौथे भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित नीच के 'गुरु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है तथा शत्रु-पक्ष में भी परेशानी उठानी पड़ती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का कुछ लाभ होता है।

सातवीं मित्र तथा उन्व-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के

सम्बन्ध से लाभ होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलवैश

तुला लग्न : पंचमभाव : गुरु



पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को विद्या-वृद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है तथा शत्रु-पक्ष में प्रभाव बढ़ता है। भाई-बहिनों से कुछ मतभेद भी रहता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से पुरुषार्थ द्वारा भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम

भाव को देखने से शारीरिक शक्ति, प्रभाव तथा बल भी प्राप्ति होती है, परन्तु स्वास्थ्य में कुछ कमी धनी रहती है।